तृतीय माला, खण्ड ९—अंक ३

शनिवार, १० नवम्बर, १९६२
१९ कार्तिक, १८८४ (शक)

लोक-सभा
वाद-विवाद

(दूसरा सत्र)

3rd Lok Sabha

सत्यमेव जयते

(खण्ड ९ में अंक १ से अंक १० तक हैं)

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली

एक रुपया (देश में)

चार शिलिंग (विदेश में

विषय सूची

प्रश्नों के मौखिक उत्तर —

तारांकित प्रश्न* संख्या ८४ से ८९, ९१ से ९४ और ९६ से १०७ — २४९–८०

प्रश्नों के लिखित उत्तर—

तारांकित प्रश्न संख्या १०८, ११०, १११, ११४, ११५, ११७ से १२२ और १२४ से १२८ . . . . . २८१–९०

अतारांकित प्रश्न संख्या १६५, १६६, १६८ से १९७, १९९ से २०१, २०३ से २२३, २२६ से २३०, २३२ से २४०, २४३ से २५६, २५८, २५९ और २६१ से २६४ . . . . . २९०—३२७

रेलवे दुर्घटना समिति के सदस्यों को दिये गये भत्तों के बारे में . . ३२७

सभा पटल पर रखे गये पत्र . . . . . ३२७—२९

राज्य सभा से संदेश ३३०

विशिष्ट सहायता विधेयक ३३०

संयुक्त समिति का प्रतिवेदन

अत्यावश्यक वस्तुओं के मूल्यों को उचित स्तर पर बनाये रखने के उपायों के बारे में वक्तव्य ३३०–३१

श्री नन्दा

रेलवे दुर्घटना समिति के सदस्यों को दिये गये भत्तों के बारे में वक्तव्य . ३३१

श्री सें० वे० रामस्वामी

सभा का कार्य ३३२–३३

महा प्रशासक विधेयक ३३३

प्रवर समिति के प्रतिवेदन को उपस्थापित करने का समय बढ़ाया जाना

आपत की उद्घोषणा तथा चीन के आक्रमण के बारे में संकल्प . ३३३—८९

श्रीमती रेणु चक्रवर्ती ३३४–३५

श्री भगवत झा आजाद ३३६

श्री श्याम लाल सर्राफ ३३६–३७

श्री कर्णी सिंहजी ३३७–३८

*किसी नाम पर अंकित यह + चिह्न इस बात का द्योतक है कि प्रश्न को सभा में उसी सदस्य ने वास्तव में पूछा था ।

लोक-सभा

शनिवार, १० नवम्बर, १९६२

१९ कार्तिक, १८८४ (शक)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई ।

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

प्रश्नों के मौखिक उत्तर

सीमेंट उद्योग

+

†*८४. श्री स० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री नि० रं० लास्कर :
श्री म० ला० द्विवेदी :

क्या इस्पात और भारी उद्योग मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि ऐसे मालडिब्बों की कमी के कारण जिसमें पानी न जा सके,सीमेन्ट उद्योग संकट में है ;

(ख) क्या यह भी सच है कि सारे देश में कारखानों के गोदामों में काफी मात्रा में सीमेन्ट इकट्ठा हो गया है ; और

(ग) यदि हां, तो यह कठिनाई दूर करने के लिये सरकार क्या कर रही है ?

†इस्पात और भारी उद्योग मंत्रालय में उपमंत्री (श्री प्र० चं० सेठी) : (क) और (ख) जी नहीं । कोई संकट नहीं है । फिर भी सीमेंट कारखानों को रेल परिवहन में कुछ कठिनाइयां हुई हैं, कुछ को कम और कुछ को ज्यादा ।

(ग) मुझे आशा है कि सम्पूर्ण रेल परिवहन में सुधार हो जाने पर सीमेंट के परिवहन की स्थिति कुछ ठीक हो जायेगी । इस बीच, जहां कहीं सम्भव है, सड़क और समुद्र से सीमेंट के परिवहन को प्रोत्साहन दिया जा रहा है । सीमेंट लाने-ले जाने के लिये ब्लाक रेक के उपयोग की सम्भावना का पता लगाया जा रहा है ।

†मूल अंग्रेजी में

2118(Ai) LSD—1.

†**श्री स० चं० सामन्त** : क्या यह सच नहीं है कि अखबारों में यह खबर छपी थी कि यह उद्योग संकट में है । क्या इस कथन का खण्डन किया गया है ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम)** : अखबार की हर टिप्पणी का खण्डन करना आवश्यक नहीं है । जब कभी कोई कठिनाई होती है तो वे उसे संकट बना देते हैं ।

†**श्रीमती सावित्री निगम** : क्या माननीय मन्त्री को मालूम है कि कई राज्यों में, खासकर उत्तर प्रदेश में, कुछ जिलों में, सीमेंट से उत्पन्न संकट जिला अधिकारियों के लिये एक परेशानी बन गयी है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : पूरी तौर से बन्द माल डिब्बों के कारण या और किसी के कारण ?

†**श्रीमती सावित्री निगम** : सीमेन्ट की अनियमित सप्लाई के कारण ।

†**श्री श्यामलाल सर्राफ** : क्या जम्मू और काश्मीर राज्य में सीमेंट की कमी माल डिब्बे न मिलने के कारण है या और कोई बात है ?

†**श्री चि० सुब्रह्मण्यम** : जम्मू और काश्मीर ! इस समय यह थोड़ा कठिन है । मुझे विश्वास है कि यदि वे अब पूछताछ करें तो उन्हें अधिक अच्छा उत्तर मिलेगा कि वहां स्थिति अब सन्तोषजनक है ।

†**श्री पें० वेंकटासुब्बैया** : क्या यह सच है कि देश में सीमेंट की कमी है और क्या सीमेंट के कारखानों में उत्पादन बढ़ाने के लिये कोई प्रयत्न किये गये हैं ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यह सामान्य प्रश्न नहीं है ।

श्री विभूति मिश्र : अभी माननीय मन्त्री जी ने कहा कि सीमेंट की कमी नहीं है । अपने अनुभव से हम देखते हैं कि सीमेंट मिलता नहीं है । तो क्या सरकार. . . . . .

अध्यक्ष महोदय : यह जनरल क्वेश्चन है ।

काबेरी बेसिन में तेल

†*८५. { **श्री स० चं० सामन्त** :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री नि० रं० लास्कर :
श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री प० कुन्हन :

क्या **खान और ईंधन** मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) प्राकृतिक तेल ढूंढने के लिये कावेरी बेसिन में छिद्रण कार्य अधिक जोर शोर से चलाने के लिये क्या कदम उठाये जा रहे हैं ;

(ख) क्या इस काम के लिये कोई विशेषज्ञ नियुक्त किये गये हैं ; और

(ग) यदि नहीं, तो यह काम चलाने के लिये क्या विदेशों से कोई प्रस्ताव प्राप्त हुआ है ?

†मूल अंग्रेजी में

†**खान और ईंधन मंत्री के सभा-सचिव (श्री तिम्मय्या) :** (क) स्कैटिग्राफ विषयक जानकारी प्राप्त करने के लिये १२०० मीटर की गहराई तक कुछ छिद्र बनाने का विचार है। काम १९६३ के आरम्भ में शुरु होने की सम्भावना है। इसलिये सघन छिद्रण कार्य का प्रश्न अभी उत्पन्न नहीं होता।

(ख) जी हां। इस काम के लिये विशेषज्ञ भारतीय भूगर्भशास्त्रियों और छिद्रकों को तैनात किया गया है।

(ग) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

†**श्री स० चं० सामन्त** : फिलहाल किस प्रकार का छिद्रण कार्य किया जा रहा है ?

†**श्री तिम्मय्या :** हाइड्रो कार्बन के संग्रह के लिए उपयुक्त ढांचे ढूंढने के लिए भूगर्भीय और अन्य सर्वेक्षण किये जा रहे हैं। यदि उनका पता लग जाये तो भूछिद्रण कार्य और सघन कर दिया जायगा।

†**श्री भागवत झा आजाद :** क्या इस क्षेत्र में प्रारम्भिक आंकड़ों से इस क्षेत्र में सघन छिद्रण कार्य के सम्बन्ध में किसी निश्चय का कोई संकेत मिलता है ?

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजरनवीस) :** ऐसा कोई संकेत मिले बगैर छिद्रण कार्य सामान्यतया आरम्भ नहीं किये जाते।

†**श्री भागवत झा आजाद :** मैं जानना चाहता हूं कि क्या प्रारम्भिक आंकड़े . . . . .

†**श्री हजरनवीस :** पहला तो भूगर्भीय सर्वेक्षण है। दूसरा गुरुत्वाकर्षण और चुम्बिकीय सर्वेक्षण है। फिर भूतत्वीय सर्वेक्षण है। यदि ये सब बातें हमारे पक्ष में हों तभी हम छिद्रण कार्य पर भारी खर्च करते हैं।

†**श्री शिवनंजप्पा :** क्या मैसूर राज्य में ऊपरी कावेरी बेसिन इस सर्वेक्षण के अन्तर्गत आयेगा ?

†**श्री तिम्मय्या :** इसका उत्तर किसी और प्रश्न के उत्तर में दिया जायगा।

†**अध्यक्ष महोदय :** अगला प्रश्न।

सोने की मानक दर

†*८६. **श्री सु० भू० दास :**
श्री सुबोध हंसदा :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री ब० कु० दास :
डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी :
श्री कजरोलकर :

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सम्पूर्ण देश में सोने की मानक दर निर्धारित करने की कोई योजना है;

(ख) यदि हां, तो क्या यह योजना अंतिम रूप से निश्चित की जा चुकी है; और

(ग) यह कब तक कार्यान्वित की जायगी ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**वित्त मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब० रा० भगत)** : (क) सोने के मामले में सरकारी योजनायें पहले ही नहीं बनायी जा सकतीं ।

(ख) और (ग). प्रश्न उत्पन्न नहीं होते ।

†**श्री सु० भू० दास** : क्या सरकार किसी व्यक्ति या किसी संस्था द्वारा सोना जमा करने पर कोई निर्बन्धन लगाने जा रही है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : वह यह नहीं बता रहे हैं ।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : माननीय मंत्री ने बताया कि यह नीति पहले नहीं बतायी जा सकती । मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या वह कभी घोषित की जायगी ।

†**श्री ब० रा० भगत** : जब हम कोई निश्चय करेंगे, तो वह घोषित कर दिया जायगा ।

श्री बड़े : क्या मंत्री महोदय को यह मालूम है कि श्री मोरारजी देसाई के स्टेटमेंट के बाद बम्बई की मार्केट्स और इंदौर की मार्केट्स बन्द हो गईं और बाकी मार्केट्स में भी गोल्ड की कीमत पर काफी असर पड़ा है । इस लिये क्या शासन को कोई नीति नहीं अपनानी चाहिये ?

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)** : सोने की कीमतों में गिरावट और दूसरे शेयरों की कीमतों की गिरावट में कोई सम्बन्ध नहीं है । दोनों के बीच में कोई सम्बन्ध नहीं है ।

श्री बड़े : मैं यह जानना चाहता हूं कि इस सम्बन्ध में क्या किसी नीति को अपनाने और उस को डिक्लअर करने की जरूरत है या नहीं ।

अध्यक्ष महोदय : यह दूसरी बात है ।

श्री कछवाय : मैं जानना चाहता हूं कि रक्षा के काम के लिये सरकार किस तरह पर सोना खरीद रही है ?

श्री मोरारजी देसाई : वह तो कह दिया गया है कि गोल्ड बांड्स खरीद जायेंगे ६२ रु० २५ न० पै० तोला के हिसाब से ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या मैं जान सकता हूं कि इस समय सोने के दामों में जो कमी हुई है उस के सम्बन्ध में क्या वित्त मंत्री जी ने कोई निश्चय कर लिया है कि इस सीमा तक सोने के दाम घटने दिये जायेंगे या वह जितने भी घट जायें उतना अच्छा है ?

श्री मोरारजी देसाई : जितने भी घट जायें उतना अच्छा है ।

†**श्री श्यामलाल सर्राफ** : क्या इस अत्यधिक तेजी मंदी से हमारे वाणिज्य और व्यापार की प्रगति में रुकावट नहीं पड़ेगी ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यह राय का विषय है ।

श्री यशपाल सिंह : क्या यह उचित नहीं होगा कि बार की परिस्थिति को देखते हुए जिस रेट पर गोल्ड बांड्स खरीदे जा रहे हैं वही रेट मार्केट्स में सोने का तय किया जाय ?

†**श्री इन्द्रजीत गुप्त** : घोषित की गयी वर्तमान कीमत और अन्तर्राष्ट्रीय कीमत में क्या सम्बन्ध है और इस नयी दर पर अब तक सरकार को कितना सोना दिया जा चुका है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†श्री मोरारजी देसाई : जो मूल्य हमने घोषित किया है वह अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य है । हम ने यही मूल्य निर्धारित किया है । अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा निधि के नियमों के अनुसार हम दूसरा कोई मूल्य निर्धारित नहीं कर सकते । मैं नहीं कह सकता कि अभी तक कितना सोना मिल चुका है । यह इसलिए सम्भव नहीं है कि मुझे सभी राज्यों से हिसाब अभी नहीं मिला है ।

अखिल भारतीय शिक्षा सेवा

+

†*८७. श्री दी० चं० शर्मा :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री भगवत झा आजाद :
श्री बसुमतारी :
श्री इ० मधूसूदन राव :
श्री हेम राज :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या देश में अखिल भारतीय शिक्षा सेवा चालू करने की कोई योजना है;

(ख) कितने राज्यों ने इस योजना का समर्थन किया है और कितनों ने उसका विरोध किया है;

(ग) जिन राज्यों ने विरोध किया है उनकी क्या आपत्ति है; और

(घ) अभी वह योजना किस प्रक्रम पर है ?

†शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) जी, हां ।

(ख) आठ राज्यों ने इस योजना का सिद्धान्त रूप में समर्थन किया है, दो राज्यों ने अस्थायी तौर पर उसका समर्थन किया है । दो राज्यों ने इसका विरोध किया है ।

(ग) विरोध करने वाले राज्यों की यह राय है कि अखिल भारतीय सेवा बनाने से कोई लाभ नहीं होगा ।

(घ) बाकी राज्य सरकारों के साथ इस मामले पर बातचीत हो रही है । योजना के ब्यौरे अभी अन्तिम रूप से निश्चित नहीं किये गये हैं ।

†श्री दी० चं० शर्मा : राज्यों ने किन कारणों से इन योजनाओं का समर्थन किया है और किन कारणों से विरोध किया है ?

†डा० का० ला० श्रीमाली : समर्थन करने वाले राज्यों का यह मत है कि अखिल भारतीय शिक्षा सेवा बनाना लाभदायक होगा जब कि विरोध करने वाले राज्यों का यह मत है कि उससे अधिक लाभ नहीं होगा ।

†श्री दी० चं० शर्मा : ऐसे कौन कौन से राज्य हैं जिन्होंने अभी तक अपनी कोई राय जाहिर नहीं की है ?

†डा० का० ला० श्रीमाली : बाकी राज्यों ने कोई राय जाहिर नहीं की है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री भागवत झा आजाद** : क्या वेतन-क्रमों में एकरूपता के अतिरिक्त, इस योजना से विभिन्न राज्यों में शिक्षा के स्तरों में एकरूपता लाने में भी कुछ मदद मिलेगी ?

†**डा० का० ला० श्रीमाली** : सरकार की राय हमेशा यह रही कि यह सेवा कायम करना लाभप्रद होगा ।

†**डा० गोविन्द दास** : यदि यह निश्चय हो गया है कि अखिल भारतीय स्तर पर इस तरह के संगठन को आरम्भ किया जाय तो जिन राज्यों ने इसे स्वीकार नहीं किया है उन से क्या इस को स्वीकार कराने का प्रयत्न किया जा रहा है, और क्या जब तक यह उन के द्वारा स्वीकार नहीं किया जायेगा तब तक इस प्रकार का संगठन नहीं हो सकेगा ?

†**डा० का० ला० श्रीमाली** : यह तो स्पष्ट है कि यह सर्विस तभी आरम्भ की जा सकती है जब सब राज्य सरकारें उसे स्वीकार कर लें । होम मिनिस्ट्री उन से इस को मनवाने का प्रयत्न कर रही है ।

†**श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा** : क्या मैं जान सकता हूं कि कौन कौन से राज्य इस योजना से सहमत नहीं हुए हैं ?

†**डा० का० ला० श्रीमाली** : योजना से सहमत होने वाले राज्यों और सहमत न होने वाले राज्यों के नामों की सूची मैं पहले ही दे चुका हूं । बाकी राज्यों ने अभी तक अपना उत्तर नहीं भेजा है ।

†**श्री जयपाल सिंह** : प्रश्न के भाग (घ) के उत्तर में माननीय मंत्री ने यह बताया है कि अभी ब्यौरे तैयार किय जा रहे हैं । क्या इसका मतलब यह है कि ब्यौरे राज्यों को नहीं भेज गये थे ?

†**श्री का० ला० श्रीमाली** : ब्यौरे केवल तभी तैयार किये जा सकते हैं जब कि राज्य सिद्धान्त रूप में सेवा से सहमत हो जायें ।

†**श्री प्राशवीर शास्त्री** : क्या मैं जान सकता हूं कि जो राज्य इस योजना में सम्मिलित नहीं होते हैं उन्होंने कोई वैकल्पिक सुझाव भी सरकार को दिय हैं ? यदि हां, तो उन को कहां तक व्यवहारिक माना गया है ?

श्री मा० ला० श्रीमाली : अभी तो मश्विरा हो रहा है ।

†**श्री प्र० रं० चक्रवर्ती** : : जो राज्य इस योजना से सहमत नहीं हुए हैं उनके मुख्य तर्क क्या हैं ?

†**अध्यक्ष महोदय** : उसका उत्तर दिया जा चुका है ।

†**श्री हेमराज** : क्या अधिकतर राज्यों ने उसे स्वीकार कर लिया है और केवल एक या दो राज्यों ने ही उसे अस्वीकार किया है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : जब वे नाम बता चुके हैं तो अधिकतर या थोड़े यह मालूम किया जा सकता है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

चोरी छिपे लायी गयी घड़ियों का पकड़ा जाना

+

†*८८. { **श्री स० मो० बनर्जी :**
श्री दशरथ देव :
श्री अ० क० गोपालन :
श्री मुहम्मद इलियास :
श्री दाजी :
श्री नम्बियार : }

क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि एक लाख रुपये से अधिक मूल्य की करीब ८२२ घड़ियां डमडम हवाई अड्डे पर १५ सितम्बर, १९६२ को सीमा शुल्क विभाग द्वारा पकड़ी गई थीं ;

(ख) क्या इस सम्बन्ध में पकड़ गये दो व्यक्तियों में से एक किसी विमान कंपनी का कर्मचारी था ; और

(ग) यदि हां, तो उस पर सरकार ने क्या कार्यवाही की ?

†**वित्त मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब० रा० भगत)** : (क) से (ग) : सीमा शुल्क विभाग के अधिकारियों ने डमडम हवाई अड्डे के पास १५ सितम्बर, १९६२ को ८२२ घड़ियां पकड़ी थीं। इस संबंध में पांच व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है जिनमें से तीन एयर इंदिया के भारवाहक है। इस मामले में जांच पड़ताल की जा रही है और सीमा-शुल्क अधिनियम, १८७८ और आयात निर्यात (नियंत्रण) अधिनियम, १९४७ के अधीन उस समय आवश्यक कार्यवाही की जायेगी जब कि जांच पड़ताल पूरी हो जायेगी।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : घड़ियों तथा दूसरी चीजों का यह बढ़ता हुआ चोरी छिपे व्यापार रोकने के लिए क्या ठोस कदम उठाये गये है ?

†**श्री ब० रा० भगत** : पूरी पूरी निगरानी रखी जाती है। हम देश के अन्दर और बाहर, दोनों जगहों से जानकारी प्राप्त करने की कोशिश कर र हैं और जहां संभव होता है, हम उन्हें पकड़ते भी है। घड़ियों के चोरी छिपे व्यापार के विरुद्ध हम सभी कारंवाई को और कड़ा बना रहे हैं।

†**श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा** : इन घड़ियों की बिक्री पर कितना प्रतिशत मुनाफा रखा गया है क्योंकि में यह देखता हूं कि वे बाजार की कीमतों से अधिक ऊंची कीमतों पर बेची जाती है।

†**अध्यक्ष महोदय** : अगर सदस्य यह खरीदने के लिए तैयार हों तो वे पता लगा सकत है।

†**श्री दी० चं० शर्मा** : एक खरीदार किस तरह यह मालूम कर सकता है कि चोरी छिपे लायी गयी घड़ी कौन सी है और सामान्य रूप में आयात की गयी घड़ी कौन सी है।

अध्यक्ष महोदय : मंत्री महोदय यह नहीं बता सकते।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्रीमती सावित्री निगाम :** अभी अभी माननीय मंत्री ने बताया है कि घड़ियों का काफी बड़ा भंडार अभी हाल में बरामद किया गया है। है। क्या इस बारे में कोई जाचजपड़ताल की गयी है कि यह घड़ियां खरीदने के लिए इतनी अधिक विदेशी मुद्रा किस जरिय से मिली ?

†**श्री ब० रा० भगत :** जांचजपड़ताल अभी जारी है ।

अमरीकी पर्यटकों से सोना बरामद होना

†*८९. **श्री वासुदेवन नायर :**
श्री दशरथ देव :
श्री अ० क० गोपालन :
श्री प० कुन्हन :
श्री नम्बियार :

क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पूर्व पाकिस्तान से भारत में प्रवश करत समय, एक अमरीकी पर्यटक से २२ लाख रुपये का सोना सीमा शुल्क अधिकारियों ने बरामद किया था ; और

(ख) यदि हां, तो इस पर्यटक के विरुद्ध क्या कार्यवाही की गई ?

†**वित्त मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब० रा० भगत) :** (क) ११ सितम्बर, १९६२ को कलकत्ता कस्टम हाऊस में एक मोटरगाड़ी की तलाशी लेने पर लगभग २० लाख रुपये की कीमत का १८५ किलो सोना बरामद किया गया था। यह मोटरगाड़ी एक अमरीकी राष्ट्रजन श्री राल्फ दार्शिगर ने एक दिन पहले पूर्व पाकिस्तान से लायी थी ।

(ख) श्री दार्शिगर को गिरफ्तार किया गया और उसे चीफ़ प्रसिडेन्सी मजिस्ट्रट, कलकत्ता, के सामने पेश किया गया । जमानत न दे सकने पर उसे हिरासत में भेज दिया गया । अभी इस मामले की जांच हो रही है ।

†**श्री वासुदेवन् नायर :** क्या सरकार ने इस बारे में कोई जांच की है कि यह विशिष्ट व्यक्ति भारत में चोरी छिपे सोना लाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह का एक अंग है ?

†**श्री ब० रा० भगत :** इस मामले की जांच पड़ताल हो रही है ? और हम उसके बारे में पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं ।

†**अध्यक्ष महोदय :** अगला प्रश्न, संख्या ९१ ।

†**एक माननीय सदस्य :** प्रश्न संख्या ९० का क्या हुआ ?

†**अध्यक्ष महोदय :** मंत्री महोदय ने उसे किसी और दिन उत्तर के लिए रखा है ।

†मूल अंग्रेजी में

दक्षिण में तेल शोधक कारखाना

+

†*९१. श्री अ० क० गोपालन :
श्री ईश्वर रेड्डी :
श्री प० कुन्हन :
श्री नम्बियार :
श्री इम्बीचिबाबा :
श्री मोहिसिन :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री त्रिदिब कुमार चौधरी :
श्री स० ब० पाटिल :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री ज० बं० सिंह विष्ट :
श्री यल्लमंदा रेड्डी :
श्री बारियर :
श्री विशन चन्द्र सेठ :
श्री कोया :
श्री यशपाल सिंह :
श्री श्यामलाल सर्राफ :
श्री वासुदेवन् नायर :

क्या **खान और इंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या दक्षिण में तेल शोधक कारखाना स्थापित करने में सहयोग देने के लिये कई विदेशी तेल कंपनियों ते प्रस्ताव प्रस्तुत किये हैं ;

(ख) यदि हां, तो किन किन फ़र्मों ने सहयोग देने के प्रस्ताव प्रस्तुत किये है और प्रत्येक फर्म ने क्या शर्तें रखी हैं ; और

(ग) क्या दक्षिण तेल शोधक कारखाने के स्थान के बारे में कोई निश्चय किया गया है ?

†**खान और इंधन मंत्री के सभा सचिव (श्री तिम्मय्या)**: (क) जी हां ।

(ख) (१) इटली की ई० एन० आई० ने सरकारी क्षेत्र की परियोजना के लिए तकनीकी और वित्तीय सहयोग देने का प्रस्ताव रखा है ।

(२) अमरीका की फिलिपस पेट्रोलियम कंपनी ने कम अंश वाले भागीदार के तौर पर इस परियोजना का विकास करने का प्रस्ताव पेश किया है ।

(ग) अभी नहीं ।

†**श्री अ० क० गोपालन** : क्या राज्यों को भेजा जाने वाला दूसरा दल अर्थात् इटली का दल भेजा जा चुका है और यदि हां तो क्या उसने दक्षिण में स्थलों का निरीक्षण किया है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री तिम्मय्या : इन दो विदेशी सहयोगियों ने अपनी रिपोर्ट पेश की है और उसकी छानबीन की जा रही है । हमने शोधक कारखाने का स्थान अभी तक निश्चित नहीं किया है ।

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रश्न यह था कि क्या दूसरा दल भेजा जा चुका है।

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजरनवीस)** : अभी इस बारे में कोई निश्चय नहीं किया गया है ।

†**श्री अ० क० गोपालन** : क्या स्थान का निश्चय किन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर किया जायेगा ?

†**श्री हजरनवीस** : इस तरह के मामले में हम अपने विशेषज्ञों की राय पर चलते है ।

†**श्री कुन्हन** : क्या यह तेल शोधक कारखाना केरल में स्थापित करने के लिए सरकार को केरल से कोई पत्र प्राप्त हुआ है ?

†**श्री हजर नवीस** : वह कहां स्थापित किया जाये इस बारे में निश्चय करने के लिए भारत के हर हिस्से पर ध्यान दिया जायेगा ।

†**श्री भागवत झा आजाद** : यह तेल शोधक कारखाना स्थापित करने से पहले क्या सरकार ने यह निश्चित रूप से मालूम कर लिया है कि अशोधित तेल मिलता रहेगा और यदि हां, तो जरिया क्या है ?

†**श्री हजरनवीस** : यह भी एक विषय है जिस पर विचार किया जायेगा ।

†**श्री दी० चं० शर्मा** : इस कारखाने के लिए किन किन स्थलों पर अभी विचार हो रहा है ?

†**श्री हजरनवीस** : कोई विशिष्ट स्थल विचाराधीन नहीं है ।

†**श्री वासुदेवन्नायर** : इस कारखाने के लिए अंतिम रूप से कोई जगह निश्चित करने के लिए क्या सरकार विभिन्न तथ्यों की छानबीन कर चुकी है ?

†**श्री हजरनवीस** : जी हां, इंडियन रिफाइनरीज लिमिटेड के हमारे विशेषज्ञ इस विषय पर विचार कर रहे है ।

†**श्री श्याम लाल सर्राफ** : यह शोधक कारखाना स्थापित करने के बारे में और इस संबंध में कि यह काम किसे सौंपा जाये, अंतिम निश्चय करने में सरकार को कितना समय लगेगा ?

श्री हजरनवीस : जितना जल्दी हो सके उतनी जल्दी ।

†**श्री जयपाल सिंह** : क्या इस शोधक कारखाने की क्षमता निर्धारित की जा चुकी है ? उसकी क्षमता संभवतः कितनी होगी ?

†**श्री हजरनवीस** : आरम्भ में बीस लाख टन । वह बढ़ायी भी जा सकती है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

सड़क से कोयला लेजाना

†*९२. श्री उमा नाथ :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री भक्त दर्शन :
श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :
श्री मोहिसिन :
श्री सुरेन्द्र पाल सिंह :
श्री विद्याचरण शुक्ल :
श्री रा० शि० पाण्डेय :
श्री स० ब० पाटिल :
श्री द्वा० ना० तिवारी :
श्री विशन चन्द्र सेठ :
श्री सरजू पाण्डेय :

क्या **खान और इंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या कोयला खानों से कोयला सड़क से लाया जा रहा है ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह काम ठेकेदार कर रहे है ;

(ग) अब तक कुल कितना कोयला सड़क से लाया गया है ;

(घ) क्या मालडिब्बों की कठिनाई अब भी मौजूद है ; और

(ङ) यदि हां, तो यह स्थिति सुधारने के लिये क्या कदम उठाये गये है ?

खान और इंधन मंत्री के सभा सचिव (श्री तिम्मय्या) : (क) और (ख) खानों से उपभोक्ता और उनके अभिकर्ताओं द्वारा सड़क द्वारा कोयला ले जाना नियमित काम है जो काफी समय से चल रहा है । अभी तक सरकार ने सड़क द्वारा कोयले का सड़क द्वारा संगठित परिवहन नहीं किया है ।

(ग) वर्ष १९६२ में अगस्त तक ३३.२५ लाख टन ।

(घ) वैगनों के संभरण में पर्याप्त सुधार हुआ है ।

(ङ) सरकार ने अधिक मात्रा में कोयले के परिवहन के लिये विभिन्न कदम उठाये है और उनमें से कुछ ये हैं :—

(१) तटवर्ती राज्यों को समुद्र द्वारा और कोयला खानों के समीपवर्ती उपभोक्ताओं को सड़क द्वारा कोयले का परिवहन किया जा रहा है ।

(२) कोयले का लदान रविवार को और अन्य छुट्टी वाले दिन भी किया जा रहा है ।

(३) मध्य भारत कोयला क्षेत्रों से, जहां परिवहन सुगम है, कोयले का उत्पादन बढ़ाया जा रहा है ।

(४) विभिन्न राज्यों में कोयला भंडार बनाये जा रहे है ।

†मूल अंग्रेज़ी में

(५) कोयला ब्लाक रेकों में बोक्स वैगनों में ले जाया जा रहा है ।

(६) रेलवे ने पर्याप्त रूप से वैगनों के संभरण में वृद्धि की है ।

†**श्री उमानाथ** : मुगलसराय के परे सड़क द्वारा कोयला ले जाने के लिये १०–१५ टन के भारी ट्रक चलाने का प्रस्ताव था । क्या उस बारे में कोई निर्णय किया गया है ?

†**खान और इंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजरनवीस)** : उस साइज के ट्रक लगाना सड़क की हालत पर निर्भर है और उस मामले की जांच की भी जा रही है ।

†**श्री उमानाथ** : क्या सरकार को रेलवे मंत्रालय के प्रवक्ता द्वारा कुछ समय पूर्व दिये गये वक्तव्य का पता है कि कोयला खानों के मुहानों पर वैगन खाली पड़े हैं क्योंकि कोयले का लदान पर्याप्त मात्रा में नहीं किया जा रहा है ? यदि हां, तो राष्ट्रीय संकट को देखते हुए कोयले के शीघ्र संभरण और निपटान के लिये क्या विशिष्ट उपाय किये गये हैं ?

†**श्री हजरनवीस** : मुझे ऐसे किसी वक्तव्य का पता नहीं है परन्तु सरकार के विभिन्न विभागों में यथासंभव निकटतम समन्वय बनाये रखा जा रहा है ।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : मंत्री महोदय को पता है कि मुगलसराय से परे उत्तर प्रदेश में आयुध कारखानों ने चौबीस घंटे काम करना आरम्भ कर दिया है । मैं यह जानना चाहता हूं कि इस बात को देखने के लिये कि इन कारखानों में कोयले की कमी न हो, क्या कदम उठाये गये हैं और क्या उनके लिये कोई विशेष व्यवस्था की गयी है ?

†**श्री हजरनवीस** : संकट पैदा होने के तुरन्त बाद आयुध कारखानों से पूछताछ की गयी कि क्या उनके पास पर्याप्त संभरण है और हमें आश्वासन दिया गया है कि कुछ समय से उनको पर्याप्त संभरण हो रहा है । सरकार बड़े ध्यानपूर्वक स्थिति का अवलोकन कर रही है और उनकी आवश्यकता के अनुसार संभरण किया जायेगा ।

†**श्री इन्द्रजीत गुप्त** : क्या सरकार का ध्यान कोयले के औद्योगिक उपभोक्ताओं की शिकायतों की ओर आकृष्ट किया गया है कि जो नये भारी बौक्स वैगन इस्तेमाल किये जाते हैं उनमें अक्सर कोयला खानों द्वारा कम माल भरा जाता है क्योंकि उनके पास ऐसे वैगनों में यंत्रीकृत लदान के उपकरण नहीं हैं, यदि हां, तो इस मामले में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

†**श्री हजरनवीस** : यदि कोई शिकायत की जाये तो हम उस पर ध्यान देंगे ।

श्री बेरवा कोटा : कोयले के सड़क से लाने और रेल से लाने के फ्रेट में कितना अन्तर है ?

श्री हजरनवीस : इस की तफसील मेरे पास नहीं है लेकिन यह जाहिर है कि मोटर से लाने में ज्यादा महंगा पड़ेगा ।

†**श्री नरेन्द्र सिंह महीडा** : कोयले के परिवहन के सम्बन्ध में एक विदेशी विशेषज्ञ को आमंत्रित करने की योजना का क्या हुआ ? क्या वह आ गया है ?

†**श्री हजरनवीस** : मैं पहले उत्तर दे चुका हूं कि हमने अभी किसी विदेशी विशेषज्ञ को आमंत्रित नहीं किया है । विश्व बैंक ने हमें एक विदेशी विशेषज्ञ की सेवायें देने का प्रस्ताव किया है और मामले का परीक्षण किया जा रहा है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री हरिश्चन्द्र माथुर** : कोयले के संभरण में सुधार करने के लिये किये गये विभिन्न उपायों के फलस्वरूप, विशुद्ध परिणाम क्या निकला ? प्रति मास कितने अधिक कोयले का परिवहन किया गया है ?

†**बिना विभाग के मंत्री (श्री ति० त० कृष्णमाचारी)** : कुछ क्षेत्रों में, विशेषतया बंगाल बिहार कोयला पट्टी और मुगलसराय के बीच के सेक्शन में कोयले के परिवहन के सम्बन्ध में स्थिति निस्संदेह सुधरी है । मूलतः रेलवे वैगनों द्वारा परिवहन लगभग ३४४० वैगन प्रति दिन था । अब इसको बढ़ा कर लगभग ३८०० वैगन प्रति दिन कर दिया गया है । दूसरे सारा उपलब्ध कोयला समय समय पर उठाया जा रहा है ।

†**श्री भागवत झा आजाद** : इस प्रश्न में हम उपभोक्ताओं को व्यक्तिगत संभरण के बारे में जानकारी नहीं चाहते । हम यह जानना चाहते हैं कि खान और ईंधन मंत्री द्वारा इस सदन में बार बार दोहरायी गयी कोयले के सड़क और जलमार्ग द्वारा परिवहन की योजना क्रियान्वित की जा रही है या नहीं ?

†**श्री हजरनवीस** : जी, नहीं । हम उस योजना पर काम कर रहे हैं । पहला कदम एक महीने में उठाया जायेगा । हमें यह आशा है ।

†**श्री प्र० रं० चक्रवर्ती** : झरिया से कोयले को मोकामेह और फिर इलाहाबाद ले जाने की परियोजना के बारे में कितनी प्रगति की गयी है ?

†**श्री हजरनवीस** : मैंने अभी उस प्रश्न का उत्तर दिया है ।

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रत्येक योजना के बारे में उत्तर नहीं दिया जा सकता है ।

†**श्री हजरनवीस** : मैंने बताया कि हम एक महीने के भीतर पहला कदम उठा लेंगे ।

†**अध्यक्ष महोदय** : मैंने प्रश्न पूछे जाने की अनुमति नहीं दी है ।

†**श्री हजरनवीस** : मुझे खेद है ।

†**श्री द्वा० ना० तिवारी** : संसद के पिछले सत्र में यह बताया गया था कि कोयला कम खपत वाले मौसम में पटना में दो या तीन स्थानों पर इकट्ठा किया जायेगा । क्या ऐसा किया गया है और यदि हां, तो उसकी मात्रा क्या है ?

†**श्री हजरनवीस** : हम इस बारे में विचार कर रहे हैं परन्तु पटना के बारे में हमारे पास कोई विशिष्ट जानकारी नहीं है ।

†**अध्यक्ष महोदय** : वह इस सामान्य प्रश्न में प्रत्येक स्थान के बारे में नहीं बता सकते ।

†**श्री मानसिंह पु० पटेल** : क्या इस कोयले को देश के पश्चिम में दूरवर्ती स्थानों पर ले जाने के लिये सरकार के समक्ष एक अन्तर्राज्यीय सड़क परिवहन निगम बनाने का कोई प्रस्ताव है ?

†**श्री हजरनवीस** : यह बात इस प्रश्न से नहीं उठती ।

†**श्री तिरुमल राव** : क्या सड़क द्वारा लदान के लिये विशाखापटनम में एक कोयला भंडार बनाने का कोई प्रस्ताव है ? इस प्रकार मेरा प्रश्न उठता है । इससे समुद्र के रास्ते कोयले के परिवहन में सुविधा मिलेगी । इसलिये यह सम्बन्धित प्रश्न है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**अध्यक्ष महोदय** : यह सम्बन्धित नहीं है क्योंकि हम सड़क की बात कर रहे हैं न कि समुद्र की ।

†**श्री प्र० चं० बरुआ** : क्या पाइप लाइनों के जरिये कोयले के परिवहन में कोई प्रगति की गयी है ?

†**श्री हजरनवीस** : यह प्रश्न इस प्रश्न से उत्पन्न नहीं होता ।

विदेशी मुद्रा सम्बन्धी स्थिति

†*९३. **श्री श्रीनारायण दास :**
श्री उमा नाथ :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री तेन सिंह :
श्री प्र० चं० बरुआ :

क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) विदेशी मुद्रा के सम्बन्ध में अन्तिम स्थिति क्या है ; और

(ख) क्या यह स्थिति किसी हद तक सुधरी है ?

†**वित्त मंत्रालय में उपमंत्री (श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा)** : (क) और (ख). भारत की विदेशी मुद्रा की स्थिति कमजोर चल रही है । रक्षित बैंक का विदेशी अन्तर, जो मार्च, १९६२ के अन्त में १२८ करोड़ रुपये था २–११–१९६२ को घट कर ९३.६२ करोड़ रुपये रह गया ।

†**श्री श्रीनारयण दास** : वर्तमान आंकड़ों की पहले वर्ष के आंकड़ों से क्या तुलना है ?

†**श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा** : मैंने बताया है कि विदेशी मुद्रा की स्थिति में भारी कमी हुई है । पहले दो वर्षों की अपेक्षा वर्तमान कमी बहुत गम्भीर है ।

†**श्री श्रीनारायण दास** : भारत में विदेशी मुद्रा की स्थिति सुधारने के लिये कुछ कदम उठाये गये थे । क्या मैं जान सकता हूं कि क्या उन कदमों का कुछ फल निकला ?

†**श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा** : वे कदम उठाये जाने के बाद से विदेशी मुद्रा की स्थिति में अन्तर में थोड़ा बहुत फर्क पड़ा है । ९४.१० करोड़ रुपये से यह ९३.६२ करोड़ रुपये हो गयी । अन्तिम आंकड़े ८३.६२ करोड़ रुपये हैं ।

†**श्री उमा नाथ** : क्या विदेशी मुद्रा बचाने के ख्याल से सोने के तस्कर व्यापार को रोकने के लिये कोई कदम उठाये गये हैं और, यदि हां, तो वे क्या कदम हैं और उनका क्या परिणाम निकला ?

†**श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा** : कदम उठाये गये हैं और स्थिति को देखते हुए समय समय पर उठाये जायेंगे । परन्तु निस्संदेह सरकार को सोने के तस्कर व्यापार की गम्भीर समस्या का पूरा पता है और सरकार इसको रोकने के लिये सभी कदम उठा रही है ।

---

†भूल अंग्रेजी में

†**श्री स० मो० बनर्जी** : वर्तमान आपातकाल को ध्यान में रखते हुए और इस बात को ध्यान में रखते हुए कि हमारे पास विदेशी मुद्रा की कमी है, मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या सरकार का विभिन्न विदेशी बैंकों में सभी विदेशी आस्तियों पर कब्जा करने का विचार है और क्या इस बारे में कोई निदेश जारी किये गये हैं ?

†**श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा** : जी, नहीं । विदेशी आस्तियों पर कब्जा करने का कोई प्रस्ताव नहीं है ।

†**श्री वी० चं० शर्मा** : विदेशी मुद्रा ग्रस्त ऐसी कौन कौन सी चीजें हैं जिन पर चालू वर्ष में, जब कि विदेशी मुद्रा की स्थिति इतनी खराब है, प्रतिबन्ध लगाये गये हैं ?

†**श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा** : यह बड़ा व्यापक प्रश्न है । वह एक पृथक प्रश्न पूछ सकते हैं ।

†**अध्यक्ष महोदय** : जी, हां श्री श्यामलाल सर्राफ ।

†**श्री श्याम लाल सर्राफ** : इस बात को ध्यान में रखते हुए कि हमें पूंजी वस्तुओं और मशीनों के आयात के लिये अपनी आवश्यकतायें पूरी करने के लिये विदेशी मुद्रा की आवश्यकता है, क्या मैं जान सकता हूं कि जहां तक वर्तमान वर्ष का सम्बन्ध है उन सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये सरकार क्या कदम उठायेगी ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यह बड़ा विस्तृत प्रश्न है ।

†**श्री श्याम लाल सर्राफ** : यह बड़ा संगत प्रश्न है ।

†**अध्यक्ष महोदय** : यह संगत और महत्वपूर्ण भी है परन्तु इसका उत्तर प्रश्न-काल में नहीं दिया जा सकता ।

†**डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी** : क्या विदेशों में रहने वाले भारतीयों और विदेशों में आमंत्रित व्यक्तियों और रायल्टी के रूप में विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाले लेखकों से सारी विदेशी मुद्रा रक्षित बैंक को देने को कहा जाता है और यदि हां, तो विदेशों में आमंत्रित भारतीयों और लेखकों द्वारा दिये जाने से इस देश को कुल कितनी विदेशी मुद्रा मिलती है ?

†**श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा** : उनके बारे में आंकड़े और पूरा ब्यौरा मेरे पास नहीं है । यह बताना बहुत कठिन है ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : मंत्री महोदय द्वारा पिछले जून में विदेश यात्रा पर कठोर प्रतिबन्ध लगाये जाने के बाद कितने शिष्टमंडलों, सरकारी और गैर-सरकारी को और शिष्टमंडलों के सदस्यों के साथ कितने और गैर-आवश्यक व्यक्तियों अर्थात् पत्नियों और सहायकों आदि को विदेश यात्रा के लिये विदेशी मुद्रा दी गयी ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यह प्रश्न इस से सम्बन्धित नहीं है ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : मंत्री महोदय इसका उत्तर देने को तैयार हैं । उनको कितनी विदेशी मुद्रा दी गयी ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यदि मंत्री महोदय उत्तर देने को तैयार हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है परन्तु यह बहुत कम सम्बन्धित है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री हरि विष्णु कामत** : कैसे ? मैं नहीं समझता कि यह बहुत कम सम्बन्धित कैसे है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : शान्ति, शान्ति ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : औचित्य प्रश्न के हेतु । मैं यह जानना चाहता हूं कि यह प्रश्न कैसे उत्पन्न नहीं होता है । मैं निवेदन करता हूं कि यह प्रश्न इस प्रश्न में से उत्पन्न होता है ।

†**अध्यक्ष महोदय** : मैंने कहा है कि यह इस प्रश्न से बहुत कम सम्बन्धित है ।

†**डा० क० ल० राव** : क्या सरकार उन प्रविधिविज्ञों को जो ऐसी वस्तुओं का पता लगाये जिनसे विदेशी मुद्रा का व्यय कम होगा, कोई प्रोत्साहन पारितोषिक देगी ?

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)** : यह एक सुझाव है ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : श्रीमन्, आपने कहा कि यह सम्बन्धित है, चाहे बहुत कम हो । फिर आप इसको कैसे अस्वीकार कर सकते हैं ? आपातकाल है और मुझे विश्वास है कि मंत्री महोदय यह बात समझते हैं । मैं यह जानना चाहता हूं कि शिष्टमंडलों को कितनी विदेशी मुद्रा दी गयी ।

†**अध्यक्ष महोदय** : शांति, शांति । श्री मुरारका ।

†**श्री हरिविष्णु कामत** : मैं नहीं समझता कि आप इसे कैसे अस्वीकार करते हैं । मैं तर्क नहीं समझ सकता ।

†**श्री मुरारका** : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से कुल कितना धन निकाला गया है और क्या यह ९३ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से धन निकालने के बाद निकाली गई है या उस के बगैर ?

†**श्री मोरारजी देसाई** : इस में मुद्रा कोष से निकाला गया धन शामिल है ।

†**अध्यक्ष महोदय** : बाज दफा मुझे अपने मित्रों से विभिन्न मत व्यक्त करना पड़ता है जिस से उन को भी हानि होती है ।

†**श्री हरिविष्णु कामत** : मैं बड़े सम्मानपूर्वक निवेदन करता हूं कि जब आप ने कहा कि यह बहुत थोड़ा सम्बन्धित है तो आप ने यह नहीं कहा कि यह सम्बन्धित नहीं है । अन्यथा मैं यह प्रश्न नहीं उठाता ।

†**अध्यक्ष महोदय** : जो प्रश्न बहुत कम सम्बन्धित होते हैं मैं उन के पूछे जाने की अनुमति नहीं दे सकता । मैं ने कहा कि यह बहुत कम सम्बन्धित है और इसलिये मैं इस के पूछे जाने की अनुमति नहीं दूंगा । अगला प्रश्न—श्री गोपालन ।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में शोध-कार्य करने वाले विद्यार्थी :

\+

†*९४. { **श्री अ० क० गोपालन :**
श्री प० कुन्हन :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में शोध कार्य कर रहे विद्यार्थियों की क्या संख्या है जिन्हें जुलाई, १९६१ से छात्रवृत्तियां दी गई हैं परन्तु अभी तक उन को इस का भुगतान नहीं किया गया है ; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) शीघ्र भुगतान करने के लिये सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ?

†शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली): (क) और (ख). जानकारी एकत्र की जा रही है और यथा समय सभा पटल पर रख दी जावेगी ।

†श्री अ० क० गोपालन : जानकारी एकत्र करने में विलम्ब क्या है । छात्रवृत्तियां दी गई हैं या नहीं ?

†डा० का० ला० श्रीमाली : हमने विश्वविद्यालय को लिखा है और जानकारी अभी नहीं आई है । अतः हमें प्रतीक्षा करनी पड़ेगी । जैसे ही जानकारी उपलब्ध हो जायेगी, मैं जानकारी को सभा पटल पर रख दूंगा ।

विश्वविद्यालयों मे गांधी भवन

†*९६. श्री विभूति मिश्र : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) उन विश्वविद्यालयों के क्या नाम हैं जिन को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गांधी भवन बनाने के लिये अनुदान दिये हैं ; और

(ख) किसी विश्वविद्यालय को अनुदान देने के क्या आधार हैं ?

†शिक्षा मंत्री (डा० का०ला० श्रीमाली) : (क) :—

(१) इलाहाबाद
(२) दिल्ली
(३) कर्नाटक
(४) मैसूर
(५) नागपुर
(६) पंजाब ; और
(७) राजस्थान ।

(ख) अनुदान उन विश्वविद्यालयों को दिये गये जिन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और गांधी स्मारक निधि की १: १ सहायता के तरीके पर गांधी भवन आरम्भ करने की इच्छा प्रकट की ।

†श्री विभूति मिश्र : विभिन्न राज्यों के विश्वविद्यालयों में जो गांधी भवन बनाये जायेंगे, क्या वहां पर गांधीजी के सम्बन्ध में लिट्रेचर का संग्रह होगा ? वहां पर और क्या काम होगा ?

†डा० का० ला० श्रीमाली: गांधीजी का जितना भी साहित्य है, वह वहां पर रखा जायेगा । विद्यार्थी उस का अध्ययन करेंगे और उस के बारे में चर्चा करेंगे ।

श्री विभूति मिश्र : क्या गांधीवाद के बारे में बताने के लिये विभिन्न यूनिवर्सिटीज को गांधीजी के तत्वों को खास तौर से जानने वाले विद्वानों और स्पेशलिस्ट्स की सेवाओं को उधार दिया जायेगा ?

---

†मल अंग्रेजी में

डा० का० ला० श्रीमाली : यह योजना किस तरह से काम में लाई जायेगी, यह तो यूनिवर्सिटीज़ के ऊपर है। लेकिन जहां जहां गांधी भवन होंगे, वहां समय समय पर गांधीवाद पर विचार किया जायगा, उस के अध्ययन की व्यवस्था होगी और वहां पर जो साहित्य होगा, उस से विद्यार्थियों को लाभ होगा।

डा० गोविन्द दास : अभी तक विभिन्न विश्वविद्यालयों में जिन गांधी भवनों का निर्माण हुआ है, क्या वे एक से हैं, या अलग अलग विश्वविद्यालयों में अलग अलग तरह के हैं ? जहां की दरख्वास्तें अभी सरकार के सामने मौजूद हैं, क्या वहां पर गांधी भवनों की स्थापना का जल्दी प्रयत्न किया जा रहा है ?

डा० का० ला० श्रीमाली : सब जगह पर गांधी भवन बिल्कुल एक से तो नहीं हैं। अलग अलग होंगे, लेकिन कोशिश यह की जाती है कि दृष्टिकोण सब का एक हो।

†**श्री पु० र० पटेल** : गांधी साहित्य सभी विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में पाया जाता है। सरकार के लिये गांधी भवन के लिये एक विशेष अनुदान देने की क्या आवश्यकता है ?

†**डा० का० ला० श्रीमाली** : प्रमुख उद्देश्य एक स्थान पर पृथक पुस्तकालय बनाना है। यदि विश्वविद्यालयों में पृथक संस्था रही, तो इस से निश्चित रूप से गांधीजी के उदेश्य और आदर्श अधिक लोकप्रिय होंगे।

†**श्रीमती सावित्री निगम** : प्रत्येक गांधी भवन में कितना व्यय किया जायेगा और क्या इस गांधी-शास्त्र में लोगों को प्रशिक्षित करने के लिये कोई विशेष व्यक्ति भी नियुक्त किये जायेंगे ?

†**डा० का० ला० श्रीमाली** : सहायता का सामान्य तरीका विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और गांधी स्मारक निधि से प्रत्येक के लिये अधिकतम ५०,००० रुपये है।

†**डा० पं० शा० देशमुख** : इस कार्य के लिये लगभग कितनी धनराशि उपलब्ध है और कितने विश्वविद्यालयों से गांधी भवन के निर्माण के लिये कहा गया है ?

†**डा० का० ला० श्रीमाली** : मैं प्रश्न के प्रथम भाग का उत्तर दे चुका हूं। गांधी भवन के निर्माण की १२ विश्वविद्यालयों में मंजूरी दी गई है। मैं नाम बता चुका हूं।

†**श्री त्यागी** : क्या मैं जान सकता हूं कि गांधीजी ने कितनी पुस्तकें लिखी जो इन पुस्तकालयों में रखी जायेंगी ?

†**डा० का० ला० श्रीमाली** : इस में केवल गांधीजी द्वारा लिखी गई पुस्तकें ही नहीं होंगी परन्तु गांधी जी के बारे में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखी गई पुस्तकें भी होंगी। गांधीजी के बारे में विभिन्न भाषाओं में सैकड़ों पुस्तकें हैं।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : शिक्षा मंत्री ने अभी बताया कि इतने विश्वविद्यालयों को गांधी भवन बनाने के लिये सहयोग दिया गया है। मैं यह जानना चाहता हूं कि सब को समान रूप से निधि दी गई है, अथवा उस निधि में कुछ अन्तर किया गया है। यदि अन्तर किया गया है, तो उस का कारण क्या है ?

डा० का० ला० श्रीमाली : समान रूप से दी गई है। दिल्ली यूनिवर्सिटी को ज्यादा रुपया दिया गया है, क्योंकि उस की योजना में थोड़ा ज्यादा खर्च हुआ था।

---

†मूल अंग्रेजी में

†श्री त्यागी : यह धन का अपव्यय है ।

†डा० का० ला० श्रीमाली : मैं माननीय सदस्य से सहमत नहीं हूं ।

†श्री त्यागी : मैं आप से सहमत नहीं हूं ।

†डा० का० ला० श्रीमाली : अपनी अपनी राय है ।

†अध्यक्ष महोदय : शान्ति, शान्ति ।

श्री कल्याय : क्या मैं जान सकता हूं कि गांधी भवनों की योजना पर कुल कितना खर्च होगा ?

डा० का० ला० श्रीमाली : मैंने इसका उत्तर दे दिया है कि गांधी स्मारक निधि और यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन दोनों इस में सहयोग देते हैं पचास हजार रुपए तक ।

केरल में मशीनी औजार कारखाना

†*९७. श्री विभूति मिश्र :
श्री प० कुन्हन :
श्री दीनेन भट्टाचार्य :
श्री कोया :
श्री मुरारका :

क्या इस्पात और भारी उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि केरल में सरकारी क्षेत्र में मशीनी औजार कारखाना स्थापित करने का प्रस्ताव है ; और

(ख) यदि हां, तो उस का क्या ब्योरा है ?

†इस्पात और भारी उद्योग मंत्रालय मे उपमंत्री (श्री प्र० चं० सेठी) : (क) और (ख). सरकार सरकारी क्षेत्र में एक और मशीनी औजार कारखाना स्थापित करने के प्रस्ताव पर विचार कर रही है । केरल में कारखाना स्थापित करने की संभावनाओं का परीक्षण किया जा रहा है ।

श्री विभूति मिश्र : यह विचार गवर्नमेंट के अंडर कंसिडरेशन कब तक रहेगा और कब सरकार इस काम को हाथ में लेगी ?

श्री प्र० चं० सेठी : हिन्दुस्तान मशीन टूल्ज इस का सरवे कर रहा है । जैसे ही यह सरवे का काम पूरा हो जायगा, वैसे ही यह काम हाथ लिया जायगा ।

श्री विभूति मिश्र : मैं यह जानना चाहता हूं कि यह काम कितने दिनों में होगा और क्या यह काम द्रुतगति से चल रहा है या धीमी गति से चल रहा है ।

श्री प्र० चं० सेठी : गति तो तीव्र ही है । बहुत शीघ्र ही उस को पूरा करने की कोशिश की जायगी ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†श्री इन्द्रजीत गुप्त : इस नये प्रस्तावित कारखाने की स्थापना की संभावना का परीक्षण करने में क्या सरकार इस तथ्य पर विचार कर रही है कि इस देश में बनाये जाने वाले वर्तमान मशीनी औजारों का दो-तिहाई भाग भारत के पूर्वी क्षेत्रों में स्थापित किया जावे और इसलिये इन मशीनों के परीक्षण का प्रश्न उत्पन्न होता है ?

†इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) : यह मुख्यतः निर्यात के लिये है और उसके लिये केरल को उपयुक्त स्थान समझा गया है।

†श्री मुरारका : इस नये कारखाने में उत्पादन का क्या तरीका है? क्या मैं जान सकता हूं कि क्या यह हिन्दुस्तान मशीन औजार जैसा ही है या कुछ नयी चीजें बनाई जायेंगी?

†श्री प्र० चं० सेठी : स्टैण्डर्ड, मीडियम और भारी मशीनी औजार १००० प्रति वर्ष है और यही क्षमता होगी। इसमें समानान्तर छिद्रण मशीनें, रेडियल छिद्रण, उत्पादन जिग छिद्रक, जिग छिद्रण मशीनें और विशेष प्रकार की मशीनें बनाने का प्रस्ताव है।

निर्धन योग्य छात्रों को ऋण

†*९८. + श्री सुरेन्द्र पाल सिंह :
श्री विभूति मिश्र :
श्री प० कुन्हन :
श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री भक्त दर्शन :
श्री सं० ब० पाटिल :
श्री प्र० क० गोपालन :
श्री कोल्ला वेंकैया :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या भारत सरकार निर्धन योग्य छात्रों को ऋण देने की एक योजना पर विचार कर रही है ;

(ख) यदि हां, तो यह धनराशि कितनी होगी और ऐसी छात्रवृत्तियों की क्या संख्या है; और

(ग) इस प्रयोजन के लिये प्रत्येक राज्य को कितनी धनराशि आवंटित की गयी है ?

†शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) जी, हां।

(ख) और (ग). ब्योरे को अन्तिम रूप दिया जा रहा है। दिये जाने वाले ऋण छात्र-वृत्तियों की संख्या वर्तमान संकट को ध्यान में रखते हुए योजना के लिये आवंटन पर निर्भर होगी।

†श्री सुरेन्द्रपाल सिंह : क्या इन ऋणों पर कोई ब्याज दिया जायेगा अथवा वे ब्याज मुक्त होंगे और उनका पुनर्भुगतान किस प्रकार किया जायेगा ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†डा० का० ला० श्रीमाली : योजना को अन्तिम रूप दिया जा रहा है। ऋण ब्याज मुक्त हो सकते हैं।

†श्री पें० वेंकटासुब्बया : क्या ये ऋण केवल तकनीकी विषयों के विद्यार्थियों को दिये जायेंगे अथवा वे सभी विषयों के विद्यार्थियों को दिये जायेंगे?

†डा० का० ला० श्रीमाली : सभी प्रकार के अध्ययन के लिये।

श्री विभूति मिश्र : मैं यह जानना चाहता हूं कि इस स्कीम के अन्तर्गत एक आदमी को कितना रुपया कर्ज दिया जायगा। और सरकार ने उस कर्ज के रीयलाइजेशन के बारे में क्या इन्तजाम किया है।

डा० का० ला० श्रीमाली : डीटेल्ज तो अभी निश्चित करनी हैं।

†श्रीमती सावित्री निगम : इस योजना के अधीन कितने विद्यार्थी आयेंगे अथवा इस योजना से कितने विद्यार्थियों को लाभ होगा और ऋण वापस किस प्रकार लिया जायेगा?

†अध्यक्ष महोदय : यह तो अभी वर्क आउट किया जा रहा है।

†श्री प० कुन्हन : इन छात्रवृत्तियों को देने के लिये आर्थिक स्थिति के बारे में क्या कसौटी निर्धारित की गयी है?

†अध्यक्ष महोदय : उन्होंने कहा है कि यह अभी वर्क आउट किया जा रहा है।

†श्री प्र० रं० चक्रवर्ती : पात्र विद्यार्थियों की निर्धनता निर्धारित करने की क्या कसौटी है?

†अध्यक्ष महोदय : पहले योजना तैयार हो जाये और फिर उत्तर दिये जा सकते हैं।

†श्री तुलसीदास जाधव : ब्योरे को कब अन्तिम रूप दिया जायेगा?

†डा० का० ला० श्रीमाली : यथा संभव शीघ्र।

†श्री सुरेन्द्रपाल सिंह : क्या उन व्यक्तियों को, जो विशेष अध्ययन के लिये विदेश जाना चाहते हैं, ऋण दिये जायेंगे?

†डा० का० ला० श्रीमाली : जी, नहीं। ये ऋण देश के भीतर अध्ययन के लिये दिये जायेंगे।

श्री प्रिय गुप्त : क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि लोन देते वक्त दलित वर्ग आदि का भी परिसंस्यन किया जायेगा या पावर्टी (दारिद्रय) ही इस सम्बन्ध में क्राइटेरियन रहेगा? गार्डियन की इनकम कितनी होने पर कोई व्यक्ति पुअर कहलायगा? किस बुनियाद पर ये लोन्ज बांटे जायेंगे? किस किस यूनिवर्सिटी में प्रो रेटा कितना दिया जायगा?

†अध्यक्ष महोदय : ये सब सवाल पहले ही किये गए हैं। मिनिस्टर साहब ने कहा है कि इन सब बातों को देखा जा रहा है।

†श्री प्रिय गुप्त : इस समिति के निदेश पद क्या है? किस बुनियाद पर लोन्ज दिये जायेंगे?

---

†मूल अंग्रेजी में

†अध्यक्ष महोदय : वह तो देखेंगे।

†श्री प्रिय गुप्त : मैं यह जानना चाहता हूं कि रुपया बांटने का क्राइटेरियन क्या सोचा है।

†अध्यक्ष महोदय : मिनिस्टर साहब ने कहा है कि कमेटी को इन बातों पर विचार करने के लिए कहा गया है ।

†श्री नरेन्द्र सिंह सिंड़ा : गुजरात राज्य को कितनी धनराशि आवंटित की गयी है ?

†अध्यक्ष महोदय : वह बाद में देखा जायेगा ।

पदाधिकारियों की निवृत्ति आयु

+

†*९९. डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री कोल्ला वेंकैया :
श्री मुरारका :
श्री गुलशन :
श्री बूटा सिंह :
श्री यो० ना० सिंह :
श्री प्र० कु० घोष :
श्री प्र० के० देव :
श्री ईश्वर रेड्डी :
श्री इन्द्रजीत गुप्त :
श्री यशपाल सिंह :
महाराजकुमार विजय आनन्द :
श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री अ० ब० राघवन :
श्री पोट्टेकाट्ट :
श्री इन्द्रजीत लाल मल्होत्रा :

क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार विभिन्न श्रेणियों के पदाधिकारियों की निवृत्ति आयु बढ़ाने के प्रश्न पर सक्रिय रूप से विचार कर रही है; और

(ख) यदि हां, तो अन्तिम निर्णय कब तक किये जाने की आशा है ?

†गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) : (क) और (ख). मामला विचाराधीन है।

†श्री हरि विष्णु कामत : क्या सरकार अब इस मामले पर राष्ट्रीय संकट काल के नवीन दृष्टिकोण से विचार कर रही है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**गृह-कार्य मंत्री (श्री लालबहादुर शास्त्री)** : चाहे राष्ट्रीय संकट काल हो या न हो इस मामले पर शीघ्रतापूर्वक विचार किया जाना होता है, किन्तु वर्तमान स्थिति में भवतः और भी अधिक आवश्यक होगा कि अनुभवी व्यक्तियों को अधिक देर तक रखा जाना चाहिये ।

†**श्री स० मो० बनर्जी और डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी उठे—**

†**अध्यक्ष महोदय** : श्री बनर्जी डा० सिंघवी पहले खड़े नहीं हुए ।

†**श्री लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** : मैं खड़ा हुआ था किन्तु आप अधिक चुस्त थे ।

†**अध्यक्ष महोदय** : यह आपातकालीन सत्र है अतः माननीय सदस्यों को सतर्क रहना चाहिये । श्री बनर्जी ।

†**श्री बनर्जी** : इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वेतन आयोग की सिफारिश इस नाम के बारे में एकमत से है कि निवृत्ति की आयु ५५ से बढ़ाकर ५८ कर दी जाये और इस बात की दृष्टि से भी कि हमारे अनुभव के आधार पर अधिकतर लोगों को निवृत्ति के पश्चात् नवीन नौकरी दी जाती है, मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार ने अन्तिम निर्णय कर लिया है, यदि नहीं तो निर्णय कब किये जाने की संभावना है ?

†**श्री लालबहादुर शास्त्री** : जैसा मैंने कहा, सरकार ने अन्तिम निर्णय नहीं किया है । किन्तु इस मामले पर गृह-कार्य मंत्रालय में विचार किया जा रहा है और हम वित्त मंत्रालय के साथ परामर्श कर रहे हैं । मुझे आशा है कि शीघ्र ही मामला मंत्री मंडल के सामने रखा जाएगा ।

†**डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** : क्या संकट काल को ध्यान में रखते हुए, कम से कम संकट काल के दौरान सेवा निवृत्ति की आयु बढ़ा दी जाएगी ?

†**श्री लालबहादुर शास्त्री** : हम अच्छे और कुशल अफसरों के संबंध में ऐसा कर ही रहे हैं । ऐसा कोई नियम नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति को निवृत्त ही किया जाना चाहिये । वास्तव में हाल ही में संभव है अधिकांश मामलों में मुझे आंकड़े सही याद नहीं हैं, किन्तु मैं समझता हूं कि ९० प्रतिशत से अधिक लोगों को पुनः नौकरी पर या सेवा विस्तार कर दिया गया है ।

श्री यशपाल सिंह : क्या सरकार के ख्याल में कभी यह बात आई है कि जो मोस्ट कम्पीटेंट हेडज हमारी यूनिवर्स्टीज तैयार कर रही हैं, अगर यह एक्सटेंशन दे दी गई तो उनकी सेवाओं से देश वंचित हो जाएगा और उन बच्चों का कैरियर भी खराब होगा?

श्री लालबहादुर शास्त्री जी नहीं ऐसी बात नहीं है । थोड़ा सा दो तीन साल तक कुछ नम्बर घटेगा, मगर जब लम्बे पीरियड को देखें. पांच दस बरस के पीरियड को देखें तो कोई ज्यादा असर उसमें पड़ने वाला नहीं है ।

†**श्री जयपाल सिंह** : क्या सरकार सैनिक कर्मचारियों की सेवा निवत्ति की आयु को भी बढ़ाने के प्रश्न पर विचार कर रही है ?

†**श्री लालबहादुर शास्त्री** : ठीक इस समय हम असैनिक कर्मचारियों के बारे में विचार कर रहे हैं ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†श्री हरिश्चन्द्र माथुर : क्या इस मामले में राज्य सरकारों से पूछा गया है क्यों कि इस के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार द्वारा जो कोई निर्णय किया जाता है उस का राज्य पर भी बड़ा असर होगा ? यदि हां, तो किन राज्यों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है तथा किस दिशा में ?

†श्री लालबहादुर शास्त्री : हमने राज्य सरकारों से परामर्श नहीं किया, किन्तु जहां तक अखिल भारतीय सेवाओं का सम्बन्ध है, हम उन से परामर्श करेंगे। अन्यों के बारे में राज्य सरकारों को कोई भी नीति अपनाने की छूट है ।

†श्री अ० प्र० जैन : क्या यह निर्णय सभी केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों पर समान रूप से लागू होगी अर्थात् प्रविधिक तथा गैर प्रविधिक दोनों पर ?

†श्री लालबहादुर शास्त्री : जी हां, ऐसा ही होगा ।

पुनर्वास वित्त प्रशासन

†*१००. श्री राजेश्वर पटेल : क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पुनर्वास वित्त प्रशासन की मूल ऋण और ब्याज के रूप में कुल कितनी धनराशि बहुत समय से बकाया है ;

(ख) इस धन राशि के इतने समय तक बकाया रहने के क्या कारण है : और

(ग) इसको वसूल करने के लिये क्या कदम उठाये गये हैं ?

†वित्त मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब० रा० भगत): (क) ३१ दिसम्बर, १९६१ को बकाया राशि मूल धन तथा ब्याज के रूप में क्रमश: ३.९४ करोड़ रुपये तथा १.२३ करोड़ रुपये थी।

(ख) मुख्य कारण है कि ऋण लेने वाले वित्तीय कठिनाइयों के कारण ऋण वापिस नहीं दे सके, प्राकृतिक आपदाओं भाषा सम्बन्धी झगड़ों आदि के कारण वसूली रोक दी गई थी, और पश्चिम बंग में प्रतिकर सम्बन्धी दावों के समायोजन में विलंम्ब हो गया था।

(ग) शेष बकाया राशि को वसूल करने के लिये कदम उठाये जा रहे हैं पुनर्वास वित्त प्रशासन अधिनियम १९४८ के अधीन, उन लोगों का उचित ध्यान रखा जाता है जहां वसूली करने से कठिनाई अत्यन्त होने की संभावना है ।

†श्री राजेश्वर पटेल : कितने प्रतिशत ऋण और ब्याज पश्चिम पाकिस्तान के शरणार्थियों के बारे में है ।

†श्री बी० रा० भगत : पश्चिम प्रदेश के ४६७० मामले में १.९८ करोड़ रुपये है ।

†श्री राजेश्वर पटेल: किसी एक व्यक्ति के बारे में अधिकतम राशि कितनी बकाया है ? क्या उन लोगों के नाम बताये जा सकते है ? १०००० रुपये, २०००० रुपये १ लाख रुपये ?

†श्री ब० रा० भगत : मेरे पास आंकड़े नहीं हैं। यदि वह विशिष्ट सूचना दें तो में सूचना दूंगा ।

---

†मूल अंग्रेजी में

सोलवीन समिति की सिफारिशें

+

†*१०१. श्री मुरारका :
श्री रवीन्द्र वर्मा :
श्री कु० चं० पन्त :

क्या इस्पात और भारी उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने सोलवीन समिति की सिफारिशें स्वीकार कर ली हैं ;

(ख) उन सिफारिशों का क्या हुआ ;

(ग) इन सिफारिशों को क्रियान्वित करने के लिये अब तक कुल कितना धन खर्च किया गया है ; और

(घ) अभी कितनी धन राशि खर्च की जाने के लिये बाकी है ?

†इस्पात और भारी उद्योग मंत्रालय में उपमंत्री (श्री प्र० चं० सेठी): (क) से (घ). सोलवीन समिति की एक मुख्य सिफारिशें पुर्जों, इंजन डिब्बों आदि तथा सामान और संधारण एवं संचालन को बढ़ाने के लिये अतिरिक्त विदेशी प्रविधिक कर्मचारियों को लगाने के सम्बन्ध में हैं । पुर्जों और अन्य सामान पर लगभग डी० एम० ४.१० लाख (४८·५० लाख रुपये) खर्च होने का अनुमान है । लगभग डी० एम० २०७ लाख की लागत के पुर्जों और सामान आदि के आदेश दिये जा चुके हैं और शेष के लिये आर्डर शीघ्र ही दिये जाने की संभावना है । अतिरिक्त कर्मचारियों को लगाने के लिये प्रबंध भी कर लिया गया है । समिति की अन्य सिफारिश संयंत्र के विशिष्टि एकांशों से सम्बन्धित अभी हिन्दुस्तान स्टील लिमिटड द्वारा कार्यान्वित की जा रही है ।

†श्री मुरारका : क्या आयात किये जाने वाले पुर्जों में से कोई हमारे पास आ चुका है ?

†इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) : जी हां । उनमें से कुछ पुर्जे आ चुके है ।

†श्री मुरारका । सिफारिशों की कार्यान्वित के परिणाम स्वरूप क्या रुरकेला इस्पात संयंत्र में उत्पादन में वृद्धि हुई है ?

†श्री चि० सुब्रह्मण्यम : जी हां, इस में काफी उन्नति हुई है ।

†श्री इन्द्रजीत गुप्त : सोलवीन समिति द्वारा प्रतिवदन दिये जाने के बाद रूरकेला में कितने और जर्मन शिल्पिक काम पर लागाये गये हैं ?

†श्री चि० सुब्रह्मण्यम : और चालीस के साथ करार किया गया है। उनमें से सात आ चुके हैं । अन्य लोग आ रहे हैं ।

†श्री शिवाजी राव श० देशमुख : क्या सोलवीन समिति की एक सिफारिश यह भी कि रूरकेला की कुछ शाखाओं में अधिक कर्मचारी हैं ?

†श्री चि० सुब्रह्मण्यम : जी हां । कुछ शाखाओं में आवश्यकता से अधिक लोग है । उनको विस्तार के समय खपाया जायेगा ।

---

†मूल अंग्रजी में

हिन्दुस्तान स्टील लि० द्वारा विलम्ब शुल्क का भुगतान

†*१०२. **श्री गो० महन्ती** : क्या इस्पात और भारी उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या फरवरी, १९६१ में बनाई गई जांच समिति ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत कर दिया है, जो कि उन परिस्थितियों की जांच के लिय बनाई गई थी, जिन में हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड को १-४-५८ से ३१-३-६१ की अवधि तक में ४७ लाख रुपय अधिक का भारी विलम्बशुल्क, देना पड़ा था ; और

(ख) चालू वर्ष में अब तक हिन्दुस्तान स्टील लि० को कितना विलम्बशुल्क देना पड़ा है ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्रालय में उपमंत्री (श्री प्र० चं० सेठी)**: (क) हां, श्रीमान्।

(ख) चालू वर्ष में हिन्दुस्तान स्टील लि० को निम्न विलम्ब शुल्क देना पड़ा :—

रूरकेला स्टील प्लांट—अप्रैल-मई, १९६२; १,५९,८७२ रु०

भिलाई स्टील प्लांट—अप्रैल सितम्बर, १९६२ : ५,५४,२०४ रु०

दुर्गापुर स्टील-प्लांट—अप्रैल-सितम्बर, १९६२ : ४,५४,३६६ रु ०

श्री गो० महन्ती : समिति के निष्कर्ष क्या हैं, क्या समिति ने उत्तरदायित्व निर्धारित कर दिया है और इस मामले में सरकार का विचार क्या कार्यवाही करने का है ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम)** : साधारणतया इसका कारण यह है कि वैगनों से सामान उतारने के लिये निःशुल्क जो समय दिया जाता है, वह पर्याप्त नहीं है। रेलवे से पत्र व्यवहार हुआ है। वे निःशुल्क समयावधि बढ़ाने से सहमत नहीं है। यथाशीघ्र सामान उतारने का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है ।

†**श्री हरिविष्णु कामत** : मंत्री महोदय का उत्तर एकदम असंतोषजनक है। समिति ने उन परिस्थितियों का ब्योरा दिया है जिन में यह विलम्ब शुल्क दिया गया। हमें जानना चाहिये कि उत्तरदायी व्यक्तियों से चाहे वे सरकारी कर्मचारी हों या जो भी हों, उत्तर मांगा गया है। यह रेलवे को दोष देने का प्रश्न नहीं है ।

†**श्री चि० सुब्रह्मण्यम** : कुछ बातें है जिनमें सुधार करने के लिये हम निरन्तर प्रयास कर रहे है । कठिनाई यह है कि बहुत अधिक वैगन इकटठे हो जात है। वे निश्चित समय पर नहीं आते। एक दिन अधिक संख्या में आ जाते हैं। अतः वैगनों को खाली करने में विलम्ब हो जाता है। हम रेलवे से समायोजन प्राप्त करने का प्रयास कर रहे है। आशा है कि भविष्य में सुधार हो जायेगा।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : श्रीमान्, मेरा आपसे निवेदन है कि रेलवे के उत्तरदायी होने के कारण आप रेलवे मंत्री से इस मामले की जांच करने और यह देखने के लिये कहें कि रेलवे कर्मचारियों से उत्तर क्यों नहीं मांगा जाता। यह दण्डनीय जैसी उपेक्षा है ।

अध्यक्ष महोदय : रेलवे मंत्री यहां नहीं है, परन्तु उन्होंने इस बारे में अवश्य सुन लिया होगा।

†**श्री रंगा** : यह मामला पिछले तीन वर्षों से चल रहा है ।

†**अध्यक्ष महोदय** : उपेक्षा या सराहना उन्हें बता दी जायेगी ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†श्री हरि विष्णु कामत : आशा है कि संसदीय-कार्य मंत्री इस बारे में रेलवे मंत्री को बता देंगे ।

हिन्दी में "त्रिपिटक"

+

†*१०३. श्री भक्त दर्शन :
श्री भागवत झा आजाद :

क्या शिक्षा मंत्री २९ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या १९७६ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) बौद्ध ग्रन्थ "त्रिपिटक" का हिन्दी में अनुवाद करने के बारे में क्या निश्चय किया गया है; और

(ख) उस निश्चय को कार्यान्वित करने के लिये क्या व्यवस्था की जा रही है ?

†शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) और (ख). अभी मामला विचाराधीन है ।

श्री भक्त दर्शन : इस सम्बन्ध में निर्णय करने में इतनी देरी क्यों हो रही है, क्या इस पर प्रकाश डाला जायगा ?

†डा० का० ला० श्रीमाली : मुख्य कारण यह है कि प्रस्ताव करने वाला व्यक्ति अभी तक उचित प्रस्तावक प्राधिकार नहीं खोज सका है । वस्तुत्व, अनेक परिवर्तन हो गये हैं । एक अवस्था में, यह कहा गया था कि यह काम बिहार सरकार की सहमायता से किया जा सकता है । बाद में कहा गया कि यह काम दिल्ली विश्वविद्यालय की सहायता से किया जा सकता है । अतः अभी यह सम्बन्धित व्यक्ति के साथ विचाराधीन है ।

†श्री भागवत झा आजाद : क्या विलम्ब का एक कारण यह है कि सरकार इस योजना के साथ समान बौद्ध साहित्य का अनुवाद करने का विचार कर रही है ?

†डा० का० ला० श्रीमाली : नहीं, सरकार का ऐसा कोई विचार नहीं है ।

डा० गोविन्द दास : क्या गवर्नमेंट इस बात पर भी विचार कर रही है कि यह काम नागरी प्रचारिणी सभा या इस प्रकार की किन्हीं दूसरी संस्थाओं को दिया जाय और उन को इस कार्य के लिए अनुदान दिया जाय ?

डा० का० ला० श्रीमाली : अगर कोई संस्था इसको लेना चाहे तो शौक से ले ।

बुनियादी शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय बोर्ड

†*१०४. श्रीमती मैमूना सुल्तान : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या बुनियादी शिक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय बोर्ड की १० और ११ अगस्त, १९६२ को दिल्ली में बैठक हुई थीं ;

(ख) यदि हां, तो उन बैठकों में क्या मुख्य सिफारिशें की गई थीं ; और

(ग) उन पर सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

---

†मूल अंग्रजी में

†शिक्षा मंत्रालय म उपमंत्री (श्रीमती सौंदरम रामचन्द्रन) :(क) से (ग). एक विवरण पटल पर रखा जाता है।

विवरण

(क) हां, श्रीमान्।

(ख) बोर्ड ने निम्न मुख्य सिफारिशें की थीं :—

(१) प्रारम्भिक स्कूलों को बुनियादी स्कूल बनाने के प्रोग्राम को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिये। इस कार्य के लिए आवश्यक धन तुरन्त उपलब्ध किया जाना चाहिये और यह देखने के लिए कार्यवाही की जानी चाहियें कि समूचा प्रोग्राम यथाशीघ्र व प्रभावी ढंग से लागू किया जाये।

(२) साधारण प्रारम्भिक स्कूल को बुनियादी स्कूल बनाने के लिए आवश्यक न्यूनतम प्रोग्राम की जांच करने, उसकी वित्तीय संभावनाओं का ब्यौरा तैयार करने और राज्य सरकारों द्वारा लागू किया जा सकने वाला व्यावहारिक प्रोग्राम का सुझाव देने के लिए बोर्ड को एक उप-समिति बनानी चाहिये।

(३) कुछ चुने स्थानों में सघन रूप से बुनियादी शिक्षा के प्रयोग का विकास करने की सम्भावनाओं का पता लगाया जाना चाहिय।

(ग) प्रारम्भिक स्कूलों को बुनियादी स्कूल बनाने के प्रोग्राम को राज्य सरकार अपनी तीसरी पंचवर्षीय योजना में शामिल करके पहिले से ही लागू कर रही है।

सिफारिश संख्या (२) और (३) पर कार्यवाही करने के लिए एक उप-समिति बनाई जा चुकी है।

---

†श्रीमती मैमूना सुल्तान : क्या यह सच है कि मंत्री जी ने राष्ट्रीय बुनियादी शिक्षा बोर्ड के सामने कहा है कि देश में बुनियादी शिक्षा असफल रही है और यदि हां, तो असफलता के क्या कारण है ?

†श्रीमती सौन्दरम रामचन्द्रन : यह कहा गया था कि हम ने जिस प्रकार इसका प्रोग्राम बनाया है, उससे हमारी आशायें सन्तुष्ट नहीं हुई है। अतः वहां तक यह कार्यक्रम असफल रहा है। अतः बोर्ड इसे अधिक सफल बनाने की कार्यवाही की और इस बात की सिफारिश कर रहा है कि इसे विभिन्न स्थानों पर सफल कैसे किया जा सकता है।

†श्री श्री नारायण दास : विवरण से विदित होता है कि साधारण प्रारम्भिक स्कूल को बुनियादी स्कल बनाने के लिए न्यूनतम आवश्यक प्रोग्राम की जांच करने के लिए एक उपसमिति बनाई गई है। उप-समिति में कौन कौन हैं और उसके निर्देश-पद क्या हु ?

†श्रीमती सौन्दरम रामचन्द्रन : श्री जी० रामचन्द्रन, मिस मरजोरी साइक्स, श्री अरुणाचलम, श्री डी० पी० नायर, श्री एल० आर० देसाई, श्री राधाकृष्ण और श्री ज० पी० नायक इस समिति के सदस्य है। श्री जे० पी० नायक इस समिति के सचिव हैं। निर्देश-पद निम्न हैं। प्रथम, इन्हें उन तीनों राज्यों का पता लगाना है जिन्हें इसके विकास के लिए लिया जा सकता है। उप-समिति को शिल्पि तथा अन्य बातों में रूपभेद करने का भी सुझाव देंगे ताकि इसे उपयोगी ढंग से लागू किया जा सके और वह अधिक आकर्षक हो जाय। फिर, किसी भी साधारण स्कूल को बुनियादी स्कूल बनाने के लिए वे न्यूनतम सिद्धान्त बनाते हैं और यह भी निर्धारण करते हैं कि प्रत्येक स्कूल की वित्तीय संभावना क्या है। ये मुख्य निर्देश-पद हैं।

---

†मूल अंग्रेजी में

†श्री श्यामलाल सर्राफ : पिछले बीस या बाईस वर्ष से बुनियादी शिक्षा का काम करने के बाद अब यह कहा जा रहा है कि यह असफल रहा है। क्या समूचे देश का यही अनुभव रहा है या यह अनुभव केवल कुछ राज्यों का है ?

†श्रीमती सौन्दरम रामचन्द्रन : यह कहना गलत है कि बुनियादी शिक्षा असफल हो गई है। हमने इसे उचित ढंग से लागू नहीं किया है और वहां तक हम असफल रहे हैं। अतः, प्रश्न यह है कि इसे सफल कैसे बनाया जाये और इसी काम के लिए यह उप-समिति नियुक्त की गई है।

†श्री त्यागी : क्या यह सच है कि यह शिक्षा केवल अभागे ग्रामवासियों के हिस्से में आई है जब कि नगर वालों को उच्च स्तर की शिक्षा दी गई है और क्या यह सच है कि बुनियादी शिक्षा विद्यार्थियों और गांवों में लड़कों का स्तर ऊंचा करने में तुलनात्मक रूप से असफल रही है।

†श्रीमती सौन्दरम रामचन्द्रन : आंशिक रूप से यह भी सच है कि यह योजना उप-नगरों में लागू नहीं की जाती। यही कारण है कि यह नई उप-समिति उप-नगरों की भी परिस्थितियों के अनुकूल बुनियादी शिक्षा को लागू करने के मार्गोपाय ढूंढेगी।

†डा० लक्ष्मी मल सिंघवी : : शिक्षा की यह योजना लागू करने पर कुल कितना व्यय होगा ? वर्तमान स्थिति को ध्यान में रख कर, क्या अभी समूचा प्रोग्राम समाप्त नहीं किया जा सकता ?

†श्रीमती सौन्दरम रामचन्द्रन : यह इस समिति का एक निर्देश-पद है कि न्यूनतम वित्तीय संभावना कब होगी।

श्री रामसेवक यादव : जो बुनियादी शिक्षा की असफलता है वह क्या इसलिये है कि कई प्रकार की शिक्षा नीतियां चल रही है, एक प्रकार की नहीं है ? यदि एसा है, तो क्या एक ही प्रकार की शिक्षा नीति सारे देश में चलाई जायगी ?

†श्रीमती सौन्दरम रामचन्द्रन : शिक्षा तो एक तरह की होनी चाहिये और अच्छी भी होनी चाहिये, लेकिन क्या क्या काम हम कहां कहां सिखा सकते है इस पर बहुत कुछ निर्भर करता है। हो सकता है कि रा मैटीरियल और फिनिश्ड प्रोडक्ट्स के कारण क्राफ्ट्स अलग अलग हो जायें।

†श्रीमती रेणुका राय : क्या यह सच है कि बुनियादी शिक्षा, जैसी कि पश्चिमी बंगाल में आरम्भ की गई है, सफल रही है और प्राचीन प्रारम्भिक शिक्षा में एक सुधार है ?

†श्रीमती सौन्दरम रामचन्द्रन : कुछ राज्यों के कुछ क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा के स्कूल बहुत ही सफलता से चलाये गये है। यही कारण है कि आशा की जाती है कि यदि यह उचित रूप में लागू हो जाये, तो यह अच्छी शिक्षा बन सकती है।

†श्रीमती ज्योत्सना चन्दा : सरकार का विचार इस उप-समिति को सिफारिशों को कब लागू करने का है ?

†श्रीमती सौन्दरम रामचन्द्रन : जब हमें उप-समिति की सिफारिशें प्राप्त होंगी, तो हम उन्हें यथाशक्ति लागू करेंगे।

---

†मूल अंग्रेजी में

'स्लैग' सीमेंट का उत्पादन

+

†*१०५. श्री श्याम लाल सर्राफ :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री बसुत्तारी :

क्या इस्पात और भारी उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भिलाई और दुर्गापुर के इस्पात कारखानों में "स्लैग" सीमेंट का उत्पादन शुरू हो गया है;

(ख) यदि हां, तो १९६२–६३ में कुल कितना उत्पादन होने की आशा है; और

(ग) यदि उक्त दो कारखानों में यह प्रयोग सफल हुआ तो क्या 'स्लेग" सीमेंट का उत्पादन रूरकेला कारखाने में भी शुरू किया जायेगा ?

†इस्पात और भारी उद्योग मंत्रालय में उपमंत्री (श्री प्र० चं० सेठी): (क) और (ख) स्लैग सीमेंट बनाने के लिये दानेदार स्लैग सीमेन्ट कम्पनियों को इस्पात कारखानों द्वारा दिया जायेगा । भिलाई में स्लैग को दानेदार बनाने का संयंत्र लगाया जा रहा है । दुर्गापुर में संयंत्र लगाने की परियोजना तैयार की जा रही है ।

(ग) हां, श्रीमान । रुरकेला में भी दानेदार स्लैग बनाने का विचार है ।

†श्री श्याम लाल सर्राफ : क्या भिलाई कारखाने में इस्पात आरम्भ हो गया है ?

†इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) : अभी नहीं ।

†श्री रंगा : इस अतिरिक्त संयंत्र का विकास करने के लिये कितना अतिरिक्त विनियोग किया जा रहा है ?

†श्री टि० सुब्रह्मण्यम : मुझे दुःख है कि तत्काल मेरे पास आंकड़े नहीं हैं ।

†श्री सोनावाने : क्या दानेदार सीमेन्ट उसी प्रकार की होगी जैसीकि प्रचलित सीमेन्ट की है ?

†श्री चि० सुब्रह्मण्यम : हां, श्रीमान ।

अन्डमान के समीप जलमग्न घाटी

+

†*१०६. श्रीमती सावित्री निगम :
श्री विभूति मिश्र :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री प्र० के० देव :
श्री अ० ना० विद्यालंकार :

क्या वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या एक अनुसंधान जहाज पर एक रूसी अभियान दल ने अंडमान के समीप एक जल-मग्न घाटी का पता लगाया है ;

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) यदि हां, तो उस का ब्योरा क्या है ;

(ग) भारतीय नौवहन सेवाओं में काम करने वाले भारतीय कर्मचारियों ने किस हद तक रुसी अनुसन्धान जहाज से लाभ उठाया है ; और

(घ) अभियान दल ने क्या क्या खोज की है ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (डा० म० मो० दास) :** (क) और (ख) : अभी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है ।

(ग) रुसी पोत विटयाज पर छः भारतीय वैज्ञानिकों ने समुद्र विज्ञान के विभिन्न पहलुओं का अनुभव प्राप्त किया है ।

(घ) अभियान वर्ष १९६४ के अन्त तक चल रहा है और अभी परिणाम के बारे में नहीं कहा जा सकता ।

†**श्रीमती सावित्री निगम :** क्या इस रुसी अभियान में कोई भारतीय वैज्ञानिक भी सम्मिलित हैं और यदि हां, तो क्या उन्होंने कोई अन्तरिम रिपोर्ट दी है या नहीं ?

†**डा० म० मो० दास :** 'विटियाज' पोत पर छः भारतीय वैज्ञानिक हैं । परन्तु कोई अन्तरिम रिपोर्ट नहीं दी गई है ।

†**श्रीमती सावित्री निगम :** क्या माननीय मंत्री को विदित है कि उन्हों ने कहा है कि अन्दमान के पास एक जलमग्न घाटी का पता लगा है ?

†**डा० म० मो० दास :** भारतीय वैज्ञानिकों के ऐसे किसी वक्तव्य का हमें पता नहीं है ।

श्री विभूति मिश्र : मैं जानना चाहता हूं कि अगर अण्डर वाटर वैली मिल जायेगी तो सरकार उसका कौन सा उपयोग करेगी ?

†**डा० म० मो० दास :** अभी कोई भी निश्चय नहीं किया जा सकता । वहां अनेक पोत हैं—उन में चार भारतीय पोत हैं और अनेक अन्य देशों के हैं । ये सभी पोत हिन्द महासागर में जांच पड़ताल कर रहे हैं । उन्हें जो परिणाम प्राप्त होंगे उनका समन्वय करना होगा और फिर निश्चित निष्कर्ष निकालने होंगे ।

गोआ में बैंक

+

†*१०७ { **श्री नरेन्द्र सिंह महीडा :**
श्री सोलंकी : }

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार ने गोआ में 'बैनको नेशनल अल्ट्रामैरीनो' को बन्द कर दिया है ;

(ख) यदि हां, तो कर्मचारियों को रोजगार पर लगाने की व्यवस्था करने के लिये क्या कार्यवाही की गई है ; और

(ग) पेंशन प्राप्त करने वालों की क्या स्थिति होगी ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†वित्त मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब० रा० भगत): (क) से (ग) अपेक्षित जानकारी देने वाला एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है ।

विवरण

(क) भारत में पुर्तगाली बस्तियों की स्वतंत्रता के बाद 'बैनको नेशनल अल्ट्रामैरीनो' की गोआ, दमन और दीव की शाखायें सेना गवर्नर के आदेश से बन्द कर दी गई थीं । कपटपूर्ण तथा अधिमान्य भुगतान रोकने और रिजर्व बैंक को स्थिति की कुछ ब्यौरावार जांच करने का मौका देने के लिये ऐसा किया गया है । गोआ, दमन और दीव (बैंक पुनर्निर्माण) विनियम, १९६२ के अनुसार, जिसे हाल में राष्ट्रपति ने संविधान के अनुच्छेद २४० के अन्तर्गत प्रख्यापित की थी, जनता को देय राशियां कुछ शर्तों पर दी जायेंगी । यह कार्य अभिरक्षक द्वारा अधिसूचित किसी तारीख से होगा और तारीख की अधिसूचना बाद में की जायेगी ।

(ख) परतन्त्रता से मुक्ति के समय बैंकों नेशनल आल्ट्रामैरीनो के १३८ कर्मचारी थे और उन की सेवायें १ फरवरी, १९६२ से समाप्त कर दी गई थीं । बैंक के ५० भूतपूर्व कर्मचारी इस बीच भारत के राज्य बैंक, बैंक आफ इंडिया और बैंको नेशनल अल्ट्रामैरीनो के अभिरक्षक के कार्यालय में काम पर लगा दिये गये हैं या काम पर लगाने का प्रस्ताव किया गया है । २३ भूतपूर्व कर्मचारियों के प्रार्थनापत्र स्टेट बैंक आफ इण्डिया के विचाराधीन हैं । अन्य कर्मचारी या तो पुर्तगाल चले गये हैं या उन की आयु अधिक है या उन्होंने पुनः रोजगार का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया है ।

(ग) बैनको नेशनल अल्ट्रामैरीनो से पेंशन लेने वाले व्यक्तियों को जो गोआ, दमन और दीव में रहते थे और भारतीय नागरिक बन गये हैं, उन शर्तों पर पेंशन मिलती रहेगी जिन पर उन्हें परतंत्रता से मुक्ति के समय मिल रही थी । ऐसे अन्य कर्मचारियों को, जो भारतीय नागरिक हैं और पेंशन पाने के पात्र हैं परन्तु जिन्हें अब तक कोई पेंशन नहीं दी गई है, अतिव्यस्कता लाभ देने के प्रश्न पर विचार किया जा रहा है ।

†श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ी : बैनको नेशनल अल्टामैरीनों में निक्षेपकों ने कितनी राशि जमा की थी ?

†श्री ब० रा० भगत : कुल निक्षेप दायित्व 'करेंसी' के खाते में ९.३४ करोड़ रुपये और निक्षेपों के खाते में ११.४५ करोड़ रुपये था ।

†श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा : इन निक्षेपों का क्या हुआ ?

†श्री ब० रा० भगत : जहां तक जमा दायित्व का संबंध है, कुछ मामलों में उस का भुगतान करने के प्रयत्न किये जा रहे हैं और अन्य मामलों में जहां दायित्व तत्काल पूर्ण देय नहीं हैं, वे केवल इस बैंक से आस्तियों के प्राप्त होने पर देय होंगे ।

†अध्यक्ष महोदय : मैं ने यह देखने के लिये कार्य बन्द कर दिया है कि बातें बन्द होती हैं या नहीं और अब मैं देखता हूं कि कार्यवाही बन्द करते ही बातें रुक गईं । परन्तु यदि अब मैं कार्यवाही आरम्भ करता हूं, तो शायद सदस्य फिर बातें करने लगेंगे ।

---

†मूल अंग्रेजी में

पश्नों के लिखित उत्तर

राष्ट्रीय खेल कोष

*१०८ श्री मोहन स्वरूप :
श्री राम रतन गुप्त :
महाराजकुमार विजया आनन्द :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि अखिल भारतीय खेल परिषद् ने सिफारिश की है कि सरकार को राष्ट्रीय खेल कोष बनाना चाहिये और सरकारी खेल केलेंडर प्रकाशित करना चाहिये और देश में खेल के मैदानों की व्यवस्था करनी चाहिये ; और

(ख) उन की रिपोर्ट का ब्योरा क्या है, और क्या इस में क्रिकेट, हाकी, बिलियर्ड, टेनिस आदि के सम्बन्ध में भी सिफारिशें की गई हैं और सरकार ने इन को कार्यान्वित करने के लिये क्या कार्यवाही की है ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली): (क) और (ख) अपेक्षित सूचना का विवरण सभा-पटल पर रख दिया गया है ।

विवरण

• मार्च, १९६२ में हुई प्रथम अखिल भारतीय खेल कांग्रेस के द्वारा की गई सिफारिशों पर विचार करने के बाद, अखिल भारतीय खेल परिषद् ने, प्रश्न में उठाये गये मुद्दों पर निम्नांकित सिफारिश की हैं :—

(१) **राष्ट्रीय खेल कोष:**—परिषद् ने एक राष्ट्रीय खेल कोष बनाने की सिफारिश की थी । देश में खेलों के विकास के लिये धन एकत्रित करने के प्रयोजन से अखिल भारतीय स्तर के व्यक्तियों द्वारा बनाई गई एक छोटी सी समिति इस परिषद का प्रशासन करेगी ।

(२) **खेल कैलेंडर का प्रकाशन :** परिषद् ने सिफारिश की थी कि शिक्षा मंत्रालय को एक खेल कैलेंडर प्रकाशित करना चाहिये । जिस में राज्य और राष्ट्रीय दोनों स्तर पर होने वाली प्रमुख प्रतियोगिताओं की तारीखों का संकेत हो ताकि मुख्य मुख्य प्रतियोगिताएं एक ही तारीखों पर न पड़ें ।

(३) **खेल मैदानों की व्यवस्था :**—परिषद् ने सिफारिश की थी कि देश में खेल के मैदानों को सुरक्षित रखने के लिये विधान बनाने के प्रश्न पर भली भांति विचार किया जाय और उस के लिये आवश्यक कार्रवाई तुरन्त शुरु कर देनी चाहिये ।

(४) **क्रिकेट, हाकी, बिलियार्ड, टैनिस आदि :**—किसी विशेष खेल के लिये कांग्रेस और परिषद् ने कोई सिफारिश नहीं की है ।

भारत सरकार समझती है कि राष्ट्रीय खेल कोष को शुरु करने के लिये यह समय उपयुक्त नहीं है । उपर्युक्त अन्य सिफारिशों पर ध्यान दिया जा रहा है ।

क्षेत्रीय भाषाओं और हिन्दी की पाठ्य पुस्तक

†*११०. **श्री रामेश्वर टांटिया :**
श्री श्यामलाल सर्राफ :
श्री बसुमतारी :
श्री अ० क० गोपालन :
श्री प० कुन्हन :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह मंत्री यह बतालाने की कृपा करेंगे कि :

(क) हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्य पुस्तकों तथा संदर्भ पुस्तकों के तैयार करने की भारत सरकार की प्रस्थापना के बारे में विश्वविद्यालयों की प्रतिक्रिया क्या है ;

(ख) इस योजना के लिए केन्द्रीय सरकार कितने प्रतिशत सहायता देगी ; और

(ग) अन्तिम रूप में कब तक इस योजना को कार्यान्वित किया जायेगा ?

†**शिक्षा मंत्री डा० का० ला० श्रीमाली**) : (क) एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । [**देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या २०**]

(ख) (१) भारत सरकार द्वारा दी गई पुस्तकों के लिए शत प्रति शत वित्तीय सहायता देगी।

(२) स्थानीय प्रयोग के लिए विश्वविद्यालयों द्वारा चुनी गई और भारत सरकार द्वारा अनुमोदित पुस्तकों के लिए ५०प्रतिशत वित्तीय सहायता दी जायेगी ।

(ग) यह पहिले से भी लागू की जा रही है और विश्वविद्यालय को दिया गया अनुवाद कार्य चल रहा है । कार्य निरन्तर प्रकार का है ।

स्कूलों की श्रंखला

***१११. श्री सरजू पाण्डेय** : क्या **शिक्षा** मंत्री २५ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ५७५ के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सरकारी कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए स्कूलों के बढ़ाने में इस बीच क्या प्रगति हुई है ; और

(ख) पूरे देश में शिक्षा प्रणाली में एक समता लाने के प्रयत्न में कहां तक कामयाबी मिली है ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) और (ख). एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है ।

विवरण

(क) केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों तथा एक जगह से दूसरी जगह आने जाने वाली जनता के बच्चों के लिए देश के विभिन्न भागों में स्कूल खोलने की योजना भारत सरकार के विचाराधीन है ।

(ख) भारत सरकार को समस्त देश में शिक्षा प्रणाली में एक रूपता लाने का कोई वैधानिक अधिकार प्राप्त नहीं है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

जीवन बीमा निगम के दावे के बारे में मद्रास उच्च न्यायालय का निर्णय

†*११४. श्री पोट्टेकाट्ट :
श्री श्यामलाल सर्राफ :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री हिम्मतसिंहका :

क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान मद्रास उच्च न्यायालय के हाल ही के एक निर्णय की ओर दिलाया गया है जिस में जीवन बीमा निगम की इस बात के लिये आलोचना की गई है कि उसने एक दावे की मियाद निकल जाने दी ; और

(ख) यदि हां, तो सरकार का दावों के निबटारे में होने वाले विलम्ब को कम करने के लिये क्या कार्यवाही करने का विचार है ?

†**वित्त मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब० रा० भगत)** : (क) हां, श्रीमन् ।

(ख) सरकार को कोई कार्यवाही करने की आवश्यकता नहीं है । पालिसी मालिकों के उचित दावों का यथाशीघ्र भुगतान करने के अपने कर्तव्य का निगम को ज्ञान है । शीघ्र मृत्यु-दावों के मामले में, दावों की राशि का भुगतान करने से पहिले पूछताछ करनी होती है और निगम यथाशीघ्र जांच पड़ताल करने का भरसक प्रयास करती है

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा कोष

†*११५. श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री ओंकार सिंह :
श्री बाल्मीकी :
श्री रघुनाथ सिंह :
श्री बेरवा कोटा :
श्री प्रकाश वीर शास्त्री ।
श्री शिवमूर्ति स्वामी :

क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने लोगों को इस बात का अवसर देने के लिये कि वे धन, सोने और सोने के आभूषणों के रूप में दान दे सकें, एक राष्ट्रीय प्रतिरक्षा कोष की स्थापना की है ; और

(ख) यदि हां, तो जनता में क्या प्रतिक्रिया हुई है ?

†**वित्त मंत्रालय में उप मंत्री (श्री ब० रा० भगत)** : (क) हां, श्रीमन् ।

(ख) देश भर में प्राप्त हुए दान का पूरा ब्यौरा अभी उपलब्ध नहीं है । ८ नव बर, १९६२ की शाम तक रिजर्व बैंक आफ इंडिया में निधि के मुख्य खाते में १६१ लाख रु० जमा हुए । इसके

---

†मूल अंग्रेजी में

अतिरिक्त, सोने और सोने के आभूषणों के रूप में ४४,९०० ग्राम या लगभग ३,८०० तोला सोना प्राप्त हुआ है ।

रूस से पैट्रोलियम उत्पाद

†*११७. **श्री प्र० चं० बरुआ** : क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि रूस ने भारत भेजे जाने वाले पट्रोलियम उत्पाद की भाड़ा दरों को बढ़ाने के लिये कहा है ;

(ख) यदि हां, तो दरों में कितनी वृद्धि की मांग की गई है ; और

(ग) इस संबंध में सरकार ने क्या निर्णय किया है ?

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजरतवीस)** : (क) नहीं, श्रीमन् ।

(ख) और (ग). प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

राष्ट्रीय एकता

†*११८. **श्री दी० चं० शर्मा** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या राष्ट्रीय एकता संबंधी क्षेत्रीय परिषदों की समिति ने अपना प्रतिवदन तैयार कर लिया है ;

(ख) यदि हां, तो इसकी मुख्य सिफारिशें क्या हैं ;

(ग) क्या सरकार ने उन पर विचार किया है ; और

(घ) यदि हां, तो उन्हें कार्यान्वित करने के लिये क्या कार्यवाही की गई अथवा की जानी है ?

†**गृह-कार्य मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री)** : (क) राष्ट्रीय एकता संबंधी क्षेत्रीय परिषदों की समिति अगस्त, १९६१ में हुई मुख्य मंत्रियों की कान्फ्रेंस द्वारा बनाई गई थी । इस समिति का काम भाषाई अल्प संख्यकों के लिए विभिन्न संरक्षणों के संचालन तथा राष्ट्रीय एकता बढ़ाने के काम से सम्पर्क रखना है । समिति का मुख्य उद्देश्य भाषाई अल्प संख्यकों के लिए संरक्षणों तथा राष्ट्रीय एकता के विस्तार के बारे में अखिल भारतीय आधार पर किय गये विभिन्न नीति निश्चयों की कार्यान्विति का समय समय पर पुनरीक्षण करना है । इस प्रकार समिति से कोई रिपोर्ट तैयार करने या सरकार को देने की आशा नहीं की जाती ।

(ख) और (ग). प्रश्न उत्पन्न नहीं होते ।

(घ) अब तक समिति की दो बैठकें हुई हैं और यथोचित कार्यवाही करने के लिए कार्यवाही का विवरण राज्य सरकारों को भेज दिया गया है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

भ्रष्टाचार विरोधी समिति

†*११६ श्री स० मो० बनर्जी :
श्री वाजी :
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री सुरेन्द्र पाल सिंह :
श्री भक्त दर्शन :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री हरिश्चन्द्र माथुर :
श्री वारियर :
श्री नी० श्रीकान्तन नायर :
श्री लखमू भवानी :
श्री बिशन चन्द्र सेठ :
श्री सरजू पाण्डेय :

क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या संसद् के कुछ सदस्यों की एक भ्रष्टाचार विरोधी समिति स्थापित की गई है ;

(ख) समिति के निदेशपद क्या है ;

(ग) क्या सभी दलों के सदस्यों को इस समिति में लिया गया है ;

(घ) यदि नहीं, तो सदस्यों को चुनने का आधार क्या है ; और

(ङ) समिति ने अब तक क्या प्रगति की है ?

†गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री घातार) : (क) हां ।

(ख) एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है ।

विवरण

समिति के निदेश पद निम्न हैं :—

(१) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा विभागों में सतर्कता एककों के गठन, व्यवस्था, कार्यों और उत्तरदायित्वों की जांच करना और उन्हें अधिक प्रभावी बनाने के उपायों का सुझाव देना ।

(२) विशेष पुलिस संस्थान के गठन, कर्मचारी संख्या, प्रक्रिया तथा कार्य करने के ढंगों तथा इसके सामने आने वाली कठिनाइयों की जांच करना और उसके संचालन में आगे सुधार करना ।

(३) भ्रष्टाचार रोकने के लिए प्रत्येक विभाग के उत्तरदायित्वों पर जोर देने के लिए की जाने वाली कार्यवाही पर विचार करना और उसका सुझाव देना ।

(४) विधान में परिवर्तन करने का सुझाव देना जिससे घूसखोरी, भ्रष्टाचार और दण्डनीय कुव्यवहार के मामलों की शीघ्र जांच होना सुनिश्चित हो जाये तथा विधि को अन्यथा अधिक प्रभावी बनाना ।

---

†मूल अंग्रेजी में

(५) अनुशासन संबंधी कार्यवाही के नियमों की जांच करना और इस कार्यवाही में शीघ्रता करने के लिए तथा उन्हें अधिक प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक परिवर्तनों पर विचार करना ।

(६) सरकारी कर्मचारियों और जन साधारण में सामाजिक वातावरण पैदा करने के लिए, जिसमें घसखोरी तथा भ्रष्टाचार न पनप सके, सुझाव देना ।

(७) भ्रष्टाचार विरोधी उपायों के लिए जन-समर्थन प्राप्त करने के लिए कार्यवाही का सुझाव देना ।

(८) सरकारी कर्मचारी आचरण नियमों की जांच करना और सरकारी सेवा में पूर्ण एकता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक परिवर्तनों की सिफारिश करना ।

(९) निगमित उपक्रमों में के कार्मचारियों में सत्यता तथा एकता प्राप्त करने के लिए आवश्यक कार्यवाही पर विचार करना ।

(ग) नहीं ।

(घ) समिति को दिये गये काम के लिए व्यक्तियों की उपयुक्तता और समिति में थोड़े सदस्य रखने की आवश्यकता ।

(ङ) समिति संबंधित विधियों, नियमों तथा विभिन्न रिपोर्टों आदि का अध्ययन करती रही है, सरकारी कर्मचारियों पर बड़े बड़े जुर्माने करने के संवैधानिक उपबन्धों संबंधी कुछ प्रश्नों पर विचार किया है, और आचरण नियमों का गहन परीक्षण कर रहे हैं ।

अमरीका से पैट्रोल उत्पादों का आयात

†*१२०. **श्री ईश्वर रेड्डी :**
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री यशपाल सिंह :
श्री नम्बियार :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री भक्त दर्शन :
श्री नरेन्द्र सिंह महीडी :
श्री सोलंकी :
श्री दाजी :
श्री इन्द्रजीत गुप्त :

क्या खान और इंधन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि भारत सरकार ने भारत में पेट्रोल उत्पादों के आयात और वितरण के लिये अमरीका की "मोबिल आयल" नामक कम्पनी के साथ ५०–५० के आधार पर साझीदारी कर ली है ; और

(ख) यदि हां, तो यह साझीदारी का करार किन शर्तों पर किया गया है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†खान और इंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजरतवीस) (क) केवल सनों के मिश्रण के लिए इण्डियन आयल कम्पनी और मोबिल पैट्रोलियम कम्पनी के बीच समान साझेदारी से एक परियोजना को अन्तिम रूप दिया जा रहा है ।

(ख) कम्पनियों के बीच करारों पर अभी तक हस्ताक्षर नहीं हुए हैं । अभी शर्तें बताना लोक हित में नहीं है ।

जकार्ता में भारतीय हाकी टीम

*१२१. श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री जगदेव सिंह सिद्धांती :
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री यशपाल सिंह :
श्री पू० ना० खां :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री स० चं० सामंत :
श्री नि० रं० लास्कर :
श्री स० मो० बनर्जी :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि जाकार्ता में भारतीय हाकी टीम अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सकी ;

(ख) क्या यह भी सच है कि यह हाकी टीम जाकार्ता जाने से पूर्व एक बार भारत में भी हार चुकी थी ;

(ग) क्या यह भी सच है कि इस हाकी टीम के खिलाड़ियों का चयन दलबन्दी के आधार पर किया गया है ; और

(घ) यदि हां, तो इसके लिये क्या व्यवस्था की गई है कि ओलैम्पिक खेलों के लिये हाकी टीम के खिलाड़ियों का चयन दलबन्दी के आधार पर न हो ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) जी हां, यह सच है कि भारतीय हाकी टीम जकार्ता में केवल सिलवर मेडल ही जीत सकी ।

(ख) जी हां ।

(ग) सरकार के पास ऐसी कोई सूचना नहीं है ।

(घ) हाकी में अन्तर्राष्ट्रीय खेलों के लिए खिलाड़ियों का चुनाव भारतीय हाकी संघ करता है जो एक स्वायत्त संस्था है और इस प्रयोजन के लिए उसकी अपनी एक चुनाव समिति है । भारत सरकार खिलाड़ियों के चुनाव के मामले में दखल नहीं देती है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

यूनेस्को की सहायता से पुस्तकों का प्रकाशन

†*१२२. **श्रीमती मैमूना सुल्तान :**
श्री प्र० के० देव :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि यूनस्को ने भारत का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है कि मशीनों, कागज और विशेषज्ञों की सहायता द्वारा पुस्तकों और पाठ्य सामग्री के प्रकाशन में सब विकासशील देशों की सहायता की जानी चाहिये; और

(ख) यदि हां, तो नई योजना के अन्तर्गत अगले दो वर्षों में यूनस्को से कितनी सहायता मिलने की आशा है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) श्रीमन, अभी नहीं।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा मध्य प्रदेश को 'रायल्टी'

†*१२४. **श्री रामेश्वर टांटिया :**
श्री भागवत झा आजाद :

क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा मध्य प्रदेश सरकार को उनकी अर्जित भूमि में से निकाले गये खनिजों पर 'रायल्टी' का भुगतान करने के सम्बन्ध में क्या अन्तिम निर्णय किया गया है; और

(ख) क्या हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड तथा मध्य प्रदेश सरकार दोनों पक्षों को यह निर्णय स्वीकार है ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम)** : (क) और (ख). सरकार का यह निश्चय हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड को बता दिया गया है कि भिलाई स्टील प्लान्ट को भूमि अधिगृहण अधिनियम, १८९४ के अन्तर्गत अर्जित गैर-सरकारी भमियों से निकाले गये खनिजों पर नहीं अपितु राज्य सरकार की भूमियों से निकाले गये खनिजों पर स्वामिस्व देना होगा। हिन्दुस्तान स्टील लिमिटड राज्य सरकार को तदनुसार सूचना देगा।

मोटर गाड़ियों के पुर्जों की कमी

*१२५. **श्री मोहन स्वरूप :**
श्री नरेन्द्र सिंह महीडा :
श्री प्र० कु० घोष :

क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को ज्ञात है कि मोटर गाड़ियों के पुर्जों की बाजार में भारी कमी है;

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) क्या यह सच है कि पुर्जों के मूल्य दिनों दिन बढ़ते जा रहे है; और

(ग) यदि हां, तो सरकार स्थिति सुधारने के लिये क्या कार्यवाही करने का इरादा रखती है ?

इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) : (क) से (ग). सरकार को मोटर गाड़ियों के पुर्जों की कमी तथा उनकी कीमतों में वृद्धि के बारे में कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई है।

जकार्ता में चौथे एशियाई खेल कूद

†*१२६. **श्री दी० चं० शर्मा :**
श्री विश्राम प्रसाद :
श्री राम रतन गुप्त :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री यशपाल सिंह :
श्री कर्णी सिंह जी :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) जाकार्ता में हुय चौथे एशियाई खेलकूद समरोह में भारत की सफलता कैसी रही;

(ख) सोने, चांदी तथा तांबे के कितने मैडल जीते गये तथा उनको किन खेल कूदों में जीता गया; और

(ग) देश में खेलों का स्तर सुधारने के लिये और क्या कार्यवाहियां की गई है अथवा करने का विचार है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) और (ख). भारतीय टीम ने निम्न पदक जीते:—

खेलकूद—सोने के ५, चांदी के ५ और ब्रांज के ५ पदक।

मुक्केबाजी:—सोने का १ और ब्रांज का १ पदक।

फुटबाल :—सोने का १ पदक।

हाकी—चांदी का १ पदक।

वालीबाल—चांदी का १ पदक।

कुश्ती—सोने के ३, चांदी के ६ और ब्रांज के ३ पदक।

बन्दूक से निशाना लगाना—ब्रांज का १ पदक।

(ग) भारत में खेलकूद स्वायत्तशासी संगठनों के नियन्त्रण में है। सरकार उन्हें यथासंभव सहायता देती है। विशेषकर, खेलकूद शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रबन्ध करती है और सभी बड़े बड़े खेलों के प्रशिक्षित शिक्षकों की सेवायें उपलब्ध करती है।

---

†मूल अंग्रेजी में

उत्तर प्रदेश में विश्वविद्यालय

†*१२७. **श्री स० मो० बनर्जी** : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उत्तर प्रदेश में तीन विश्वविद्यालय स्थापित करना अन्तिम रूप से स्वीकार कर लिया है ;

(ख) क्या केन्द्रीय सहायता का आश्वासन दे दिया गया है; और

(ग) यदि हां, तो कितनी?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) उत्तर प्रदेश की सरकार ने मेरठ और कानपुर में दो विश्वविद्यालय खोलने के अपने प्रस्तावों पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से सलाह मांगी थी ।

(ख) नहीं, श्रीमान ।

(ग) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

विद्यार्थियों तथा अध्यापकों का आन्दोलन

†*१२८. **श्रीमती मैमूना सुल्तान** : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या भारत ने पेरिस में हुई यूनैस्को के एक्जीक्यूटिव बोर्ड की बैठक में एक प्रस्ताव पेश किया था कि संगठन को विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के आन्दोलनों को बढ़ावा देना चाहिये; और

(ख) यदि हां, तो उस सम्बन्ध में संगठन से क्या निर्णय किया है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) हां, श्रीमान ।

(ख) यूनैस्को के एक्जीक्यूटिव बोर्ड ने कोई निश्चय नहीं किया था ।

विदेशों को अध्यन के लिये दिल्ली के विद्यार्थी

†१६५. **श्री वी० चं० शर्मा** : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) गत दो वर्षों में दिल्ली से कितने विद्यार्थी अध्ययन के लिए किन किन विदेशों को भेजे गये; और

(ख) इनमें से कितने सरकारी व्यय पर भेजे गये ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) कोई नहीं (शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रशासित योजनाओं का जहां तक संबंध है)

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

निर्वाचन विधि में सुधार

†१६६. **श्री वी० चं० शर्मा** : क्या विधि मंत्री १ मई, १६६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ३६६ के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) १६६२ के तीसरे आम चुनावों के अनुभवों के आधार पर निर्वाचन विधि में किए जाने वाले सुधारों पर विचार करने में क्या प्रगति हुई है ; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) क्या सुधार करनें का विचार है ?

विधि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री विभुधेन्द्र मिश्र): (क) चुनाव आयोग से ऐसी कोई सिफारिश नहीं मिली है तथा तीसरे आम चुनावों के संबंध में आयोग का प्रतिवेदन भी अब तक प्रकाशित नहीं हुआ है।

(ख) अभी प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

इस्पात संयंत्रों के उपोत्पाद

†१६८. **श्री मुरारका** : क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री ८ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या २७५ के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या उपोत्पादों का पूरी क्षमता से उत्पादन होने लगा है ;

(ख) १९६१–६२ में कितना व्यय हुआ और कुल उत्पादन क्या हुआ; और

(ग) बिक्री मूल्य क्या थे तथा कुल कितनी बिक्री हुई ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम)**: (क) से (ग). जानकारी इकट्ठी की जा रही है और सभा पटल पर रख दी जायेंगी ।

राउरकेला में इस्पात का उत्पादन

१६९. **श्री लखमू भवानी** : क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) राउरकेला में इस्पात का उत्पादन बढ़ाने की नई योजनाओं का ब्योरा क्या है ;

(ख) इन योजनाओं को कब से क्रियान्वित किया जायेगा ; और

(ग) इन योजनाओं को क्रियान्वित करने पर उत्पादन में कितने प्रतिशत वृद्धि होने की संभावना है ?

इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) : (क) से (ग). राउरकेला इस्पात संयंत्र का इस्पात पिण्डों का वर्तमान उत्पादन एक मिलियन टन प्रतिवर्ष की निर्णीत क्षमता का लगभग ७५ प्रतिशत है । अनुरक्षण और परिचालन में सुधार करने के उद्देश्य से जिस से निर्णीत क्षमता यथाशीघ्र प्राप्त की जा सके, हिन्दुस्तान स्टील लि० फालतू पुर्जों का पर्याप्त स्टाक तथा कुछ अतिरिक्त उपकरण रेल-इंजन और रेल के डिब्बे प्राप्त कर रहा है। संयंत्र के परिचालन और अनुरक्षण के लिये वह लगभग ५० अतिरिक्त विदेशी तकनीशनों की सेवायें भी प्राप्त कर रहा है । यह संभावना है कि अगले वर्ष के मध्य तक राउरकेला अपनी पूर्ण उत्पादन क्षमता प्राप्त कर लेगा ।

तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में इस्पात पिण्डों की क्षमता का १ मि० टन प्रति वर्ष से बढ़ा कर १.८ मि० टन प्रतिवर्ष तक करने का विचार है । विस्तार के तीसरी योजना के अन्त तक पूरे होने की संभावना है । इस से इस्पात पिण्डों के उत्पादन में ८० प्रतिशत की वृद्धि होगी ।

---

†मूल अंग्रेजी में

लद्दाख में खनिज पदार्थों की खोज

१७०. **श्री लखमू भवानी :** क्या खान और ईंधन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि लद्दाख क्षेत्र में खनिज पदार्थों की खोज की जा रही है ; और

(ख) किन खनिजों के प्राप्त होने की संभावना है ?

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उप मंत्री (श्री हजरनवीस) :** (क) जी, हां ।

(ख) जन-हित के लिये यह सूचना बताना ठीक नहीं है ।

पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण

१७१. **श्री लखमू भवानी :** क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि शिक्षा समन्वय समिति ने महत्वपूर्ण पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण का सुझाव दिया है ;

(ख) यदि हां, तो ऐसी कितनी पुस्तकें हैं ;

(ग) किस भाषा में हैं ; और

(घ) पुस्तकों का विषय क्या है ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) सरकार को शिक्षा समन्वय समिति के अस्तित्व की कोई जानकारी नहीं है ।

(ख) से (घ). प्रश्न नहीं उठते ।

हिन्दी में उच्च शिक्षा के लिये छात्रवृतियां

१७२. **श्री लखमू भवानी :** क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंग कि :

(क) क्या यह सच है कि अहिन्दी भाषा भाषी राज्यों के उन छात्रों के लिये, जो हिन्दी में उच्च शिक्षा प्राप्त करें, उन के मंत्रालय ने छात्र वृत्तियां घोषित की हैं ;

(ख) यदि हां, तो समस्त अहिन्दी भाषी राज्यों के लिये कुल कितनी छात्रवृत्तियां हैं ;

(ग) हर छात्रवृत्ति कितनी राशि की है ;

(घ) प्रत्येक अहिन्दी भाषी राज्य के लिये छात्रवृत्तियों का बटवारा किस अनुपात से किया गया है ; और

(ङ) आन्ध्र प्रदेश तथा उड़ीसा के लिये कितनी-कितनी छात्रवृत्तियां हैं ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) जी हां ।

(ख) २२० ।

(ग) अपेक्षित सूचना संलग्न विवरण में दी गई है ।

(घ) इन छात्रवृत्तियों का नियतन राज्य-वार, आबादी के आधार पर किया गया है ।

(ङ) आन्ध्र प्रदेश और उड़ीसा के लिये क्रमशः ३५ और १६ छात्रवृत्तियां नियत की गई हैं ।

विवरण

छात्रवृत्ति की दरें इस प्रकार हैं :—

अध्ययन-पाठ्यक्रम	अहिन्दी भाषी राज्यों में अध्ययन के लिये दर	हिन्दी भाषी राज्यों में अध्ययन के लिये दर
	रु०	रु०
१. इण्टरमीडिएट, पूर्व-विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम और त्रिवर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम का प्रथम वर्ष अथवा उस के समकक्ष पाठ्यक्रम ।	५०.०० प्रति मास	८०.०० प्रति मास
२. बी० ए०/बी० ए० (आनर्स)/त्रिवर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम के दूसरे और तीसरे वर्ष अथवा इस के समकक्ष पाठ्यक्रम ।	७५.०० प्रति मास	१०५.०० प्रति मास
३. एम० ए० (हिन्दी)/पी० एच-डी० (हिन्दी) अथवा उस के समकक्ष पाठ्यक्रम जैसे उत्तर-स्नातक शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।	१००.०० प्रति मास	१२५.०० प्रति मास

हिन्दी भाषी राज्यों में अध्ययन करने वाले उम्मीदवारों को दूसरी श्रेणी के रेल के किराये के सफर भत्ते के अतिरिक्त और कोई राशि नहीं दी जाती है ।

हिन्दी जानने वाले सरकारी कर्मचारी

१७३. **श्री लखमू भवानी** : क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) जिन केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों ने हिन्दी की प्रवीण, प्राज्ञ आदि परीक्षायें पास की हैं, उन की सेवाओं का सरकार किस प्रकार उपयोग कर रही है ;

(ख) इन परीक्षाओं के फलस्वरूप अब तक कार्यालयों में क्या-क्या परिवर्तन हुए हैं ;

(ग) भली प्रकार हिन्दी जानने वाले कर्मचारियों को अपनी छोटी-मोटी अर्जियां क्या हिन्दी में देने की छूट है ; और

(घ) यदि हां, तो क्या सरकार ने इस प्रकार के आदेश जारी किये हैं ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) : (क) और (ख). ऐसे कर्मचारियों की सेवाओं का गृह-मंत्रालय के कार्यालय ज्ञापन संख्या १६/३०/६० ओ०एल०, दिनांक ४ अक्तूबर,

१६६० (प्रति संलग्न है) में दी गई हिदायतों के अनुसार उपयोग किया जाता है। [पुस्तकालय में रखी गई। देखिये एल०टी० संख्या ५०५/६२]

(ग) जी हां।

(घ) जी नहीं।

'अहिंसा' विश्वविद्यालय

†१७४. **श्री प्र० चं० देवभंज :** क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का विचार दिल्ली में 'अहिंसा' श्विश्वविद्यालय स्थापित करने का है ; और

(ख) यदि हां, तो उस की वित्तीय स्थिति क्या है और उस का ब्योरा क्या है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) जी नहीं।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

निर्वाचन क्षेत्रों में वृद्धि

†१७५. **श्री प्र० चं० देव भंज :**
श्री दलजीत सिंह :

क्या **विधि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या हाल की जनगणना के आंकड़ों से जनसंख्या की वृद्धि के कारण राज्य विधान सभा तथा संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों की १६६७ के आम चुनावों में वृद्धि कर दी जायेगी ; और

(ख) यदि हां, तो सरकार निर्वाचन क्षेत्रों का नया सीमांकन कब करेगी ?

†**विधि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री विभुधेन्द्र मिश्र)** : (क) और (ख). संविधान के अनुच्छेद ८२ तथा १७० (३) के अधीन जनगणना की समाप्ति पर लोक-सभा तथा राज्यों की विधान सभाओं की सीटों का आवंटन तथा प्रत्येक राज्य का प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्रों में वितरण विधि द्वारा संसद् करेगी क्योंकि १६६१ के जनसंख्या आंकड़े हाल में ही घोषित हुए हैं इसलिये अब संविधान में निर्धारित अधिकारी नियुक्त होगा तथा यथासंभव शीघ्र ऐसे अधिकारी की नियुक्ति का आवश्यक विधान संसद् द्वारा पारित किया जायेगा। वह अधिकारी बन जाने के बाद वह लोक-सभा तथा राज्य विधान सभा का प्रतिनिधित्व निर्धारित करेगा और जनसंख्या बढ़ने के कारण संसदीय तथा विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों का सीमांकन करेगा।

न्यूबिया में पाई गई वस्तुयें

†१७६. **श्री मे० क० कुमारन :**
डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी :

क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि मिस्र के न्यबिया में भारतीय दल की खोजों में न्यूबिया तथा दक्षिण भारतीय पुरातत्वीय वस्तुओं में समानता मिली है ; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) यदि हां, तो उस का ब्योरा क्या है ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (डा० म० मो० दास) :** (क) और (ख). दल द्वारा खोजी गई वस्तुओं में कुछ काले तथा लाल मिट्टी के प्याले तथा लाल मिट्टी के जार हैं जिन को दक्षिण भारत में मैगालिन्यूस के बराबर माना जा सकता है । इस के अतिरिक्त वगूबिया में खोजे गये दाह कर्म दक्षिण भारत के समान ही हैं । जो कुछ पुरातत्व शास्त्रियों के अनुसार द्रविड़ों के समान हैं ।

आन्ध्र में तेल

†१७७. **श्री इ० मधुसूदन राव** : क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या आंध्र प्रदेश में तेल तथा अन्य खनिजों का सर्वेक्षण करने का प्रस्ताव है ; और

(ख) यदि हां, तो उस का ब्योरा क्या है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीव)** : (क) जी हां ।

(ख) (१) तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग द्वारा भूभौतिकीय सर्वेक्षण उन स्थानों पर हो रहा है जहां पर चट्टानें खुली पड़ी हैं और आकर्षण तथा चुम्बक सर्वेक्षण तटीय क्षेत्रों में किया जा रहा है ।

(२) भारतीय भूतत्वीय परिमाप के चालू क्षेत्रीय मौसम में क्षेत्रीय कार्यक्रम में विभिन्न खनिजों की खोज भी शामिल है । ब्योरे संबद्ध विवरण में हैं । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या २१]**

रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, वारंगल

†१७८. **श्री इ० मधुसूदन राव** : क्या **वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) वारंगल स्थित रीजनल इंजीनियरिंग कालेज के कार्य की (छात्रावास समेत) कुल प्रगति कितनी है; और

(ख) कब तक इमारत और छात्रावास इस्तेमाल के लिये बन कर तैयार हो जायेंगे ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून कबिर)** : (क) कालिज से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार निर्माण की प्रगति निम्न प्रकार है :

पूरी हुई इमारतें :

वर्कशाप का एक यूनिट, इलैक्ट्रिकल और मिकैनिकल इंजीनियरिंग विभाग; भोजन कक्ष समेत चार छात्रावास ।

पूरी होने वाली इमारतें

वर्कशाप का एक यनिट; असैनिक इंजीनियरिंग प्रयोगशाला; एप्लाइड मिकेनिक्स विभाग; फिजिक्स और केमिस्ट्री प्रयोगशालायें; भोजन कक्ष समेत दो छात्रावास ।

---

†**मूल अंग्रेजी में**

निर्माणाधीन इमारतें :

इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग प्रयोगशाला; इंजीनियरिंग केमिस्ट्री प्रयोगशाला ।

(ख) तैयार और तैयार हो रही इमारतें शीघ्र ही इस्तेमाल की जायेंगी और ५०० विद्यार्थी नये प्रांगण में चले जायेंगे । निर्माणाधीन इमारतों के जून, १९६३ तक तैयार हो जाने की आशा हैं ।

दिल्ली में चिट फंड कम्पनियां

†*१७९. **श्री इ० मधुसूदन राव :**
श्री राम रतन गुप्त :
श्री यशपाल सिंह :
महाराजकुमार विजय आनन्द :

क्या **वित्त** मंत्री २३ अप्रैल, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ६७ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) दिल्ली में चिट फण्ड कम्पनियों पर नियंत्रण रखने के बारे में कितनी प्रगति की गयी है;

(ख) इस समय संघ राज्य-क्षेत्र दिल्ली में कितनी चिट फण्ड कम्पनियां चल रही हैं; और

(ग) उपरोक्त भाग (ख) में निर्दिष्ट प्रत्येक कम्पनी की कितनी पूंजी है ?

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)** : संघ राज्य-क्षेत्र दिल्ली में चिट फण्ड कम्पनियों की गतिविधियों को विनियमित करने और नियंत्रण में रखने के लिये केन्द्रीय सरकार ने मद्रास चिट फण्ड अधिनियम, १९६१ को, उस में कुछ संशोधन करके, संघ राज्य-क्षेत्र (नियम) अधिनियम, १९५० की धारा २ के अन्तर्गत जारी की गयी एक अधिसूचना के जरिये संघ राज्य क्षेत्र दिल्ली में लागू कर दिया है । जिस तिथि से यह अधिनियम लागू होगा वह पृथक् रूप से दिल्ली प्रशासन के मुख्यायुक्त द्वारा अधिसूचित की जावेगी ।

(ख) ३१ अक्तूबर, १९६२ को संघ राज्य-क्षेत्र दिल्ली में १४७ चिट फण्ड कम्पनियां चल रही थीं ।

(ग) अपेक्षित जानकारी वाला एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[पुस्तकालय में रखा गया । देखिये संख्या एल.टी. ५०६/६२]।**

भारतीय असैनिक सेवा के पदाधिकारियों का वेतन निश्चयन

†१८०. **श्री इ० मधुसूदन राव** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारतीय असैनिक सेवा के पदाधिकारियों का १४ अगस्त, १९४७ के बाद बनाये गये पदों पर वेतन निश्चयन के बारे में एक अन्तिम निर्णय कर लिया गया है; और

(ख) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार)** : (क) और (ख). मामला अभी विचाराधीन है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

दिल्ली में कुतुब मीनार के चारों ओर बाड़ा लगाना

†१८१. **श्री इ० मधुसूदन राव :** क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री २३ अप्रैल, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ८७ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या इस बीच दिल्ली में कुतब मीनार के चारों ओर लगायी गयी लोहे के तारों की बाड़ को हटाने के बारे में निर्णय कर लिया गया है; और

(ख) सुरक्षा के लिये किये जा रहे अन्य उपायों का क्या ब्यौरा है ?

†**वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (डा० म० मो० दास) :** (क) जी, हां ।

(ख) पूर्वोपायी उपायों के तौर पर मीनार पर तीन व्यक्तियों से कम के दल को चढ़ने की अनुमति नहीं दी जाती ।

रुद्रसागर तेल

†१८२. **श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा :** क्या **खान और इंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) रुद्रसागर कुंआ संख्या ६ में कितने समय से छिद्रण किया जा रहा है;

(ख) अब तक कितना धन व्यय किया गया है; और

(ग) इस परियोजना पर कार्य पूरा होने तक और कितना धन व्यय होने की सम्भावना है ?

†**खान और इंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय) :** (क) ६ जुलाई, १९६२ से ।

(ख) और (ग). प्रत्येक कुंए के लिये व्यय पृथक् रूप से नहीं रखा जाता है । जैसे ही कुंआ पूरा हो जायेगा, इसका हिसाब लगाया जायेगा ।

रुद्रसागर तेल

†१८३. **श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा :** क्या **खान और इंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या रुद्रसागर कुंआ संख्या ४ में तेल अथवा गैस पायी गयी है; और

(ख) यदि हां, तो उसका प्राक्कलन क्या है ?

†**खान और इंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय):** (क) जी, हां ।

(ख) उसकी उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन अभी नहीं किया जा सकता ।

रुद्रसागर कूप संख्या ४

†१८४. **श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा :** क्या **खान और इंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) रुद्रसागर कूप संख्या ४ में काम वास्तव में कब आरम्भ हुआ;

(ख) इस परियोजना के पूरा होने में कितना समय लगेगा; और

(ग) इस परियोजना पर कितना धन व्यय होने की संभावना है?

†**खान और इंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय) :** (क) रुद्रसागर कूप संख्या ४ को १६ फरवरी, १९६२ को खोदा गया था ।

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) छिद्रण २ मई, १६६२ को पूरा किया गया और उत्पादन का परीक्षण २० अक्तूबर, १६६२ को पूरा किया गया।

(ग) इस कुएं के बारे में अभी पृथक् रूप से व्यय का हिसाब नहीं लगाया गया है।

उड़ीसा में सांस्कृतिक संस्थाओं को अनुदान

†१८५. **श्री मलिक** : क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि उड़ीसा राज्य में उन विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं और संगठनों के क्या नाम हैं जिनको वर्ष १६६१–६२ और १६६२–६३ और अब तक अपनी गतिविधियां बढ़ाने के लिये अनुदान दिये गये हैं और ऐसे प्रत्येक संगठन को कितना धन दिया गया है ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून् कबिर)** :

संस्था/संगठन का नाम	धन राशि
१६६१–६२	(रुपये)
१. अन्नपूर्णा थियेटर, ग्रुप 'ए', पुरी	४,०००
२. जनता रंगमंच, कटक .	४,०००
३. कला विकास केन्द्र, कटक . .	१०,८००
४. मयूरभंज छौ नृत्य प्रतिष्ठान, बारीपाडा	१,०००
५. नेशनल म्यूजिक एसोसियेशन, कटक .	७,०००
६. प्रजातंत्र प्रचार समिति, कटक . . .	४,०००
७. उत्कल हितैषिणी समाज, डाकखाना पारलाकेमंडी, जिला गंजम	३,२००
८. उत्कल स्मृति कला मंडप, पीढापुर, कटक .	५,०००
१६६२–६३	
१. अन्नपूर्णा थियेटर, ग्रुप 'ए', पुरी . .	७,५००
२. गंजम जिला ड्राइंग मास्टर्स एसोसियेशन, बरहामपुर	५००
३. जनता रंगमंच, कटक . . .	७,५००
४. मयूरभंज छौ नृत्य प्रतिष्ठान, बारीपाडा . . .	५,०००

उड़ीसा में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित आदिम जाति के विद्यार्थियों को छात्रवृतियां

†१८६. **श्री मलिक** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि वर्ष १६६१–६२ में उड़ीसा में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित आदिम जाति के विद्यार्थियों को कुल कितनी केन्द्रीय सरकार की छात्रवृत्तियां दी गयीं ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** :

अनुसूचित जातियां .	२७१
अनुसूचित आदिम जातियां	२५४
कुल . . .	५२५

†मूल अंग्रेजी में

आन्ध्र में स्वर्ण खान

†१८७. **श्री इ० मधुसूदन राव :** क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने आन्ध्र प्रदेश में राज्य में सोने की खानों के बारे में सर्वेक्षण करने के लिये कोई दल भेजा है; और

(ख) यदि हां, तो उसका क्या ब्यौरा है ?

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजरनवीस) :** (क) जी, हां ।

(ख) भारतीय खान ब्यूरो रामगिरी स्वर्ण क्षेत्रों में विस्तृत खोज कर रहा है ।

त्रिपुरा में नये स्कल

†१८८. **श्री दशरथ देव :** क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या वर्ष १९५७–५८ के शिक्षा सर्वेक्षण प्रतिवेदन में त्रिपुरा में कई नये सेकन्डरी, मिडिल और प्रायमरी स्कूल खोलने की सिफारिश की गई है ;

(ख) यदि हां, तो डिवीज़न-वार उन स्थानों के क्या नाम हैं जहां उन स्कूलों के खोले जाने की सिफारिश की गयी है ; और

(ग) क्या इन स्थानों पर तृतीय पंचवर्षीय योजना-काल में नये स्कूल खोले जायेंगे ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) :** (क) से (ग). त्रिपुरा प्रशासन से जानकारी एकत्र की जा रही है और यथा समय सभा पटल पर रख दी जावेगी ।

त्रिपुरा में आदिमजातीय विद्यार्थी

†१८९. **श्री दशरथ देव :** क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) त्रिपुरा के गैर-सरकारी तौर पर चलाये जा रहे सहायता-प्राप्त हाई स्कूलों, सीनियर बेसिक स्कूलों और जूनियर हाई स्कूलों से सम्बद्ध सरकारी बोर्डिंग हाउसों में रहने वाले आदिम जातीय विद्यार्थियों की कुल संख्या क्या है ;

(ख) क्या इन विद्यार्थियों को कोई बोर्डिंग अधिछात्रवृत्तियां मिलती हैं ;

(ग) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं ; और

(घ) क्या सरकार का सरकारी स्कूलों अथवा सहायता-प्राप्त स्कूलों से सम्बद्ध सरकारी बोर्डिंग हाउसों में रहने वाले सभी आदिम जातीय विद्यार्थियों को बोर्डिंग अधिछात्रवृत्तियां देने का प्रस्ताव है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) :** (क) से (घ). त्रिपुरा प्रशासन से जानकारी एकत्र की जा रही है और यथा समय सभा पटल पर रख दी जावेगी ।

त्रिपुरा में हाई स्कूल

†१९०. **श्री दशरथ देव :** क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) त्रिपुरा के ग्रामीण क्षेत्रों में कुल कितने हाई स्कूल हैं ;

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक हाई स्कूल द्वारा कुल कितने वर्ग मील की आवश्यकता पूरी की जाती है ;

(ग) क्या ग्रामीण क्षेत्रों में हाई स्कूलों की संख्या पर्याप्त है ; और

(घ) यदि नहीं, तो त्रिपुरा के ग्रामीण क्षेत्रों में हाई स्कूलों की संख्या में वृद्धि करने के लिये क्या कदम उठाये गये है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) से (घ). त्रिपुरा प्रशासन से जानकारी एकत्र की जा रही है और यथा समय सभा पटल पर रख दी जावेगी ।

सेक्शन अफसरों की तालिका

†**१९१. श्री इ० मधुसूदन राव** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री ३ सितम्बर, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या २१९० के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या इस बीच सेक्शन अफसरों की तालिका बनाने के मामले को अन्तिम रूप दे दिया गया है ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : वर्ष १९५९ और १९६० में की गयीं असिस्टेंट सुपरिन्टेंडेंट (आर० टी० ई०) की परीक्षाओं में बाकी बचे व्यक्तियों की एक तालिका बनाने के लिये एक निर्णय किया गया है और केन्द्रीय सचिवालय सेवा नियम, १९६२ में पांच वर्षों की अवधि में रिक्त स्थानों के एक सीमित अनुपात में उनको सेक्शन अफसर नियुक्त करने का उपबन्ध किया गया है । तथापि, तालिका के बारे में ब्यौरा अभी संघ लोक सेवा आयोग के परामर्श से विचाराधीन है ।

कोयला तथा पेट्रोल उद्योग

†**१९२. डा० रानेन सेन** : क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि वर्ष १९६०-६१ में (१) कोयला और (२) पेट्रोल के उत्पादन के कुल मूल्य में सरकारी क्षेत्र का कितना अंश है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : वर्ष १९६०–६१ में कोयले के उत्पादन के कुल मूल्य में सरकारी क्षेत्र का अंश लगभग २१ प्रतिशत है । पेट्रोल में यह शून्य है ।

विदेशी समवायों को दी गयी रायल्टी

†**१९३. डा० रानेन सेन** : क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि वर्ष १९५५ से लेकर १९६० तक, प्रत्येक वर्ष में, सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्रों द्वारा विदेशी समवायों को दी गयी रायल्टी की कुल धन राशि कितनी है ?

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)** : विदेशी समवायों को रायल्टी के भुगतान के कारण भेजी गयी राशि के पृथक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं परन्तु इन्हें व्यापार चिह्न, प्रतिलिप्याधिकार और विदेशी मशीनों के लिये देय किराये के साथ भुगतान अन्तर आंकड़ों में मिला दिया जाता है । जुलाई, १९५५ से दिसम्बर, १९६० तक की अवधि में सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्रों द्वारा रायल्टी

---

†मूल अंग्रेजी में

भुगतान, एकस्व आदि के कारण विदेशी समवायों को विदेश में निम्नलिखित धन राशि भेजी गई है :

वर्ष	धन राशि
	(रुपये लाखों में)
१९५५ (जुलाई से दिसम्बर)	४९
१९५६	११०
१९५७	९२
१९५८	१२७
१९५९	१५६
१९६०	२२६

आयकर कर्मचारियों के लिये क्वार्टर

†१९४. **श्री अ० व० राघवन :** क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या कोझीकोडे में आयकर अधिकारियों के लिए रहने के क्वार्टर बनाने का कोई प्रस्ताव है ; और

(ख) क्वार्टरों का निर्माण कब पूरा होगा ?

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) :** (क) हां, श्रीमान ।

(ख) अभी निर्माण पूरा होने की तारीख नहीं बताई जा सकती ।

अल्वाय में "फैक्ट"[१] का विस्तार प्रोग्राम"

†१९५. **श्री वासुदेवन् नायर :** क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने अल्वाय में "फैक्ट" के विस्तार के प्रोग्राम की अन्तिम स्वीकृति दे दी है ; और

(ख) विस्तार प्रोग्राम पूरा होने पर उत्पादन का अनुमानित लक्ष्य क्या होगा ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) :** (क) हां, श्रीमान ।

(ख) तृतीय अवस्था विस्तार योजना की पूर्ति के बाद कारखाने की क्षमता ७०,००० मीट्रक टन नाइट्रोजन और २७,००० मीट्रक टन $पी_२ ओ_५$ प्रति वर्ष हो जायेगी । एमोनियम सल्फेट, एमोनियम फास्फेट, एमोनियम क्लोराइड और सिंगल सुपरफास्फेट अन्तिम उत्पाद होंगे ।

आसाम को चाय के बागों के लिए कोयला

†१९६. **श्री प्र० चं० बरुआ :** क्या **खान और इंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि आसाम में चाय के बागों को कोटि व मात्रा की दृष्टि से उचित कोयला नहीं दिया जाता ;

---

†मूल अंग्रेज़ी में

[१]FACT

(ख) क्या इन बागों ने अपनी कठिनाइयोंके बारे में चाय बोर्ड से अभ्यावेदन किया है और नाहरकटिया प्रदेश में उपलब्ध गैस के प्रयोग के लिए अपनी पसन्द जाहिर की है ; और

(ग) यदि हां, तो इस अभ्यावेदन पर सरकार ने क्या निश्चय किया है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) वर्ष १९६२ के लिए आसाम में चाय के बागों के लिए प्रति मास १३२९१ मीट्रिक टन कोयला के निर्धारित औसत कोटा के आधार पर अगस्त, १९६२ तक औसतन लगभग १३६०१ मीट्रिक टन कोयला प्रति मास भेजा गया है । चाय के बागों को कुछ खासी कोयला मिलता है और वह आसाम घाटी तथा मरघेरीटा के कोयला के अतिरिक्त है । उनकी आम शिकायत यह है कि खासी का कोयला घटिया किस्म का है । परन्तु इसे बंगाल/बिहार या मरघेरीटा के कोयला से हस्थानापन्न करना संभव नहीं है ।

(ख) सरकार को चाय बोर्ड से ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं मिला है ।

(ग) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

परीक्षा करों से राजस्व

†१९७ **श्री प्र० चं० बरुआ** : क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि चालू वित्त वर्ष के प्रथम चार महीनों में परोक्ष करों से केन्द्रीय राजस्व में निम्न प्रवृत्ति रहीं है ;

(ख) यदि हां, तो इस प्रवृत्ति के मुख्य कारण क्या हैं ; और

(ग) राजस्व में और होने वाली कमी को रोकने के लिए क्या कार्यवाही की गई है ?

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)** : (क) से (ग) जुलाई, १९६२ के अन्त तक सभी परोक्ष करों से ५०.२५ करोड़ रुपये प्राप्त हुए थे जब कि वर्ष १९६१–६२ में ५४.५० करोड़ रु० प्राप्त हुए थे । वर्ष के प्रथम चार मासों में प्राप्त हुई राशि समूचे वर्ष की प्राप्ति राशि की द्योतक नहीं है । पहिले चार महीनों में ४.२५ करोड़ रु० का अन्तर बाद के महीनों में अन्तर से अधिक राशि प्राप्त होने से पूरा हो गया है ।

शीट कटिंग स्क्रैप

†१९९. **श्री यशपाल सिंह** : क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) नं० १ शीट कटिंग स्क्रैप का प्रयोग करने वाली भट्ठियों तथा ढलाई कारखानों के क्या नाम हैं ;

(ख) वर्ष १९५५–६१ तक प्रति वर्ष इन भट्ठियों तथा ढलाई कारखानों ने नं० १ के शीट कटिंग स्क्रेप की कितनी मात्रा प्रयोग की ; और

(ग) भट्ठियों तथा ढलाई कारखानों ने किस साधन से संख्या १ की शीट कटिंग स्क्रैप प्राप्त किया ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम)** : (क) से (ग) जानकारी एकत्रित की जा रही है और हाल में ही सभा पटल पर रख दी जायेगी ।

---

†मूल अंग्रेजी में

दिल्ली में सरकारी बस्तियों में कल्याण समितियां

†२००. **श्री यशपाल सिंह :** क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने दिल्ली में विभिन्न सरकारी बस्तियों में गृह-कल्याण केन्द्र खोले है ;

(ख) यदि हां, तो अब तक कितने केन्द्र खोले गये है ; और

(ग) इसके क्या कारण हैं ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) :** (क) हां ।

(ख) ४१ ।

(ग) सरकारी कर्मचारियों की स्त्रियों को अपना खाली समय उपयोगी ढंग से बिताने का अवसर देने के लिए केन्द्र खोले गये है। इनमें कटाई, सिलाई, कढ़ाई, गृह विज्ञान आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा ।

सिंगरेनी कोयला खानें

†२०१. **श्री लक्ष्मी दास :** क्या **खान और इंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सिंगरेनी कोयला खानों के विकास के लिए वर्ष १९६२–६३ में ३.५ करोड़ रु० के किये गये उपबन्ध में से केन्द्रीय सरकार ने अब तक आन्ध्र प्रदेश सरकार को कितनी राशि दी है ;

(ख) क्या सरकार ३.५ करोड़ रु० सिंगरेनी कोयला खानों को अंश-पूंजी के रूप में दे रही है ;

(ग) यदि हां, तो किस अनुपात में और कितने प्रतिशत ; और

(घ) सरकार सिंगरेनी कोयला खानों के विकास के लिये आन्ध्र प्रदेश सरकार को २५ लाख रु० ब्याज की किस दर पर देगी ?

†**खान और इंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय) :** (क) और (ख). सिंगरेनी कोयला खान कम्पनी लिमिटेड को वित्तीय सहायता देने का उपबन्ध किया गया है ताकि वर्ष १९६२–६३ में आन्ध्र प्रदेश (सरकार) को और ब्योरा निम्न है :—

सिंगरेनी कोयला खान कम्पनी लिमिटेड के अंश खरीदने के लिये	३२५ लाख रुः
सिंगरेनी कोयला खान कम्पनी लिमिटेड	२५ लाख रु०
योग	३५० लाख रु०

चालू वर्ष में अभी तक सिंगरेनी कोयला खान कम्पनी को कोई राशि नहीं दी गई है। कम्पनी ने समूची राशि ऋण के रूप में मांगी है और मामला सरकार के विचाराधीन है ।

(ग) और (घ). सरकारी क्षेत्रों के उपक्रमों में अंश पूंजी और ऋण में क्रम अनुपात १ : १ का हैं और इसे सिंगरेनी कोयला खान कम्पनी के मामले में भी लागू करने का है। भारत सरकार सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों से जो ब्याज लेती है वह ५ से ६ प्रतिशत हैं और वह ऋण की अवधि पर निर्भर है। सिंगरेनी कोयला खान कम्पनी को दिये गये किसी भी ऋण पर वही सिद्धांत लागू होगा ।

†मूल अंग्रेजी में

राष्ट्रीय एकता परिषद्

२०३. **श्री प्रकाशबीर शास्त्री :**
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री उमा नाथ :

क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) राष्ट्रीय एकता परिषद् के कार्यों में अब तक क्या प्रगति हुई है ;

(ख) कुल मिला कर अब तक कितनी बैठकें इस की हुईं और कितने संगठनों का साक्ष्य परिषद् को प्राप्त हुआ ;

(ग) परिषद् अपना निर्णय कब तक सरकार को दे सकेगी ; और

(घ) परिषद् की बैठकों पर अब तक कुल लगा कर कितना व्यय बैठा है ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) : (क) से (घ). एक विवरण-पत्र सभा पटल पर रख दिया गया है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या २२]**

भारतीय प्रशासन सेवा की विशेष भर्ती

†२०४. **श्रीमती सावित्री निगम** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि आपातकालीन भर्ती योजना के अंतर्गत भारतीय प्रशासन सेवा में कुल कितने व्यक्ति भर्ती हुए हैं ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार)** : भारतीय प्रशासन सेवा (विशेष भर्ती) योजना, १९५६ के अन्तर्गत राज्य सेवाओं और खुले आम २७३ व्यक्ति भारत प्रशासन सेवा में भर्ती किये गये ।

अफीम और कोकीन का वर्जित व्यापार

†२०५. **श्रीमती सावित्री निगम :** क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को विदित है कि वाहक कबूतरों से अफीम तथा कोकीन के वर्जित व्यापार में काम लिया गया है ; और

(ख) क्या सितम्बर, १९६२ में बड़ी मात्रा में अफीम पकड़ी गई है ?

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)** : (क) अफीम और कोकीन के वर्जित व्यापार में वाहक कबूतरों के प्रयोग किये जाने का भारत सरकार को कोई ज्ञान नहीं है, सिवा इसके कि अखबारों में एक समाचार प्रकाशित हुआ था ।

(ख) अब तक प्राप्त जानकारी से पता लगता है कि ५७६ ग्राम अफीम सितम्बर, १९६२ में पकड़ी गई थी ।

दिल्ली के मजिस्ट्रेट

†२०६. **श्रीमती सावित्री निगम :** क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि ऐसे कितने मामले हैं जिनसे दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा १०७ और १५८ का संबंध है और जिन में वर्ष १९६१–६२ में दिल्ली के मजिस्ट्रेटों में दस से अधिक तारीखें दी हैं ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार)** : कदाचित उल्लेख दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा १५८ से नहीं अपितु १५१ से है। दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा १०७/१५१ के अंतर्गत अनिश्चित बड़े मामलों की संख्या ७५२ है और उनमें वर्ष १९६१–६२ में दस से अधिक तारीखें दी गईं।

औद्योगिक ऋण

†२०७. **श्रीमती सावित्री निगम** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि वर्ष १९६०–६१ और १९६१–६२ में अन्डमान और निकोबार के लोगों को कुल कितना औद्योगिक ऋण दिया गया ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार)** : वर्ष १९६०–६१ और १९६१–६२ में क्रमानुसार १०,००० रु० और ५,००० रु० के ऋण दिये गये।

नई दिल्ली के कनाट प्लेस में यातायात के नियमों में विषमता

२०८. **श्रीमती सावित्री निगम** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि कनाट प्लेस में यातायात नियमों में जगह जगह काफी विषमतायें बरती जा रही हैं, जिस से सड़क पर चलने वालों को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है ; और

(ख) कहीं कहीं गोल चक्कर हटा दिये गये हैं और कहीं-कहीं रखे गये हैं इसका क्या कारण है ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) : (क) नहीं।

(ख) ऐसा निश्चय किया गया है कि उन मोड़ों पर से जहां आटोमैटिक ट्रैफिक सिगनल्स हैं गोल चक्कर हटा लिये जायें। ऐसे कुछ चक्कर पहले ही हटाये जा चुके हैं और इस प्रकार के अन्य स्थानों से भी उन्हें हटाने के लिये कार्यवाही की जा रही है।

उत्तरी सीमा के अधिसूचित क्षेत्र

२०९. **श्री भक्त दर्शन :**
श्री भागवत झा आजाद :

क्या **गृह-कार्य** मंत्री २३ अप्रैल, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ८१ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) दण्ड विधि संशोधन अधिनियम, १९६१ की धारा ३ के अन्तर्गत उत्तरी सीमा के जिन क्षेत्रों को अधिसूचित क्षेत्र घोषित कर दिया गया था, क्या उनके बारे में कोई सुझाव शासन को प्राप्त हुये हैं ;

(ख) यदि हां, तो किस प्रकार के सुझाव दिये गये हैं ; और

(ग) उनके बारे में क्या निश्चय किया गया है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार):** (क) जी हां ।

(ख) और (ग). यह सुझाव उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों के तीर्थ स्थानों को, परमिट व्यवस्था के निर्माण और उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में उसके लागू किये जाने के बाद, वहां जाने के इच्छुक तीर्थ यात्रियों के बारे में है । इस मामले पर राज्य सरकार के साथ विचार विमर्ष किया जा रहा है ।

एम० ए० परीक्षा की तीसरी श्रेणी

२१०. **श्री मोहन स्वरूप :** क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि दिल्ली विश्वविद्यालय में एम० ए० में तीसरी श्रेणी आगामी दो-तीन वर्ष में समाप्त हो जाने की सम्भावना है जैसा कि विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० सी० डी० देशमुख ने हाल में ही छात्र संघ के वार्षिकोत्सव में भाषण करते हुए संकेत किया ; और

(ख) यदि हां, तो उसका विस्तृत विवरण क्या है ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) और (ख). भारतीय विश्वविद्यालयों की परीक्षा पद्धति में सुधार के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नियुक्त समिति की रिपोर्ट पर विचार करते हुए, दिल्ली विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परिषद् ने विश्वविद्यालय की एम० ए०/एम० एस० सी० परीक्षाओं में तृतीय श्रेणी न देना सिद्धान्त रूप से स्वीकार कर लिया है । विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त एक विशेष कार्यकारी दल इस निर्णय को कार्यान्वित करने के सम्बन्ध में विचार करेगा ।

बोकारो कोयला खान

†२११. **श्री राजेश्वर पटेल :** क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या वर्ष १९५९ के अन्त में बोकारो कोयला खान में उत्पादन कम हो गया था ;

(ख) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं ; और

(ग) उत्पादन की इस कमी से कितनी हानि हुई ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय) :** (क) से (ग). बोकारो कोयला खान के उत्पादन का संबंध करगली के कोयला धोने के कारखाने की कोयला लेने की क्षमता से है । उपरोक्त कारखाने की ग्रहण क्षमता वर्ष १९५९ की अन्तिम तिमाही में विभिन्न कारणों से कम हो गई थी । उदाहरणार्थ, भारी तूफान व वर्षा के कारण कारखाने का काम दस दिन के लिए पूर्णतया बन्द हो गया । बाद में, रज्जुपथ में, जिससे खान से कोयला कारखाने को जाता था, कुछ गड़बड़ी हो गई । दिसम्बर, १९५९ में स्थितियों में सुधार होने पर कारखाने की ग्रहण क्षमता बढ़ गई और बोकारो कोयला खान का उत्पादन भी धीरे धीरे बढ़ गया है । कोयला खान में उत्पादन के दर में कमी का अनिवार्य रूप से यह अर्थ नहीं है कि धन की हानि हुई, क्योंकि जो भी कोयला नहीं निकाला गया है वह खान में रहा और यह महसूस किया गया कि इस कोयला को निकाल कर ढलाई के प्रयोग अतिरिक्त प्रयोग उचित नहीं है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

यूरोप को जाने वाला युवक प्रतिनिधि मंडल

†२१२. श्री रा० शि० पाण्डेय :
श्री राजेश्वर पटेल :
श्री मुरारका :

क्या शिक्षा मंत्री २१ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या १३६८ के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) योरोप जाने वाले युवक प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों का नाम क्या है और प्रत्येक की कितनी आयु है ;

(ख) सरकार ने क्या सहायता दी ;

(ग) कितनी विदेश मुद्रा स्वीकार की गई है ; और

(घ) क्या उक्त प्रतिनिधि मण्डल लौट आया है और क्या उसने कोई रिपोर्ट दी है ?

†शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क)

प्रतिनिधियों के नाम	आयु
१. श्री टी० रामचन्द्र	६२ वर्ष
२. श्री वी० डी० त्यागी	३३ ,,
३. श्री जयदेव सिंह	४१ ,,
४. श्रीमती सतवन्त वी० सिंह	४४ ,,
५. श्री अ० के० बनर्जी	३४ ,,
६. श्री एम० पी० दुबे कुलदीप	३९ ,,
७. श्री वी० सी० जैन	३७ ,,
८. श्री घनश्याम कश्यप	३१ ,,
९. श्री के० वी० परषोत्तम	३७ ,,
१०. श्री ब्रज किशोर सिंह	२९ ,,

(ख) प्रतिनिधियों को पारपत्र की सुविधा दी गई ।

(ग) कोई विदेशी मुद्रा नहीं दी गई क्योंकि सदस्यों को विदेशों में स्थानीय संगठनों से मेहमान-नवाज़ी मिलनी थी ।

(घ) नहीं, श्रीमान् । ख्याल है कि प्रतिनिधिमण्डल के केवल दो सदस्य लौटे हैं ।

रूरकेला इस्पात कारखाने के रेलवे इंजन

†२१३. श्री रा० शि० पाण्डेय :
श्री मुरारका :

क्या इस्पात और भारी उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या रूरकेला इस्पात कारखाने के रेलवे इंजनों में गाड़ियों को रोकने के लिए वामवीय ब्रेक नहीं है ;

†मूल अंग्रेजी में

(ख) यदि हां, तो क्या कारखाने के हाते के बाहर इन इंजनों को लाइनों पर चलाना सुरक्षित समझा जाता है ; और

(ग) इस कठिनाई को दूर करने के लिए क्या कार्यवाही करने का विचार है ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम)** : (क) रेलवे इंजनों में वामवीय ब्रेक है। फिर भी, रेलवे वैगनों में वेक्वाम ब्रेक हैं। अतः रेलवे इंजन वैगनों में ब्रेक नहीं लगा सकते ।

(ख) यह नहीं कहा जा सकता कि कारखाने के हाते के बाहर सामान्य गति से इन इंजनों को प्रयोग करना सुरक्षित है ।

(ग) विनिमय यार्ड और कारखाने के बीच रेलवे वहन पर पांच मील प्रति घंटा रफ्तार निर्धारित की गई है। वेक्वाम ब्रेक वाले रेलवे इंजनों को भी हिन्दुस्तान स्टील लि० खरीद रहा है।

रूरकेला में परिवहन व्यवस्था

†२१४. **श्री कृ० चं० पन्त :**
श्री मुरारका :

क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि रूरकेला में परिवहन व्यवस्था का आयोजन करने के लिए कुछ जर्मन रेलवे कर्मचारी लेने का विचार है ;

(ख) यदि हां, तो उनकी कितनी संख्या है ; और

(ग) वे किन शर्तों पर नियुक्त किये जा रहे हैं ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम)**: (क) हां, श्रीमान् ।

(ख) ९ टेक्नीसियन ।

(ग) उनमें से एक ९ महीनों के लिए नियुक्त किया गया है और अन्य १२ महीनों के लिए नियुक्त किये गये हैं। इन टेक्निसियनों का मासिक वेतन निम्न है :—

इंजिनियर	५,३०० रुपये
फोरमेन	४,००० रुपये
सहायक फोरमेन	३,४७० रुपये

अपीलीय सहायक कमिश्नर

†२१५. **श्री कृ० चं० पंत :**
श्री मुरारका :

क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत में कुल कितने अपीलीय सहायक कमिश्नर हैं ;

(ख) उपरोक्त पदों में से कितने खाली हैं ; और

(ग) इन पदों को खाली रखने के क्या कारण हैं ?

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)** : (क) १०४ ।

(ख) ५ ।

---

†मूल अंग्रेजी में

(ग) पांचों पदों में से ३ हाल में बनाये गये थे। नामों की विद्यमान पदाली में सभी अधिकारियों को पदोन्नति मिल गई है और विभागीय पदोन्नति समिति द्वारा सहायक कमिश्नरों के रूप में आयकर अधिकारियों की पदोन्नति के लिए नई पदाली बनते ही पद भर दिये जायेंगे।

रूरकेला

†२१६. **श्री मुरारका :**
श्री रा० शि० पाण्डेय :

क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या रूरकेला में धमन भट्टी संख्या १ की अपेक्षित मरम्मत हो गई है ;

(ख) यदि हां, तो इन मरम्मतों पर कुल कितना व्यय हुआ है ; और

(ग) इसके बन्द रहने की अवधि में कुल कितनी हानि हुई ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम)** : (क) हां, श्रीमान्।

(ख) ३,३३,०००।

(ग) प्रथम धमन भट्टी के बन्द होने से उत्पादन में हुई हानि की गणना नहीं की जा सकी क्योंकि तीसरी धमन भट्टी बन्द होने से पहिले चालू हो गई थी और दो भट्टियां इस अवधि में पहिले की भान्ति ही काम करती रहीं।

अन्दमान के विद्यार्थियों को समुद्री यात्रा की रियायत

†२१७. **श्रीमती सावित्री निगम :** क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने अन्दमान के विद्यार्थियों को समुद्री यात्रा रियायतें देने का निर्णय कर लिया है ; और

(ख) यदि हां, तो उसका व्योरा क्या है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) जी हां।

(ख) (१) मुख्य भूमि पर उच्च शिक्षा के लिए पहली बार आने पर पोर्ट ब्लेयर। कार निकोबार से उतरने वाले बन्दरगाह तक समुद्र द्वारा मुफ्त यात्रा का अध्ययन के स्थान तक बन्दरगाह से तीसरे दर्जे का मुफ्त किराया दिया जाता है।

(२) यदि विद्यार्थी अपनी छुट्टियां द्वीप समूह पर बिताना चाहें तो वर्ष में एक बार मुख्य भूमि के बन्दरगाह से द्वीप के बन्दरगाह तक स्कूल की रियायत दरों पर समुद्र यात्रा भाड़ा दिया जाता है।

(३) अध्ययन के सफलतापूर्वक समाप्ति पर अध्ययन स्थान से द्वीप के बन्दरगाह तक मुफ्त समुद्री यात्रा तथा तीसरे दर्जे के लिये टिकट दिया जाता है।

---

†मूल अंग्रेजी में

पूर्वी क्षेत्र (जोन) के मुख्य मंत्रियों का सम्मेलन

†२१८. **श्री दशरथ देव :**
श्रीमती रेणु चक्रवर्ती :
श्री गो० महन्ती :

क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सितम्बर, १९६२ में कलकत्ता में पूर्वी क्षेत्र (जोन) के मुख्य मंत्रियों का सम्मेलन हुआ था;

(ख) यदि हां, तो किन २ मुख्य बातों पर विचार किया गया था;

(ग) क्या सम्मेलन में आदिम जाति के लोगों की समस्याओं पर बातचीत हुई थी; और

(घ) यदि हां, तो उनकी मुख्य बातें क्या थीं और उन पर क्या निर्णय लिया गया था ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार)** : (क) पूर्वी जोनल काउन्सिल की छठी बैठक १६ सितम्बर, १९६२ को कलकत्ता में हुई थी।

(ख) से (घ). बैठक की कार्यवाही तथा काउन्सिल द्वारा किए गए निर्णय अन्तिम रूप से निश्चित हो जाने के बाद संसद् पुस्तकालय में रख दिए जायेंगे।

सबरूम सब-डिवीजन, त्रिपुरा, में हाई-स्कूल

†२१९. **श्री दशरथ देव :** क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) सबरुम सब-डिवीजन, त्रिपुरा, में इस समय कितने हाई स्कूल हैं ;

(ख) उक्त सब-डिवीजन की कुल जनसंख्या क्या है ;

(ग) क्या तीसरी पंचवर्षीय योजनावधि में इस सब-डिवीजन में और हाई स्कूल स्थापित करने की कोई योजना है ; और

(घ) यदि हां, तो ये हाई स्कूल कहां पर स्थापित किए जाने की आशा है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) से (घ). जानकारी त्रिपुरा प्रशासन से इकट्ठी की जा रही है और समय पर लोक-सभा पटल पर रख दी जायेगी।

झूमिया परिवारों का पुनर्वास

†२२०. **श्री दशरथ देव :** क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) जलय्या आदिम जाति बस्ती, सबरूम में कितने झूमिया परिवारों को पुनः बसाया गया हैं ;

(ख) क्या उन सभी लोगों को जिनको पुनर्वास अनुदान मिलता है प्रशासन द्वारा भूमि का वास्तविक रूप से आवण्टन तथा कब्जा दे दिया गया है ;

---

†मूल अंग्रेजी में

(ग) यदि नहीं, तो उनको रहने के लिए मकान बनाने की भूमि कब तक दिए जाने की आशा है; और

(घ) जलय्या बस्ती की झाड़ियों वाली भूमि को खेती योग्य बनाने के लिए क्या कार्यवाही की जा रही है?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : (क) दो सौ परिवार।

(ख) जी नहीं।

(ग) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

(घ) झूमियों को आवंटित भूमि का एक भाग झाड़ियों वाला है। इस भाग के लिए खेती योग्य बनाने की योजनाओं पर विचार किया जा रहा है और उपयुक्त अवसर आने पर चालू की जायेंगे।

त्रिपुरा में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी

†२२१. **श्री दशरथ देव** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) त्रिपुरा में इस समय चतुर्थ श्रेणी के कितने कर्मचारी हैं; और

(ख) उनमें अनुसूचित आदिम जातियों तथा अनुसूचित जातियों की अलग अलग संख्या क्या है?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : (क) ३८३२।

(ख) अनुसूचित आदिम जातियां—७७७

अनुसूचित जातियां—५११

निर्यात के माल का कम बीजक बनाना

†२२२. **श्री अ० क० गोपालन** :
श्री मुहम्मद इलियास :
श्री दाजी :
श्री नम्बियार :
श्री प्र० के० देव :
श्री प्र० कु० घोष :
श्री श्याम लाल सर्राफ :
श्री रामेश्वर टांटिया :

क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि पिछले पांच वर्षों में कलकत्ता में बड़े पैमाने पर निर्यात किये गये सामान से कम सामान का बीजक बनाने के मामले पकड़े गये हैं;

(ख) यदि हां, तो क्या इस भ्रष्टाचार में कुछ मशहूर व्यापार भवनों और/अथवा साथों के शामिल होने का शक है; और

(ग) क्या सरकार ने इस सम्बन्ध में कोई कम्पनी के कागजात पकड़े हैं?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)** : (क) और (ख). कलकत्ता सीमा-शुल्क अधिकारियों द्वारा विभिन्न व्यापार भवनों अथवा साथों द्वारा निर्यात के सामान से कम सामान का बीजक बनाने के कुछ मामले पकड़े गये हैं।

(ग) जी, हां।

कोयला खानों के लिये विश्व बैंक ऋण

†२२३. **श्री प्र० रं० चक्रवर्ती** : क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(ख) कोयला खानों से मशीनें और उपकरण खरीदने के लिये विश्व बैंक ऋण के लिये कितने आवेदन-पत्र दिये हैं ;

(ख) विश्व बैंक ने कितने आवेदन-पत्र मंजूर किये हैं ; और

(ग) अगले मार्च में विश्व बैंक का प्रस्ताव समाप्त होने से पूर्व इन परियोजना आवेदन पत्रों को शीघ्र निपटाने के लिये क्या कदम उठाये गये हैं ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) और (ख). नयी खानों के खोलने और वर्तमान खानों के विस्तार के लिये अपेक्षित मशीनों और उपकरण के आयात के लिये विश्व बैंक ऋण के लिये गैर-सरकारी क्षेत्र की कोयला खानों से १८० आवेदन-पत्र प्राप्त हुए हैं। इनमें से सरकार ने ११६ आवेदन-पत्रों की सिफारिश की थी और विश्व बैंक ने इन सबको मंजूर कर लिया है।

(ग) नयी खानों के खोलने के लिये अपक्षित विपेशी मुद्रा को पूरा करने के लिये विश्व बैंक ऋण की अवधि ३० सितम्बर, १९६५ को समाप्त होती है और वर्तमान खानों के विस्तार और संधारण के लिये अवधि ३१ जुलाई, १९६३ को समाप्त होती है। अब तक उपरोक्त परियोजना के लिये अपेक्षित लगभग ५.७४ करोड़ रुपये की मशीनों और उपकरण के आयात के लिये आवेदन-पत्र प्राप्त हुए हैं और लाइसेंस ४.१२ करोड़ रुपये के लिये जारी किये गये हैं। लाइसेंस देने वाले प्राधिकारियों को बाकी मामलों में लाइसेंस देने में शीघ्रता करने को कहा गया है। कोयला खान कम्पनियों को तेजी से आयात लाइसेंसों के लिये आवेदन पत्र देने को कहा गया है ताकि ऋण का समय पर इस्तेमाल किया जा सक।

भारत सर्वेक्षण विभाग के लिये पुनर्विलोकन समिति

†२२६. **श्रीमती मैमूना सुल्तान** : क्या **वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या भारत के सर्वेक्षण विभाग और राष्ट्रीय एटलस संगठन के लिये पुनर्विलोकन समिति ने संघ सरकार को अपना अन्तिम प्रतिवेदन दे दिया है ;

(ख) यदि हां, तो पुनर्विलोकन समिति की मुख्य सिफारिशें क्या हैं; और

(ग) उन पर सरकार ने क्या निर्णय किये हैं ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (डा० म० मो० दास)** : (क) जी, हां ।

(ख) और (ग). प्रतिवेदन सरकार के विचाराधीन है । यह उपयुक्त समय पर सभा पटल पर रखा जायगा ।

अखिल भारतीय खेल कूद कांग्रेस

†२२७. **श्री कर्णीसिंह जी** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या अखिल भारत खेलकूद कांग्रेस में किय गये प्रस्तावों को क्रियान्वित किया गया है; और

(ख) यदि नहीं, तो क्या सरकार प्रस्तावों की क्रियान्विति के लिये सरकार एक निश्चित कार्यक्रम बनायेगी ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** :(क) **और** (ख). इस मंत्रालय द्वारा खेल कूद और खेलों के बारे में सभी मामलों पर परामर्श देने के लिये स्थापित किये गये निकाय—अखिल भारत खेलकूद परिषद् ने हाल में प्रथम अखिल भारत खेलकूद कांग्रेस द्वारा की गयी विभिन्न सिफारिशों पर विचार किया और उन पर अपने मत व्यक्त किय । अब इन पर सरकार विचार कर रही है ।

दिल्ली में विद्यार्थी विधि

†२२८. **श्री प्र० कु० घोष** :
श्री मो० बा० सिंह ०

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राजधानी में विभिन्न सहायता प्राप्त कालिजों के प्रबन्धकों द्वारा विद्यार्थी सभा निधि खेल निधि और कालिज भवन निधि के परिवर्तन के विरुद्ध विद्यार्थियों ने अनेकों शिकायतें की हैं; और

(ख) यदि हां, तो विद्यार्थी निधि के इस घोषण को रोकने के लिये सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) जी, नहीं ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

दिल्ली में राष्ट्रीय संग्रहालय

†२२९. **श्री नरेन्द्र महीड़ा** :
श्री सोलांकी :

क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय में रविवार और छुट्टी वाले दिन नि:शुल्क प्रवेश होता है और शुक्रवार के दिन प्रवेश एक रुपये प्रति व्यक्ति के टिकट से होता है और सप्ताह के बाकी दिनों में २५ नया पैसा प्रति व्यक्ति के टिकट पर; और

†मूल अंग्रेजी में

(ख) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं कि दर्शकों से शुक्रवार को एक रुपया और अन्य दिन २५ नये पैसे लिये जाते हैं ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून् कबिर)** : (क) और (ख). जी, हां । अनेक देशों में संग्रहालयों में प्रवेशशुल्क लिया जाता है और कुछ विशेष दिनों में कला के विषय में अध्ययन करने के इच्छुक विद्यार्थियों और अन्य व्यक्तियों के लिये प्रवेश को सीमित करने के लिये प्रवेशशुल्क अधिक लिया जाता है । संग्रहालय देखने के लिये जनता को प्रस्तावित करने के लिये, राष्ट्रीय संग्रहालय में रविवार और अन्य छुट्टी वाले दिन प्रवेश निःशुल्क किया जाता है और अन्य दिनों में जैसा कि प्रश्न में कहा गया है, प्रवेशशुल्क लिया जाता है ।

बरौनी तेल शोधक कारखाना

†२३०. **डा० रानेन सेन :**
श्री दीनेन भट्टाचार्य :

क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) बरौनी तेल शोधक कारखाने के चालू हो जाने के बाद पश्चिम बंगाल को साफ किया हुआ कितना तेल मिल सकेगा ;

(ख) बिहार और उत्तर प्रदेश को कितना तेल मिल सकेगा; और

(ग) कलकत्ता क्षेत्र से बर्मा-शैल, एस्सो और काल्टेक्स जैसी गैर-सरकारी फर्मों द्वारा कितनी मात्रा में वर्तमान संभरण किया जाता है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे मालवीय)** : (क) बरौनी तेल शोधक कारखाने से लगभग ३ लाख टन प्रति वर्ष ।

(ख) लगभग १४ लाख टन प्रति वर्ष ।

(ग) वर्ष १९६१ में कलकत्ता में लगभग ६,५०,००० टन पेट्रोलियम उत्पादों का आयात किया गया । इस मात्रा में विशाखापटनम स्थित काल्टक्स तेल शोधक कारखाने से उत्पाद भी शामिल हैं ।

अखिल भारतीय सेवाओं में विभागीय उम्मीदवारों को सुविधायें

†२३२. **श्री भक्त दर्शन** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री ८ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ३०९ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि आई० ए० एस० तथा अन्य सम्बद्ध सेवाओं की प्रतियोगिता परीक्षाओं में पास होने वाले विभागीय उम्मीदवारों को द्वितीय श्रेणी के पदों पर नियुक्त करने की समान सुविधायें देने का जो प्रश्न विचाराधीन था उसके बारे में क्या निश्चय किया गया है ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) : सरकार मामले पर विचार कर रही है ।

दिल्ली विश्वविद्यालय में पुस्तकालय विज्ञान का पाठयक्रम

†२३३. **श्री बागड़ी** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) कितने व्यक्तियों को अब तक डैपूटेशन पर दिल्ली विश्वविद्यालय लाइब्रेरी साइन्स डिप्लोमा कोर्स के लिये भेजा गया;

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) यदि कोई व्यक्ति नहीं भेजे गये तो क्यों; और

(ग) कितने प्रार्थना-पत्र शिक्षा विभाग दिल्ली प्रशासन द्वारा दिल्ली विश्व-विद्यालय को भेजे गये और उन में से कितने व्यक्ति चुने गये ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) शैक्षणिक वर्ष १९५९–६० से आरम्भ होने वाले पिछले ४ वर्षों में डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के लिए कुल ८३ व्यक्ति प्रतिनियुक्ति पर भेजे गये । इन में से ७६ विभिन्न राज्य सरकारों तथा सात भारत सरकार द्वारा प्रतिनियुक्त किये गये ।

(ख) प्रश्न नहीं उठता ।

(ग)(१) शिक्षा विभाग, दिल्ली द्वारा आगे भेजे गये (१९५९–६० से आरम्भ होने वाले ४ शैक्षणिक सत्रों के लिए) आवेदन-पत्रों की कुल संख्या ८ :

(२) चुने गये व्यक्तियों की संख्या : २

दिल्ली प्रशासन में पुस्तकालयाध्यक्ष

†२३४. **श्री बागड़ी** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) दिल्ली प्रशासन के शिक्षा विभाग में पुस्तकालयाध्यक्ष का वेतन क्रम क्या है ;

(ख) क्या शिक्षा मंत्रालय ने अपने गजट के अनुसार पुस्तकालयाध्यक्ष (लाइब्रेरियन) का वेतन क्रम संशोधित किया था; और

(ग) यदि हां, तो कब और इसे कार्यान्वित करने में विलम्ब के क्या कारण हैं ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) वेतन आयोग की सिफारिश के अनुसार वर्तमान वेतन-क्रम इस प्रकार हैं :—

(१) १५०–१०–२५०–कु० रो०–१०–२९०–१५–३२० रुपये

(२) ११८–४–१७०–कु० रो०–५–२००–कु० रो०–५–२२० रुपये ।

(ख) और (ग). वेतन-क्रमों में संशोधन का दायित्व दिल्ली प्रशासन का है, शिक्षा मंत्रालय का नहीं । दिल्ली प्रशासन इस प्रश्न पर विचार कर रहा है ।

आयात के सामान का कम बीजक बनाना

†२३५. **श्री बैरियर** : क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या चालू वर्ष में, विशेषत: संश्लिष्ट रेशे के आयात के बारे में, आयात के मामलों में आयात के सामान से कम सामान का बीजक बनाने के मामलों में वृद्धि हुई है; और

(ख) यदि हां, तो अब तक पकड़े गये मामलों का क्या ब्यौरा है ?

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)**: (क) और (ख). संश्लिष्ट रेशा किलेमेंट धागे के आयात समेत आयात के मामलों में आयात के सामान से कम सामान का बीजक बनाने के कुछ मामले हैं । परन्तु चालू वर्ष में संश्लिष्ट रेशे के कम का बीजक बनाने के किसी मामले का पता नहीं लगा है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

पाठ्यपुस्तकों के लिय कागज

†२३६. **श्री वारियर :**
श्री विशन चन्द्र सेठ :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने विदेशों से दान स्वरूप प्राप्त कागज़ को, निर्धन और जरूरतमन्द बच्चों को निःशुल्क दिये जाने के लिये पाठ्य पुस्तकें छापने के लिये, राज्य सरकारों को वितरित कर दिया हें; और

(ख) यदि हां, तो उसका क्या ब्यौरा है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) जी, हां ।

(ख) एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या २३]।**

साहित्य अकादमी की परिचय–पुस्तकें

†२३७. **श्री वारियर :** क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान इस शिकायत की ओर आकृष्ट किया गया है कि साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित की गयी 'परिचय-पुस्तक" में बड़ी गम्भीर गलतियां हैं; और

(ख) यदि हां, तो उन गलतियों को सुधारने के लिये सरकार ने क्या कदम उठाये हैं ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य मंत्री (श्री हुमायून् कबिर)** : (क) और (ख). साहित्य अकादमी को, जिस ने यह पुस्तक प्रकाशित की है, पता लग गया है कि कुछ नाम छपने से रह गये हैं और कुछ मामलों में जानकारी पुरानी है । क्योंकि पुस्तक में दी गई बातें स्वयं लेखकों द्वारा भेजी गई जानकारी के आधार पर हैं, ये त्रुटियां तब पैदा हुईं जब उन्हों ने पूर्ण रूप से और समय पर जानकारी नहीं दी परन्तु जब पुनरीक्षित संस्करण निकलेगा तब ये त्रुटियां दूर कर दी जायेंगी । अकादमी एक अनुपूरक सूची निकालने के लिये भी कदम उठा रही है जिस में वे नाम रख दिये जायेंगे जो पहले प्रकाशन में छपने से रह गये थे ।

इस्पात समवायों द्वारा ऋण का पुनर्भुगतान

†२३८. **श्री वारियर :**
श्री विशन चन्द्र सेठ :

क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या इस्पात समवायों ने सरकार द्वारा दी गई राशि में से कोई रकम वापस की है अथवा उस समय से जब से वे उनका इस्तेमाल कर रहे हैं, उन राशियों पर कोई ब्याज दिया है ; और

(ख) यदि हां, तो प्रत्येक मद में (पृथक-पृथक) कितना ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम)** : (क) जी नहीं ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

दिल्ली में बाल विवाह

२३६. **श्री बेरवा कोटा** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि गत तीन वर्षों में दिल्ली में बाल विवाह करने के कारण कितने व्यक्तियों को सजायें दी गईं अथवा उन पर जुर्माने किये गये ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार)** : कोई नहीं ।

अस्पृश्यता

†२४०. **श्री बेरवा कोटा** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि दिल्ली में वर्ष १६६१ में अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम, १६५५ के अधीन कितने मुकदमे दर्ज हुए और कितने मुकदमों में सजा या जुर्माना किया गया ?

गृह-कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्रीमती चन्द्रशेखर) : दिल्ली में १६६१ में अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम १६५५ के अधीन ३ मुकदमें दर्ज किये गये, जिन में से एक में सजा दी गई, एक को मजिस्ट्रेट के सामने समझौता होने के कारण खारिज कर दिया गया और एक अभी अदालत के विचाराधीन है ।

पंजाब के लिये कोयला

†२४३. **श्री दलजीत सिंह** : क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि चालू वर्ष में पंजाब को कोयले के संभरण में बहुत कमी हुई है ;

(ख) यदि हां, तो स्थिति को सुधारने के लिये क्या कदम उठाये जा रहे हैं ; और

(ग) पिछले छः महीनों में पंजाब को (१) आवंटित और (२) संभरित हार्ड कोक की क्या मात्रा है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) और (ख). मई से सितम्बर, १६६२ की अवधि में पंजाब को कोयले के अभ्यंश और वास्तविक संभरण के आंकड़े निम्न प्रकार हैं । इस से यह पता लगेगा कि पंजाब को कोयले का संभरण सन्तोषजनक है ।

(वैगनों में)

महीना	अभ्यंश	संभरण
मई	३०१५	३०१२
जून	३०१६	३१०६
जुलाई	३४००	२६२३
अगस्त	३४००	४३४३
सितम्बर	३४००	३६८८ (अस्थायी)

†मूल अंग्रेजी में

(ग) अप्रैल से सितम्बर १९६२ की अवधि में पंजाब को हार्ड कोक के १६६९ वैगनों के अवंटन में से कुछ १२४९ वैगन माल भेजा गया ।

सीमेन्ट का उत्पादन

†२४४. **श्री दलजीत सिंह :** क्या इस्पात और भारी उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) वर्ष १९६० और १९६१ में सीमेन्ट का कितना उत्पादन हुआ ; और

(ख) तृतीय पंचवर्षीय योजना काल का क्या लक्ष्य है और अब तक कितना लक्ष्य प्राप्त किया गया है ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) :** (क)—

	लाख टन
१९६०	७८.४४
१९६१	८२.४६

(ख) तृतीय पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य १३० लाख टन (१३२ लाख मीटरिक टन) के उत्पादान के साथ साथ प्रति वर्ष १५० लाख टन (१५२ लाख मीटरिक टन की अधिष्ठापित क्षमता है । वर्तमान अधिष्ठापित क्षमता लगभग १०० लाख टन है ।

पंजाब में कांगड़ा और होशियारपुर जिलों में स्मारक

†२४५. **श्री दलजीत सिंह :** क्या वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पंजाब के कांगड़ा और होशियारपुर जिलों में वर्ष १९६१-६२ और १९६२-६३ में अब तक प्रत्येक संरक्षित स्मारक के संधारण और विशेष मरम्मत के लिये कुल कितनी धनराशि आवंटित की गई है ; और

(ख) क्या वर्ष १९६१-६२ के लिये आवंटित धनराशि पूरी व्यय की गई है ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (डा० म० मो० दास) :** (क) और (ख). ये आंकड़े इकट्ठा करने में जो श्रम और समय लगेगा वह प्राप्त परिणामों के अनुरूप नहीं होगा ।

वैज्ञानिक अनुसन्धान

†२४६. **श्री दलजीत सिंह :** क्या वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) इस समय विदेशों में उनके मंत्रालय की छात्रवृत्ति योजनाओं के अन्तर्गत कितने भारतीय विद्यार्थी वैज्ञानिक अनुसन्धान कर रहे हैं ; और

(ख) वैज्ञानिक अनुसंधान के लिये जिन देशों ने भारतीय विद्यार्थियों को सुविधायें दी हैं, उन के क्या नाम हैं ?

---

†मूल अंग्रेजी में

वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक कार्य मंत्री (श्री हुमायून् कबिर) : (क) इस समय मेरे मंत्रालय की छात्रवृत्ति योजनाओं के अन्तर्गत विदेशों में संस्थाओं में ३५२ भारतीय वैज्ञानिक अनुसन्धान कार्य कर रहे हैं। इन में से २४३ पी० एच० डी० डिग्री के लिये रजिस्टर्ड हैं।

(ख) आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, बेल्जियम, कनाडा, चेकोस्लोवेकिया, जर्मन गणराज्य संघ, फ्रांस, जर्मन लोकतंत्रीय गणराज्य, इटली, जापान न्यूजीलैंड, न्यासालैण्ड, रोडेशिया, स्वीडन, स्विटजरलड, संयुक्त अरब गणराज्य, ब्रिटेन, अमरीका, रूस और युगोस्लाविया ।

स्टेनलेस स्टील की चादरों का आवंटन

†२४७. **श्री इन्द्रजीत गुप्त** : क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या उपभोक्ताओं को स्टेनलेस स्टील की चादरों के आवंटन का उत्तरदायित्व लोहा तथा इस्पात नियंत्रक से विभिन्न राज्यों के उद्योग निदेशकों को हस्तांतरित कर दिया है ;

(ख) क्या इस के परिणामस्वरूप, पुरानी स्थापित फर्मों से शिकायतें प्राप्त हुई हैं कि उन्हें अपना अपेक्षित अभ्यंश नहीं मिल रहा है जबकि चोर बाजार में माल बिक रहा है ; और

(ग) क्या सरकार इन शिकायतों की जांच का आदेश देगी और स्थिति को सुधारने के लिए कदम उठायेगी ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम)** : (क) जी, हां।

(ख) और (ग) कुछ शिकायतें आई हैं कि पुरानी स्थापित फर्मों को अपेक्षित मात्रा में स्टेनलेस स्टील की चादरें नहीं मिल रही हैं। यह संभवतः राज्यों के उद्योग निदेशकों द्वारा, वर्ष १९६०-६१ की अपेक्षा १९६१-६२ में विभिन्न राज्यों को अधिक आवंटन के बावजूद, नये कारखानों को चादरें दिये जाने के कारण है। बर्तन बनाने वालों को स्टेनलेस स्टील की चादरों की सारी आवश्यकता का आयात करना पड़ता है। क्योंकि विदेशी मुद्रा सीमित मात्रा में उपलब्ध है, सरकार ने यह निर्णय किया है कि अप्रैल-सितम्बर, १९६२ की अवधि के बाद से उद्योग निदेशक नये यूनिटों को कोई स्टेनलेस स्टील की चादरें न दें यह आशा की जाती है कि इस कदम से पुराने यूनिटों को अभ्यंश दिया जाता रहेगा ।

दिल्ली में मानसिक रूप से अल्प-विकसित बच्चों के लिये स्कूल

†२४८. { **श्री विशन चन्द्र सेठ** :
श्री यशपाल सिंह :
श्री वारियर :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार ने दिल्ली में मानसिक रूप से अल्प-विकसित बच्चों के लिये एक स्कूल खोलने की योजना स्वीकार कर ली है ;

(ख) यदि हां, तो उस का क्या ब्योरा है ;

---

†मूल अंग्रेजी में

(ग) एक बार में कितने विद्यार्थी दाखिल किये जायेंगे ; और

(घ) क्या विद्यार्थियों से कोई फीस ली जायेगी ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) जी हां ।

(ख) से (घ). एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या २४]**

नूनमती तेल शोधक कारखाना

†२४९. **श्री मो० ना० सिंह० :**
श्री प्र० क० घोष :

क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) नूनमती तेल शोधक कारखाने में वास्तविक कार्य कब तक आरंभ होगा ;

(ख) केन्द्रीय सरकार को इस में कितनी हानि हुई है ; और

(ग) यह हानि किन परिस्थितियों में हुई है :

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) तेल शोधक कारखाने के तीन मुख्य एककों ने नियम तारीखों से काम आरंभ कर दिया था :—

१. क्रूड डिस्टिलेशन प्लांट	२६-१२-१९६१ को
२. कोकिंग यूनिट	१८-५-१९६२ को
३. किरोसीन रिफाइनिंग यूनिट . . .	३०-६-१९६२ को

(ख) इनको चालू करने में हुये हानि का अभी निश्चय नहीं किया गया है। १९६२ में काम के परिणामों का पता लग जाने के बाद ऐसा किया जा सकता है ।

(ग) आरंभिक परीक्षणों में कम उत्पादन के कारण मैकनीकल गड़बड़ियों के कारण तेल शोधक कारखाने में बाधा के कारण, कम लदान के कारण शोधित उत्पादों के भांडार इकट्ठा हो जाने के कारण अथवा आसाम के बाढ़ के कारण रेलों के चलने में प्रतिबंध के कारण क्रूड आयल की ऊंची लागत है ।

इस्पात की चादरों पर अल्युमिनियम चढ़ाना

†२५०. **श्री प्र० के० देव** : क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या जमशेदपुर की राष्ट्रीय धातु कार्मिक शोधनशाला में हाल में ही इस्पात की चादरों पर जस्ते के स्थान पर अल्युमिनियम चढ़ाने के लिए हाल में ही नया तरीका निकाला गया है;

(ख) दोनों तरीकों के व्यय में कितना अन्तर है ; और

(ग) क्या देश के सरकारी तथा गैर सरकारी क्षेत्रों के इस्पात कारखानों में यह तरीक़ा लागू किया जा रहा है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून् कबिर)** : (क) जी हां ।

(ख) अल्युमिनियम चढ़ाने का तरीका जस्ता चढ़ाने के तरीके से अच्छा है ।

(ग) इस्पात की चादरें, तार और ट्यूबों पर चढ़ाने के लिए भारत के सभी गैलवनाइजिंग कारखानों में यह तरीका अपनाया जा सकता है तथा उन छोटे पैमाने के उद्योगों में भी अपनाया जा सकता है जो छोटी निर्मित वस्तुओं तथा लोटे के सामान पर सस्ती बिजली तथा गैस के ईंधन से अल्युमिनियम चढ़ाते हों । यह तरीका गैर सरकारी क्षेत्र में उद्योगों में २० एककों को पट्टे पर दे दिया गया है । सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों ने भी इसमें रुचि दिखाई है ।

लेह में बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिये कालिज

†२५१. **श्री प्र० के० देव :**
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री भक्त दर्शन :
श्री श्याम लाल सर्राफ :

क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या लेह में तिब्बती बौद्ध धर्म के दर्शन का अध्ययन करने के लिए एक कालिज है ;

(ख) यदि हां, तो उक्त कालिज पर कितना धन व्यय होता है ;

(ग) वहां पर कितने विद्यार्थी हैं ; और

(घ) उक्त कालिज को भारत सरकार ने कितना अनुदान दिया है ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून् कबिर)** : (क) जी हां । अक्तूबर, १९५९ में लेह में भारत सरकार ने बौद्ध धर्म के दर्शन का एक स्कूल स्थापित किया था ।

(ख) लगभग ५५,४५५ रुपये अब तक ।

(ग) इस समय २० लामा विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं ।

(घ) सभी काम भारत सरकार के अनुदानों से पूरा होता जाता है ।

राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला

†२५२. **श्री प्र० के० देव** : क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला ने हाल में स्वदेशी मृद्माण्ड धारित्र (सीरेमिक कण्डेन्सर) बनाये हैं ;

(ख) यदि हां, तो क्या इन मृद्माण्ड धारित्रों का उत्पादन बड़े पैमाने पर आरम्भ कर दिया गया है ; और

(ग) विदेशों से मृद्माण्ड कण्डेन्सरों का आयात करने के लिए प्रतिवर्ष कितनी विदेशी व्यय की जाती है ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून् कबिर)** : (क) हां, श्रीमान् ।

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) हां, श्रीमान् । बंगलोर में भारत इलैक्ट्रोनिक्स फैक्टरी में बनाये जा रहे हैं ।

(ग) इस वस्तु विशेष के पृथक आंकड़े नहीं रखे जाते, परन्तु साधारण बात यह है कि लगभग ५ लाख रु० के मूल्य के मृदमाण्ड धारित्र प्रतिवर्ष आयात होते थे ।

दुर्गापुर में पहिया तथा धुरी बनाने का कारखाना

†२५३. **श्री प्र० के० देव :** क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पहिया तथा धुरी कारखाना, दुर्गापुर कारखाना कब चालू हुआ ;

(ख) उत्पादन की इसकी कार्मिक क्षमता क्या है ; और

(ग) क्या यह कारखाना इस बारे में देश की सारी आवश्यकता पूरी कर सकेगा ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) :** (क) पहिया तथा धुरी कारखाना जनवरी, १९६२ में चालू हुआ था ।

(ख) ४५,००० पहियों के सेट ।

(ग) तीसरी योजना की अवधि में दुर्गापुर इस्पात कारखाने के विस्तार में पहिया तथा धुरी कारखाने में ७५,००० पहियों के सेटों के उत्पादन का उपबन्ध है । आशा है कि 'टिस्को' के विस्तार के साथ इससे देश की आवश्यकता पूरी हो जायेगी । हां, संभव है कि कुछ सीमान्त अभाव और कुछ अतिरिक्त टायरों तथा धुरियों का आयात करना पड़े ।

नंगल उर्वरक कारखाना

†२५४. **श्री दलजीत सिंह :** क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि उर्वरक कारखाना, नया नंगल में गैस की बड़ी मात्रा का प्रयोग नहीं होता और वह बेकार जाती है ;

(ख) क्या वाणिज्यिक कार्यों के लिए इसका प्रयोग हो सकता है ; और

(ग) यदि हां, तो हानि से बचने के लिए इसका सर्वोत्तम प्रयोग करने के लिए क्या कार्यवाही की गई है या की जा रही है ?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) :** (क) हां, आजकल इलेक्ट्रोलाइसिस संयंत्र में उत्पन्न होने वाली लगभग ८,८०० घन मीटर आक्सीजन प्रति घंटा वातावरण में छोड़ी जाती है ।

(ख) और (ग). आक्सीजन के अनेक वाणिज्यिक प्रयोग किये जा सकते हैं । इनमें कुछ तो नंगल में लाभदायक नहीं होंगे और दूसरों के लिए बड़ी मात्रा में पूंजी-व्यय की आवश्यकता है । इलेक्ट्रोलाइसिस संयंत्र में बनने वाली आक्सीजन कास्टिक पुटास से दूषित होती है । इस प्रकार यह कारखाने में नाइट्रक अम्ल संयंत्र में इसका प्रयोग नहीं हो सकता । साफ करन के ढंग की जांच पड़ताल हो रही है और लाभदायक ढंग के मालूम होने पर नाइट्रक अक्ल संयंत्र में लगभग ५,५०० घन मीटर आक्सीजन प्रति घंटा प्रयोग की जा सकेगी ।

---

†मूल अंग्रेजी में

कोयला से गैस बनाने, ईंधन तेल या नकटा के लिये आक्सीजन का प्रयोग किया जा सकता है । कोयला और अतिरेक आक्सीजन के उपयोग के आधार पर विद्यमान उर्वरक कारखाना के विस्तार की आजकल जांच पड़ताल हो रही है ।

हिमाचल प्रदेश तथा दिल्ली के लिए संयुक्त पुलिस पदाली :

†२५५. **श्री ई० मधुसूदन राव :** क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) हिमाचल प्रदेश तथा दिल्ली के पुलिस तथा अन्य अधिकारियों की संयुक्त पदाली बनाने में क्या प्रगति हुई है ; और

(ख) कुल कितने पुलिस अधिकारियों की आवश्यकता होगी ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) :** (क) दिल्ली तथा हिमाचल प्रदेश की असैनिक तथा पुलिस से सेवाओं में नियुक्ति करने के लिए आरम्भिक संगठन में ही चुनाव कर लिया गया था । चुने गये अधिकारियों से संयुक्त असैनिक तथा पुलिस सेवा पदालियों में नियुक्ति के लिए स्वेच्छा प्रकट करने को कहा गया है। उत्तर प्रदेश और पंजाब की सरकारों से प्रार्थना की गई है कि वे चुने हुए अधिकारियों को उपरोक्त संयुक्त पदालियों में लगाने और उनमें से ऐसे अधिकारियों को छोड़ने के लिए भी प्रार्थना की गई है जो राज्य सरकारों के अधीन सेवा कर रहे है ।

वर्ष १९६१ में एक अधिकारी असैनिक सेवा में सीधे भर्त्ती से नियुक्त किया गया था और चालू वर्ष में ऐसे १० अधिकारियों को नियुक्त करने का विचार है। इस वर्ष पुलिस सेवा में सीधी भर्त्ती से भी लगभग पांच अधिकारी नियुक्त करने का विचार है। पदोन्नति कोटा से असैनिक तथा पुलिस सेवाओं में नियुक्ति के लिए सुपात्र अधिकारियों के मामलों की भी जांच की जा रही है।

भारतीय प्रशासन सेवा और भारतीय पुलिस सेवा के मामले में भी दिल्ली तथा हिमाचल प्रदेश के लिए संयुक्त पदालियां बनाई गई हैं। अबतक संयुक्त भारतीय प्रशासन सेवा पदाली में १६ अधिकारियों की नियुक्ति और संयुक्त भारतीय पुलिस सेवा पदाली में ४ अधिकारियों की नियुक्ति हुई है जबकि इन पदालियों में से प्रत्येक के लिए क्रमानुसार कुल ६५ और ३४ अधिकारियों की आवश्यकता थी।

(ख) संयुक्त भारतीय पुलिस सेवा पदाली के लिए और दिल्ली तथा हिमाचल प्रदेश पुलिस सेवा के लिए क्रमानुसार कुल ३४ और ५५ अधिकारियों की आवश्यकता थी।

मंत्री और उनके भत्ते

†२५६. { **श्री कृष्ण पाल सिंह :**
श्री हेम बरूआ :

क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) संघ सरकार में कुल कितने मंत्री, राज्यमंत्री, उपमंत्री और सभा सचिव, आदि हैं;

---

†मूल अंग्रजी में

(ख) प्रत्येक कितना वेतन, भत्ता (यात्रा भत्ता तथा मंहगाई भत्ता) लेता है; और

(ग) बाग, आदि सहित उनके आवास के रख रखाव, परिवहन, चपरासियों और अन्य व्यक्तिगत कर्मचारियों को लोक निधि से भुगतान होने वाला और प्रत्येक के संरक्षण पर कितना व्यय होता है?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार):**

(क) केबिनट मंत्री	१८
राज्यमंत्री	१२
उपमंत्री	२२
सभा सचिव	७

(ख) मंत्रियों का वेतन तथा भत्ता अधिनियम, १९५२ और उसके अन्तर्गत बने नियमों के अनुसार ही भुगतान होता है।

(ग) विभिन्न मदों के अन्तर्गत जानकारी एकत्रित करने और किसी अविशिष्ट काल के लिए जानकारी एकत्रित करने में लगने वाले समय बन श्रम के अनुकूल परिणाम प्राप्त नहीं होगा।

लोहा तथा इस्पात नियंत्रक कार्यालय

†२५८. **श्रीमती रेणु चक्रवर्ती:** क्या **इस्पात और भारी उद्योग** मंत्री २६ मार्च, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ३१९ के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या लोहा और इस्पात नियंत्रक कार्यालय के शेष कर्मचारियों को स्थायी बनाने के प्रश्न पर अब अन्तिम निश्चय हो गया है;

(ख) क्या एस० आर० यूनिट की अन्तिम रिपोर्ट प्राप्त हो गई है; और

(ग) क्या वर्ष १९४४–४५ के कर्मचारी स्थायी कर दिये जायेंगे?

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम):** (क) लोहा और इस्पात नियंत्रक कलकत्ता के कार्यालय में २६ मार्च, १९६२ के बाद श्रेणी २, ३ और ४ के विभिन्न राज्य–अपत्रित पदों पर स्थायी रूप से १४६ व्यक्ति नियुक्त किये गये हैं। विद्यमान स्थायी रिक्त पदों पर लगभग ९५ कर्मचारियों को स्थायी बनाने का प्रश्न आजकल विचाराधीन है।

(ख) एस० आर० यूनिट की अन्तिम रिपोर्ट आ गई है और कार्य सरलीकरण संबंधी उनकी सिफारिशों को लागू करने के लिए आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। आशा है कि कार्य को सरल बनाने सुधार करने के एस० आर० यूनिट के सुझावों को तभी लागू किया जायगा तब ही कर्मचारियों की संख्या में कुछ कमी होगी। रिपोर्ट के पूर्णतया लागू होने तक ऐसे अस्थायी पदों की निश्चित संख्या, जिन्हें स्थायी किया जा सकता है, निर्धारित नहीं की जा सकती।

(ग) आशा है कि विद्यमान स्थायी रिक्त स्थानों के भरने से वे व्यक्ति जिन्हें जो सितम्बर, १९४४ तक नौकरी में आ गये थे और निरन्तर सेवा में है, स्थायी बना दिये जायेंगे।

---

†मूल अंग्रेजी में

वर्ष १९४४ और १९४५ में आये बाकी कर्मचारी जैसे जैसे स्थायी पद रिक्त होते जायेंगे, स्थायी बनते रहेंगे ।

हंगरी से ऋण

२५९. **श्री सरजू पाण्डेय :** क्या वित्त मंत्री २५ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ५९४ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि हंगरी सरकार से आठ करोड़ रुपया ऋण प्राप्त करने के सम्बन्ध में जो बातचीत चल रही थी, उसमें क्या प्रगति हुई है ?

वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : इस सम्बन्ध में, अभी तक, हंगरी सरकार के साथ और आगे बातचीत नहीं हुई हैं।

जीवन बीमा निगम की वार्षिक रिपोर्ट

†२६१. **श्री कजरोलकर :** क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या जीवन बीमा निगम की वार्षिक रिपोर्ट निगम अधिनियम, १९५६ के अनुसार होगी अर्थात् कैलण्डर वर्ष के बजाये वित्तीय वर्ष के लिए होगी;

(ख) यदि हां, तो यह कब लागू होगी;

(ग) क्या इस परिवर्तन का प्रभाव आय-कर विवरण पर पड़ेगा;

(घ) क्या वित्तीय वर्ष में करने के इस परिवर्तन से व्यापार में वृद्धि होगी; और

(ङ) यदि हां, तो कितनी वृद्धि होगी ?

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) :** (क) और (ख). १ अप्रैल, १९६३ से वित्तीय वर्ष के आधार पर वार्षिक रिपोर्ट तैयार करने के और १ जनवरी, १९६२ से ३१ मार्च, १९६३ तक १५ मास की रिपोर्ट तैयार करने के प्रस्ताव जीवन बीमा निगम से प्राप्त हो गये हैं और सरकार के विचाराधीन हैं।

(ग) नहीं।

(घ) और (ङ). आजकल कोई निश्चित निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता।

कलाकोट कोयला खान

†२६२. **श्री इन्द्रजीत लाल मल्होत्रा :** क्या **खान और इंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि केन्द्रीय सरकार ने जम्मू तथा काश्मीर सरकार की सहमति से जम्मू प्रान्त में कलाकोट की कोयला खानों का प्रशासन अपने हाथ में ले लिया है ;

(ख) यदि हां, तो इस करार का क्या ब्यौरा है; और

(ग) इन कोयला खानों के खनन कार्य में सुधार करने के लिए केन्द्रीय सरकार क्या कार्यवाही करेगी ?

---

†मल अंग्रजी में

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) से (ग) . जम्मू तथा काश्मीर की राज्य सरकार और राष्ट्रीय कोयला विकास निगम के साथ एक बैठक में यह निश्चय किया गया है कि राष्ट्रीय कोयला विकास निगम को जम्मू तथा काश्मीर राज्य में कलाकोट तथा जंगलगली कोयला खानों से कोयला निकालने तथा विकास करने के लिए पट्टे ले लेने चाहियें। किये गये करार के अनुसार भारत सरकार और राष्ट्रीय कोयला विकास निगम कोयला निकालने के लिए छेद करने के मामले में तत्काल सहायता देगी। सड़क परिवहन के मामले में भी कठिनाई दूर करने की कार्यवाही की जायगी। भारत सरकार, राष्ट्रीय कोयला विकास निगम और जम्मू तथा काश्मीर राज्य के प्रतिनिधियों की एक स्थानीय परामर्शदात्री समिति कोयला क्षेत्रों के विकास के सम्बन्ध में राष्ट्रीय कोयला विकास निगम को सलाह देगी। तीसरी पंचवर्षीय योजनाकाल में कार्यान्विति की योजनाओं में उपरोक्त कोयला खानों का विकास सम्मिलित करने का और शीघ्र कार्य आरम्भ करने के लिए राष्ट्रीय कोयला विकास निगम को सुयोग्य बनाने की योजना के आवश्यक निधि की व्यवस्था करने का प्रस्ताव भारत सरकार के विचाराधीन है।

कच्छ में लिग्नाइट और बोक्साइट

†२६३. **श्री मानसिंह पु० पटेल** : क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या गुजरात सरकार ने कच्छ के पश्चिमी भाग का सर्वेक्षण करने की सिफारिश की है क्योंकि प्रारम्भिक सर्वेक्षण में वहां लिग्नाइट और बोक्साइट मिलने के चिह्न मिले हैं ; और

(ख) यदि हां, तो इस सम्बन्ध में सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजार नवीस)** : (क) हां।

(ख) गुजरात सरकार को सूचित किया गया है कि केन्द्रीय सरकार को कोयला और लिग्नाइट के लिए छेद करके निकालने की विशिष्ट योजनाओं के राज्य सरकार द्वारा आरम्भ किये जाने पर कोई आपत्ति नहीं है। कच्छ में बोक्साइट निक्षेपों सम्बन्धी जांच पड़ताल भारत के भूतत्वीय सर्वेक्षण वर्ष १९६०–६१ में आरम्भ कर दी है। शायद ६० लाख मीट्रिक बोक्साइट के निक्षेप होने का अनुमान था। इसमें से ४० लाख मीट्रिक टन के उच्च कोटि के होने की आशा है।

छोटी कोयला खानों का एकीकरण

†२६४. **श्री महेश्वर नायक** : क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि अब सरकार ने बलवन्त राय मेहता समिति के सिफारिश के अनुसार गैर-सरकारी क्षेत्र की कोयला की छोटी खानों का अनिवार्य एकीकरण करने का निश्चय कर लिया है ; और

(ख) यदि हां, तो कब ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) नहीं।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

---

†मूल अंग्रेजी में

रेलवे दुर्घटना समिति के सदस्यों को दिये गये भत्ते के बारे में

†**अध्यक्ष महोदय** : सभा पटल पर रखे जाने वाले पत्र . . . .

†**श्री हरि विष्णु कामत (होशंगाबाद)** : मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि रेलवे मंत्री द्वारा रेलवे दुर्घटना समिति के सदस्यों को दिये गये भत्ते के बारे में प्रश्नों का उत्तर देंगे ।

†**अध्यक्ष महोदय** : हां, वह देंगे ।

सभा-पटल पर रखे गये पत्र

जीवन बीमा निगम का वार्षिक प्रतिवेदन

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)** : मैं जीवन बीमा निगम अधिनियम, १९५६ की धारा २९ के अन्तर्गत दिनांक ३१ दिसम्बर, १९६१ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए भारत के जीवन बीमा निगम के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति लेखा परीक्षित लेखे सहित सभा पटल पर रखता हूं ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिए संख्या एल० टी० ४९०/६२]

प्रशुल्क आयोग के प्रतिवेदन

†**इस्पात और भारी उद्योग मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम)** : मैं प्रशुल्क आयोग अधिनियम, १९५१ की धारा १६ की उप-धारा (२) के अन्तर्गत निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं :

(एक) दिनांक १ अप्रैल, १९६० से ३१ मार्च, १९६२ की अवधि के लिय कारखाने पर ढलवें लोहे की उचित सन्धारण मूल्य के बारे में प्रशुल्क आयोग के प्रतिवेदन (१९६२)

(दो) दिनांक १ अप्रैल, १९६० से ३१ मार्च, १९६२ की अवधि के लिये कारखाने पर इस्पात के उचित सन्धारण मूल्य के बारे में प्रशुल्क आयोग का प्रतिवेदन (१९६२)

(तीन) दिनांक ७ सितम्बर, १९६२ का सरकारी संकल्प संख्या एस० सी० (सी)—२(२७)/६२ ।

(चार) उन कारणों को बताने वाले वक्तव्य की एक प्रति जिनके कारण उक्त उपधारा के अधीन नियत समय के भीतर उपरोक्त (एक), (दो) और (तीन) में उल्लिखित दस्तावेजों की प्रति सभा पटल पर नहीं रखी जा सकी ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिए संख्या एल० टी० ४९१/६२, ४९२/६२]

सालारजंग संग्रहालय बोर्ड का वार्षिक प्रतिवेदन

†**वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक-कार्य मन्त्रालय में उपमन्त्री (श्री म० मो० दास)** : श्री हुमायून् कबिर की ओर से मैं वर्ष १९६१–६२ के लिए सालारजंग संग्रहालय बोर्ड हैदराबाद के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिए संख्या एल० टी० ४९३/६२]

---

†मूल अंग्रेजी में

क्षेत्रीय परिषदों के नियम

†**गृह-कार्य मन्त्रालय में राज्य मन्त्री (श्री दातार)** : मैं, क्षेत्रीय परिषदें अधिनियम, १९५६ की धारा ५४ की उपधारा (३) के अन्तर्गत दिनांक २१ जुलाई, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० ९८६ में प्रकाशित क्षेत्रीय परिषदें (दूसरा संशोधन) नियम, १९६२ की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिए संख्या एल० टी० ३१३/६२]

समुद्र सीमा शुल्क अधिनियम के अन्तर्गत अधिसूचनायें

†**वित्त उपमन्त्री (श्री ब० रा० भगत)** : मैं निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं :

समुद्र सीमा-शुल्क अधिनियम, १८७८ की धारा ४३ख की उप-धारा (४) और केन्द्रीय उत्पादन शुल्क तथा नमक अधिनियम, १९४४ की धारा ३८ के अन्तर्गत सीमा-शुल्क तथा केन्द्रीय उत्पादन शुल्क निर्यात प्रत्याहृत (सामान्य) नियम, १९६० में कुछ और संशोधन करने वाली निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति :—

(क) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११४९ ।

(ख) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११५० ।

(ग) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११५१ ।

(घ) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११५२ ।

(ङ) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११५३ ।

(च) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९३ ।

(छ) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९४ ।

(ज) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९५ ।

(झ) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९६ ।

(ञ) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९७ ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिए संख्या एल० टी० ४९४/६२]

केन्द्रीय उत्पादन शुल्क तथा नमक अधिनियम, १९४४ की धारा ३८ के अन्तर्गत केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क नियम १९४४ में कुछ और संशोधन करने वाली निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति :—

(क) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९१ ।

(ख) दिनांक २० अक्टूबर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या १३७३ ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिए संख्या एल० टी० ४९५/६२]

समुद्र सीमा शुल्क अधिनियम, १८७८ की धारा ४३ख की उप-धारा (४) के अन्तर्गत निम्नलिखिन अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति : —

(क) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११४७ ।

(ख) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११४८ ।

---

†मूल अंग्रेजी में

(ग) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९० ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिए संख्या एल० टी० ४९६/६२[

(१) समुद्र सीमाशुल्क अधिनियम, १८७८ की धारा ४३ख की उपधारा (४) और केन्द्रीय उत्पादन शुल्क तथा नमक एक्ट, १९४४ की धारा ३८ के अन्तर्गत दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० ११५६ की एक प्रति जिसमें दिनांक ४ अगस्त, १९६२ की जी० एस० आर० १०४१ का शुद्धि-पत्र दिया हुआ है ।

(२) जीवन बीमा निगम अधिनियम, १९५६ की धारा ४३ की उप-धारा (४) के अन्तर्गत दिनांक १० मार्च, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० २८५ की एक प्रति ।

(३) औद्योगिक वित्त निगम अधिनियम, १९४८ की धारा ३५ की उप-धारा (३) के अन्तर्गत ३० जून, १९६२ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये भारत के औद्योगिक वित्त निगम के संचालक मंडल को वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति निगम की आस्तियों तथा दायित्वों और लाभ-हानि के लेखे के विवरण सहित ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिए क्रमशः संख्या एल० टी० ४९८/६२ से ४९९/६२]

†**खान तथा ईंधन मन्त्रालय में उपमन्त्री (श्री हजरनवीस)** : मैं निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति पुनः सभा पटल पर रखता हूं :

खान और खनिज (विनियमन तथा विकास) अधिनियम, १९५७ की धारा २८ की उप-धारा (१) के अन्तर्गत निम्नलिखित नियमों की एक-एक प्रति :—

(क) दिनांक ४ अगस्त, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १०५१ में प्रकाशित खनिज रियायत (तीसरा संशोधन) नियम, १९६२ ।

(ख) दिनांक ११ अगस्त, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १०७६ में प्रकाशित खनिज रियायत (चौथा संशोधन) नियम, १९६२ ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिए क्रमशः संख्या एल० टी० ३३८/६२ और ३८९/६२]

खान और खनिज (विनियमन तथा विकास) अधिनियम, १९५७ की धारा २८ की उप-धारा (१) के अन्तर्गत दिनांक २९ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १२७९ की एक प्रति ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिए संख्या एल० टी० ५००/६२]

†**वित्त उपमन्त्री (श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा)** : मैं निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति सभा पटल पर रखती हूं :—

(एक) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या एस० ओ० २७३८ में प्रकाशित आय कर (निर्यात लाभों का निर्धारण) नियम, १९६२ ।

(दो) वेतन में स्वेच्छा से कटौती (कर से छूट) अधिनियम, १९६१ की धारा ४ की उप-धारा (२) के अन्तर्गत ३० अक्तूबर, १९६२ की अधिसूचना संख्या ३३३१ में प्रकाशित । वेतन में स्वेच्छा से कटौती (कर से छूट) नियम, १९६२ ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिए संख्या एल० टी० ५०१/६२, ५०२/६२]

---

†मूल अंग्रेजी में

राज्य सभा से सन्देश

†**सचिव :** श्रीमान् जी, मुझे राज्य सभा के सचिव से प्राप्त निम्न सन्देशों की सूचना देनी है :—

(एक) कि राज्य सभा ने अपनी ८ नवम्बर, १९६२ की बैठक में परिसीमन विधेयक, १९६२ सम्बन्धी दोनों सभाओं की संयुक्त समिति की रिपोर्ट पेश करने का समय शुक्रवार, ३० नवम्बर, १९६२ तक बढ़ाने क एक प्रस्ताव पास कर दिया।

(दो) कि राज्य सभा ने अपनी ८ नवम्बर, १९६२ की बैठक में भारतीय समुद्र बीमा विधेयक, १९६२ सम्बन्धी दोनों सभाओं की संयुक्त समिति की रिपोर्ट पेश करने का समय सोमवार, ११ मार्च, १९६३ तक बढ़ाने का एक प्रस्ताव पास कर दिया।

विशिष्ट सहायता विधेयक

संयुक्त समिति का प्रतिवेदन

†**विधि मन्त्री (श्री अ० कु० सेन) :** मैं विशिष्ट सहायता कुछ प्रकार की विधि को स्पष्ट तथा संशोधित करने वाले विधेयक सम्बन्धी संयुक्त समिति के प्रतिवेदन को प्रस्तुत करता हूं।

अत्यावश्यक वस्तुओं के मूल्यों को उचित स्तर पर बनाये रखने के उपायों के बारे में वक्तव्य

†**योजना तथा श्रम और रोजगार मन्त्री (श्री नन्दा) :** मैंने सदन में वक्तव्य देते हुए कहा था कि सरकार अत्यावश्यक वस्तुओं का मूल्य उचित स्तर से आगे नहीं बढ़ने देगी। इस सम्बन्ध में मैं विवरण सभा पटल पर रखता हूं। [**देखिए परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या २५**] आज की वर्तमान आपातकालीन स्थिति में मूल्यों को एक उचित स्तर पर रखने की ओर विशेष ध्यान आकृष्ट किया है। सरकार ने मल्यों को स्थिर करने के सम्बन्ध में वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग के अन्तर्गत एक उच्च-स्तरीय समिति की स्थापना के निर्णय का निर्देश दिया है। वह समिति चालू मूल्यों, विशेषकर खुदरा मूल्यों पर दृष्टि रखेगी। अत्यावश्यक वस्तुओं के कारखाना-मूल्यों और थोक तथा खुदरा मूल्यों के सम्बन्ध में नियमित सूचना उपलब्ध करेगी और विशेष जांचों की व्यवस्था भी करेगी। समिति अपने अध्ययनों के अनुसार सम्बन्धित मंत्रालयों द्वारा कार्यवाही की सिफारिश करेगी और योजना आयोग द्वारा विचार एवं मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदन हेतु प्रस्ताव तैयार करेगी। समिति मूल्य-स्थिरीकरण की समस्याओं के सम्बन्ध में सरकार की ओर से एक प्रमुख सामान्य अभिकरण का कार्य करेगी।

केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन तथा अन्य संगठनों का खुदरा मूल्यों सम्बन्धी सूचना के संग्रह, अध्ययन एवं उपयोग की वर्तमान व्यवस्था के सुधार के प्रयोजन के लिए विस्तार किया जा रहा है।

---

†मूल अंग्रेजी में

सरकार ने सहकारी तथा अन्य उपभोक्ताओं 'स्टोरों' की व्यवस्था करने के लिए विशेषकर आवश्यक वस्तुओं के सम्भरण के लिए, एक योजना स्वीकार की है। पहले तो राज्य सरकारों के सहयोग से लगभग १०० थोक तथा केन्द्रीय 'स्टोर' खोलने का विचार है जिसकी ४००० शाखाएं तथा प्राइमरी स्टोर होंगे। ये समस्त बड़े नगरों, राज्यों की राजधानियों औद्योगिक केन्द्रों, १ लाख अथवा उससे अधिक जनसंख्या के नगरों तथा अनेक अन्य कस्बों में खुलेंगे। सरकारी विभागों तथा अभिकरणों से कर्मचारियों के लाभ के लिए अतिरिक्त उपभोक्ता 'स्टोर' खोलने के लिए कहा जा रहा है। कार्मिक संघों तथा स्वयंसेवी संगठनों की उपभोक्ता स्टोरों की स्थापना में सहायता की जायेगी।

खाद्यान्न, सूती वस्त्र, भेषज तथा औषधियों के सम्भरण के सम्बन्ध में निर्णय किये गये हैं। फल, सब्जियां, मछली, मांस, अंडे और दूध के उत्पादन सम्बन्धी कार्यक्रमों के विस्तार के प्रस्ताव तैयार किये जा रहे हैं और शीघ्र ही राज्य सरकारों को भेज दिये जायेंगे।

सरकार इस बात का प्रयत्न करेगी कि अपने समस्त सम्भव साधनों से प्रतिरक्षा एवं विकास तथा असैनिक खपत की आवश्यकताओं को भली प्रकार किया जाये और उसे इस प्रयोजन के लिए आवश्यक शक्ति भी प्राप्त है। यह बहुत ही महत्व की बात है कि कीमतों को बढ़ने से रोका जाये। समाज विरोधी तत्वों को अधिक साठेबाजी तथा मुनाफेबाजी करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

†**श्री हरि विष्णु कामत** (होशंगाबाद) : आज की स्थिति में यह बड़ी महत्वपूर्ण बात है, इस पर दो घंटे की चर्चा होनी चाहिए।

†**अध्यक्ष महोदय** : ऐसे नहीं हो सकता।

†**श्री तिरूमल राव** (काकिनाडा) : श्रीमान् जी, मेरा औचित्य प्रश्न है। माननीय मंत्री ने सरकार का यह निर्णय पढ़ा है जिसे राष्ट्रीय विकास परिषद् ने स्वीकार कर लिया है। मैं यह जानना चाहता हूं कि राष्ट्रीय विकास परिषद् की वैधानिक स्थिति क्या है ? क्या सरकार के निर्णयों को सभा के समक्ष प्रस्तुत किये जाने से पहिले उक्त परिषद् द्वारा उनका अनुमोदन किया जाना होता है ? क्या यह शब्द उचित है ?

†**श्री नन्दा** : शब्दों का हेर फेर कर सकते हैं।

†**श्रीमती रेणुका राय** : (मालदा) : क्या इस विवरण की प्रतियां हमें मिलेंगी ?

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रतियां सदस्यों में बांट दी जायेंगी।

रेलवे दुर्घटना समिति के सदस्यों को दिये गये भत्तों के बारे में वक्तव्य

†**रेलवे उपमन्त्री (श्री सें० वें० रामस्वामी)** : आपके आदेशानुसार, मैं रेलवे दुर्घटना समिति के सदस्यों को दिये गये भत्तों के बारे में सविस्तार विवरण सभा पटल पर रखता हूं। **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या २६]** साथ ही मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि यह जानकारी इस से पूर्व भी २०-६-१९६२ को पूछे गये तारांकित प्रश्न संख्या १५८४ के उत्तर में सदन में दी जा चुकी है।

---

†मूल अंग्रेजी में

सभा का कार्य

†**संसद्-कार्य मन्त्री (श्री सत्य नारायण सिंह)** : श्रीमान् जी, मैं १२ नवम्बर, १९६२ से आरम्भ होने वाले सप्ताह के लिए निम्नलिखित सरकारी कार्य की घोषणा करता हूं :—

(१) आज की विचाराधीन मद पर आगे चर्चा ।

(२) वर्ष १९६२–६३ के लिये अनुदानों की अनुपूरक मांगों (रेलवे) पर चर्चा और मतदान ।

(३) निम्नलिखित पर विचार और उन्हें पास करना :—

(एक) बिजली (संभरण) संशोधन विधेयक, १९६२ ।

(दो) भांडागार निगम विधेयक, १९६२ ।

(तीन) विदेशियों सम्बन्धी विधि (लाग करना और संशोधन) विधेयक, १९६२ (१९६२ के अध्यादेश संख्या ५ का स्थान लेने के लिये विधयक) ।

(चार) कम्पनीज़ (संशोधन) विधेयक, १९६२ (१९६२ के अध्यादेश संख्या ७ का स्थान लेने के लिये विधेयक) ।

(पांच) धातु के टोकन (संशोधन) विधेयक, १९६२ ।

(छै) श्रमजीवी पत्रकार (संशोधन) विधेयक, १९६२ ।

(सात) पैट्रोलियम पाइपलाइन (भूमि पर प्रयोक्ता के अधिकार का अर्जन) विधेयक, १९६२ ।

(आठ) संघ राज्य-क्षेत्र नाट्य-प्रदर्शन (निरसन) विधेयक, १९६२ ।

(४) मंगलवार, १३ नवम्बर, १९६२ को ३ म० प० बजे श्री प्रकाशवीर शास्त्री द्वारा एक प्रस्ताव पेश किये जाने पर चीनी के उत्पादन के आधार पर गन्ने की कीमत निर्धारित करने पर चर्चा ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** (होशंगाबाद) : माननीय मंत्री महोदय ने जो व्यापक विवरण प्रस्तुत किया है उस के लिये मैं उन को मुबारकबाद देता हूं । परन्तु मुझे यह पता नहीं कि यह सारे सप्ताह के लिये है अथवा इस सत्र के लिये है । क्या यह बात स्पष्ट कर दी जायेगी कि इस आपातकालीन सत्र में भी सरकार इस दृष्टिकोण को अपनाये रहेगी ? कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें बाद में लिया जा सकता है । मैं ने कल भी कहा था और आज भी कहता हूं कि यह सत्र इन संकल्पों तथा भारत प्रति-रक्षा अध्यादेश संबंधी विधि को पारित कर के समाप्त हो जाना चाहिये । यदि इस से खर्च का प्रश्न हो तो हम सब देशभक्त हैं, हम अपना यात्रा भत्ता छोड़ सकते हैं और इस के बिना ही हम अगले सत्र में आयेंगे । अध्यादेश सम्बन्धी विधि तथा आपातकालीन घोषणा सम्बन्धी सभी उपबन्ध और अनुदान सम्बन्धी मांगों को पारित कर हमें सत्र समाप्त कर देना चाहिये ।

†**श्री अ० क० गोपालन** (कासरगोड़) : सभी दलों की बैठक में इस मामले पर चर्चा हुई थी और आप ने कहा था कि कार्य मंत्रणा समिति इस मामले पर विचार करेगी । क्या इस दिशा में कोई निर्णय किया गया है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**अध्यक्ष महोदय** : अनुदान की मांगों को तैयार करने में कुछ समय लग जाने की संभावना है। इस बीच में अन्य कार्यों पर चर्चा कर सकते हैं।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : परन्तु मदों की प्राथमिकता का निर्णय तो किया जा सकता है।

†**अध्यक्ष महोदय** : जब आप इस बात को कार्य मंत्रणा समिति में कह चुके हैं तो अब क्यों दुहरा रहे हैं।

महाप्रशासक विधेयक

प्रवर समिति के प्रतिवेदन को उपस्थापित करने का समय बढ़ाया जाना

†**श्री खाडिलकर** (खेड़) : मैं प्रस्ताव करता हूं कि :

"कि महाप्रशासक के पद और कर्त्तव्यों सम्बन्धी विधि को समेकित तथा संशोधित करने वाले विधेयक सम्बन्धी प्रवर समिति के प्रतिवेदन को पेश करने के लिये नियत समय १ मार्च, १९६३ तक बढ़ा दिया जाये।"

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रश्न यह है :

"कि महाप्रशासक के पद और कर्तव्यों सम्बन्धी विधि को समेकित तथा संशोधित करने वाले विधेयक सम्बन्धी प्रवर समिति के प्रतिवेदन को पेश करने के लिये नियत समय १ मार्च, १९६३ तक बढ़ा दिया जाये।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

आपात की उद्घोंषणा तथा चीन के आक्रमण के बारे में संकल्प—जारी

†**अध्यक्ष महोदय** : जो संकल्प प्रधान बमंत्री ने ८ नदम्बर १९६२ को प्रस्तुत किया था, उसपर बोलने के इच्छुक माननीय सदस्यों की संख्या बहुत है। बात तो बहुत अच्छी है परन्तु समय का प्रश्न है। इस के लिये समय केवल ४ दिन का है। इस में सब की व्यवस्था नहीं हो सकेगी। कांग्रेस दल वालों की शिकायत है कि उन के सदस्यों को कम समय मिला है और विरोधी दल वाले अधिक समय ले गये हैं। मेरे विचार में यह ठीक ही है।

†**श्री श्याम लाल सर्राफ** (जम्मू तथा काश्मीर) : मेरा निवेदन है समय बढ़ा देना चाहिये।

†**श्री बदरुद्दुजा** (मुर्शिदाबाद) : मैं भी निवेदन करता हूं कि समय बढ़ा दिया जाये और उन लोगों को भी समय दिया जाये जिन का किसी दल से सम्बन्ध नहीं है।

†**अध्यक्ष महोदय** : समय बढ़ाने के सम्बन्ध में मैं देखूंगा कि क्या किया जा सकता है।

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती (झज्जर) : अध्यक्ष महोदय, मेरे इलाके के सैनिक हजारों की संख्या में युद्ध-भूमि में लड़ रहे हैं। मैं ने तीन दिन से नाम दिया हुआ है। इस में पार्टी क्या करेगी ? जिस इलाके का प्रतिनिधित्व मैं करता हूं, उस की भावनाओं को यहां पर रखने का मुझे अवसर दिया जाना चाहिये।

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री. रामेश्वरानन्द (करनाल) : मेरा नाम भी आया हुआ है ।

अध्यक्ष महोदय : जब इतना प्रैशर है, तो जो मेरे बस की बात है, वह मैं करने के लिये तैयार हूं । हम रात को बैठेंगे । जो मेम्बर साहबान बोलना चाहें, वे बोल लें । बेशक सारी रात बैठना पड़े, मैं बैठने के लिये तैयार हूं । सब मेम्बर साहबान को वक्त दिया जायगा ।

†**श्रीमती रेणु चक्रवर्ती** (बैरकपुर) : देश की इस संकटपूर्ण स्थिति में मैं अपने दल की ओर से प्रधान मंत्री को सहायता का वचन देने के लिये खड़ी हुई हूं ।

कल से मैं भाषणों को सुन रही हूं । जिन में मेरे दल पर बड़े खतरनाक हमले किये गये हैं । यह ऐसी मनोवृत्ति है जो इस राष्ट्रीय एकता को विछिन्न कर देना चाहती है जिस का प्रादुर्भाव चीनियों के आक्रमण के कारण हुआ है । हमारे दल ने सदा लोकतंत्र की रक्षा की है ।

†**श्री म० प० मिश्र** (बेगूसराय) : १९४२ ।

†**श्रीमती रेणु चक्रवर्ती** : हमारा दल अनुशासन के लिये विख्यात है । इस दल ने संकल्प पारित किया है जिस के अन्तर्गत दल के सभी लोग अनुशासित सैनिकों के रूप में समस्त राष्ट्र के साथ कंधे से कंधा मिला कर यह लड़ाई लड़ेंगे ।

चीन के इस शर्मनाक हमले से विश्व के सभी प्रगतिशील देशों को दुख हुआ है । चीन ने जो यह तर्क प्रस्तुत किया है कि उन्हों ने मेकमोहन लाइन का उल्लंघन इस कारण किया है कि भारत उन पर आक्रमण न कर दे, सर्वथा मिथ्या है । संसार भर के देशों में सीमा रेखायें साम्राज्यवादी शासकों या युद्ध नायकों ने ही स्थापित की थीं । अतः यह तर्क भी मिथ्या है कि वे मेकमोहन लाइन को इसी कारण अवैध मानते हैं कि इस की स्थापना साम्राज्यवादियों ने की थी । इस का निर्णय परस्पर बातचीत से हो सकता था । यह ज़रूरी नहीं था कि भारत पर आक्रमण कर दिया जाये । विश्व साम्यवादी आन्दोलन ने यह घोषित किया है कि चाहे कितना गंभीर विवाद हो उस का निबटारा परस्पर बातचीत से करना चाहिये ।

चीन के इस आक्रमण से सब से अधिक हानि यह हुई है कि जो लोग भारत को पश्चिमी साम्राज्यवाद के चुंगल में धकेलना चाहते थे वे सफल हो रहे हैं । देश की विदेशनीति पर आरोप लगाया जा रहा है कि तटस्थता के कारण ही चीन ने आक्रमण किया है । जवाहरलाल नेहरू की योजना की नीति पर भी आरोप लगाया जा रहा है । जनसंघ और स्वतंत्र दल जैसे राजनैतिक दल जिन की कहीं सुनवाई नहीं थी उन का भी प्रभाव बढ़ रहा है (**अन्तर्बाधा**)

†**अध्यक्ष महोदय** : क्या हम इस प्रकार काम कर सकते हैं ?

†**श्री रंगा** (चित्तूर) : अध्यक्ष महोदय, आप ने कहा था कि किसी को किसी दल पर आक्षेप नहीं करना चाहिये ।

†**अध्यक्ष महोदय** : हां मैं ने ऐसा कहा था और दलों से मेरा आग्रह है कि यहां परस्पर का विवाद न छेड़ें ।

†**श्रीमती रेणु चक्रवर्ती**: यह गंभीर वादविवाद है और हम यहां राजनीति की चर्चा कर रहे हैं । क्या थोड़ी सी हारों के कारण हम अपने मूल सिद्धान्तों को छोड़ देंगे ? श्री रंगा ने कहा है कि शांतिकालीन नेता और युद्ध कालीन नेता एक सा नहीं हो सकता है ।

---

†मूल अंग्रेज़ी में

†**श्री रंगा** : मैं ने नेतृत्व कहा था न कि नेता ।

†श्रीमती रेणु चक्रवर्ती : श्री जवाहरलाल नेहरू ने युद्ध के समय में अपने काम को शांति के समय से बड़ा सिद्ध किया है । राष्ट्र के नाम उन्हों ने जो सन्देश दिया लोगों ने उस के प्रति उत्साह दिखाया है । ऐसा उत्साह श्री नेहरू जी ही पैदा कर सकते थे । इस का कारण उन की नीतियां हैं । कम्युनिस्ट पार्टी ने सरकार की विदेश नीति का सदैव समर्थन किया है । हमारी शांति की विदेश नीति से पूंजीवाद के विरुद्ध हमारे युद्ध को बल मिलता है ।

हमारी कई कमजोरियां रही हैं और गलतियां हुई हैं । परन्तु सामान्यतया हमारी नीति ठीक रही है । हम कम्युनिस्ट रोकिंग के इन अपराधों का बिल्कुल विरोध करते हैं कि श्री जवाहरलाल नेहरू पूंजीवाद के अनुयायी हैं । इस समय भी प्रधान मंत्री तटस्थ नीति का पूरे जोर से समर्थन कर रहे हैं । इस के साथ साथ देश ने यह घोषणा की है कि हम सब को अपनी मातृभूमि की रक्षा करनी है । यह क्या पूंजीवाद है ।

चीनी बिल्कुल गलत हैं और खतरनाक नीति का अनुसरण कर रहे हैं ।

भारत की तटस्थ नीति बिल्कुल उचित नीति है । चीन के साथ युद्ध को कम्युनिज्म और कम्युनिज्म की विरोधी शक्तियों में युद्ध नहीं समझना चाहिये । भारत की तटस्थ नीति के कारण ही भारत और चीन में युद्ध शीतयुद्ध की परिधि से बाहर है । यह कमजोर नीति ही बड़ी मजबूत नीति है । इस नीति के कारण कई अफ्रीकी और एशियाई देशों ने हमारा समर्थन किया है ।

विदेशों में हमारा प्रचार ठीक प्रकार से नहीं होता । चीन की बातचीत की शर्तों के विषय में दूसरे देश इसलिये जान गये क्योंकि शान्ति के लिये यह उन की पहले शर्तें थी । हमारी ८ सितम्बर तक हटने वाली शर्तें बहुत उचित हैं, परन्तु इस का प्रचार दूसरे देशों में शीघ्र नहीं हो सका ।

मैं अपनी पार्टी की ओर से आश्वासन दिलाती हूं कि हमारा दल कि हम अपने जवानों की सहायता करेंगे । हम यह कोशिश करेंगे कि देश के उत्पादन को हानि न हो । हमारी स्त्रियों ने भी काम आरम्भ कर दिया है और लोग राष्ट्रीय रक्षा कोष के लिये धन दे रहे हैं ।

भिलाई में हमारे कुछ कर्मचारियों को गरिफ्तार कर लिया है । उन के मामलों की अच्छी प्रकार से जांच होनी चाहिये ।

कीमतों को बढ़ने को रोकने के लिये श्री नन्दा जी ने जो कदम उठाने के लिये कहा है उन को कार्यान्वित करना चाहिये ।

इस कठिन समय में कम्युनिस्ट अपनी क्षमता को सिद्ध कर देंगे । हम मातृभूमि के प्रेम, लोकतंत्र और समाजवाद

†**श्री यशपाल सिंह** (कैराना): कांग्रेस एम० पीज़ से पूछ कर ही रिजोल्यूशन तैयार किया गया था और जो कुछ एम० पीज़ को कहना था वह सब कुछ प्राइम मिनिस्टर ने कह दिया है । इसलिये हमें मौका दिया जाये ।

†**अध्यक्ष महोदय**: जो आप का वक्त है वह आप को मिलेगा, जो उधर देना है वह उधर दिया जायेगा ।

---

†मूल अंग्रेज़ी में

†**श्री भागवत झा आजाद** (भागलपुर) : चीन ने हमारे साथ विश्वासघात किया है जिसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता । हमें चीनियों के साथ जैसा बर्ताव करना है उसे जानते हैं ।

हमारे जवानों ने उन्हें बता दिया है कि उन के लिए भारतीय क्षेत्र पर कब्जा करना इतना आसान नहीं है जितना वे समझते हैं ।

जिन जवानों ने अपनी मातृभमि की रक्षा के लिए जान दे दी है उन के लिए श्रद्धांजली अर्पित करते हैं । जो जवान इस समय लड़ रहे हैं उनको भी अपना आदर भेजते हैं ।

लद्दाख और नेफा में स्थिति गम्भीर है, परन्तु शत्रु को सही परिस्थिति का पता चल गया है । प्रारंभ में भले ही हमें कुछ हारों का सामना करना पड़ा, परन्तु अब वह रुक गया है । देश में तथा सरकार की उच्च स्तरों पर विश्वास की भावना व्याप्त है ।

अन्त में विजय हमारी होगी । सारे देश में जागृति हो गई है । देश में तूफान उठ खड़ा हुआ है ।

कई सदस्यों ने हमारी तटस्थता की नीति की आलोचना की है, परन्तु सारे विश्व ने इस की सराहना की है । वह सर्वथा सफल सिद्ध हुई है । विश्व के लोकतंत्र देश हमारे देश की सहायता के लिए आगे आए हैं। इंग्लड, अमरीका आदि देशों ने इस नीति को बुरा नहीं माना है ।

यह कहना कि हमें अपनी योजनाओं की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए गलत है । इन योजनाओं से अच्छी हुई आर्थिक स्थिति के कारण ही तो हम आज लड़ने के लिए अधिक अच्छी स्थिति में हैं । हमारी वर्तमान आर्थिक नीति और योजनाएं हमारे आक्रमणों का सामना करने के लिए बहुत आवश्यक है ।

भारतवर्ष का कामनवैल्थ में रहना लाभदायक सिद्ध हुआ है । इस सम्बन्ध में हमारी विदेश नीति बिल्कुल सफल रही ।

हमें युद्ध को सीमित रखना चाहिए । हमारी मातृभूमि पर तृतीय युद्ध छिड़ने का खतरा है । यदि चीनी पूर्ण युद्ध के लिए ही तैयार हों तो हम उन का मुकाबला करेंगे ।

नेहरू जी के नेतृत्व में विजय भारत की ही होगी ।

†**श्री श्याम लाल सर्राफ** : पुराने समय से भारत और चीन में मित्रता रही है । उनके यात्री जो यहां आए उन्होंने हमारी सभ्यता की बहुत प्रशंसा की थी । मुझे आश्चर्य है कि चीन ने भारत पर कैसे आक्रमण कर दिया ।

जब भारत चीन के साथ मित्रता बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा था तो वे हमारे देश पर हमला करने की तैयारी कर रहे थे । वर्तमान अतिक्रमण से यह बात साफ है कि हमें चीन के बारे में सतर्क रहना चाहिए ।

सरकार की युद्ध के लिए तैयारी न करने की आलोचना ठीक नहीं है । लद्दाख में सरकार ने बहुत ऊंचाई पर सेना की सहायता से सड़कें बना कर बड़ा अच्छा कार्य किया है । इस कार्य में जनरल कौल और हमारे भूतपूर्व प्रतिरक्षा मंत्री का भाग भी बहुत प्रशंसनीय है ।

भारत के कम्युनिस्टों के उद्देश्यों का पता इस बात से लगेगा कि वर्तमान स्थिति में वे क्या करते हैं न कि उन के द्वारा पारित संकल्प से ।

---

†मूल अंग्रेजी में

हमारी फौज के पास हथियार नहीं थे इस कारण हमें असफलताएं हुईं यह बात ठीक नहीं है । वहां की भूगौलिक स्थिति हमारे पक्ष में नहीं थी । अब प्रत्येक भारतवासी मातृभूमि की रक्षा के लिए तैयार है । अन्त में विजय हमारी होगी इसमें सन्देह नहीं ।

वर्तमान संकट में नेतृत्व बदलने की बात नहीं की जानी चाहिए । हमारे प्रधान मंत्री ही एक मात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिनको समस्त राष्ट्र का समर्थन प्राप्त हो सकता है । हमारी तटस्थता की नीति बहुत अच्छी रही है और इसकी सभी देश सराहना और कदर करते हैं ।

जहां तक सेना गुप्तचर विभाग का सम्बन्ध है हमारे खोजबीन के कार्य को पूरा किया जाना चाहिए ।

चीन के आक्रमण का मुकाबला करने के लिए केन्द्रीय और राज्य सरकारों को मितव्ययता करनी चाहिए ।

हमें एकता और विश्वास चाहिए । हमें एक होकर सरकार का समर्थन करना चाहिए । इस से विजय होगी ।

†श्री कर्णी सिंहजी (बीकानेर) : यह बड़ी खुशी की बात है कि इस संकट से सारे देश में एकता की भावना जाग उठी है । हम अपने मतभेदों को भूल गए हैं ।

इस संकटकाल में हमें आप सबको भारतीय ही समझना चाहिए और दलों की राजनीति की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए । यह समय एक दूसरे की आलोचना करने का नहीं है । हम ने गलतियां की हैं उनका जिक्र युद्ध जीतने के बाद हो सकता है ।

मैं उन जवानों को जो हमारी सीमा की रक्षा कर रहे हैं और खून बहा रहे हैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

जिन देशों ने हमारी सहायता की है उनका भी धन्यवाद करता हूं ।

हमें अपनी चर्चा में कोई ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए जिससे चीन लाभ उठा सके । युद्ध की नीति के बारे में शत्रु को कोई जानकारी नहीं दी जानी चाहिए । मेरे कुछ मित्रों ने सरकार के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव किया । मेरे विचार से इस समय हमारा पहिला कदम युद्ध में विजयी होने का होना चाहिये उसके पश्चात् हमारे पास इस प्रकार के कई अवसर आयेंगे ।

अब मैं सरकार की असावधानी के संबंध में भी कुछ शब्द कहना चाहता हूं । वस्तुतः हमारी असावधानी घातक सिद्ध हुई है और वह किसी तरह क्षमा किये जाने योग्य नहीं है । हमारी असावधानी का ही यह परिणाम हुआ कि हमारे सहस्त्रों वीर जवानों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा ।

अब देश को सबक सीख लेना चाहिये तथा उसे किसी ऐसे देश पर भरोसा नहीं करना चाहिये जो कि सैद्धांतिक रूप से हमारे विरुद्ध हो । वस्तुतः इतने बड़े संकट के बावजूद देश को युद्ध के लिये पूरी तरह तैयार नहीं किया जा रहा है । हमें यह समझना चाहिये कि हमारा सामना एक भयंकर शत्रु से है जो अपनी जनशक्ति को ईंधन के समान झोंक रहा है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री कर्णीसिंह जी]

प्रधान मंत्री को रेडक्रास से कह कर यह प्रयत्न करना चाहिये कि भारतीय सैनिक जो चीनियों द्वारा कैद कर लिये गये हैं, जिनके बारे में यह संभावना है कि वे चीनियों द्वारा गोली से मार डाले गये हैं। किसी भी तरह बचा लिये जायें।

भारत को मित्र देशों से मिलने वाले शत्रास्त्रों का मूल्य चुकाने पर जोर नहीं देना चाहिये। हमें युद्ध सहायता, यदि कोई देश देने को तैयार हो तो अवश्य स्वीकार करनी चाहिये तथा प्रतिष्ठा का प्रश्न बना कर पीछे नहीं रहना चाहिये इस प्रकार हम अपनी योजना को भी क्रियान्वित कर सकते हैं।

इस बात के लिये तुरन्त कदम उठाने जाने चाहिये कि शत्रु को कोई सैनिक रहस्य न मालूम होने दिया जाये। सरकार को चाहिये कि वे जंगल की लड़ाई, पहाड़ की लड़ाई और पर्वतीय युद्ध संबंधी विशेष सेनाओं को बनाने के संबंध में विचार करें।

भारत की शस्त्रास्त्र शक्ति में वृद्धि करना अनिवार्य है। इसके लिये आणविक शक्ति का विकास किया जाना चाहिये भारत को मित्र देशों की सहायता से अपनी वायु शक्ति भी चीन से अधिक बढ़ानी चाहिये। इससे अतिक्रमण रोकने में मदद मिलेगी।

जहां तक तटस्थता का प्रश्न है। मुझे सदैव इस सिद्धांत के संबंध में संदेह रहा है। मेरा सदैव यह विश्वास रहा है कि केवल उन्हीं देशों में मित्रता हो सकती है जिनमें सैद्धांतिक समानता होती है। वस्तुतः इस रुख से यह सीधा प्रश्न चाहिये।

जब मैं एक प्रश्न को लेता हूं। वह यह है कि जो सिपाही युद्ध भूमि में मारे जायें उनसे सम्पदा शुल्क न लिया जाये। इस संबंध में मंत्री महोदय ने यह सुझाव स्वीकार किया है कि उनके पुत्रों पर सम्पदा शुल्क नहीं लगाया जाये। सरकार को चाहिये कि उन्हें भी सम्पदा शुल्क से मुक्त किया जाये।

अंत में, मैं यह बात पुनः दुहराना चाहता हूं कि जब तक हम लोग संगठित होकर दुश्मन का सामना नहीं करेंगे तब तक हम विजयी नहीं हो सकते।

†**श्रीमती गायत्री देवी** (जयपुर): यद्यपि ऐसे नाजुक अवसर पर हमें सरकार की आलोचना नहीं करनी चाहिये तथापि मैं सरकार की एक दो भूलों की ओर सभा का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं। निसंदेह हमने दो गलतियां की हैं उनका फल हमें मिले बिना नहीं रह सकता है।

साम्यवादी दल ने स्वतंत्रत दल की जो आलोचना की है वह नितांत निराधार है। स्थिति यह है कि इस समय साम्यवादी दल की स्थिति बहुत नाजुक हो गयी है। इसीलिये वे जनता की निराधार आलोचना कर रहे हैं।

प्रधान मंत्री को चीन से आक्रामक इरादे कम से कम चार साल पहिले ही मालूम हो गये होंगे जब कि वे सीमांत सड़कें बना रहे थे। उन्हें यह समझना चाहिये था कि हम जो एशिया की सब से बड़े आर्थिक शक्ति बनने का प्रयत्न कर रहे है उससे उनके मन में ईर्षा पैदा होगी।

---

†मूल अंग्रेजी में

सेना के गुप्तचर विभाग की असफलता स्पष्ट है। हमें अपने सेनाओं के प्रति बाहरी सहानुभूति है। जिनको समस्त अभावों के बावजूद लड़ना पड़ रहा है। भारत लड़ाकू देश नहीं बनना चाहता है। परन्तु उसे अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिये मित्र देशों से सशस्त्र अवश्य प्राप्त करना चाहिये। हमें अपने मित्र और शत्रु की पहिचान होनी चाहिये तथा यदि हम सहायता चाहते है तो हमें पश्चिमी गुट का मुंह देखना होगा।

राष्ट्रपति ने देश में आपातकालीन स्थिति की घोषणा की है। अतः हमें चाहिये कि हमें प्रशासन में राजनीतिज्ञों के स्थान पर विशेषज्ञों को स्थान देना चाहिये।

हमारी प्रतिरक्षा परिषद् को तत्काल कार्य करना चाहिये क्योंकि दुश्मनों को खदेड़ना आसान नहीं है।

हमें यह स्पष्ट याद रखना चाहिये कि हम सदैव से ही एक योद्धा राष्ट्र रहे है और हमारी शानदार परम्परा यही रही है।

"हतोवा प्राप्यसि स्वर्गम् जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम।
तस्यात् उत्तिष्ठ कौंतेय युद्धाय कृत निश्चयः॥

†**श्री अंसार हरवानी** : (बसौली) : मैंने कई भाषण सुने है तथा जिस भाषण ने मुझे सबसे प्रभावित किया है वह श्री हनुमन्तैया का भाषण है। उनके भाषणों से भारतीय राजनीतिज्ञों के दिमाग का पता चल जाता है। उन्होंने वीर पूजा के सम्बन्ध में जो भावना व्यक्त की है उसके सम्बन्ध में हमें स्मरण रखना चाहिये कि हम उसके विरोधी हैं।

मैं उन बहादुरों की प्रशस्ति गाना चाहता हूं जो १५००० फीट की ऊंचाई पर लड़ रहे है। मैं उन किसानों और भाइयों को प्रणाम करता हूं जिन्होंने चीनियों को अपने देश से निकालने की कसम खायी है। यह सब हमारे दृढ़ निश्चय का परिणाम है।

तथापि मैं सरकार का ध्यान देश के समाचार पत्रों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं आज हमारे देश तथा लोकतन्त्र का इन्हीं समाचार पत्रों के हाथों में है।

इस अवसर पर सरकार को पाकिस्तान की ओर से खतरे के बारे में सतर्क रहना चाहिये। इस समय हमें पाकिस्तान के कर्णधारों के सम्बन्ध में जो कुछ भी अनुभव हुआ है उसे देखते इस सम्बन्ध में असावधानी बरतना हमारे लिये घातक हो सकता है। हमें भारत और पाकिस्तान की सीमा पर अपनी तैयारी में जरा भी कसर नहीं छोड़नी चाहिये।

भारत के पांच करोड़ मुसलमानों की ओर से मैं आश्वासन देता हूं कि यदि पाकिस्तान ने भारत की ओर आंख दिखाई तो हर मुसलमान अपने देश के लिये अपनी जान दे देगा।

†**श्री राम सेवक यादवः** (बाराबंकी): माननीय सदस्य मुसलमानों की बात क्यों करते हो। इस समय सब एक है।

†**श्री अन्सार हरवानी** : मेरे समाजवादी मित्र इस बात को नहीं समझ सकते इस लिये मैं इस पर कुछ नहीं कहूंगा।

हमें चाहिये कि हम नैपाल से अपनी मित्रता को और गहरी करें। यह आवश्यक है कि कोई उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त राजदूत वहां भेजा जाये जो वहां के सम्राट से बातचीत कर इस सम्बन्ध में भ्रांति दूर करे।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री अन्सार हरवानी]

अंत में शस्त्रों के बारे में कहूंगा। हमें चाहिये कि विश्व के जिस कोने से संभव हो शस्त्र प्राप्त करने चाहिये परन्तु हमें बाहर के सैनिकों को अपने देश में लाना उचित नहीं है। हमारी सेनायें सारे संसार की उत्तम सेनाओं में से है।

श्री राजेश्वर पटेल (हाजीपुर) : श्री अन्सार हरवानी ने कुछ समाचार पत्रों के रवैये की निन्दा की है। मैं उनसे पूरी तरह सहमत हूं। वस्तुतः चाहे किसी भी गुट का पत्र हो यदि वह जनमत को बदलने का प्रयत्न करता है तो वह दोषी है।

[उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

जो पत्र इस प्रकार के समाचारों को प्रकाशित कर रहे है तथा जनता के दिल और दिमाग में डर पैदा कर रहे हैं। उनके विरुद्ध गृह-मंत्रालय को तत्काल कार्य करना चाहिये।

लगभग सभी सदस्यों ने यह कहा है कि हम लोग इस मामले में सतर्क नहीं रहे अब भी हमें बातें करने में अपना समय नहीं खोना चाहिये।

सरकार को चाहिये कि वह देश के समक्ष इस सम्बन्ध में स्पष्ट घोषणा करे कि ८ सितम्बर रेखा से सरकार का स्पष्ट तात्पर्य क्या है? क्या इसका तात्पर्य यह है कि सारा लद्दाख चीनियों को दे दिया जाये हम उस लाइन के बारे में कुछ नहीं जानते हैं उन लोगों की देश भक्ति पर अविश्वास न किया जाये। प्रधान मंत्री इस बारे में भी लोगों के संदेह दूर कर देवें कि हम वास्तव में चीन से युद्ध नहीं करें, जवानों के लिये कम्बलों आदि कों जमा करने मात्र से ही हमारे प्रतिरक्षा मंत्रालय की कोई प्रशंसा नहीं हो सकती है। इस प्रकार की मांग से जनता के हृदय में अच्छा मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है।

हमें यह स्पष्ट ज्ञात होना चाहिये कि देश की रक्षा का भार एक ही दल पर नहीं है। देश की रक्षा का भार प्रत्येक व्यक्ति पर है। इस समय हम प्रत्येक देश के नाम हमारी सहायता करने के लिये पत्र भेज रहे हैं। रूस के पास भी हमने भेजा है। हमें यह स्पष्ट रूप से जानना चाहिये कि उनकी सहानुभूति किस की ओर हो सकती है। ठीक यही बात भारतीय साम्यवादी मित्रों के प्रति भी है।

४ नवम्बर की 'लिंक' पत्रिका में प्रधान मंत्री के एक वक्तव्य के उद्धरण में कहा गया है कि मंत्रिमण्डल के सभी सदस्य उत्तरदायी है केवल श्री कृष्ण मेनन नहीं है। उस उद्धरण में यह भी स्पष्ट हो जाता है कि चीनियों को बाहर निकाल फेंकने की हमारी तैयारी कितनी कम थी।

१ नवम्बर के "नेशनल हेराल्ड" के सम्पादकीय लेख में कहा गया है कि राजनयिकता भी प्रतिरक्षा की सीमा है और इसे सुदृढ़ बनाना चाहिये।

मैं प्रधान मंत्री को बताना चाहता हूं कि सारा राष्ट्र तटस्थता की नीति के पक्ष में है। इस नीति को सुदृढ़ बनाने के लिये केवल श्री कृष्ण मेनन को पदच्युत कर देना पर्याप्त नहीं है बल्कि ऐसे सभी लोगों को जो हमारी नीति को परिवर्तन करने के इच्छुक है अलग कर देना चाहिये। हमें विदेशी सैनिकों को तो नहीं बुलाना चाहिये किन्तु विदेशों से प्रविधिज्ञों को अवश्य लेना चाहिये ताकि युद्ध कार्यों का समुचित रूप से संचालन किया जा सके।

भारत शांति प्रिय देश है। उसकी शांति प्रियता को उसकी निःशक्ति समझ कर ही चीनियों ने भारत पर आक्रमण किया है। विश्व के अन्य देशों की सदभावनाओं पर विश्वास करके हमें उसका भारी मूल्य चुकाना पड़ रहा है।

†**श्रीमती सहोदरा बाई** : (दमोह) : उपाध्यक्ष महोदय, महिलाओं को भी मौका दिया जाना चाहिये ।

†**श्री जो० न० हजारिका** (डिब्रूगढ़) : मैं प्रधान मंत्री के संकल्प का समर्थन करने के लिये खड़ा हूं । सारा देश उन के साथ है ।

श्री रामेश्वरानन्द : (करनाल) : उपाध्यक्ष महोदय, दो दिन तो हो चुके, हमसे कह दिया जाये कि समय देना है या नहीं देना है । अगर न देना हो तो हम चले जायें । हमें एक बार बतला दिया जाये, हम चले जायेंगे ।

उपाध्यक्ष महोदय : जरूर मिलेगा ।

†**श्री जो० न० हजारिका** : मैंने पूर्व वक्ताओं को सुना है । सब के मन में एक प्रश्न घर किये हुये है कि हम लोकतन्त्र की ओर से साम्यवाद के साथ युद्ध लड़ रहे है अथवा सीमा सम्बन्धी लड़ाई है ? क्या चीन ने यह आक्रमण दक्षिण पूर्व एशिया में अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद की स्थापना के लिये किया है ? एक बात तो स्पष्ट है कि एक बड़ी लड़ाई की तैयारी कर रहे है ।

यहां के साम्यवादी दल पर इस समय आरोप लगाना ठीक नहीं है उनके व्यक्तिकत आचरण से पता लगेगा कि वे देश के हित में काम करते है अथवा अन्यथा । इस समय किसी अन्य देश की भी आलोचना नहीं करनी चाहिये । कल कुछ सदस्यों ने रूस के दृष्टिकोण की आलोचना की थी और आज समाचार पत्रों में श्री नेहरू का वक्तव्य निकला है कि रूस का हमारे साथ मित्रता का सम्बन्ध है । भारत के संसदीय शिष्ट मंडल के साथ रूस जाने का मुझे भी सौभाग्य मिला था और वहां जीवन के सभी क्षेत्र के लोगों से हमारी भेंट हुई थी । वे सभी भारत के साथ स्थायी मित्रता के लिये उत्सुक थे । अतः हमें केवल यह कहना चाहिये कि रूस पक्षपात रूप में चीन का समर्थन न करें ।

यदि हम साम्यवाद के विरुद्ध लोकतन्त्र के युद्ध की बात करते है तो हमें अणु युद्ध के लिये तैयार हो जाना चाहिये । अतः यही उचित है कि इस युद्ध को सीमा तक ही सीमित रखा जाये क्योंकि हमें साम्यवाद और लोकतन्त्र का युद्ध अपनी भूमि पर नहीं होने देना ।

अब मैं कुछ शब्द असम और नेफा की सीमाओं के बारे में कहना चाहता हूं । त्वाँग का प्रदेश बहुत आबाद चीन ने सुबनसारी और सियांग डिवीजनों में कई स्थानों पर आक्रमण किया है । लोहित डिवीजन में वेलोंग के महत्वपूर्ण स्थान पर आक्रमण किया जा रहा है । त्वांग को हमें हर तरीके से वापस ले लेना चाहिये । उसका बहुत महत्व है । असम और नेफा के लोगों में बहुत साहस और उत्साह है । किन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उस प्रदेश में खाद्यान्न और अन्य वस्तुओं का प्रचुर मात्रा में संभरण होना चाहिये । पिछले दिनों पाकिस्तान ने हमारी बीस नौकाओं को पकड़ लिया था । और तीन महीने तक नहीं छोड़ा । ऐसी स्थिति से बचाव का उपाय होना चाहिये ।

संभरण की व्यवस्था के लिये केन्द्र में यथासंभव शीघ्र संभरण मंत्रालय की स्थापना होनी चाहिये । असैनिक प्रतिरक्षा के लिये भी एक मंत्रालय स्थापित करना चाहिये ।

वित्त व्यवस्था के सम्बन्ध में मुझे यह कहना है कि मद्यनिषेध समाप्त कर दिया जाये और राज्य व्यापार निगम के कार्यों में वृद्धि करनी चाहिये तथा यदि आवश्यक हो तो उसका राष्ट्रीयकरण कर दिया जाये ।

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री रामेश्वरानन्द : तदेवाग्नि तदादित्ये तदवायुस्तदुचन्द्रमा

तदेव शुक्रम तद्ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः

उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे इस प्रस्ताव पर बोलने का अवसर दिया उसके लिए धन्यवाद। मुझे कुछ ऐसी बातें कहनी हैं कि जिनसे हो सकता है कि किसी भाई को पसीना आ जाए। मैं यह मानता हूं कि जो अपनी ही कहता है दूसरे की नहीं सुनता वह कभी उचित मार्ग पर नहीं जा सकता। विचारों की विभिन्नता होना स्वाभाविक है व्यक्ति भेद होने और बुद्धि भेद होने से। विरोधी के विचारों को सुने बिना व्यक्ति कभी उचित मार्ग पर नहीं पहुंच सकता। इस समय प्रधान मंत्री जी तो नहीं है, अन्य सदस्य हैं। मैं कहूंगा कि वे मेरे विचारों को सुनने का यत्न करें।

वस्तुतः जिससे भूल हो जाती है, जिससे काम बिगड़ जाता है वह चाहे घरका बुड्ढा क्यों न हो, वह घर के सब लोगों के कोप का पात्र बनता है। इसलिए आपको इस समय ऐसी स्थिति में सबके भावों को शान्तिपूर्वक सुनना चाहिए।

मैं देखता रहा हूं (**अन्तर्बाधा**)। मैं कच्चा खिलाड़ी नहीं हूं। तुम चाहे जितना हल्ला करो मैं बोलता रहूंगा।

मैं आपसे कहना चाहता हूं कि राजा कैसा हो यह वेद में स्पष्ट आया है। संसार में लाखों करोड़ों जातियों के जीव बस रहे है जिनका कोई राजा नहीं है, उनकी न इस प्रकार की लोक सभा है और न इस प्रकार का शासन है। कीट, पतंग, जलचर, थलचर अनेक जीव हैं जिनका कोई राजा नहीं है। मनुष्य का राजा है। इसकी क्यों आवश्यकता है यह वेद में इस प्रकार आता है:

इमम् देवा स्पत्नम् सुबधद्धम्

इसलिए राजा की आवश्यकता इसलिए है कि जनता का कोई शत्रु न रहे। शत्रु दो प्रकार के होते हैं, एक बाहर के शत्रु और दूसरे अन्दर के शत्रु जैसे चोर, डाकू, लुटेरे आदि। राजा केवल इसलिए नहीं होता कि वह देश और विदेश में जाकर नाचे। राजा इसलिए होता है कि जनता का कोई आन्तरिक या बाहय शत्रु न रहे। इस दृष्टि से आप स्वयं अनुभव करे कि सत्ता-प्राप्त पार्टी ने कितना कर्त्तव्य पालन किया है। आप इसको देख सकते है। मैं क्या कहूं, जो असावधानी की गयी है वह देश के बच्चे बच्चे की जबान पर मौजूद है। और फिर भी आप बढ़ चढ़ कर बोलें और दूसरों की बात न सुनें तो इसे मैं आपका साहस मात्र कहूंगा, इसको कोई दूरदर्शिता, सहनशीलता या बुद्धिमत्ता नहीं कह सकता।

†**श्री यशपाल सिंह** (कैराना): दुःसाहस कहिए।

श्री रामेश्वरानन्द: मैं ऐसा शब्द नहीं कहना चाहता।

मैं अपने सम्बन्ध में कहना चाहता हूं कि जब परसों प्रधान मंत्री जी अपना भाषण दे रहे थे और जब वह कह रहे थे कि चीनियों ने एक बहुत बड़ी सेना और काफी साज सामान के साथ भारतीय सीमा पर हमला किया तो मैंने पंडित जी को टोकते हुए एक बात कही थी कि पंडित जी आप उस समय क्या कर रहे थे। अब किसी का काम खेत में हल चलाने का होता है, कोई दुकानदारी करता है तो कोई कारखाने में काम करता है। देश के शासकों का यह काम था कि वह इस बात को देखें और उचित व्यवस्था करें ताकि पड़ौसी देश का कोई

---

†मूल अंग्रेजी में

शत्रु हम पर हमला न कर सके देश की सुरक्षा करना यही तो आपका एक उत्तरदायित्व था। और आप गफलत में रहे और उसको आप पूरा नहीं कर रहे थे। इस पर उधर बैठने वाले सदस्यों ने मुझे बहुत झाड़ दिलाई। उस मौके पर पंडित जी ने मेरे लिए जो शब्द प्रयोग किये देश के प्रधान मंत्री के मुख से निकलने उचित नहीं है और उनको यह शोभा नहीं देता कि वे इस की बातें करें। मुझे उन्होंने कहा कि कुछ आता नहीं है। मुझे कुछ समझ में नहीं आता है। अब जहां तक समझ की परीक्षा का सवाल है उसकी परीक्षा तो हो गयी है कि किस की समझ ठीक है और किसकी उलटी है। जो मौका हमारे सामने आया है उसमें यह समझ की परीक्षा हो गयी है। मेरी समझ का पता तो तब लगेगा जब मेरे ऊपर कुछ उत्तरदायित्व होगा। मैं तो साफ घोषणा करना चाहता हूं कि वे मुझ से किसी विषय पर बातचीत कर के देख लें तब उनको मेरी समझ के बारे में पता चलेगा। दुर्भाग्य से देश में आपने एक ऐसी व्यवस्था बना रक्खी है जिसमें कि इंग्लिश भाषा का बोलबाला है और इसमें वही व्यक्ति समझदार और बुद्धिमान माना जाता है जोकि इंग्लिश जानता है। मैं शासक वर्ग से पूछना चाहता हूं कि आज से १७५ वर्ष पहले जबकि इस देश में अंग्रेजी का एक अक्षर भी नहीं था तो क्या यहां के लोग शासक नहीं थे और क्या वे कुशल शासक नहीं समझे जाते थे? हजारों वर्ष पहले सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर हमारे पूर्वज लोग देश पर शासन करते आये है और उस समय इस गले से नीचे बोली जाने वाली गिटपिट इंग्लिश भाषा का नाम पता भी नहीं था तो क्या वे शासन चलाना नहीं जानते थे और क्या उन में बुद्धि नहीं थी? इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि अंग्रेजी का जानना या न जानना बुद्धि की कसौटी न होना चाहिए।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं बतलाना चाहता हूं कि मैं १०१ रुपया सुरक्षा कोष में दे चुका हूं और मैंने यह व्रत लिया है कि जब तक चीनी अतिक्रमण के विरुद्ध हमारा युद्ध चलता रहेगा मैं १०० रुपया मासिक देता रहूंगा। मैं तो कहता हूं कि कोई कांग्रेसजन मैदान में निकल कर आगे आयें तो, मैं तो सर्वस्व जो कुछ भी मुझे मिल रहा है सब चीनियों के विरुद्ध लड़े जा रहे युद्ध में देने को तैयार हूं। जब तक लड़ाई चलती है प्रधान मंत्री जी क्यों नहीं अपना वेतन दे दें? वक्त का तकाजा है कि जिन लोगों के हाथ में शासन है उनको सुरक्षा कोष में ज्यादा से ज्यादा धन देना चाहिए। जहां तक मेरा सम्बन्ध है मैं १०१ रुपये दे चुका हूं और जब तक युद्ध चलता है १०० रुपये मासिक देता रहूंगा। सुरक्षा कोष के लिए मैंने अनेक नगरों में घूम घूम कर चंदा जमा किया है और अनेक युवकों को फौज में भरती के लिए भी कह चुका हूं। लेकिन आप इससे यह न समझ लें कि मैं खाली चंदा इकट्ठा करने वाला हूं। मैं थ्री नौट थ्री भी चलाना जानता हूं और आवश्यकता पड़ने पर उसको भी चला सकता हूं .....

एक माननीय सदस्य : संस्कृत में उसे क्या कहते है?

श्री रामेश्वरानन्द : संस्कृत में उसको शतघनी और सहस्त्रघनी कहते है। मेरे मित्र सीख लें। जहां तक देश की रक्षा का सवाल है मैं स्पष्ट घोषणा करना चाहता हूं कि नेहरू जी के लिए नहीं बल्कि अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए शरीर में जब तक रक्त की अंतिम बूंद विद्यमान रहेगी हम चीनियों से लड़ते रहेंगे। पंडित जी ने चीनियों से समझौता वार्ता चलाने के लिए यह शर्त रक्खी है कि चीनी सेनाएं ८ सितम्बर, १९६२ के पूर्व जहां थीं वही वहां लौट जायें। लेकिन में तो कहता हूं कि जब चीनियों ने मैकमोहन सीमा रेखा को मानना छोड़ दिया है तो फिर हमीं क्यों इस मैकमोहन रेखा के गीत गायें? उस हालत में तो हमें

[श्री रामेश्वरानन्द]

भी यह कहना चाहिए कि अब हमारी सीमा मैकमोहन रेखा न होकर तिब्बत की घुर उत्तरी सीमा भारत और चीन की सीमा रेखा होनी चाहिए। मैकमोहन रेखा को जब चीन नहीं जानता और रूस नहीं मानता तो फिर हमीं उसके क्यों गीत गायें? उसकी आवश्यकता क्या है? आज कहा जा रहा है कि भौगोलिक स्थितियां ऐसी है कि तिब्बत हमारा नहीं हुआ। लेकिन मैं आपको याद दिलाता हूं कि आखिर यह भौगोलिक स्थितियां बनाई किसने इसके लिए आखिर जिम्मेदार तो आप ही हैं जो चीन का अधिकार तिब्बत पर आपने स्वीकार कर लिया। यदि आप अंग्रेजों के वक्त की नीति को भी अपनाते रहते तो आज आप के ऊपर यह हमला नहीं होता। अगर भारत और चीन के बीच स्थित तिब्बत एक स्वतंत्र राज्य बना रहता तो चीन भारत पर इस तरह से हमला नहीं कर सकता था। इसलिए मौजूदा भौगोलिक स्थिति आपकी ही बनाई हुई है। यह सिरदर्द आपका पैदा किया हुआ है। मुझे तो यह देख कर भी आश्चर्य होता है कि जब तिब्बत को आपने चीन का हिस्सा मान लिया था तो यह दलाई लामा रूपी सीता को अपने देश में सत्यानाश करने के लिए क्यों बैठा लिया? जब आपने तिब्बत को चीन का एक हिस्सा मान लिया तब चीन के शत्रु दलाई लामा को अपने देश में क्यों आने दिया? उस समय चीन के साथ तो आपका मैत्री सम्बन्ध था? नैपाल जो कभी हमारा अपना था वह भी आज हमारी बात नहीं करता। बर्मा भी हमसे नाराज है। पाकिस्तान को हम देख ही रहे है कि भारत के साथ उसका वैरभाव बराबर बना आ रहा है। जहां तक देश के अंदर की स्थिति का सम्बन्ध है कम्युनिस्ट भाई पहले भी और आज भी बड़ी बड़ी बातें कह रहे है। आज हमारे कम्युनिस्ट भाई कह रहे हैं कि वे नेहरू जी की नीति से सहमत हैं। लेकिन वे नेहरू जी की नीति से वाकई सहमत हैं यह तो मैं तब समझूंगा जब वे कम्युनिस्ट पार्टी को छोड़ कर कांग्रेस पार्टी के सदस्य बन जायं वरना इस तरह की बातें करके धोखा देना ही है। कम्युनिस्टों को अब दो घोड़ों की सवारी छोड़नी होगी.....

एक माननीय सदस्य : आप भी कांग्रेस में शामिल हो जाइये।

श्री रामेश्वरानन्द : मैं पहले भी कांग्रेसी रहा हूं और देश की भलाई के लिए अब भी नेहरू जी के साथ हूं। यदि नेहरू जी चीन से लड़ते रहेंगे तो मैं जीवन भर नेहरू जी का साथ दूंगा। मैं कम्युनिस्ट नहीं हूं कि कहूं कुछ और करूं कुछ। मैं समझता हूं कि हमारे प्रधान मंत्री जी इस प्रकार की चालाकियों में नहीं आयेंगे और वे किसी तरह की गफलत में नहीं पड़ेंगे। वह समझते होंगे कि आखिर आज यह कम्युनिस्ट लोग इस तरह की बातें क्यों कर रहे हैं। अगर वह यह नया रुख न अपनायें और पुरानी नीति पर कायम रहें तो उनको जेल का दरवाजा देखना पड़ सकता है। इसलिए उससे बचने के लिए यह सब बातें उनकी ओर से कही जा रही है और नेहरू जी का समर्थन हो रहा है। आज आपकी स्पीचों में और प्रश्नों में पहले जैसी लाली नहीं आती है। मेरे भाई इस मुगालते में न रहें कि मैं इसे समझता नहीं हूं। जेल से बचने के लिए यह सब कुछ कहा जा रहा है....

एक माननीय सदस्य : क्या स्वामी जी भी जेल गये हैं?

श्री रामेश्वरा नन्द : भाइयो मैं एक बार नहीं वरन् अनेकों बार जेल गया हूं। अंग्रजों की जेल मैंने काटी है। निजाम हैदराबाद की जेल मैंने काटी है और कांग्रेसी भाइयों की जेल भी मैंने काट रक्खी है।

मैं शासक वर्ग से अनुरोध करना चाहता हूं कि वे कम्युनिस्टों के प्रति सावधान रहें। दुर्भाग्य की बात है कि जहां देश के ऊपर चीनी कम्युनिस्ट हमला कर रहे हैं वहां हमारे देश के भीतर कम्युनिस्ट पार्टी के लोग हैं जो कि चीन के एजेंट हैं और जिनकी कि आंखें चीन का स्वागत करने के लिए बिछी रहती हैं और जो कि सड़कों पर झाड़ू लगाती हैं। हमें इन चीन के एजेंटों से सावधान रहना होगा। यदि नेहरू जी इनके प्रति सावधान नहीं रहे तो देश विपत्ति में फंसेगा। पंडित जी का मैंने एक वक्तव्य पढ़ा कि रूस अब हमारी सहायता करने के लिए तैयार है लेकिन रूस क्यों तैयार है इस का भी पता है ? वह इसलिये तैयार है क्योंकि उसने देख लिया कि हिन्दुस्तान अब चंगुल में आने वाला नहीं है और हो सकता है कि अमरीका और इंग्लैंड से जो शस्त्रास्त्र आ र हैं उसके कारण कहीं उन से सदा के लिये न कट जाय और अमरीका, इंग्लैंड और भारत के बीच इस तरह सहयोग होने से उनके लिए खतरा न हो जाय। इसीलिये आज उसने अपनी वाणी बदली है। मैं चाहता हूं कि कांग्रेसी सदस्य जो इस समय सदन में मौजूद हैं वे मेरी बात प्रधान मंत्री तक जरूर पहुंचा दें ताकि वे कम्युनिस्टों के प्रति पूरी तरह सावधानी बरतें और किसी प्रकारकी गफलत न करें।

जहां तक मेरा सम्बन्ध है इस राष्ट्रीय संकट के मौके पर हम लोग तो सौ फी सदी नेहरू जी के साथ हैं ही। लेकिन मैं पूछना चाहूंगा कि राष्ट्रपति पद के लिए नेहरू जी और श्री चाऊ एन लाई के बीच में यदि मुकाबला हो तो यह हमारे कम्यनिस्ट भाई अपना मत किसके पक्ष को देंगे ? हम तो अपना मत निश्चित रूप से नेहरू जी को देंगे लेकिन कम्युनिस्ट भाई बतलायें कि वे दोनों में से किसको अपना मत देंगे ? अगर कम्युनिस्ट भाई भी चाऊ एन लाई को अपना वोट न देकर नेहरू जी को देंग तो मैं इसके लिए उनको धन्यवाद दूंगा। इसलिये यह न समझा जाय कि हम समझते नहीं हैं हम सब समझते हैं। कम्युनिस्ट भाई अगर सहयोग देते हैं तो यह बड़ी अच्छी बात है। हमें उनका सहयोग लेना चाहिये।

मैं कहना चाहता हूं कि शासक दल ने जो भूलें की हैं उनको दुहराना नहीं चाहिए। जब चीनी लोग शस्त्रास्त्र तथा अन्य युद्ध सामग्री बना रहे थे तो आपको भी बनाना चाहिए था। जब चीनीलोग सड़कें बना रहे थे तब आपको भी बनाना चाहिए था। राज्य केवल हाथ जोड़ने से नहीं चला करता है। राज्य तो डंडे से चलता है।

"दंडः शासति प्रजा सर्वाः दंडएव अभिरक्षति।
दंडः सुप्तेषुजागृति दंडम् धर्मम् विदुर बुधा :।।"

आज से ६ महीने पहले ही मैं लोकसभा में अपने भाषण में इसी चीज को कह चुका हूं। शासन सत्ता चलाना कोई बारात में जाकर तश्तरियों में खाने वाली चीज नहीं है। न ही यह कांग्रेस की मीटिंग में और पार्टी में जाकर खाने वाली चीज है। राज्य चलाना ऐसी सहज चीज नहीं है। राज्य चलाना बड़ी कठिन चीज है।

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रम् विरक्षति

अर्थात् ब्रह्मचर्य और तप के द्वारा ही राजा राष्ट्र की रक्षा कर सकता है। मैं मानता हूं कि जो शासक अपनी इन्द्रियों पर शासन नहीं कर सकते, वे जनता का शासन नहीं कर सकते। जो जनता का शासन करना चाहें, वे अपने प्रजा पर शासन करें, लेकिन आज उन शासकों की स्थिति क्या है, वह किसी से छिपी हुई नहीं है।

अभी हमारे एक भाई कह रहे थे कि तिब्बत में भोले बाबा का स्थान है। नहीं, नहीं, भोले बाबा का नहीं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि तिब्बत वह स्थान है, जहां सृष्टि की उत्पत्ति हुई, जहां सब से पहले मनुष्य की उत्पत्ति हुई। आर्य लोग तिब्बत से आकर आर्यावर्त में बसे। वे तिब्बत से नदियों के सहारे चल चल कर यहां पर आए। इसलिए तिब्बत हमारा आदि स्थान है और हमको

[श्री रामेश्वरानन्द]

तिब्बत के लिए लड़ना चाहिए। यदि आप चाहते हैं कि भारत सुरक्षित रहे और कम्युनिस्ट चीन को कुचलना है, तो आपको इस समय तिब्बतियों को गुरिल्ला युद्ध के लिए तैयार करना चाहिए और उनका सहयोग लेना चाहिए, तब चीनी कुचले जा सकते हैं।

यदि आज आपको कम्यूनिस्टों को मिटाना है, अत्याचारी और अन्यायी, धर्म से शून्य और दुनिया भर के अनार्य लोगों को यदि मिटाना है, तो उसका एक ही तरीका है—अमरीका से कहो कि यदि वह मदद करना चाहता है, तो वह चांग काई शक से कहे कि चीन की मुख्य भूमि पर हमला कर दे। चीन की मुख्य भूमि पर हमला हो जाय, तो उनको पता लग जाय कि भारत पर हमला कैसे होता है। सिक्किम और भूटान को भी चाहिए कि वे इस सम्बन्ध में सहायता करें और तैयार हो जायें। नेपाल, पाकिस्तान और बर्मा को भी कहना चाहिए कि तुम्हारे हमारे घर की जो बातें हैं, वे सब निपटाई जा सकेंगी। पाकिस्तान के साथ हमारा एक सम्बन्ध है—हम और वे एक हैं, बहुत दूर नहीं हैं। भाई भाई लड़ते हैं, इसलिये उनको कहना चाहिए कि यह मौका है बंटवारे का, आओ, चीन में चलो, तुम्हारे भी कुछ हाथ लगेगा।

अगर सरकार ने इस बारे में भूल की, ध्यान न दिया, तो मैं कहना चाहूंगा हूं कि देश की स्थिति इसके विपरीत भी बन सकती है। जो जर्मनी की हालत हुई, वह भारत की भी हो सकती है। इन कड़ुवी बातों को छिपाया नहीं जा सकता है। मैं सरकार से कहना चाहूंगा कि वह हमारे विचारों का ग़लत अर्थ न लगाए।

अब श्री कृष्ण मेनन को अलग किया गया है। मैं कहूंगा कि श्री कृष्ण मेनन को अलग करने से काम नहीं चल सकता है। यदि किसी रेल के फाटक पर गाड़ी की कोई टक्कर हो जाती है और उसमें दो चार आदमी मर जाते हैं, तो पता नहीं फाटक के जिम्मेदार व्यक्ति को फांसी पर चढ़ाया जाता है या क्या होता है। तो जिस व्यक्ति ने अपनी अदूरदर्शिता के कारण बीसियों हजारों आदमियों को मरवा दिया और घायल करवा दिया, क्या उनके त्याग पत्र से काम चल जाएगा? उन को एक दम हवालात की हवा खिला देनी चाहिए और अगर मुझ पूछा जाय, तो मैं कहूंगा कि लाल किले के सामने खड़ा करके उनको सज़ा देन चाहिए। अगर एक व्यक्ति किसी एक आदमी को मरवा देता है, तो वह अपराधी होता है, लेकिन जिस ने इतने आदमियों को मरवा दिया उसको अपराधी नहीं माना गया है। मैं कहना चाहूंगा कि सरकार की यह नीति ठीक नहीं है।

मैं इस सदन में सच्ची बातें कह रहा हूं। हमारे देहातों में कहते हैं कि सच कहने का मतलब यह समझो कि किसी की आंखों में उंगलियां दे देना। हमने कहना ही सत्य है। लगी-लिपटी तो बहुत कह चुके हैं। मैं कहना चाहूंगा कि इस समय सिर्फ श्री मेनन को हटाने से ही काम नहीं चलेगा। कांग्रेसी भाइयों ने एक भूल की है। कांग्रेस का ही मंत्री मंडल बनाया जाये, लेकिन कूकि वह मंत्री-मंडल सफल नहीं हुआ है, इस लिए मैं चाहूंगा कि मंत्रि-मंडल दुबारा चुना जाना चाहिए चाहे दोबारा किसी को भी चुना जाय। इसमें किसी का अपमान नहीं है। मैं मानता हूं कि कांग्रेस में ऐसे सज्जन भी मौजूद हैं, जो योग्यतम हैं। मैं उनको जानता हूं, लेकिन मैं उनका नाम नहीं लूंगा, क्योंकि उपाध्यक्ष महोदय कहेंगे कि नाम क्यों लेते हैं। जब ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं, तो उनको आगे आने का अवसर क्यों न दिया जाय।

एक माननीय सदस्य : त्यागी जी हैं।

श्री रामेश्वरानन्द : त्यागी जी ही नहीं, और भी योग्य आदमी हैं। कांग्रेस पार्टी के सदस्य बहुत संख्या में हैं। यदि व इस प्रकार की व्यवस्था करें, तभी काम चल सकता है। हम उनके साथ हैं और हर प्रकार से उन के साथ रहेंगे, क्योंकि देश किसी एक व्यक्ति का नहीं है, पंडित नेहरू का नहीं है, किसी एक राज्य का नहीं है—देश हमारा है। अगर देश नहीं होगा, तो हम कहां होंगे? देश नहीं

होगा तो कहां होगी भाषा और सभ्यता ? और कांग्रेसी भाइयों को को तो हम परचियों से बदलसकते हैं, लेकिन कम्यूनिस्टों को बदलना मुश्किल हो जायेगा । हम इस स्थिति को भी जानते हैं । इस लिये हम कम्यूनिस्टों की अपेक्षा कांग्रसियों को हर हालत में सहयोग दगे, लेकिन कम्यूनिस्टों से हम कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहते हैं ।

†**श्री हरिश्चन्द्र माथुर** (जालोर) : हमारे समक्ष जो दो संकल्प हैं वे राष्ट्र के दृढ़ निश्चय की घोषणा हैं । चीन द्वारा हमारे देश पर आक्रमण से समस्त राष्ट्र का गर्व आहत हुआ है और देश के सभी लोगों में आक्रांताओं के प्रति घृणा की लहर पैदा हो गई है । राष्ट्र केवल प्रधान मंत्री के आह्वान पर ही इस हमले के प्रतिरोध में खड़ा नहीं हुआ प्रत्युत राष्ट्र की यह अपनी निजी भावना थी, यही उसकी प्रतिक्रिया थी ।

अब समस्त राजनीतिज्ञों को, राजनीतिज्ञ नेताओं और सरकार को राष्ट्र की भावनाओं का उत्तर देना है । इस गम्भीर संकट की स्थिति में प्रशासन को इस योग्य बनाना है कि वह अवसर के अनुकूल काम कर सके । अब पुरानी ग़लतियां नहीं होनी चाहिय । तभी राष्ट्र को सन्तोष होगा ।

हमें अब अपनी सामरिक स्थिति को बदलना होगा और बजाय प्रतिरक्षा के आक्रांताओं पर आक्रमण करना चाहिय ।

इसके लिय सर्व प्रथम राष्ट्रीय योजना की आवश्यकता है जिसकी रूप रेखा प्रधान मंत्री ने दी है कि हर क्षेत्र में हर व्यक्ति को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये ।

पंजाब के मुख्य मंत्री ने कहा है कि केवल पंजाब से वह युद्ध के लिए २० लाख व्यक्ति देगा । यह राष्ट्रीय योजना में कहां तक उपयुक्त है पता नहीं किन्तु भूतपूर्व सैनिकों को अवश्य बुला लेना चाहिये । प्रत्येक राज्य में बड़ी संख्या में नवयुवकों को सैनिक शिक्षण देना चाहिये ।

तटस्थता की नीति मूल रूप में ठीक है । सभा में सिवाय श्री रंगा के किसी ने भी इस नीति का विरोध नहीं किया । इसका यह अभिप्राय नहीं कि इस नीति के होते हुए हम अन्य देशों से शस्त्रास्त्र नहीं ले सकते । हमें ये शस्त्रास्त्र लेने चाहियें और उनके मूल्य के भुगतान पर बल नहीं देना चाहिये । हमारी इस नीति का अमरीका, इंगलैंड और मित्र के देश भी समर्थन करते हैं ।

देश की आर्थिक स्थिति को निर्बल नहीं होने देना चाहिये । हमारे वित्त मंत्री नें यह ठीक ही कहा है कि आक्रांता ने इस कारण हमला किया है कि वह हमारी प्रगति पर ईर्ष्या करने लगा हैं ।

मेरे विचार में हमारी राष्ट्रीय आय १५,००० करोड़ रुपये है । हर व्यक्ति को अपनी आय का पांच प्रतिशत हर मास देना चाहिय और कुछ लोग इससे भी अधिक धन दे सकते हैं । कोई भी व्यक्ति इससे आनाकानी नहीं करेगा और काफी धन एकत्र हो सकता है । ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि प्रति मास १०० करोड़ रुपया मिल सके । योजना कार्य में बाधा उपस्थित नहीं होनी चाहिये ।

चीन को हमने जो सुझाव दिया है कि चीनी ८ सितम्बर की सीमा तक लौट जाना चाहिये तभी समझौते की बातचीत हो सकती है । यह प्रस्ताव बहुत उदारतापूर्ण है और इस पर दृढ़ रहना चाहिये ।

पाकिस्तान के साथ हमें कम से कम अस्थायी करार कर लेना चाहिये । अन्यथा यह बहुत भारी भूल होगी ।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री हरिचन्द्र भाथुर]

आचार्य कृपालानी ने कहा है कि प्रति वर्ष प्रतिरक्षा मंत्रालय को ४०० करोड़ रुपये दिये जाते रहे है उनका क्या हुआ। इस समय ऐसी बातें कहना अनुचित है।

साम्यवादी दल ने एक संकल्प पास किया है और हमें उनके शब्दों पर विश्वास करना चाहिये। उस दल को भी अपने ऐसे सदस्यों का समर्थन नहीं करना चाहिये जिन्होंने संकल्प का विरोध किया है।

†**डा० पं० शा० देशमुख** (अमरावती) : जो संकल्प इस सभा में पेश किये गये है उनका सभी ने समर्थन किया है। ये पंचसूत्री संकल्प पंचशील की भावना के भी अनुकूल है।

भारत की विदेश नीति ठीक है। मैं उस से सहमत हूं। उसमें परिवर्तन की कोई आवश्यकता पैदा नहीं हुई। चीन का आक्रमण न केवल उस की विस्तारवादी मनोवृत्ति का संकेत है बल्कि वहां की अत्यधिक जनसंख्या के कारण भी है। पंचशील में उनका विश्वास केवल उन दुष्कर्मों पर आवरण था जो वे करना चाहते थे। तटस्थ राष्ट्रों को चीन के व्यवहार से सबक सीखना चाहिये कि पंचशील और साम्यवाद एक दूसरे के सर्वथा प्रतिकूल हैं।

हम साम्यवादी और अन्य सभी देशों से सहायता का स्वागत करते है। हम विभिन्न देशों में भेदभाव नहीं करते। कोई भी देश जो पंचशील में विश्वास रखता है चीन का पक्ष नहीं ले सकता।

हमें ८ सितम्बर की सीमा रेखा पर ही संतुष्ट नहीं रहना चाहिये। उन्हें अपने प्रदेश से निकाल बाहर फैंकना चाहिये। चीनियों को उनकी धोखेबाजी का दण्ड अवश्य देना चाहिये तभी उन से सद्व्यवहार की आशा की जा सकती है। हमें उनके उद्देश्यों और उनकी चालों को भली प्रकार समझना चाहिये।

अब समस्त राष्ट्र प्रधान मंत्री और सरकार का समर्थन कर रहा है। हमें देश के बलिदान का पूरा उपयोग करना चाहिये। हर मंत्रालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत योजनाओं का अध्ययन करना चाहिये और शीघ्र फल प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिये। कृषि की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये और किसान को लाभ का आश्वासन देना चाहिये।

सरकार का यह विचार कि नियंत्रणों का विरोध किया जाये सराहनीय है। नियंत्रण से भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलता है।

मैं महाराष्ट्र से सम्बन्धित हूं और उस प्रदेश की ओर से आश्वासन देता हूं कि भारत की सैन्य शक्ति के लिये हम इतने लोग देंगे कि किसी विदेशी सैनिक को बुलाने की कभी आवश्यकता नहीं होगी।

†**श्री बी० चं० शर्मा** (गुरदासपुर) : संसद् में चीन के आक्रमण पर हुई चर्चा को पढ़ कर कोई यह अन्दाजा न लगाये कि देश में मतभेद है। चाहे भिन्न आवाजें सुनाई देंगी, परन्तु एक उद्देश्य सभी के सामने है कि चीनियों को भारत से खदेड़ बाहर करेंगे। इस का सभी ने समर्थन किया है।

---

†मूल अंग्रेजी में

कुछ लोगों ने वीर पूजा की भावना के बारे में कहा है। मेरा वीर पूजा की भावना में विश्वास है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू एक ऐसे व्यक्ति है जो कि गद्दार शत्रु से देश की रक्षा कर सकते है।

श्री जवाहरलाल नेहरू शान्तिकाल में बड़े नेता रहे है और युद्धकालीन स्थिति में भी बड़े नेता सिद्ध होंगे। प्रत्येक भारतीय को चाहे वह किसी भी राजनैतिक दल में विश्वास रखता हो, इस संकट के समय जनता का वर्तमान नेता में विश्वास कायम रहे।

प्रारम्भिक हारों के कारण हमें भयभीत नहीं होना चाहिए। अन्त में विजय लोकतंत्र की होगी।

हमारी प्रचार व्यवस्था का सुधार किया जाना चाहिए। समाचारपत्रों की राष्ट्रीय हित के लिये घातक सामग्री प्रकाशित करने की प्रवृत्ति को दबा देना चाहिये। अफवाहों का समुचित प्रतिवाद किया जाना चाहिए और इस प्रकार की सूचना प्रसारित की जानी चाहिए जो जनता का नैतिक साहस बढ़ाये।

हमें अपने पड़ोसी देशों में बहुत योग्य राजनयिक भेजने चाहिए ताकि इस युद्ध के विजय में सहायता मिल सके। इस समय राजेश्वर दयाल जैसे योग्य राजनयिक को पाकिस्तान से नहीं बदलना चाहिए था। हमें राजनयिक सेवाओं को अधिक सक्रिय बनाना चाहिए ताकि हमारे पड़ोसियों के साथ अच्छे तथा अधिक मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बन सकें।

मैं श्री ढेबर से सहमत हूं कि अनावश्यक व्यय नहीं किया जाना चाहिए।

कीमतों को बढ़ने नहीं देना चाहिए ताकि साधारण व्यक्ति पर बुरा प्रभाव न पड़े। मुनाफाखोरी नहीं करने दी जानी चाहिये। समाज विरोधी तत्वों से कड़ा बर्ताव करना चाहिए।

स्कूलों और कालिजों में पढ़ने वाले छात्रों के जोश और शक्ति का इस देश के संकट में सदुपयोग करना चाहिए।

जिस प्रकार चीनी लोग आर्थिक क्षेत्र में असफल रहे है उसी प्रकार भारत की भूमि से भी उन्हें पीछे हटना पड़ेगा। भारतीय उन्हें ऐसा सबक सिखायेंगे कि वे सदियों तक याद रखेंगे।

†**श्री हेम बरुआ** (गौहाटी) : चीन के भारत पर आक्रमण से दोनों देशों में सहअस्तित्व के स्वप्न खत्म हो गये है।

[**श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी** पीठासीन हुए]

चीन का आक्रमण हमें गुलाम बनाने की साम्यवादी साजिश का अंग है। सब कम्युनिस्ट दलों ने चीन की कार्रवाई का समर्थन किया है। हमारे प्रधान मंत्री का चीनियों के मित्रता के दिखावे में जो आत्म विश्वास था, उसी से हमें इस संकट का सामना करना पड़ रहा है।

मेरे विचार में चीन ने हमारे ऊपर अचानक हमला नहीं किया है। चीन ने हमारे प्रति अपने इरादों का संकेत दे दिया था। हम कल्पना के संसार में डूबे रहे।

सारा देश इस भ्रम में नहीं था। कुछ समाचारपत्रों ने और इस सदन के कुछ सदस्यों ने पहले ही चेतावनी दे दी थी। जिन लोगों ने सरकार को सचेत किया उन को सरकार ने प्रतिक्रियावादी एवं लड़ाकू कर दे दिया।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री हेम बरुआ]

कुछ लोग कहते है कि चीनियों ने नेफा पर इसलिए आक्रमण किया है क्योंकि वे इसे लद्दाख में समझौते के लिए सौदेबाज़ी के रूप में प्रयोग करना चाहते हैं। ऐसी बात नहीं है। यह तो उन के सारे संसार में युद्धनीति का अंग है।

कोई लड़ाई तब तक नहीं जीती जा सकती जब तक उस के सम्बन्ध में तेज़ी से कार्रवाई न की जाये। प्रधान मंत्री को सैद्धान्तिक बातों में नहीं जाना चाहिए।

रूस से भी हम ने गलत आशायें बना रखी थीं। हम सोचते थे कि रूस चीन को आक्रमण की हरकतों से रोकेगा। रूस ने गलत नक्शे छापे जिस में चीन के दावों का समर्थन किया। ख्रुश्चेव ने स्पष्ट रूप से कहा था कि अतिक्रमण होने पर रूस चीन की तरफ होगा। इन सब बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि रूस पर आशा रखना निष्फल है।

हमें साम्यवादी दल पर पूर्णतया विश्वास नहीं करना चाहिए। साम्यवादी दल का संकल्प संदिग्ध है क्योंकि दल के कुछ सदस्यों ने उस की अवज्ञा की है।

हम उन मित्र देशों के आभारी हैं जिन्होंने इस संकटकाल में हमें सैनिक सहायता दी हैं। कम्युनिस्ट कहते हैं कि इस से तटस्थता की नीति पर प्रभाव पड़ेगा। कम्युनिस्ट कहते है कि किसी विदेशी विशेषज्ञ को इस देश को नहीं आना चाहिये। अन्य राष्ट्रों के सैनिक विशेषज्ञों की सेवाएं स्वीकार करने में कोई हानि नहीं है। इस से तटस्थता की नीति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। द्वितीय महायुद्ध में रूस ने भी सैनिक सहायता ली।

मैं जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। प्रधान मंत्री के नेतृत्व पर हमें पूर्ण विश्वास है। उनके होते हुए विजय हमारी होगी।

†**श्री खाडिलकर** (खेड) : भारत और चीन में जो युद्ध हो रहा है वह हमारी सीमाओं का ही युद्ध नहीं है। इस गैर-भौतिक शक्तियों का भी युद्ध है। चीन यह चाहता है कि अफ्रीकी और एशियाई देश उस के नेतृत्व को मानें।

हमारी तटस्थता की नीति में कोई गलत बात नहीं है। संयुक्त राज्य अमेरिका भी हमारी निष्ठा के कारण उस का सम्मान करने लगा है। किसी सैनिक गुट में शामिल होना देश के लिए ठीक नहीं रहेगा।

श्री नासर ने हमारा समर्थन किया है। उनकी आवाज़ सारे अरब विश्व में सुनी जाती है।

चीन आज केवल भारत के विरुद्ध ही कारवाई नहीं कर रहा है। हमारी सहायता आध्यात्मक और लोकतंत्रात्मक ताकत कर रही है। सारे पूर्व युरुप के देश भी उस के पक्ष में नहीं है। रूस बड़ी कठिन परिस्थिति में है। साम्यवादी दल ने भी शेष देश के साथ भारत की प्रतिरक्षा का वचन दिया है। यह महान् बात है।

हम ने अपने चीन के साथ संघर्ष में राजनैतिक पहलू पर बहुत अधिक भरोसा किया है। प्रतिरक्षा व्यवस्था की ओर ध्यान नहीं दे सके। हमें अपनी तटस्थता की नीति नहीं छोड़नी चाहिये।

हमारी सदैव यह कोशिश रही है कि संघर्ष को कहीं भी बढ़ने न दिया जाये। अतः हमें संघर्ष को सीमित रखना चाहिए। इस का यह मतलब नहीं कि हमें लड़ना नहीं। हमें पूरी कोशिश से अपनी रक्षा करनी चाहिए कि चीन का रवैया बहुत गलत है। वह समझौते के लिए तैयार नहीं है।

---

†मूल अंग्रेजी में

हमारे आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में कड़ा अनुशासन आवश्यक है। हमें अपनी प्रचार व्यवस्था को सुधारना चाहिए, क्योंकि उस का बहुत महत्व है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि सारा देश नेताओं के पीछे है और चीन को पराजय करेगा।

श्री बागड़ी (हिसार) : सभापति महोदय, आज ऐसे मौके पर जबकि सारे भारत में एक नया जीवन और एक नई हलचल करवट ले रही है और न सिर्फ हिन्दुस्तान की ही जनता बल्कि दुनिया भर की मानवता इस भारत के दिल दिल्ली में होने वाली इस लोक-सभा के फैसले की तरफ आंख उठा कर देख रही है कि इस अंधेरे युग के अन्दर कौन सी रोशनी भारत के दिल में से निकलती है जोकि मानवता के लिए जिंदगी दे सके, मैं आप से अर्ज करूंगा कि एक बात आप अपने दिमाग़ में साफ रख लीजियेगा और कोई भी व्यक्ति कोई भी आदमी यह न मन में समझे कि इस राष्ट्रीय संकट के समय सब भारतवासी एक नहीं है। अलबत्ता जो कोई नुक्ताचीनी करता है या सरकार को पथ दिखलाता है उसके पीछे वही देशप्रेम और देश सेवा की भावना विद्यमान रहती है। ऐसे मौके पर कोई भी देशवासी जोकि इस भारत भूमि में जन्मा है और जोकि अपने को भारतवासी कहलाने में गौरव अनुभव करता है वह भारतमाता की हिफाजत के लिए नेहरू की सरकार तो क्या अगर कोई उस की जगह रद्दी से रद्दी सरकार भी होती तो भी उसका साथ देता। कोई फासिस्ट सरकार भी होती और ऐसा वक्त जैसा कि आज पेश है होता और देश की आजादी को खतरा होता तो कोई भी हिन्दुस्तानी जिसको कि मादरेवतन पर नाज है वह अपनी जिंदगी देने से बिल्कुल गुरेज़ नहीं करता। इसलिए इस मौके पर हममें से अगर कुछ लोग सरकार की नुक्ताचीनी करते हैं तो उसके पीछे यही भावना मौजूद रहती है कि हमारी सरकार पुरानी भूलों को न दुहराये, आयन्दा गफलत में न पड़े। हमारे सुझाव और क्रिटिसिज्म इसलिए होते हैं ताकि सरकार और हमारा मुल्क सही रास्ते पर आगे बढ़े। जो भी पुरानी खानियां हमें आगे बढ़ने से रोक रही हैं उनको निकाला जाय ताकि तेजी से हमारा देश आगे बढे और तरक्की कर सके। हम यहां सिर्फ इसलिये इकट्ठे नहीं हुए हैं कि पंडित नेहरू का जय जयकारा बुलायें वह तो सारा देश इस समय बुला ही रहा है। मैं तो दावे के साथ कहता हूं कि जहां तक हिन्दुस्तान के अवाम का ताल्लुक है वह एक निहायत बहादुर और दिलेर कौम है और कोई भी हिन्दुस्तानी अपने मादरेवतन की हिफाजत के लिए कोई भी कुर्बानी देने से नहीं हिचकेगा। गलती और भूल अगर है तो हमारी लीडरशिप की है वरना जो मेरी बच्ची के पेट के अन्दर लड़का है उसकी भी यही तमन्ना है कि गर्भ से निकल कर मादरेवतन के काम आये। हमारी ग़लतियों को पकड़ो, हमारी कमियों को पकड़ो, हमारी त्रुटियों को पकड़ो, जो आज देश को गम्भीरता से पीछे ले जा रही हैं। मैं आप की मार्फ़त इस सदन के सामने वे तीन कमियां रखना चाहता हूं, जोकि इस सिलसिले में रही है। आज हम अपनी नीति की बात करते हैं। कहीं न कहीं तो कमी थी न। आज हम को यह बात तो माननी पड़ेगी कि जब हमारे नौजवानों में दिलेरी भी है, जब कौम में नेता के ख़िलाफ़ कोई आवाज़ नहीं है, जब सारी कौम तैयार है, जग बच्चा बच्चा देश की आज़ादी के लिये जान देने को तैयार है, तो आखिर कोईकमी थी कि जिस की वजह से आज कम्युनिस्ट चीन नुमा ज़ालिम दरिन्दा हमारी मादरे वतन पर बढ़ता चला आया। हम को सोचना पड़गा कि वह कौन सी कमी र। कबूतर की तरह आंख बन्द कर के यह सोच लेना कि बिल्ली तटस्थ नीति पर चलेगी, इस से काम नहीं चलेगा। यह बात नहीं होने वाली है। इस पर हम को सोचना और विचारना पड़ेगा।

[श्री बागड़ी]

इस सिलसिले में मैं सग से बड़ी जिम्मेदारी देश की जनता या कौम पर नहीं डालता हूं। आज इस कौम की ग़ैरत और शक्ति को मत लथ्कारो। १९४२ की बात को छोड़ दीजिये, मैं उस वक्त की बात कहता हूं, जब कि हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ का राज्य था। उदस वक्त हमारे पास हथियार नहीं थ, कोई चीज़ नहीं थी और अंग्रज़ की शक्ति कोई कम नहीं थी, लेकिन इस कौम मैं ज़िन्दगी थी, जिस की बदौलत उस ने निश्शस्त्र होते हुए भी एक सशस्त्र कौम को उखाड़ कर फका और स्वतंत्रता हासिल की। चीन आज कान खोल कर सुन ले कि अगर आज हमारे पास कुछ भी नहीं हैं, तो आज़ादी की लड़ाई में तो हमारे पास लाठियां भी नहीं थी। आज तो हमारे पास पिस्तौल और बन्दूक होगी और यही नहीं, बल्कि दुनिया भर की सभ्य कौमैं हमारी मदद पर हैं। व कौमें चाहे कोई भी क्यों न हों, उन को चाहे कोई बुरे से बुरा कहे, सूकिन मैं कहूंगा कि मादरे-वतन उन की अच्छी से अच्छी कौम समझती, है जोकि आज हमारे आड़े वक्त में हमारी मदद कर रही हैं और हम को हथियार देती हैं। भारत कोई नाशुक्र मुल्कों में से नहीं है। मैं दुनिया के मुल्कों के सामने डंके की चोट से कहता हूं कि चाहे कोई भी मुल्क हो, चाहे वह डिक्टेटरशिप का मुल्क हो और चाहे इम्पीरियलिस्ट मुल्क हो, चाहे किसी भी नीति को मानने वाला मुल्क हो, मैं उस को देवता मानूंगा, जिस ने हमारी मुसीबत मैं आ कर हमारी मदद की। और चाहे कोई सोशलिस्टक मुल्क हो या कोई अवतारी देश हो, अगर उस व हमारे जि लाद्ध कोई कदम उठाया है, हमारे हितों को धक्का लगाया है, तो हम उस को मानवता का हन्यारा समझेंग और उस से टक्कर लेंग।

आज तटस्थ नीति की बहुत चर्चा की जाती है। तटस्थ नीति होती क्या है? तटस्थ नीति का मतलब यह र, दो के बीच मैं जा कर सींग मत फंसाओ। उस को तटस्थ नीति कहते हैं। लेकिन सिर पर डंा पड़ रहा हो और तटस्थ नीति की गात की जाय, इस का कोई मतलग नहीं र।

मोट तौर पर यह समझना चाहिये कि तीन बड़ी ग़लतियां हुई है। काश, प्रधान मंत्री यहां पर होते और इन बातों को सुनते। अब उन को कौन वतायेगा।

श्री दी० चं० शर्मा (गुरदासपुर) : वह पढ़ लेंगें।

श्री बागड़ी : तब तो ठीक है।

श्रीमती रेणु चक्रवर्ती (बैरकपुर) : डा० राम मनोहर लोहिया की थ्योरी आफ़ ईक्वी डिस्टेंस का क्या हुआ?

श्री बागड़ी : वह रूस गय हैं आप के पास्पोर्ट का बन्दोबस्त करने के लिय। आप को चाइना का गवर्नर बनाया जायगा। (**अन्तर्बाधा**) कुछ और सुनना है क्या?

जैसाकि मैंने कहा है, इस सिलसिले में तीन बड़ी ग़लतियां हुई हैं और उन्हें कौम से छिपाना नहीं चाहिय। हमारे मन्सर गांव पर, जोकि मैकमाहन लाइन से ७५ मील दूर है, कम्यनिस्ट चीन ने कब्जा किया, लेकिन हम यह बात कह कर खामोशी से उस को बर्दाश्त कर गये कि उस से जितना मालिया आता था, वसूली में उस से ज्यादा ज र्चा लग जाता था। क्या यह बनिये की दुकान है? क्या यह मुन फाखोरी की दुकान है? यह सौदागरी नहीं, बल्कि यह मादरे-वतन के गौरव का सवाल था और सारे हिन्दुस्तान को उस पर उठना चाहिये था। आज मैकमाहन लाइन की मर्यादा तलाश करते हैं कि यहां थी या नहीं थी, लेकिन मैकमाहन लाइन से ७५ मील दूर हमारे एक गांव की सैन्सस के मुताल्लिक फिगर्ज़ हिन्दुस्तान के काग़ज़ात पर मौजूद हैं। इतना बड़ा सबूत हमारे पास था, जिस को हम ने अपने हाथ से जाने दिया।

जब कम्युनिस्ट चीन आगे बढता गया, तो हमारे प्रधान मंत्री ने यहां पर कहा कि वहां पर तो कंकड़ है, वहां पर कुछ पैदा ही नहीं होता है, वह तो कुछ काम की ज़मीन नहीं है। चाहता हूं कि यह मादरे-वतन के गौरव के साथ मज़ाक है। कोई भी मां का सपूत, अगर कोई उस के बालों की तरफ़ हाथ उठाता है, चाहे वे बाल टूटने वाले ही हों, यह सोच कर खामोश नहीं बैठा रहे कि वे बाल टूटने वाले तो थे ही, चले गये, कोई बात नहीं, बल्कि वह सब हाथ को तोड़ देगा, जो कि गालों की तरफ उठाया गया है—वह उस हाथ को तोड़ कर रख देगा, जोकि मादरे-वतन पर उठाया गया है ।

चीनी कोई एक दिन में नहीं बढे । व आग बढ़ते गये और हमारी सरहद पार करते गये और जब प्रधान मंत्री से हथियारों के बारे में कहा गया, तो उन्हों ने कहा कि हम किसी से हथियार नहीं लेंगे, हम डंडे से लड़े लेंगे, मुक्के से लड़ लेंग । मैं कहना चाहता हूं कि क्या यह कोई तीन मूर्ति के सामने मनिराम बाग़ड़ी पर लाठी चलाना है, जहां डंड से काम चल जायगा । चीनियों से डंडों और मुक्कों से नहीं लड़ा जा सकता है। एक कौल साहब गये थे, जो कि ज़काम करवा कर वापस आ गये । मैं कहना चाहता हूं कि लड़ाई हथियारों से होगी, डंडों और मुक्कों से नहीं । मैं कहना चाहता हूं कि य बहुत गम्भीर ग़लतियां है, कोई मामूली ग़लतियां नहीं हैं ।

सुबह पार्लियामेंट के एक मेम्बर कहने लगे कि यह है, वह है, नीफ़ा जाओ । वैसे तो हिन्दुस्तान का हर एक बाशिन्दा मेरा है और मैं उस का हूं । कौम के सवाल पर कोई दो थोड़ ही ट्ठ । ये भाई भी चाहे सोचें पीकिंग की, लेकिन हैं तो हमारे ही । उन को दर्द होता है, तो हम को भी होता है । अगर उन पर कोई आक्रमण या आतंक हो या कोई नुक्सान हो, तो हम को उन के लिये और इसी तरह उन को हमारे लिये सोचना चाहिये । अगर हम नहीं सोचेंगे, तो यह हमारी नालायकी और कमअक्ली होगी । जो भाई सुबह मेरी आलोचना करते थ, मैं उन को बताना चाहता हूं कि मेरे वाइस नज़दीकी रिश्तेदार, जिन में एक भतीजी का ख़ाविन्द भी है, शहीद हो चुके हैं । हम हमारे दिल से पूछते हैं ? पंजाब वालों से पूछते हैं ? गांव में रहने वालों से पूछते हैं ? प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि. स्वामी जी को नीफ़ा भेज दो । क्या नीफा से हमें डर लगता है । नीफ़ा हौवा होगा किसी के लिये, लेकिन पंडित जी हुक्म करें—यह ताकत है उन के लफ्जो में —तो हिन्दुस्तान का बच्चा बच्चा पीकिंग तक पहुंचने के लिय तैयार है । वह हुक्म तो करें । सिर्फ़ हुक्म करने की देर है ।

आज यह एलान किया जाता है कि ८ सितम्बर से पहले वाली स्थिति अगर हो जाये, तो हम बातचीत करने के लिये तैयार हैं । यह क्या ढकोसला है ? आज अगर हिन्दुस्तान बच सकता है, तो अक्ल से सोच कर काम करने से बच सकता है । वह हथियारों के बग़ैर नहीं बचेगा । मैं कहना चाहता हूं कि हाथ खींच कर लड़ाई करने से काम नहीं चलेगा । कम्यनिस्ट चीन वहां हमला करता है, जहां हमारी कमज़ोरी नज़र आती है । लेकिन हम कहां पर लड़ते हैं ? वहां, जहां वह हम पर हमला करता है, चाहे बाकी सब जगह वह कमज़ोर हो । आज हमारे सिपाहियों के हाथ बंधे हुए हैं, हमारी फ़ौज के हाथ बंधे हुए हैं ।

यह कोई हवाई बात नहीं है, बल्कि यह एक प्रत्यक्ष बात है कि आज बात कर लो, गाली दो या किसी की आइडियालोजी की स्तुति करो, लेकिन यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि कौन से मुल्क हम कोहथियार दे रहे हैं और देंगे और किन के हथियारों से हमारी स्वतंत्रता बच सकती है । हवा की बात और थोथी बात करने से काम नहीं चलेगा । मैं उन मुल्कों को हृदय से धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने, बावजूद इस बात के कि हम उन को सब से रद्दी और ख़राब समझते थे, आड़े वक्त पर हम को हथियार दिय हैं ।

[श्री बागड़ी]

यह कहना ठीक नहीं है कि हम रूस के खिलाफ हैं, रूस की जनता या कम्यूनिस्ट मुल्कों की जनता के खिलाफ हैं। हमारी यह विचार-धारा नहीं है। हम चीन में रहने वाली जनता के खिलाफ नहीं हैं। हम कहते हैं कि हमले का एलान करो, तिब्बत में फ़ौजी अड्डों पर हमला करो। हम यह भी नहीं कहते कि चीन वालों पर हमला करो, चीन की जनता पर हमला करो। एक बात मैं कम्यनिस्ट भाइयों से कहना चाहता हूं। जितना बड़ा घर होता है, उस सब की भलाई, उस सब की बुराई की जिम्मेवारी उन के ऊपर होती है। अगर रूस का कोई अच्छा काम होगा तो उस की भलाई आप के ऊपर आयगी और अगर कोई बुरा काम होगा तो उस की बुराई भी आप के ऊपर आयगी। इस से करने की जरूरत नहीं होनी चाहिये। जब चीन अच्छा काम करे तब तो आप कह दें कि देख लो कितना अच्छा काम किया है और हिन्दी चीनी भाई भाई के नारे लगाने शुरू कर दें और कहना शुरू कर दिया कि माओ त्से-तुंग को फालो करते हैं, उस के गीत गाते हैं आगे बढ़ कर, लेकिन जब पंचशील का भट्टा उस ने बिठा दिया, उसकी अवहेलना कर दी तो क्यों उस की बुराई आप अपने ऊपर नहीं लेते हैं। मैं कहना चाहता हूं कि घबराने की कोई बात नहीं है। आप में भी देश-भक्ति हो सकती ह, होगी और है, मैं इस से इन्कार नहीं करता हूं। लेकिन आप को इस के लिये जरा साहस, बल और ईमानदारी का दूसरों से ज्यादा सबूत देना पड़ेगा। आप को क्या करना है, यह मैं आप को बतलाना चाहता हूं। ९२ आदमियों में से ३२ आदमी थे वे जो आज हमारे सिपाहियों पर गोली चलाते हैं। चीन के सिपाही आयें अगर हमारी कैद में तो मैं उन को शायद बख्श सकता हूं लेकिन वे शायद माओ-त्से-तुंग के हुक्म से चलाते हैं।

वह आदमी जो इंटेलीजेंट है, जो पढ़ा लिखा है, नेता है, देश के साथ गद्दारी करता है, गोली चलाता है उस को किस तरह से बख्शा जा सकता है। जो हमारे हिन्दुस्तान के खिलाफ गद्दारी करे के चीन का पक्ष लेता है, जो लोगों को गद्दार बनने की सलाह देता है, मैं आप से कहूंगा कि आप उस का किला मत बनिये। इस तरह के जितने भी आदमी हैं, उन को निकालिय, उन को ओपन में लाइय ताकि वे गिरफ्तार हों और देश के साथ गद्दारी न कर सकें।

एक और बात मैं कहना चाहता हूं। जहां से भी आप को हथियार मिलें, वहां से हथियार लो, जहां से भी मिल सकते हैं, जिस मुल्क से भी मिल सकते हैं, उस से लो लेकिन देश की स्वतंत्रता को बेच कर आप ऐसा न करो। इस के सिवाय और जो कुछ भी आप को करना पड़े आप करो, लेकिन हथियार लो, हवाई जहाज लो। इस चीन का विश्वास न करो, हाथ खोल कर हमला करो।

जहां तक तिब्बत का सवाल है, इस को आज़ाद करवाओ। मैं यह नहीं कहता कि इस को आजाद कुट्टवा कर आप दलाई लामा के सुपुर्द कर दो। उस को मत दो। हम उस के नौकर नहीं हैं। लेकिन तिब्बत तिब्बतियों को जाना चाहिये। तिब्बत में जब तक यह भूरे रंग का अद्धीमची सांप रहेगा, यह डंक मारता ही रहेगा। इस में कोई दो रायें नहीं हो सकती हैं। तिब्बत को आजाद करवाओ। हथियार लो, हर मुल्क से लो, जरूरत हो तो ब्याज पर, सूद पर लो, किसी तरीके से भी लो लेकिन लो अवश्य।

अब मैं पैसों के बारे में एक बात कहता हूं। खर्चे के बारे में एक बात कहता हूं। ठीक है पंडित जी कौम के लिए कई कुछ करते हैं। वह भी पैसा देते हैं, रत्ना वाले भी देते ह। लेकिन यह पैसे का सवाल बड़ा टेढ़ा सवाल है। आपने मिनिस्टर कीं पलटनें खड़ी कर रखी हैं, और उन से भी मैं कुछ कहना चाहता हूं। आपने रक्षा जो हमारी करते हैं, उनको भूखा रखा और लोगों से पैसा लिया। लेकिन ये जो इत्र फुलेल लगाने वाले लोग हैं क्या इनके इत्र

फुलेल लगाने में भी कोई कमी वाका हुई है? मैं अर्ज करूंका कि एमरजेंसी हालात हैं तो ये सारे देश के लिए हैं, सारी कौम के लिए हैं और देश और कौम में भी जो रहनुमा लोग हैं, उनके लिए सब से पहले हैं। अगर आज कहा जाता है कि ये एमरजेंसी है तो मैं यह इस सदन में डंके की चोट पर कहता हूं कि सात सौ रुपया एक मैम्बर को मिलता है, और साथ ही साथ य जो मिनिस्टर्ज की पलटन है, इसको भी हजार हजार से ज्यादा मिलता है, इन सब के खर्चों में कमी हो, सारे प्रदेशों में चालीस चालीस पचास पचास की जो अली बाबाओं की पलटनें खड़ी हैं, इनको कम किया जाए और ऐसा करके आप बतायें कि देश में एमरजेंसी है।

पंडित जी से मैं एक और बात कहूंगा। यह बात दिल से ताल्लुक रखने वाली ह। उनके लिए मेरे दिल में आदर है और मैं जानता हूं वह त्यागी हैं। जब देश को जरूरत पड़ती है तो बड़ से बड़ा त्याग कर सकते हैं, बड़ी से बड़ी चीज की कुर्बानी कर देते हैं। एक बार जरूरत पड़ी तो अब्दुल्ला की कुर्बानी कर देते हैं, उसके बाद फिर जरूरत पड़ी तो कृष्ण मेनन की कुर्बानी कर दी और अब जरूरत पड़ेगी तो किस की कुर्बानी करेंगे। मैं मानता हूं कि पंडित जी त्यागी हैं, स्वार्थी नहीं हैं। लेकिन मैं एक बात कहता हूं। आपको यह सारा बोझा अपने कंधों पर नहीं डालना चाहिये। आपको चाहिये कि डिफेंस मिनिस्टर बनायें, वजीरों की पलटन को कम करें और उसको डिफेंस मिनिस्टर बनायें जिसका कि मार्शल तजुर्बा हो, उससे जिसका ताल्लुक रहा हो। उसको न बनायें जो आपका बस्ता उठा कर सलामी करने वाला हो। यह जो राजदूत नियुक्त करन का तरीका है इसको भी आप बदलें। कोई राजदूत की जगह खाली हुई तो कह दिया भेज दो श्रीमती नेहरू को। डिफेंस काउंसिल में जरूरत हुई तो कह दिया ले लो इंदिरा गांधी को (अन्तर्बाधो) इस तरह से काम नहीं चल सकता है। काम फौज से और हथियारों से ही चल सकता है। इस तरफ ध्यान आप दें।

श्री आ० प्र० शर्मा (बक्सर) : सभापति महोदय, अभी श्री बागड़ी जी ने अपने भाषण के अन्त में जो व्यक्ति विशेष के बारे में जो नाम लेकर कहा मैं समझता हूं वह बिल्कुल भी शोभनीय नहीं था चूंकि अपने रूलिंग में आपन अभी कहा कि बहुत से वक्ताओं ने अपने भाषणों में इस तरह से लोगों के नाम लिए हैं, इस वास्त इसके सम्बन्ध में मुझे और कुछ नहीं कहना है।

पिछले दो तीन दिन से इस मसले पर जो यहां बहस चल रही है उसके सम्बन्ध में मैं कहना चाहता हूं कि सदन की जो बैठकें १९ तारीख से प्रारम्भ होनी थीं, उसको तब प्रारम्भ न करके ८ नवम्बर से आरम्भ करने की सूचना जब हम लोगों को मिली तो मैंने सोचा कि इस सदन के सभी माननीय सदस्य चीन ने जो हम पर आक्रमण किया है, उसके सम्बन्ध में एक राय से विचार करेंगे। लेकिन यहां आने पर और भाषणों को सुनने के बाद और खास तौर से जो पहले दिन प्रोफसर रंगा साहब का भाषण हुआ या एंथनी साहब का भाषण हुआ और उन्होंने जो कुछ भी पंडित जी द्वारा इस सदन में पेश किए गये प्रस्ताव के सम्बन्ध में कहा उससे यह बात साफ जाहिर होती है कि आज भी जब कि मुल्क के ऊपर इतनी बड़ी आफत आई हुई है, चीन ने हमारे देश पर इतना बड़ा आक्रमण किया हुआ है, हम इस मनोवृत्ति का परिचय देते प्रतीत होते हैं कि जैसे एक दूसरे को दोष देने के लिए यहां बैठ हुए हों, या एक दूसरे को दोष देने के लिए इकट्ठे हुए हों। जिस बात की आज जरूरत है, उसको हम महसूस नहीं कर रहे हैं।

जो आलोचनायें की गई हैं, उसके बारे में मैं कुछ अधिक कहना नहीं चाहता हूं। मैं कांग्रेस पार्टी का सदस्य हूं और उसका सदस्य होते हुए भी मैं कांग्रेस सरकार की बहुत सी बातों की आलोचना करता हुं। जब हम यह कहते हैं कि चीन ने जो आक्रमण किया है उसको ले कर

[श्री आ० प्र० शर्मा]

लोगों में काफी जोश है, उससे देश की एकता मजबूत हो गयी है उस समय हमें यह भी सोचना चाहिये कि जिस तरह के भाषण इस सदन में हुए हैं और हो रहे हैं, उन से क्या उस एकता में मदद मिलेगी । मैं तो समझता हूं कि उसमें मदद नहीं मिलेगी । जहां तक चीनी आक्रमण का सम्बन्ध है मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे देश का कुछ हिस्सा लेने के लिए, कुछ हजार वर्ग मील पहाड़ी इलाके के ऊपर कब्जा करन के लिए नहीं हुआ है । जैसा कि पंडित जी ने कांग्रेस पार्टी में कहा कि चीन हिन्दुस्तान पर हुकूमत करे या हिन्दुस्तान के लोग चीन में जा कर हुकूमत करें, इसका कोई मतलब आज नहीं है । बल्कि मैं तो कहता हूं कि पिछले दिनों में जब से चीन का आक्रमण हुआ है, मैंने मजदूरों के बीच में और किसानों के बीच में जो जोश देखा है कि वे उस से जाहिर है कि अन्याय को कभी भी किसी बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे । देश में जिन लोगों ने अंग्रेजों की गुलामी के दिन देखे हैं और साथ ही साथ आज आजादी के दिन देखे हैं, वे सब दावे के साथ कह सकत हैं कि इस देश के ऊपर कोई विदेशी आगे, कभी भी किसी भी समय हुकूमत नहीं कर सकता है । अगर कोई ऐसा करने की धृष्टता करता है तो जैसा अन्य माननीय सदस्यों ने कहा, हमारे देश का एक एक बच्चा, एक एक बढ़ा, एक एक जवान इस बात के लिए तैयार है कि वह अपने देश की आजादी के रक्षा के लिए जो कुछ भी कर सकता है, करेगा और अपनी जान पर भी खेलने के लिए तैयार ह, और जब तक उसके दम में दम है और जब तक एक भी सपूत इस भूमि पर जीवित रहेगा, वह उसका मुकाबला करता रहेगा और उसके ज़िन्दा रहते कोई भी विदेशी हमारे देश पर कदम नहीं रख सकता है ।

लेकिन इसके साथ ही साथ चीनी आक्रमण को हमें अच्छी तरह से समझना होगा । खास तौर से यह कहा गया है कि हमें कम्युनिस्ट के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना चाहिये क्योंकि उन्होंन सरकार का समर्थन के लिए प्रस्ताव पास कर दिया है । बड़ी भारी दरिया दिली दिखाई है उन्होंने प्रस्ताव पास कर के और यह कह कर कि वे भी भारत के नागरिक हैं और चीन के खिलाफ लड़ेंगे । लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि कम्युनिस्ट पार्टी ने प्रस्ताव पास क्यों किया ? जो इमर्जेन्सी डिक्लेअर की गई है, क्या उसके मुताल्लिक कम्यूनिस्ट पार्टी ने यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से किया है मैं मजदूरों के बीच काम करता हूं और यह जानता हूं कि पिछले बीस वर्षों से कम्यनिस्ट पार्टी के देश में काम करने का क्या तरीका रहा है । वे कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं । अभी श्रीमती चक्रवर्ती ने कहा कि उन की पार्टी ने प्रोटस्ट किया है । यह बिल्कुल ठीक है कि पार्टी प्रोटस्ट करती जायेगी और पार्टी के लोग अपना काम पूरी तरह करते जायेंगे । हम ने चीन का विश्वास किया था, लेकिन जिस तरह से हम आज कहत हैं कि चीन ने विश्वासघात किया है, उसी तरह से, मैं कहना चाहता हूं, कम्यूनिस्ट पार्टी के अन्दर एसे लोग हे, पूरी की पूरी कम्यूनिस्ट पार्टी ऐसी हो या न हो, लेकिन कम्यूनिस्ट पार्टी के अन्दर ऐसे लोग हैं, जिन पर सुरक्षा के मामल में विश्वास नहीं किया जा सकता, जहां तक मातृभूमि की रक्षा का सवाल है ।

अभी इस सदन के शुरू होने के पहले इंडियन लेबर कांफ्रेंस हुई, और वहां सभी पार्टियों के लोगों ने एक राय से प्रस्ताव पास किया कि जब तक देश में इमर्जेन्सी रहेगी, मजदूर कोई नई मांग पेश नहीं करेंगे, किसी प्रकार की कामबन्दी का सवाल नहीं होगा । हर तरह की कुर्बानी कर के भी कोई रेस्ट नहीं लेकर और कोई भी सहूलियत न मांग कर के, वे हर तरह ी कुर्बानी करेंग और देश के ऊपर जो संकट आया हुआ है जब तक वह उसे बाहर नहीं निकलगा तब तक हर मजदूर तकलीफ और कुर्बानी बर्दाश्त करेगा । वह तब तक आराम को हराम समझेगा चब जब तक कि एक एक चीनी को हमारी मातृभूमि की सीमा से निकाल कर बाहर नहीं फेंक दिया जायेगा ।

श्रीमती रेणु चक्रवर्ती ने श्री ढेबर का हवाला देते हुए जिन्होंने खास कर आई० एन० टी० य० सी० के सम्बन्ध में बतलाया कि राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस ने प्रस्ताव पास कर के कहा कि ए० आई० टी०यू०सी० ने केवल लेबर कांफ्रेंस के प्रस्ताव को नहीं माना, एक ठोस कदम उठाया है और यह तय किया है कि सारे देश में जो इंडस्ट्रियल वर्कर हैं, चाहे सरकारी उद्योगों में काम करतेहों, चाहे प्राइवट सेक्टर में काम करते हों हर एक कर्मचारी अपनी तन्ख्वाह से ११ रु० महावार देगा । १ रु० डिफेन्स फंड में देगा और १० रु० के डिफेंस बांड्स खरीदेगा, और इस तरह से साढ़े सात करोड़ रु० माहवार डिफेंस के लिये बॉड्स तथा ७५ लाख रुपया डिफेंस कोष को कंट्रिब्यूट करेगा । मजदूरों की तरफ से कम्यूनिस्ट पार्टी ने ऐसा क्या कोई प्रस्ताव पास किया है ? कम्यूनिस्ट पार्टी की तरफ से लोग कहते हैं कि हम देश की रक्षा के काम में हाथ बटायेंगे, उन्होंने इस काम में हाथ बटाने का कौन सा ठोस कदम बढ़ाया है । हमारे मित्र श्री अन्सार हरवानी ने कहा कि हमें इस प्रोपेगैन्डे से फायदा उठाना चाहिये । मैं आप से कहना चाहता हूं कि सिर्फ प्रोपेगैन्ड से लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती । लड़ाई के अन्दर तीन चीज़ों की जरूरत होती है । पैसे की जरूरत होती है, आदमियों की जरूरत होती है और सब से बड़ी जो जरूरत होती है वह है अपने मुल्क के प्रति वफादारी की । कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रति आज हमारे अन्दर शक है । जैसा बतलाया गया, आज भी देखा जा सकता है कि राष्ट्र के लोग जो कुछ करते हैं, कम्यूनिस्ट पार्टी के लोग आज भी उस का विरोध करते हैं । इसलिये जो चीन ने हमारे ऊपर आक्रमण किया है, इस तरह की बातों से उसको प्रोत्साहन मिलता है ।

आज यहां कुछ माननीय सदस्यों ने बतलाया है कि इस समय दुनियां दो भागों में बंटी है, एक डिमाक्रैटिक वर्ल्ड और दूसरा कम्यूनिस्ट वर्ल्ड, जिस की नीति बराबर एक्स्पन्शनिस्ट रही है । आज रूस क्यों चुप है ? रूस हमारा दोस्त है, चीन का भी दोस्त है । फर्क इतना है कि वह हमारा तो दोस्त है लेकिन चीन का भाई है । जब भी दोस्त और भाई में लड़ाई होती है तो हमदर्दी किस तरफ होती है इस को आप समझ सकते हैं । हम रूस को नाराज न करने के लिये नहीं कह सकते हैं क्योंकि रूस न्यूट्रल है । अगर रूस हमारे देश के प्रति हमदर्दी नहीं रखता तो हमारे खिलाफ बोलता भी नहीं है । लेकिन जब रूस हमारा भी दोस्त है और चीन का भाई है, और हमारे और चीन के बीच लड़ाई है, जब एक दोस्त दूसरे मित्र देश पर आक्रमण करता है तो उस आक्रमणकारी के खिलाफ रूस क्यों नहीं बोलता है ? इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि यह एक बहुत बड़ी राजनीति है कम्यूनिस्ट वर्ल्ड की जो हमारे सामने आ रही है । जैसा मैंने बतलाया चीन कोई हमारे हजार या दो हजार वर्ग मील पर कब्जा नहीं करना चाहता है या वह हमारे पहाड़ी इलाके पर कब्जा नहीं करना चाहता है, यहां पर सवाल जमीन पर कब्जा करने का है भी नहीं । सवाल तो लोगों के दिमाग पर कब्जा करने का है, हमारी संस्कृति पर कब्जा करने का है क्योंकि जहां कभी भी अगर कहीं कम्यूनिस्ट हुकूमत होती है वहां यह अपनी विस्तार वादी नीति स्थापित करने की ही बातें करती है । इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि अगर आज ए० आ० ई० टी० यू० सी० और कम्युनिस्ट पार्टी सचमुच अपनी ईमानदारी का परिचय देना चाहती है तो इस को स्वीकार करना चाहिये उन को कि इंडियन लेबर कान्फ्रस ने जो प्रस्ताव पास किया है वह सब पर लागू होगा । लागू तो जबर्दस्ती होगा क्योंकि आर्डिनेन्स पास हो गया है, लेकिन स्वत: ए० आई० टी० यू० सी० इस प्रस्ताव को पास करे, अपने संगठन के बीच में, और अपने मेंम्बरों से कहे कि उसको मानने के लिये तब उसके ईमानदारी का सबूत कुछ हद तक मिल सकता है । जरूरत इस बात की है कि वह मजदूरों में देश के लिये बलिदान करने की भावना मजबूत बनावे और लोगों को तैयार करे । तभी उनका प्रस्ताव माना जा सकता है । लेकिन इस में मुझे शक है । सदन के सामने पंडित जी को खुश करने के लिये वे पंडित जी की तारीफ

[श्री आ० प्र० शर्मा]

करते हैं, लेकिन यह कम्युनिस्ट पार्टी की सामान्यज टैक्टिक्स हैं कि कुछ लोगों की तारीफ करते हैं और कुछ लोगों की शिकायत करते हैं और वे ऐसा करते हैं हमारे बीच में, कांग्रेस पार्टी के बीच में मतभेद पैदा करने के लिये। एक मेम्बर की तारीफ और दूसरे की शिकायत, यह कम्युनिस्ट पार्टी की पुरानी नीति रही है। इस लिय पंडित जी की तारीफ करने से या किसी मिनिस्टर की तारीफ करने से या कांग्रेस पार्टी की तारीफ करने से कोई सवाल हल नहीं होगा। यह तभी हल होगा जब चीनियों को भगाने के लिये, चीन को परास्त करने के लिये, हम देश के अन्दर प्रतिज्ञा लेंगे। इस जिन्दगी से भी कोई फायदा नहीं है। इस तरह की जिन्दगी से क्या फायदा हो सकता है ? इस से तो मर जाना अच्छा है कि दूसरा देश हमारे देश के ऊपर अपना नापाक कदम रखे।

इस सम्बन्ध में मैं सिर्फ एक दो बातें कहना चाहता हूं, और वह यह कि जहां तक मजदूरों का सवाल है, उन के लिये इस सदन में बतलाया गया कि उन को क्या करना है, लेकिन जहां तक कम्युनिस्टी पार्टी का सवाल है, जैसा हमारे और मित्रों ने बतलाया, उन के लिये यह बहुत बड़ा मौका है अपना विश्वास लोगों में पैदा करने का। कम्युनिस्ट पार्टी के लिये यह मौका है कि वह अपनी देश भक्ति का सबक अपने लोगों को बतलायें। आज जो लांछन कम्युनिस्ट पार्टी के ऊपर लगा हुआ है, उसको मिटाने के लिये कम्युनिस्ट पार्टी क्यों अपनी पार्टी को डिजाल्व नहीं कर देती ? क्या वह अपनी ऐक्टिविटीज को बन्द नहीं करती या क्यों नहीं उन लोगों को बाहर निकालती है जो कम्युनिस्ट पार्टी में रह कर उसके फैसले का विरोध करते हैं। इस लिये मैं कहना चाहता हूं कि यह ठीक है कि आज हर एक आदमी के सहयोग की जरूरत है और सारे देश की लड़ाई है, किसी खास पार्टी की लड़ाई नहीं है, और मजदूर इस बात को अच्छी तरह समझते हैं क्योंकि प्रजातन्त्र या डिप्लो डिमाक्रेसी और देश की आजादी हमारे मजदूरों और किसानों को जितनी प्रिय है, उतनी शायद इस देश के अन्दर किसी को भी प्रिय है। इस बात को समझते हुये ही हम लोगों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया है। मैं समझता था कि पंडित जी ने जो प्रस्ताव पेश किया है उस पर ज्यादा नुक्ता चीनी नहीं होगी, बजाय इसके उस पर बहस हो, पहले यह तय किया जाय कि जो संसद् सदस्य हैं, जो मेम्बर हैं, उनको क्या क्या काम करना है।

आखीर में मैं एक सुझाव सदन के सामने पेश करना चाहता कि वह यह कि इस पार्लियामेंट का जो माजूदा इजलास है वह जल्दी से जल्दी खत्म किया जाये।

[श्री मूलचन्द दुबे पीठासीन]

यहां जो कमैटी है, बार कैबिनेट है, गवर्नमेंट है, या जो भी बनाया है, उन लोगों को आदेश दे कि जो पार्लियामेंट के सदस्य हैं वे अपने अपने क्षेत्र में जायें और धन इकट्ठा करें और लोगों को लड़ाई के लिये तैयार करें। सारे देश में एक ऐसी फिजा पैदा करें जो कि सन् १९४२ की फिजा से भी अच्छी हो ताकि चीन का एक कदम बढ़ने के बदले इस देश के सैकड़ों कदम आगे बढ़ें और जो जोश यहां पैदा हो उस को देख कर चीनी हमारे देश से भाग जायें।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (विजनौर) : सभापति जी, इन क्रांति के इन क्षणों में बड़े शांति शब्दों में मैं दो तीन आवश्यक सुझाव रखना चाहता हूं।

कुछ भी कहने से पहले इस नृशंस आक्रमण में जो भारतीय सैनिक बलिदान हुये हैं, उनके प्रति श्रद्धांजलि देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं। उसके पश्चात् मैं हार्दिक बधाई देना चाहता हूं इस देश की जनता को और अपने देश के प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू को। प्रधान मंत्री जी को इस लिये कि

उन्होंने जनतन्त्र में जनता की भावनाओं का स्वागत करते हुये एक ऐसे व्यक्ति का त्यागपत्र स्वीकार किया कि यदि वह त्याग पत्र स्वीकार न किया जाता तो देश में अन्दर और भी अधिक उग्र प्रतिक्रिया होने की संभावना थी। और देश की जनता को इस लिये बधाई देना चाहता हूं कि इन ऐतिहासिक क्षणों में बिना किसी प्रकार की विशेष प्रेरणा के देश की जनता ने जो स्वतः एकता और राष्ट्रीय जागरण का परिचय दिया है, ऐसे अवसर इतिहास में विरले ही आये हैं। और इस अद्भुत राष्ट्रीय जागरण के लिये जहां देश की जनता बधाई की पात्र है वहां सरकार को साथ साथ मैं एक चेतावनी भी देना चाहता हूं, कि यह राष्ट्रीय जागरण विपत्तिकाल में जैसे एकीकरण का प्रतीक हो गया है, और जिस से इस देश के नेताओं को साहस दिखाने का एक सुखद अवसर दिया है, यदि कहीं हमारी सरकार ने इस राष्ट्रीय जागरण और त्याग का पूरा लाभ न उठाया और कोई दुर्बलता दिखाई, तो मेरा अपना अनुमान है कि यह राष्ट्रीय जागरण विपरीत दिशा में भी मुड़ सकता है, और यदि यह राष्ट्रीय जागरण कहीं उलटी ओर चला गया तो उसका क्या प्रतिक्रियायें होंगी यह आज भी कहना कठिन है। इस लिये मैं चाहता हूं कि इस राष्ट्रीय जागरण का पूरा लाभ उठाया जाये।

हमारे प्रधान मंत्री ने चीन के साथ हमारी बातचीत होने के सम्बन्ध में बताया कि चाऊ एन लाई की ओर से इस प्रकार का प्रस्ताव आया है कि जहां इस समय हमारी और चीन की सेनायें हैं वहां से दोनों बीस बीस किलोमीटर पीछे हट जायें तो बातचीत प्रारम्भ हो सकती है। हमारे प्रधान मंत्री ने इसका जवाब यह दिया कि जहां चीनी सेनायें ८ सितम्बर को थीं वहां तक पीछे हट जायें तो बात चीत का द्वार खल सकता है। उनके इस निर्णय से देश को कुछ चोट लगी है। यह तो इसी प्रकार की बात हुई कि किसी घर में डाकू घुस आये और बातचीत के लिये वह यह शर्त रखे कि वह दरवाजे तक हट जायेंगे उसके बाद बातचीत की जा सकती है। पहले तो घर में प्रवेश करने वाले डाकू से बातचीत का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता और अगर होता भी है तो यह शर्त रखना समझ में नहीं आता कि वह दरवाजे तक सट जाये तब उसके साथ बात चीत की जायेगी। उससे अगर बातचीत की जानी जरूरी है तो उसी स्थिति में कि उसको घर से बाहर कर दिया जाये। इस लिये मेरा निवेदन है कि राष्ट्रीय जागरण के इन क्षणों में प्रधान मंत्री जी को स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा करनी चाहिये कि जब तक देश की एक इंच धरती पर कोई भी चीनी सैनिक विद्यमान है तब तक किसी प्रकार की भी बातचीत नहीं की जा सकती।

मैं पंजाब सरकार को आज विशेष रूप से बधाई दना चाहता हूं क्योंकि राष्ट्रीय संकट के इन क्षणों में पंजाब की सरकार ने बहुत सराहनीय निर्णय लिया है। पंजाब सरकार ने घोषणा की है कि अवकाश-प्राप्त मेजरों और जनरलों उनके घरों से वापस बुलाया जाये और उनको कहा जाये कि वे पंजाब के गांवों और शहरों में फैल जायें और नौ जवानों को सैनिक शिक्षा दें और यह ट्रेनिंग पाकर जो नौजवान युद्ध में जायेंगे उनके लिये पंजाब सरकार ने निर्णय किया है कि जिन जिन वर्षों में वे नौजवान पढ़ रहे होंगे उनकी उन परीक्षाओं से मक्त कर दिया जायेगा और जब वे मोर्चे से विजय प्राप्त करके लौटेंगें तो उनको पंजाब सरकार की नौकरियों में प्राथमिकता दी जायेगी। मैं समझता हूं कि पंजाब सरकार ने यह एक स्तुत्य निर्णय लिया है और इसका अनुकरण अन्य राज्य सरकारों को भी करना चाहिये क्योंकि पंजाब सरकार का यह निर्णय सही अर्थों में आदर्श है।

एक और बात की ओर मैं इन संकट क्षणों में सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। अब वह समय आ गया है कि जब हमको पार्टी की दृष्टि से विचार न करके देश की दृष्टि से विचार करना चाहिय। मुझे परसों यह देख कर दुःख हुआ जब संसद भवन पर दो प्रदर्शन हुये। एक प्रदर्शन था जिसमें स्वतन्त्र पार्टी जनसंघ आदि विरोधी दलों के लोग थे। दूसर प्रदर्शन का नतृत्व दिल्ली की

[श्री प्रकाशवीर शास्त्री]

कांग्रेस कर रही थी। विरोधी दल तो प्रधान मंत्री जी को यह आश्वासन देने के लिये अपना प्रदर्शन करने आया था कि इस संकट की घड़ी में हम आपके साथ हैं यह बात तो समझ में आ सकती है। लेकिन यह बात समझ में नहीं आती कि दिल्ली कांग्रेस ने उस के मुकाबिले में विरोधी प्रदर्शन क्यों किया ? क्या वे इस प्रदर्शन द्वारा प्रधान मंत्री को यह आश्वासन देने आये थे कि वे भी इस संकट घड़ी में उनके साथ हैं ? जब कि विश्व के प्रायः सब ही देशों के राजदूत पार्लियामेंट को देखने और हमारे ऐतिहासिक निर्णय को सुनने आये थे। उस अवसर पर पार्लियामेंट के उत्तरी और दक्षिणी द्वारों पर दो प्रदर्शनों का होना मैं समझता हूं कि कोई शुभ नहीं कह सकेगा। अगर आज हम उन दोगले मस्तिष्कों को अपराधी मानते हैं जो पीकिंग और मास्को के स्वप्न देखते हैं, तो इसी प्रकार जो मस्तिष्क इन संकट-क्षणों में भी चुनाव और वोट की बात सोचकर यह पग उठाते हैं उनको भी अपराधी मानना चाहिये। इस प्रकार की बातों को इस समय उठा कर बिल्कुल ताक में रख देना चाहिये क्योंकि इसका हमारे राष्ट्रीय जागरण पर भी बुरा प्रभाव होगा।

एक बात मैं विशष रूप से अपने साम्यवादी साथियों के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं। मुझे पता है कि साम्यवादी दल में एक ग्रुप ऐसा है जो स्पष्ट रूप में आज चीन की नीति का समर्थन करता है और ऐसा करने में वह अपनी पूरी शक्ति लगा रहे हैं। महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री ने इस प्रकार के कुछ व्यक्तियों पर हाथ भी डाला है और महाराष्ट्र में कुछ गिरफ्तारियां हुई हैं। दिल्ली में भी एक में दो गिरफ्तारियां हुई हैं। लेकिन मैं सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि अगर उसको इस प्रकार के लोगों से देश की स्थिति के लिए खतरा महसूस हो रहा है, तो इक्के दुक्के पर हमला करना उचित नहीं है क्योंकि ऐसा करने से अगर एक गिरफ्तार होगा तो दस अंडर-ग्राउंड हो जायेंगे। अगर आप को हाथ डालना है तो इस प्रकार के सब व्यक्तियों पर एक साथ हाथ डालिये ताकि वे और देश के लिए खतरा पैदा न कर सकें। एक दो पर हाथ डाल कर तो आप शेष को सावधान कर देंगे। यह बुद्धिमत्ता की नीति नहीं होगी।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि कल हमारे प्रधान मंत्री जी ने राज्य सभा में यह घोषणा कीथकि जिस दिन यह युद्ध समाप्त हो जायगा और जिस दिन भारत की सेनाएं विजय श्री प्राप्त करके वापस आ जायेंगी उस दिन इस बात की जांच करायी जायगी कि किस की वजह से देश को इतना नुकसान हुआ ? और किसकी गलती से देश की धरती पर चीनी आक्रान्ता हमला करके कब्जा करने में सफल हो गये। लेकिन मैं चाहता हूं कि प्रधान मंत्री की इस घोषणा में इतनी वृद्धि और की जाय कि यह जांच ऐसे निश्पक्ष व्यक्तियों द्वारा करायी जायगी जो ऊपर से लेकर नीचे तक के हर व्यक्ति के सम्बन्ध में स्पष्ट सम्मति दे सकें। अगर उस जांच समिति में ऐसे व्यक्ति रखे गये जिनको मुंह देख कर निर्णय लेने की आदत होगी तो मैं समझता हूं कि वह जांच समिति बेकार रहेगी। इस समिति में वे व्यक्ति रखे जायें जो सेना का अनुभव रखते हों और जो आज सेना में नहीं हैं। मुझ यह देख कर दुःख हुआ कि सुरक्षा काउंसिल में हमारे अनुभवी जनरल करिअप्पा का नाम नहीं था। यह हमारे एक विशिष्ट जनरल थ जिन्होंने कई संकट की घड़ियों में देश की सेवा की है। लेकिन उनका नाम सुरक्षा काउंसिल में न रख कर सिटीजन काउंसिल में रखा गया है। मैं समझता हूं कि युद्ध समाप्त होने के बाद जब जांच की जायगी तो करिअप्पा जैसे निश्पक्ष और निर्भीक व्यक्तियों के द्वारा वह जांच करायी जायगी।

हमारे प्रधान मंत्री यह बहुत अच्छा किया कि रक्षा मंत्रालय के दोनों विभागों को अपने हाथों में ले लिया। इस समय श्री कृष्ण मेनन के विरुद्ध देश में एक बहुत बड़ा बवंडर उठ खड़ा हुआ है। इस लिए प्रधान मंत्री का यह निर्णय समयोचित था। इस के लिए जहां मैं प्रधान मंत्री को

जी को धन्यवाद देना चाहता हूं वहां पार्लियामेंट की कांग्रेस पार्टी को भी बधाई देना चाहता हूं। पार्लियामेंट की कांग्रेस पार्टी ने बहुत बड़ा स्तुत्य कार्य किया है। मैं विरोधी दल का सदस्य होते हुए भी कह सकता हूं कि उन्होंने ऐसा करके कांग्रेस की खोई हुई प्रतिष्ठा को बचा लिया है। लेकिन मैं साथ ही साथ यह निवेदन भी करना चाहता हूं कि मेनन को तो आपने हटाया लेकिन अगर देश में कहीं मेनन मनोवृत्ति हो तो उसको भी आपको हटाना होगा। अगर वह भी कहीं देश अथवा शासन में रह जायेगी तो देश को नुकसान पहुंचा सकती है।

दो शब्द मैं हिन्दुस्तान की विदेश नीति के सम्बन्ध में भी कहना चाहता हूं। हम ने कल हिन्दी-चीनी भाई भाई का नारा लगाया था। आज हम को अपनी गलती महसूस हुई। हमारे प्रधान मंत्री ने खुली भाषा में अपनी इस भूल को माना है और कहा है कि हम चीन की इस मनोवृत्ति को नहीं जान पाये थे। लेकिन मैं बड़ी नम्रता से निवदन करता हूं कि जिस प्रकार हम हिन्दी चीनी भाई-भाई की मनोवृत्ति को नहीं समझ पाए थे कहीं ऐसा न हो कि हम आज हिन्दी रूसी भाई भाई की मनोवृत्ति को भी न समझ पायें। ये वही लोग हैं जिन्होंने काश्मीर में हम से कहा था कि हम हिमालय की दूसरी तरफ हैं, जब कोई आपत्ति आवे तो हम को आवाज लगा लेना और हम तुम्हारे कन्धे से कन्धा लगा कर तुम्हारा साथ देंगे। लेकिन आज वे हमारी आवाज सुनने वाले कहां हैं? आज उनके अखबार हम से कह रहे हैं कि चीन से बिना शर्त के समझौता कर लिया जाय। उनकी इस प्रवृत्ति को देखते हुए आज की स्थिति में हम को अपनी विदेश नीति का कायाकल्प करना चाहिए और उसके सम्बन्ध में फिर से निर्णय लेना चाहिए।

यह ठीक है कि हम किसी गुट विशेष में सम्मिलित नहीं होना चाहते और आज युद्ध काल की स्थिति में हम को किसी सैनिक गुट विशेष में सम्मिलित होना भी नहीं चाहिए। ऐसा करना उचित भी नहीं होगा। लेकिन आज मैं धन्यवाद देना चाहता हूं अमरीका, ब्रिटेन और उन देशों को जिन्होंने हमको शस्त्र दिये हैं और साथ ही साथ यह कहा हैं कि इन शस्त्रों के साथ हम कोई शर्त नहीं रखते कि भारत हमारे गुट में सम्मिलित हो जाय। प्रधान मंत्री ने जो अपनी विदेश नीति की घोषणा की है। ठीक है इसके साथ साथ हम शासन से यह भी अपेक्षा रखते हैं कि जहां उसकी नीति किसी सैनिक गुट में न शामिल होने की है वहां उसको अपनी नीति पर इस प्रकार अमल करना चाहिए जिससे किसी को यह सन्देह न हो, जैसा कि पीछे होने लगा था, कि भारत धीरे धीरे कम्युनिस्ट गुट की ओर जा रहा है।

एक विशेष बात मैं पंजाब गवर्नमेंट के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं। पंजाब विधान सभा के विधायकों ने सुझाव दिया है कि पंजाब जैसे १६ जिलों के राज्य में जो ३० या ३१ मंत्री रखे गये हैं उनकी संख्या घटा कर सात कर दी जाय। हम देखते हैं कि उत्तर प्रदेश में लगभग ५० मंत्री हैं। और हमारी केन्द्रीय सरकार में स्वयं ६० से ऊपर मंत्री हैं। जब द्वितीय महायुद्ध हुआ था तो अंग्रेजी शासन काल में यहां केवल १५ मंत्री थे। यह बात मुझे श्री रंगा और श्री अणे से मालूम हुई है। लेकिन आज हमारे यहां ६० से ऊपर मंत्री हैं। एक ओर तो आप कहते हैं कि देश के हर विभाग में कम खर्च किया जाय और दूसरी ओर इतने मंत्री रखे हुए हैं। मैं समझता हूं कि प्रधान मंत्री जी इस पर विचार करेंगे।

मैं अपने वक्तव्य को समाप्त करने से पहले एक-दो और बातों की ओर आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। एक बात तो यह है कि चीन के प्रधान मंत्री श्री चाऊ एन लाई ने मैकमोहन रेखा को भारत और चीन की सीमा रेखा मानने से इंकार किया तो मुद्राराक्षस की नीति का तकाजा था और चाणक्य के मस्तिष्क का तकाजा तो यह था कि हम भी स्पष्ट भाषा में यह कह देते कि

[श्री प्रकाशवीर शास्त्री]

अगर चाऊ एन लाई मैकमोहन रेखा को भारत और चीन के बीच की सीमा रेखा नहीं मानते तो भारत सरकार भी तिब्बत के ऊपर चीन की प्रभुसत्ता को स्वीकार नहीं करती । लोग कहते हैं कि दलाई लामा को हम ने भारत में बुला कर भूल की और उस की वजह से विपत्ति मोल ली है । लेकिन क्या वे लोग इस बात को भूल गये कि हम आज से नहीं बल्कि सदा से दलाई लामाओं को भारत में शरण देते आये हैं और मैं तो यहां तक कहूंगा कि दलाई लामा को हम ने भारत में शरण देकर अपनी उस भूल का प्रायश्चित किया है जोकि हमने चीन की प्रभुसत्ता तिब्बत पर स्वीकार कर ली । कहते भी हैं कि अगर सुबह का भूला हुआ शाम को घर आ जाये तो उसे भूला नहीं कहते । जो भूल हम ने तिब्बत को चीन के हाथों में देकर की थी, दलाई लामा को अपने यहां रख कर हम ने उस भूल का सुधार ही किया है । यह हम ने कोई नया काम नहीं किया है बल्कि पुराने समय से हम शरण देते आये हैं । आज से ९ लाख साल पहले लंका के दलाई लामा जिसका कि नाम विभीषण था उस ने भारत में शरण ली हम ने उस की रक्षा की और लंका को जीत कर लंका का राज्यतिलक विभीषण के मत्थे पर किर दिया । आज भी हमें वही करना उचित है । अभी दीपावली के अवसर पर पंडित जी ने कहा था कि असली दीपावली हम उस दिन मनायेंगे और खुशी मनायेंगे जिस दिन कि भारत की धरती पर से चीनी दरिन्दों को धक्का देकर बाहर निकाल देंगे । लेकिन मेरा तो कहना यह है कि हम खुशी का दिन उस दिन मनायेंगे और असली दीपावली उस दिन मनायेंगे जिस दिन न केवल चीनी आक्रमण-कारियों को हम अपनी पवित्र भूमि से बाहर निकाल फेंकेंगे वरन तिब्बत की धरती से भी इन चीनी दरिन्दों को बाहर खदेड़ देंगे और ल्हासा की गद्दी पर दलाई लामा को बैठा कर विभीषण की तरह उनका राजतिलक करेंगे । आज हम को इस ढंग से सोचना चाहिए ।

एक बात जो मैं विशेष रूप से अपने प्रधान मंत्री जी से कहना चाहता हूं और मुझे आशा है कि यहां जो उस पार्टी के जिम्मेदार मेम्बर्स बैठे हुए हैं वे मेरी बात को प्रधान मंत्री जी के कानों तक अवश्य पहुंचा देंगे । मैं अपने इस महान् देश के महान् प्रधान मंत्री के प्रति आदर और श्रद्धा प्रकट करते हुए बड़ी नम्रता के साथ यह कहना चाहता हूं कि जार्ज बर्नाड शा ने अपने कमरे में एक वाक्य लिख कर लगाया हुआ था जिस का अर्थ यह था कि मुझे मेरे चापलूस दोस्तों से बचाओ, ठीक वही वाक्य मैं पंडित जी के लिए कहना चाहता हूं कि पंडित जी, आप कम से कम इस संकट काल के क्षणों में अपने चापलूस दोस्तों से बचिये । आप ऐसे चापलूस दोस्तों से बचें जोकि देश और विदेशों की सही स्थिति का परिचय आप को नहीं होने देते । कम्युनिस्ट पार्टी यहां प्रधान मंत्री जी की तारीफ करती है और प्रधान मंत्री की आड़ में आकर देश की समस्याओं और देश की परिस्थितियों की इस प्रकार से उपेक्षा करती है और कंडम करती है । मैं समझता हूं कि इस प्रकार की प्रवृत्ति से आज थोड़ा सा हम को रुकना चाहिए ।

दूसरी बात जो मैं अपने प्रधान मंत्री जी की सेवा में कहना चाहूंगा और मुझे आशा है कि श्री दिनेश सिंह जो इस अवसर पर उपस्थित हैं वे मेरी बात उन तक पहुंचा देंगे और वह यह है कि हमारे प्रधान मंत्री जी अपने सीधे और सरल स्वभाव के कारण जब भी किसी विषय पर बोलने के लिए खड़े होते हैं तो अपने लम्बे वक्तव्य में पहले उस की पृष्ठभूमि बतलायेंगे, फिर उस का वर्तमान बतलायेंगे और उस के बाद उसका भविष्य में पड़ने वाला प्रभाव बतलायेंगे । लेकिन मैं कहना चाहूंगा कि एक राजनीतिज्ञ की भाषा ज्यादा लम्बी नहीं होनी चाहिए । राजनीतिज्ञ की भाषा छोटी होनी चाहिए कि जिसका दूसरे लोग डिक्शनरी खोल कर अर्थ देखें कि इस शब्द का क्या अर्थ हो सकता है और इस शब्द के क्या मानी हो सकते हैं । कम से कम विपत्तिकाल के अन्दर हमारे प्रधान मंत्री को इन नियमों का पालन अवश्य करना चाहिए ।

अन्त में मैं दो बातें और कह कर अपने भाषण को समाप्त करूंगा । एक तो यह कि जिस दिन उधर नेफा में हमारे सिपाहियों पर आक्रमण हो रहा था, चीनियों द्वारा हमारे सिपाहियों के ऊपर हमला किया जा रहा था तब उधर सुरक्षा परिषद् में हमारे स्थायी प्रतिनिधि श्री चक्रवर्ती जिन्होंने कि पाकिस्तान के मि० मुहम्मद अली को मुंहतोड़ जवाब दिया था वही हमारे चक्रवर्ती जी वहां सुरक्षा परिषद् में बैठ कर चीन को सुरक्षा परिषद् में प्रतिनिधित्व देने की बात कर रहे थे । चीन के प्रतिनिधित्व देने की बात उन के मुख से सुन कर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे किसी के जले पर कोई नमक छिड़कता है । मैं भारत सरकार से जानना चाहूंगा कि क्या आज का अवसर ऐसा है कि हमारे प्रतिनिधि श्री चक्रवर्ती सुरक्षा परिषद् में चीन के प्रतिनिधित्व के बारे में वकालत करें ? सुरक्षा परिषद् में चीन को प्रतिनिधित्व दिलाने की बात करना तो दूर रहा आज तो परिस्थितियों की पुकार यह है कि भारत को चीन के साथ अपने दौत्य सम्बन्ध भंग कर देने चाहियें । हमें कोई भी संबंध चीन के साथ नहीं रखना चाहिये । एक ओर तो हमारे साथ इस प्रकार की स्थिति चल रही हो और दूसरी ओर हमारे प्रतिनिधि इन का समर्थन करते रहें, मैं समझता हूं कि इस तरह की दुर्बल और कमजोरी से भरी नीति की दुनियां के अन्दर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता ।

एक आखिरी बात जिस को कि मैं एक मिनट में समाप्त कर दूंगा और वह यह है कि जहां हमारा विदेश मंत्रालय और गृह मंत्रालय चीन और पाकिस्तान के सम्बन्ध में पूर्ण सावधानी रक्खें, जहां हमें बाहर से अपने देश को बचाने की कोशिश करनी है वहां हम अपने देश के भीतर ही छिपे हुए गद्दारों के प्रति भी पूरी तरह सावधान रहें । ऋगवेद के अन्दर लिखा है कि शत्रु से तो सावधान रहो ही लेकिन शत्रु से भी अधिक घर में छिपे हुए तथाकथित मित्रों से भी सावधान रहो । स्वर्गीय सरदार पटेल ने अहमदाबाद के गीता मंदिर में जो अपने जीवन का अन्तिम भाषण दिया था उस में यह शब्द थे कि हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता को जब जब भी संकट आया है वह बाहर के शत्रु से उतना नहीं आया है जितना घर के मित्र से आया है । वेद भी उसी को कहता है :—

"अभयम मित्राद् अभयम अमित्राद्"

शत्रु से सावधान रहो लेकिन मित्र से कहीं अधिक सावधान रहो । आज भी हिन्दुस्तान में करोड़ों आदमी इस तरह के हैं जो आप का सवा आठ बजे रात का न्यूज़ बुलेटिन सुन कर अपना दिमाग़ नहीं बनाते, करोड़ों आदमी इसी तरह के हैं जो आप को ९ और सवा नौ बजे रात की खबरें नहीं सुनते बल्कि वह यह जानने के लिये कि लड़ाई किस स्तर पर चल रही है करांची का रात का साढ़े नौ बजे का रेडियो सुनते हैं और उस के आधार पर अपनी राय बनाते हैं । समय आ गया है जब हमारी सरकार को ऐसे तत्वों के प्रति जरा कड़ा रुख अपनाना चाहिये । जिस तरह से दूसरे महायुद्ध में हमारी उस समय की गवर्नमेंट ने जर्मनी के समाचार सुनने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था, मेरा विचार यह है कि देश की सुरक्षा की दृष्टि से यह अत्यन्त आवश्यक है कि जब तक युद्ध चल रहा है भारत में पाकिस्तान का रेडियो सुनने पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये अन्यथा उस के भयंकर दुष्परिणाम हो सकते हैं । एक ओर साढ़े सात लाख पाकिस्तानी असम में बैठे हुए हैं और दूसरी ओर चीन जो त्वांग के रास्ते आना चाहता है उस का कारण यह है कि उस के पास पेट्रोल नहीं है । वह चाहता यह है कि असम के साथ सीधा सम्बन्ध हो जाय तो चीन को आसानी से पेट्रोल मिल सकेगा इस तरह की स्थिति पाकिस्तान और चीन दोनों मिल कर वहां बना रहे हैं इसलिये मैं चाहूंगा कि सुरक्षा की दृष्टि से मैं ने जो कुछ सुझाव दिये हैं उन पर सरकार गम्भीरता से विचार करे । जिन का प्रतिनिधित्व यहां पर मैं करने के लिये आया हूं उन्हों ने अपने यह भाव मुझ से यहां तक पहुंचाने का निर्देश दिया है और मुझे विश्वास है कि जिस पवित्रता और निष्ठा के साथ मैं ने यह शब्द कहे हैं उसी भावना के साथ आप मेरे शब्दों को ग्रहण भी करेंगे । धन्यवाद ।

†श्री महेश दत्त मिश्र (खंडवा) : सब से पहले मैं उस बात का उल्लेख करना चाहता हूं जो श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने पाकिस्तान रेडियो के बारे में कही है । मैं समझता हूं कि श्री शास्त्री यह भूल रहे हैं कि पाकिस्तान के साथ अभी हमारी लड़ाई नहीं छिड़ी है और इसलिये इस देश में पाकिस्तान रेडियो सुनने पर कोई पाबन्दी लगाने का सवाल पैदा नहीं होता । जब तक इस देश में लोकतंत्र है और किसी देश के साथ हमारी लड़ाई नहीं है तब तक हम किसी रेडियो के सुने जाने पर पाबन्दी नहीं लगा सकते । इसीलिये हम ने पेकिंग रेडियो सुनने पर भी कोई पाबन्दी नहीं लगाई है । हम अपनी स्थिति और अपनी बातों की सचाई पर विश्वास करते हैं । इसलिये हमें इस बात की चिन्ता नहीं है कौन से लोग कौन सा रेडियो सुनते हैं ।

संक्षेप में मैं कुछ सुझाव रखना चाहता हूं । मैं चाहता हूं कि सरकार उन पर विचार करे । यह ठीक है कि राष्ट्रीयतावादी और साम्राज्यवादी चीन ने एक शांतिप्रिय, अन्तर्राष्ट्रीयतावादी और एक पड़ोसी मित्र पर आक्रमण किया है । दुनिया को इन के इरादों के बारे में कोई सन्देह नहीं है । यह बिलकुल साफ है कि वह भारत के प्रदेश को हड़प लेना चाहता है । इसलिये भारतीय प्रदेश में चीनियों के अवैध प्रवेश से यह स्पष्ट हो गया है कि चीनी प्रसारवादी हो गये हैं । मैं अपनी नीति के बारे में भी कुछ कहना चाहता हूं । हमारी तटस्थता नीति की निरन्तर, इस सदन में और बाहर भी, आलोचना की जा रही है । विदेशी पत्रों में इस नीति की जो आलोचना की जा रही है और भारत में जो आलोचना हो रही है उस में बहुत कुछ साम्य है । मैं इस तटस्थता-नीति के ब्योरों और उस की पार्श्वभूमि का विवेचन नहीं करना चाहता । मैं केवल यह बताना चाहता हूं कि इस सभा के अधिकांश सदस्यों ने तटस्थता की नीति में विश्वास व्यक्त किया है । हमें उस पर दृढ़ रहना चाहिये ।

यह ठीक है कि तटस्थ राष्ट्रों ने कोई गुट नहीं बनाया है और उन का कोई संगठित बल नहीं है । इसलिये इस संकटकाल में हम तटस्थ राष्ट्रों की प्रतिक्रियाओं और उन के विचारों पर कोई आरोप न लगायें । हमें तटस्थता की नीति पर व्यापक दृष्टिकोण से विचार करना चाहिये । यद्यपि भारत-चीन संघर्ष से उस नीति को कुछ ठेस पहुंची है फिर भी उस पर दृढ़ रहना चाहिये । हो सकता है कि कुछ आकस्मिक परिस्थितियों के कारण हमें उस में थोड़ा बहुत रद्दोबदल करना पड़े लेकिन सिद्धान्त रूप में हमें उस पर इसलिये दृढ़ रहना चाहिये कि तटस्थता अन्तर्राष्ट्रीय प्रजातंत्र का आधार है । यदि हम अन्तर्राष्ट्रीय प्रजातंत्र चाहते हैं और संयुक्त राष्ट्रसंघ की सफलता चाहते हैं तो तटस्थता की नीति अवश्य अपनाई जानी चाहिये । दुर्भाग्यवश कुछ लोग ऐसे हैं जो उस नीति के संबंध में विदेशी पत्रों द्वारा व्यक्त किये गये विचारों का समर्थन करते हैं । वास्तव में देखा जाये तो अमरीका या ब्रिटेन या और किसी देश से यह मांग नहीं है कि हम तटस्थता की नीति छोड़ दें । यह तो केवल इसी देश में शोर मचा हुआ है कि हम यह नीति छोड़ दें । इसीलिये मैं यह कहना चाहता हूं कि हम लोग शान्त रहें ।

आगे मेरा सुझाव यह है कि जवानों को प्रोत्साहित करने के लिये कुछ राजनीतिज्ञों और कुछ संसद् सदस्यों तथा विधानसभा के सदस्यों को सीमान्त क्षेत्रों में जाना चाहिये । उन्हें या तो लड़ाकू सेनाओं में भरती किया जाये या गैर-लड़ाकू संस्थाओं में भरती किया जाये । मैं स्वतः को भी उन की सेवा के लिये प्रस्तुत करता हूं । जवानों को हमारी मदद से देश को यह समझ में आ जायगा कि हम न केवल संसद् में या विदेशी शिष्टमंडलों में उस का प्रतिनिधित्व करते हैं बल्कि हम सीमा पर भी प्रतिनिधित्व करने के लिये तैयार हैं ।

---

†मूल अंग्रेजी में

मेरा दूसरा सुझाव यह है कि हमें उन समस्त शक्तियों पर दृष्टि रखनी चाहिये जो देश में कानून तथा व्यवस्था को भंग करने का प्रयत्न कर रही हैं, चाहे वे दक्षिणपंथी हों अथवा वामपक्षी। मैं यह बताना चाहता हूं कि वे दोनों ही राष्ट्रविरोधी बन रहे हैं। इसलिये यह आवश्यक है कि उन पर कड़ी नजर रखी जाये। हमें देश में शांति और व्यस्था बनाई रखनी है। इसलिये इस सम्बन्ध में उचित कार्यवाही की जानी चाहिये।

आगे, उत्पादन के लिये छोटे पैमाने के उद्योगों को पर्याप्त अवसर एवं प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। मैं सुझाव देना चाहता हूं कि हम फिर से चरखा अपनायें। खाद्यान्न के बाद कपड़े की आवश्यकता होती है और इसलिये आवश्यकता के समय हम चरखा अपना यें।

अन्त में मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि वितरण व्यवस्था को पुनर्गठन किया जाना चाहिये और वितरण के मामले में पूर्ण विकेन्द्रीकरण होना चाहियें। हमें भ्रष्टाचार रोकना चाहिये। चोर बाजारी रोकने के लिये यह आवश्यक है और वह तभी हो सकता है जबकि इस देश में वितरण व्यवस्था का पूरा पूरा विकेन्द्रीकरण हो।

श्री विभूति मिश्र (मोतिहारी) : उपाध्यक्ष महोदय, इस से पहले कि मैं कुछ कहूं मैं उन जवानों के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं जो इस लड़ाई में मारे गये हैं और साथ ही साथ उन जवानों को बधाई देता हूं जो बड़ी बहादुरी से लड़ रहे हैं।

मैं देखता हूं कि इस सदन में हमारे प्रधान मंत्री की काफ़ी समालोचना की जा रही है। यह कहा जारहा है कि हम किसी ब्लाक में नहीं रहे, किसी गुट में नहीं रहे, हमने हिंसा का प्रचार नहीं किया और हमने यह नहीं किया वह नहीं किया। इस तरह के चार्जिज़ हमारे प्रधान मंत्री के खिलाफ आज लगाये जा रहे हैं। हमारे प्रधान मंत्री अगर चाहते थे कि दुनिया में शान्ति रहे, किसी को धोखा न दिया जाय तो क्या वह गलत कहते थे ? लेकिन इसी आधार पर कहा जाता है कि इन्हों ने ठीक काम नहीं किया। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या वे भाई यह चाहते हैं कि ऐसे आदमी को प्रधान मंत्री बना दिया जाय जोकि दुनिया को धोखा दे और लड़ाई करवाये, हिंसा करवाये ? मैं समझता हूं कि गांधीजी के अनुयायी होने के नाते हम ऐसा नहीं कर सकते हैं, हमारा प्रधान मंत्री ऐसा नहीं कर सकता है। हम लोग इस सदन में बैठे हुए हैं। कौन जानता है कि किस के दिल में क्या पाप है। कोई अगर पीछे से आकर किसी की पीठ में छुरा घोंप दे, तो क्या किया जा सकता है। यही बात आज चीन ने की है। चीन के हमारे साथ अच्छे ताल्लुकात रहे, उस के साथ हमारी अच्छी दोस्ती थी, उस ने हमारे साथ पहले अच्छा व्यवहार किया और उस व्यवहार और उस दोस्ती की वजह से हम समझते थे कि वह हमारी पीठ में छुरा नहीं घोंपेगा। लेकिन उस ने छरा घोंप दिया। अब उस का हम रफ्ते रफ्ते इलाज करेंगे उस का हम रफ्ते रफ्ते उपाय करेंगे।

हमारे प्रधान मंत्री जब यह बात कहते थे कि दुनिया में शान्ति रहनी चाहिये, किसी को धोखा नहीं दिया जाना चाहिये, तो कोई आदमी उसका विरोध नहीं करता था। लेकिन ज़रा सा चीन ने हमारे ऊपर आक्रमण कर दिया, कुछ हमारी भूमि पर कब्ज़ा कर लिया तो सभी आदमी रूटने लग गए और इलज़ाम लगाने लग गए कि उनकी नीति गलत रही है। दुनिया अजब है। जब आदमी की चलती है तो सब उसको पूजते हैं। लेकिन जब थोड़ी सी भलमंसाहत की वजह से ईमानदारी की वजह से, सत्य और अहिंसा की नीति की वजह से, कोई उल्टी बात हो गई तो सभी हमारा विरोध करने लग गए और नाना प्रकार की बातें कहने लग गए। अभी बागड़ी जी ने कुछ अपशब्द कहे हैं। मैं समझता हूं कि कोई भी सज्जन, कोई भी भला आदमी ऐसा नहीं कह सकता है और न ही किसी को ऐसा कहना शोभा देता है।

[श्री विभूति मिश्र]

अपने कम्युनिस्टों भाइयों से मैं कहना चाहता हूं । आपकी परीक्षा का समय आ गया है । आपको सीता और हनुमान की तरह से अपनी परीक्षा देनी होगी । जिस तरह से राम को शक होने पर सीता को अग्नि पर खड़ा कर दिया गया उसी तरह से आपको भी परीक्षा देनी होगी । जिस तरह से हनुमान ने पेट फाड़ कर दिखा दिया था कि देखो इसके अन्दर राम लिखा हुआ है, उसी तरह से आपको भी परीक्षा देनी होगी । आपको साबित करना होगा कि आप देश के साथ हैं । लेकिन मैं एक बात कहता हूं । आपके जो कार्यकर्ता देहातों में काम करते हैं, वे देश के प्रति उचित व्यवहार नहीं कटते हैं । मुझे अपने जिला चम्पारन का अनुभव है, और वही बात मैं आपको कहता हूं । आप सफाई देते हैं, सही बात है, आपकी बात को मैं सच मानता हूं । लेकिन आपको अग्नि परीक्षा देनी होगी ।

मैं प्रधान मंत्री जी से कहूंगा कि यह ठीक है कि आपने दुनिया के ग्रन्थ पढ़े हैं, दुनिया के सभी शास्त्र पढ़े हैं लेकिन हिन्दुस्तादन का तो महाभारत है, पंचतंत्र है, शुक्र नीति है, चाणक्य नीति है, मुद्रा राक्षस नाटक है तथा इस तरह के जो दूसरे ग्रन्थ हैं, इनको आपने नहीं पढ़ा है तो इनको पढ़िये । इनके समान श्रेष्ठ ग्रन्थ दुनिया में उपलब्ध नहीं हैं । अगर आपने इनको अभी तक नहीं पढ़ा है तो इनको पढ़िये । इनको पढ़ कर ही आप दुनिया में चल सकेंगे, नहीं तो नहीं चल सकेंगे । जितने आपके एम्बसेडर हैं, जितने मिनिस्टर हैं, और जितने मैम्बर पार्लियामेंट हैं, उन सब को इन ग्रन्थों को पढ़ना चाहिये ।

हमारे प्रधान मंत्री जी ने सारी दुनिया के देशों को भी खत लिखे, मित्र देशों को भी खत लिखे । जिन देशों पर इनको भरोसा था उन देशों ने हमारी मदद नहीं की । सिवाय अमरीका, इंग्लैंड आदि कुछ देशों के किसी ने भी हमारी मदद नहीं की । मैं मैकमिलन साहब की और कैनेडी साहब की व्यक्तिगत रूप से प्रशंसा करूंगा कि उन्होंने इस आड़े वक्त में हमको शस्त्रों आदि से मदद की है । इन की मैं भूमि भूरि प्रशंसा करता हूं कि इन्होंने हमें हथियार आदि भेजे हैं । इजिप्ट के मामले के बारे में उनको बड़ी शिकायत थी । लेकिन फिर भी उन्होंने हमारी बड़ी मदद की है । हमें आज स्वाधीनता की रक्षा करनी है और हम स्वाधीन रहेंगे, चीन को हम मार भगायेंगे, यह हमें पक्का विश्वास है । हमारे यहां सोशलिज्म हो, कैपिटलिज्म हो, कम्युनिज्म हो, सर्वादयिज्म हो, कोई भी इज्म हो, मगर चीन से हमें आप पिटवाइये नहीं । आप इन ग्रन्थों को अवश्य पढ़िये । के हिन्दुस्तान को भी देखा है । हो सकता है कि मुझ पंडित जो जैसा ज्ञान न हो । लकिन मैं बतलाना चाहता हूं कि आपक मित्र दोस्त रूस ने कोई मदद अभी तक हमें नहीं भेजी है । आप कहते हैं कि दिसम्बर में विग विमान आयेंग । हमाश यहां कहा जाता है कि जब तक पुण्य धाव तब तक पाप गोता मारे । जब तक आपके मिग विमान आयेंगे तब तक चीन हमें हड़प न जाए, यही डर है । क्या यही मित्रता है ? कैनडी साहब ने शस्त्रास्त्र भेजे, मैकमिलन साहब ने भेजे और जिस तत्परता के साथ भेजे, उसी तरह से रूस भी कह सकता था कि हम भी तुम्हें तुरन्त भेजते हैं और साथ ही साथ और सामान भी भेजते हैं । नासिर साहब ने नहीं भेजे, टीटो साहब ने नहीं भेजे जिस पर आपको बड़ा भरोसा था । नान-एलाइंड कंट्रीज का मतलब क्या है ? मुझे विश्वास नहीं होता है कि वे भेजें । भेजेंगे तो सही बात है । लकिन मैं आपको बतलाना चाहता हूं कि दुनिया में उसी आदमी की पूछ होती है, उसी आदमी की चलती है, जिस के हाथ में पिस्तौल हो जो ताकत-वर हो । गांव में भी जो ज़ोरदार होता है, उस की ही पंचायती चलती है । कमज़ोर की कोई नहीं पूछता है । यह जो नान-एलाइनमेंट की पालिसी है, यह उसी वक्त तक ठीक है जब तक हम मजबूत हों । हम गांधीवाद को मानने वाले हैं, समाजवाद को मानने वाले हैं लेकिन हमारे साथ जो दगा करता है, धोखा करता है, उसके उस धोखे और दगे का जवाब तो हम दें ।

कम्युनिस्ट भांइयों के बारे में मैं पहले ही कह चुका हूं। आपके बारे में बड़ा शक है। शक ही नहीं, लोगों के आपके बारे में बहुत बुरे विचार हैं। इस वास्ते उन विचारों को निर्मूल सिद्ध करने के लिए आपको अग्नि परीक्षा देनी ही होगी।

उपाध्यक्ष महोदय, मेरा घर बोर्डर पर है। उसके साथ नेपाल का बोर्डर लगता है। आजकल नेपाल शान्त है। उसकी शिक्षा दीक्षा और हमारी शिक्षा दीक्षा, उसका धर्म कर्म और हमारा धर्म कर्म, सब एक हैं। लेकिन फिर भी मैं कहता हूं कि हमारी गवर्नमेंट को बोर्डर पर रहने वाले लोगों को राइफल की ट्रेनिंग देनी चाहिये और सिविल डिफेंस के लिए लोगों को तैयार करना चाहिये।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जो किसान ज्यादा अन्न पैदा करता है, उसको सरकार की तरफ से सभी प्रकार की मदद मिलनी चाहिये, सभी प्रकार की सहायता मिलनी चाहिये। जो किसान लड़ाई के लिए जाता है, उसको हर तरह की मदद दीजिये, उसके बच्चों को दीजिये। हमारे भाई मौलाना साहब कह रहे थे कि चार चार पैसे क्यों मांगते फिरते हो। चार चार पैसे का भी कोई चन्दा है? क्या इस तरह से लड़ाई लड़ी जा सकती है? मैं कहना चाहता हूं कि अगर उन से इस तरह से चन्दा लिया जाएगा तो वे कहेंगे कि हम ने मुल्क के लिए चन्दा दिया है और कल को वे मरने के लिए भी तैयार हो जायेंगे। वे कहेंगे कि उन्होंने मुल्क और कौम के लिए चन्दा दिया है। लेकिन हमारे मौलाना साहब की समझ में यह बात नहीं आती है। उन्होंने स्वराज्य की लड़ाई नहीं लड़ी है और अगर लड़ी होती तो उनको पता होता कि जिन लोगों ने चार पैसा भी अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए दिया वे उस पैसे की रसीद को सम्भाले रखे हुए हैं और दिखाते हैं कि हम ने यह चन्दा कांग्रेस को दिया जो उस समय अंग्रेजों के खिलाफ लड़ रही थी। यह जो धन लिया जाता है यह टोकन के तौर पर लिया जाता है, ये टोकन इमदाद है, यह चीज उस भावना की परिचायक है, जो भावना लोगों की देश के प्रति है। आज उन्होंने अपनी भावना को इस प्रकार प्रकट किया है, कल वे देश के लिए मर मिटने के लिए भी तैयार हो जायेंगे।

हमारी सरकार को थोड़ा सा एलाइनमेंट के बारे में भी सोचना चाहिये। पंडित जी को भी सोचना चाहिये। मैं यह नहीं कहता हूं कि एकतरफा किसी के पक्ष में हम चले जायें। लेकिन मुझे डर है कि नान-एलाइंड रहते रहते कहीं हम एलाइड हो जायें। नान-एलाइड हम रहें, रूस हमारी मदद न करे, कोई और उस तरह का देश मदद न करे तो बेशक न करे। अमरीका मदद करता है, हम अमरीका की तारीफ करते हैं। ग्रैलब्रथ ने कहा ह कि हम इंडिया को नान अलाइन्ड मानते हुए मदद कर रहे हैं। उन्होंने पंडित जी के इस सिधान्त को माना लेकिन रूस ने इस को नहीं माना। उस ने कोई इमदाद हमारे यहां नहीं भेजी।

आप कहते हैं कि हम अपने यहां तैयार करेंगे हथियारों को। आज हम ने अखबारों में देखा कि शायद हमारे आर्डनेन्स फैक्ट्री कायम करने जा रहे हैं, लेकिन उस के काम करते समय तक संभवतः दुश्मन हमारे पीछे आ जाये। इस लिये जहां से भी हो सके, जिस तरह से भी हो सके, उस तरह से अमरीकी हथियार और सामान ले कर हमें काम करना चाहिये। हम अहिंसक हैं। डबर भाई ने भी यह कहा और डा० राजेन्द्र प्रसाद ने भी यह कहा कि हम वायोलेंटली नान-वायोलेंट हैं पर दुश्मन को भगाना है। लेकिन आज हिन्दुस्तान नानवायोलेंट नहीं रक्खा जा सकता है। आज तो देश वायोलेंट ही रक्खा जा सकता है। जब शंकारचार्य ने देखा कि देश के लोग ही कमजोर हो रहे हैं और अहिंसा की वजह से कमजोर हो रहे हैं तो उन्होंने कहा कि वायुलेंस का प्रचार करो, कहा कि मांस खाओ, मछली खाओ, सारी चीजें खाओ, और हिन्दुस्तान में ज ो बुद्धिस्ट्स कमजोर हो गये हैं उन को खदेड़ दो। हम ब्राह्मण धर्म के मानने वाले हैं। लेकिन इ स से कोई घबराये नहीं। ब्राह्मण धर्म किसी जाति का धर्म नहीं है, ब्राह्मण धर्म दूसरी चीज

[श्री विभूति मिश्र]

है, एक अलग चीज है, यह रूढ़ि संज्ञा है । इस धर्म को मानने वाला आदमी अपने सीने को तान कर रहेगा और दुनिया में रहेगा । जो लोग शंकराचार्य को जानते हैं उन को मालूम है कि शंकाराचार्य ने किस तरह से मुल्क को आगे रक्खा ।

हम चाहते हैं कि यहां कोई हड़ताल न हो, हमारे खेतों में ज्यादा से ज्यादा पैदावार हो । लेकिन पार्लियामेंट के सदस्य जितने हैं, मैं उन में कोई इमर्जेन्सी नहीं देखता । मैं देखता नहीं कि पार्लियामेंट के मेम्बरों और मिनिस्टरों के अन्दर कोई बचैनी है । ५ तारीख को मैं ने देखा कि मोकाना जंक्शन पर एक फुल लोड ट्रेन फौजियों की जा रही थी, जिन के गुलाब जैसे चेहरे थे । बीस-बाइस, पच्चीस वर्ष के जवान उस में लड़ने जा रहे थे और मोकामा के लोग उन को चाय और बिस्कुट खिला रहे थे । तो एक तरफ तो आप के सिपाही लड़ने जा रहे हैं और यहां चार चार रोज पंडित जी के रेज़ोल्यूशन पर आप बहस कराते हैं । ५०० सदस्यों को लोक सभा के और २५० सदस्यों को राज्य सभा के, ७५० लोगों को आप ने यहां रोक रखा है । अगर यहां इसी तरह से डिमाक्रेसी चलेगी तो यह देश रहने वाला नहीं है । जब गांधी जी सत्याग्रह छेड़ते थे तो सारे देश के कांग्रेस का और काम बन्द हो जाता था । जिले के डिक्टेटर, थाने के डिक्टेटर, प्रान्त के डिक्टेटर, आल इंडिया के डिक्टेटर आन्दोलन चलाते थे और सब काम करते थे । आज आप लड़ाई लड़ रहे हैं, फौज को चुशूल में भेज दिया, लद्दाख में भेज दिया, नेफा में भेज दिया और यहां पर चार चार रोज प्रस्ताव पर बहस हो रही है । हमारे श्री सत्य नारायण सिंह राणा हैं, क्षत्री हैं, उन को यहां पर चार चार रोज तक इस पर बहस नहीं करवाना चाहिये । एक दिन का समय देना चाहिये था । हर एक पार्टी के लीडर को बुला कर कहना चाहिये था कि वे बतलायें कि वे इस रेजोल्यूशन के हक में हैं या नहीं । जो कहते कि वे हिन्दुस्तान के साथ नहीं हैं, उन को पकड़ कर जेलखाने में बन्द कर देते । आज मुल्क पर खतरा है, मुल्क में रोज रिक्सेस हो रहे हैं और यहां पर चार रोज तक बहस कराते हैं, और इस तरह से बहस कराते हैं कि साथ चाय पानी भी चाहिये । हमारी फौजें मर रही हैं, जाड़े में मर रही हैं और हर तरह से हालत खराब हो रही है ।

संसद् कार्य मन्त्री (श्री सत्य नारायण सिंह) : चार दिन की बहस के बाद भी सदस्यों को सन्तोष नहीं होता, क्या किया जाये ?

श्री विभूति मिश्र : आप यहां पर पंडित जी के प्रस्ताव को पढ़ देते और पूछते कि कौन आप के साथ है । जो हाथ उठा देता, वह ठीक है और जो न उठाता उस को सजा दी जाती, जेलखाने में बन्द करते । इस के सिवा और कुछ नहीं होना चाहिये । मेरा यहां पर एक अमेंडमेंट है कि जब तक चीनी लोगों को हम अपनी भूमि से खदेड़ नहीं देंगे तब तक सुलह की बात नहीं होगी । यह हमारी कमजोरी है कि हम ८ सितम्बर की बात करते हैं, और इसी कमजोरी का नतीजा है कि चार वर्षों में चीन ने हमारी १२,००० वर्ग मील जमीन ग्रैब कर ली और उस के बाद अब २,००० वर्ग मील जमीन और ले ली । फिर भी हम ८ सितम्बर की बात कहते हैं । आज मुल्क लड़ने के लिये तैयार है । मैं तो कांग्रेस पार्टी से भी कहता हूं कि यदि आप नहीं लड़ेंगे तो हम जनता को निकाल कर आगे लड़ने के लिये तैयार हो जायेंगे । जिन लोगों ने फ्रेंच रेवोल्यूशन पढ़ा है उन को मालूम है कि जब भी रेवोल्यूशन को चलाने वाला नेता कमजोर पाया गया, उस की हत्या कर दी गई और दूसरा नेता आगे आया । जब दूसरे नेता ने कमजोरी दिखलाई तो उसकी हत्या कर दी गई और तीसरा नेता आगे आया । फ्रेंच रेवोल्यशन के समय लोग इतने तैयार

थे । आज जो देश की जनता के नेता हैं, चाहे मेम्बर हों या मिनिस्टर हों उन्हें मालूम होना चाहिये कि आज देश की जनता चाहती है कि चीन से लड़ कर हम एक एक इंच जमीन उन से ले लें । जब तक ऐसा न हो कोई समझौते की बात नहीं होनी चाहिये ।

आखिर समझौते की बात कहां से आई ? इस का ओरिजिन हुआ गांधी जी के सत्याग्रह से । लेकिन गांधी जी का सत्याग्रह दूसरे कंटेक्ट में हुआ था । उस वक्त हमारा एक सिविलाइज्ड नेशन के साथ झगड़ा था । लेकिन आज एक ऐसी नेशन के साथ हमारा झगड़ा है जो कि बिल्कुल असभ्य है । इस लिये मैं कहना चाहता हूं कि कोई सुलह समझौते की बात नहीं होनी चाहिये । आज देश तैयार है और हर तरह से लड़ने के लिये तैयार है ।

हमारे बागड़ी साहब ने सेंट लगाने वालों की बात कही । उन्होंने उन सेंट लगाने वालों को कहां देखा जो जेलों में सड़ते थे ? क्या आज आप तैयार हैं सेंट लगाने वालों के साथ लड़ने मरने के लिये ? आप भाग जाइयेगा । आज जो सेंट लगाने वालों की बात कह रहे हैं उन के ऐसे तो सेंट लगाने वालों के लड़के हैं जो कि मुल्क के लिये लड़ने को तैयार हैं । मैं बहुत अदब से कहना चाहता हूं कि मुल्क तैयार है और हमारे नेता पंडित जवाहरलाल जी को चाहिए कि वह लीड दें ।

मैं यहां पर एक बात बतलाना चाहता हूं । जब लोग अर्जन की समालोचना करते थे तब उस में ताकत आती थी । बिना उस के अर्जुन में ताकत नहीं आती थी । जब हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब की समालोचना होती है तब उन में ताकत आती है । उन में इस से ताकत आयेगी और वे लड़ेंगे । वह एक इंच भी पीछे हटने के लिये तैयार नहीं हैं । उन की सारी जिन्दगी मुल्क के लिये गुजरी ह और वे चीन को हटा कर रहेंगे । हां यह जरुर है कि उन की ईमानदारी की वजह से अहिंसा की वजह से उन को धोखा हुआ । उन्होंने धोखा दिया नहीं क्योंकि धोखा देना पाप है, धोखा खाना अच्छा है । लेकिन हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब अब चेत गये हैं । मैं चाहता हूं कि हमारे सत्य नारायण जी इस सदन को जल्दी से जल्दी खत्म करें । चार रोज बहस न करायें । सबों ने आप की बात सुनली अब इसे खत्म होना चाहिये ।

श्री सत्य नारायण सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो अब भी तैयार हूं । कोई माननीय सदस्य क्लोजर मूव कर दें और वह कबूल हो जाये तो मुझे मंजूर है ।

श्री शिवमूर्त्ति स्वामी (कोप्पल) : उपाध्यक्ष महोदय, भारतवर्ष के इतिहास में जो संकट की घड़ी और मुश्किलात इस समय आई हैं उन की मिसाल दूसरी कोई नहीं है । अब हम को चाहिये कि हम इकट्ठे हो कर संयुक्त रुप से उस का मुकाबला करें । पूर्व में हम से बहुत सी गलतियां हुई हैं, बहुत सी भूल चूक हुई हैं जिनका यह नतीजा हुआ है कि चीनी लोग हमारे सामने भाई का रिश्ता ले कर आये और दुश्मन के रुप में हमारे मुल्क के ढाई हजार लोगों का खून करके चले गये । इसलिये उन को अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करने के बाद जो हमारे जवान लड़ाई में शरीक हैं, उन को मैं अपनी बधाई देता हूं ।

मैं इस थोड़े से समय में ज्यादा समय न ले कर सिर्फ दो एक बातों की ओर सदन का ध्यान खींचूंगा, जिस का जिक्र इस हाउस में बहुत कम हुआ है । ज्यों ही हमारे प्रेजिडेंट महोदय ने इमर्जेन्सी डिक्लेअर की, उसी वक्त जरुरी था बल्कि फर्ज था कि सारी कैबिनेट रिजाइन कर देती और उस की जगह पर एक रिफार्म्ड तौर पर नैशनल कबिनेट रिकान्स्टिट्यूट की जाती । इस समय सब लोग अपनी अपनी पार्टीज को भूल रहे हैं और हर हिन्दुस्तानी नैशनल माइन्डेड

[श्री शिवमूर्ति स्वामी]

हो कर अपने अपने कांस्टिट्यूशन के द्वारा त्याग करने और खून का दान करने को तैयार है। जब मुल्क इतना नेशनल माइंडेड है उसके बाद अगर हम नेशनल माइंडेड न हो और ६०-७० आदमियों की कैबिनेट बनाकर वैसे ही बैठे रहें तो यह उचित नहीं होगा। लिहाजा मैं नम्रता से विनती करुंगा कि इस इमरजेंसी में इस डिमाक्रेटिक प्रोसीज्योर से हुकूमत का कारोबार नहीं चल सकता। आज सारे मुल्क का हमारे प्राइम मिनिस्टर में विश्वास है और वह सारे मुल्क की नुमायंदगी करते हैं। हमको चाहिए कि सब पार्टियां मिल कर फारमल तरीके से उनको हिन्दुस्तान के डिक्टेटर का स्वरुप दे दें। हमको ऐसा करने में हिचकिचाना नहीं चाहिए। ऐसा करने से देश की सारी ताकतें संयुक्त हो जायेंगी। इसी को ध्यान में रखते हुए मैं ने अपना अमेंडमेंट पेश किया है जो इस प्रकार है :

> "इस सभा की यह राय है कि प्रधान मंत्री सारे सदन का विश्वास प्राप्त करें और तब संकटकाल में अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए शक्तिशाली राष्ट्रीय सरकार बनायें।"

उड़ीसा के सदन में इसका जिक्र हुआ और इस प्रस्ताव को पास किया गया। लेकिन मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि इस इमरजेंसी के वक्त भी चन्द कांग्रेसी भाइयों ने इसकी मुखालिफत की और इस के लिए डिसिप्लिनरी ऐक्शन की बात तक कही जाती है। आज हम को अपने पार्टी फीलिंग को बदलना है और सारे मुल्क को एक आदमी बन कर इस इमरजेंसी का मुकाबला करना है। इस वक्त भी जो इस पार्टी की सदन में नुक्ताचीनी होती है उससे मुझे अफसोस होता है और मेरे दिल को धक्का लगता है।

इस सिलसिले में मैं २६ अक्तूबर के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में से श्री राजगोपालाचारी के एक वक्तव्य का उद्धरण देना चाहता हूं जिसमें उन्होंने कहा है :

> "सब से पहले तो मैं राष्ट्रीय अथवा मिली जुली सरकार बनाने के सम्बन्ध में कुछ लोगों की मांग का समर्थन नहीं करता। . . . . ऐसी कार्रवाई की जाये इसके लिये अभी कोई राष्ट्रीय खतरा नहीं है।"

इससे हमारे कुछ भाइयों का यही उद्देश्य मालूम होता है कि जो सारी आफतें आयी हैं उनको केवल एक ही दल पर यानी नेहरु जी के दल पर डाल दिया जाये। उनका कहना है कि जो बिस्तर उन्होंने बिछाया है उस पर उन्हीं को लेटने दिया जाये। इस कारण दूसरे दल भी इससे विपरीत प्रस्ताव नहीं कर रहे हैं। आज समय है कि देश के सब राजनीतिक दलों को एक हो कर काम करना चाहिए चाहे कामयाबी हो या जो कुछ भी हो। जब तमाम पार्टियां प्रधान मंत्री में विश्वास प्रकट करती हैं तो सब को मिल कर फारमल तरीके से सारी ताकत उनके हाथ में दे देनी चाहिए जिससे वे डिफेंस पालिसी को अच्छी तरह चला सकें।

नानएलाइनमेंट की नीति का मैं समर्थन करता हूं और कहना चाहता हूं कि इस पर यहां बहस नहीं होनी चाहिए। हिन्दुस्तान ऐतिहासिक दृष्टि से इस पालिसी को रखता आया है और हमको इसे हमेशा कायम रखना चाहिये। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि हम दोस्ताना मुल्कों से हथियार हासिल न करें। हमें हमेशा उनकी मदद का स्वागत करना चाहिए। चाहे कोई मुल्क हो जो हम को हथियार दे उससे लेना चाहिए और जल्दी से जल्दी लेना चाहिए। हम से भल हो गयी कि चार साल तक हम ने इस बारे में कोई फिक्र नहीं की। हमारे नेता दूसरे देशों में

शान्ति के सन्देश लेकर जाते रहे। इसलिए हम लड़ाई के लिए साइकालाजिकली तैयार नहीं थे। इसीलिये हमारा यह नुकसान हुआ है। हमारी जो हिमालयन ब्लंडर्स हुई हैं अब उनको हमें खत्म करना चाहिए।

तिब्बत के बारे में मैं दो चार शब्द कहना चाहता हूं। हम ने यह गलती की कि तिब्बत पर चीन की स्वेजरेनटी मान ली। मेरा सुझाव है कि नेशनल गवर्नमेंट बनाने के बाद, सब की राय लेने के बाद अगर यह मुमकिन हो सके तो इस स्वेजरेनटी को विदड्रा कर लिया जाये और चीनियों को तिब्बत से हटाया जाये और तिब्बत को आजाद देश बनाया जाये। जिस तरह कि भूटान, नेपाल आदि आजाद रह सकते हैं उसी तरह तिब्बत भी आजाद रह सकता है। हम ने चीन को तिब्बत में स्वेजरेनटी हासिल करने दी इसी लिये उसने हमारे ऊपर आक्रमण किया।

इसके बाद मैं एक और विचार सदन के सामने रखना चाहता हूं। कहा जाता है कि डिफेंस के लिए नौजवानों को तैयार हो जाना चाहिए। हम अपने नौजवानों को तैयार कर रहे हैं। इन १५–२० दिनों में मुल्क में ऐसी फिजा पैदा हो गयी है कि तमाम लोग अपना सब कुछ देने को तैयार हैं। मेरा सुझाव है कि इस सहायता का लाभ उठाने के लिए जैसे केन्द्रीय सिविल कमेटी बनायी गयी है वैसी कमेटियां जिला, प्रान्त और मवाजियात तक में बनायी जायें और उनका फौजी तौर पर इस्तैमाल किया जाये।

कांग्रेसी भाइयों को सारी जिम्मेदारी केवल अपने ऊपर नहीं लेनी चाहिये। यह सवाल किया जा सकता है कि जब सब दलों का विश्वास प्रधान मंत्री में है तो गवर्नमेंट को रिकांस्टीट्यूट करने का क्या सवाल उठता है। लेकिन मैं समझता हूं कि सारे देश की शक्ति को संयुक्त करने के लिये ऐसा करना अशद जरूरी है। हम को इतिहास में इसके अनेक दृष्टान्त मिलते है कि जब भी दूसरे मुमालिक में इस तरह की इमरजेंसी पेश आई तो वहां नेशनल गवर्नमेंट बनाई गई। ऐसा करसे ने उस गवर्नमेंट के पीछे सारी नेशन आ जाती है। कांग्रेस पार्टी प्रधान मंत्री को लीडर मान चुकी है, और पार्टियां भी आज उन को अपना लीडर मानती है। ऐसी हालत में उन को सारे देश का लीडर आसानी से चुना जा सकता है। मेरा खयाल है कि जब तक हम इस प्रकार नेशनल गवर्नमेंट नहीं बनायेंगे तब तक सहकार की भावना नहीं आ सकती। और हमेशा एक दल का दूसरे दलों दारा नुक्ताचीनी होती रहेगी। राजगोपालाचार्य ने कहा है कि जिसने बिस्तर लगाया है उस को उस पर सोने दिया जाये। लेकिन मैं समझता हूं कि आज इस तरह की गैर जिमेवाराना बात कहना सही नहीं है क्योंकि सहकार सिर्फ जबानी नहीं हो सकता। ऐसा करने के लिये दलबन्दी को हटाना होगा। ऐसा करने के लिये एक दल को दूसरे दल से अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता। इसलिये मैं तमाम दलों के नेताओं से अपील करना चाहता हूं कि जब सारा देश नेशनल माइंडेड हो रहा है तो हम को भी नेशनल माइंडेड होना चाहिये।

अन्त में मैं सर्वोदयी नेता श्री वोरा जी का एक स्टेटमेन्ट पढ़ कर अपने वक्तव्य को समाप्त करना चाहता हूं। वह इस प्रकार है :

> "कोई भी पार्टी चाहे वह कितनी ही बड़ी क्यों न हो, राष्ट्र का केवल एक भाग है। सरकार का दलगत स्वरूप जनता को विभाजित करता है जबकि उसे एक होना चाहिये। . . . . . जनता में और सरकार में विघटनात्मक प्रवृत्तियों को रोकने के लिये हम समझते है कि केन्द्र में और राज्यों में राष्ट्रीय मंत्रिमंडल बनाना राष्ट्र को भावनात्मक रूप से और प्रशासनिक रूप से एकबद्ध करने के लिये अत्यन्त आवश्यक है।"

[श्री शिवमूर्ति स्वामी]

इसी प्रकार आज ही इंडियन एक्सप्रेस में ग्राम पंचायत परिषद् ने, जिस के प्रैज़िडेंट श्री जय प्रकाश नारायण हैं, यह विचार प्रकट किया है कि इस सहकार के लिए नेशनल गवर्नमेंट बहुत ज़रूरी है । इस पर विचार किया जाना चाहिये ।

मैं यहां पर यह वाज़ेह कर देना चाहता हूं कि नेशनल गवर्नमेंट के सामने माने ये नहीं है कि गवर्नमेंट में तमाम पार्टीज़ के रिप्रेज़ेन्टेटिव शरीक किये जायें । नेशनल गवर्नमेंट में उन होमोजीनस एलिमेंट्स को लेना चाहिये, हू आर प्रिपेयर्ड टु सैक्रिफाइस फ़ार दि काज़ आफ़ दि कंट्री, जो डिफ़ेंस की इस पालिसी को अंडरस्टैंड कर सकते है और जो नेहरूजी की पालिसी को होमोजीनस तरीके से कार्यान्वित कर सकते है । एसे लोगों को ले कर नेशनल गवर्नमेंट बनाई जा सकती है । मेरा मतलब कोलीशन गवर्नमेंट से नहीं है । कोलीशन गवर्नमेंट और नेशनल गवर्नमेंट अलग अलग चीज़ें है । लिहाज़ा जब तक हम लोग एक नेशनल दृष्टि से इस समस्या पर विचार नहीं करेंगे, तब तक हम को सफलता नहीं मिल सकती है । चन्द आपोज़ीशन पार्टीज़ कांग्रेस पार्टी वालों पर हमेशा के लिये एक धब्बा लगाने की कोशिश कर रही है । उस से उन को बहुत नुक्सान होगा । इसलिये मैं मुल्क के सच्चे हितों की दृष्टि से कहना चाहता हूं कि इस मुल्क में एक नेशनल गवर्नमेंट होनी चाहिये, क्योंकि वह बहुत ज़रूरी है । मैं तीन दिन से इस सदन में माननीय सदस्यों के भाषणों को सुन रहा हूं, लेकिन किसी ने भी यह सुझाव सामने नहीं रखा है, हालांकि बाहर उड़ीसा असेम्बली में, तथा सर्वोदय लीडरों और दूसरे विचारशील लोगों, एडीटरों और पत्रकारों के द्वारा इस का ज़िक्र किया गया है ।

इस सुझाव पर विचार कर के हम ज़रूर इस पर अमल करें और बिल्कुल इत्तिफाक से इस युद्ध को समाप्त करें और शान्ति स्थापित करें । मेरा यह भी सुझाव है कि प्रधान मंत्री के प्रस्ताव के अन्त में जो यह कहा गया है, "हाउएवर लांग एंड हार्ड दि स्ट्रगल मे बि", उस में से "लांग" लफ्ज़ को डिलीट कर दिया जाये, क्योंकि "लांग" से साइकालोजी आफ़ कोल्ड वार का आभास मिलता है । हमारा उद्देश्य यह होना चाहिये कि हम जल्द से जल्द चीनियों को न सिर्फ़ भारतवर्ष से बल्कि तिब्बत से भी भगाने की कोशिश करें ।

श्रीमती सहोदराबाई राय (दमोह) : उपाध्यक्ष महोदय, हमारे राष्ट्रपति ने आपत्कालीन स्थिति की जो घोषणा की है, मैं उस का समर्थन करती हूं । चीनी आक्रमण के बारे में प्रधान मंत्री जी ने जो प्रस्ताव रखा है, मैं उस का भी समर्थन करती हूं ।

चीन ने भारतवर्ष पर आक्रमण कर के बड़ी गद्दारी की है । कुछ साल पहले भारतवर्ष में चू-एन-लाई आये थे । हम ने उन का बड़ा स्वागत किया था ।

एक माननीय सदस्य : यह उसी का इनाम है ।

श्रीमती सहोदराबाई राय : इस के अलावा हमारे प्रधान मंत्री ने चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ का मेम्बर बनाने की बड़ी वकालत की थी । हमारे नेता ने हर जगह उस को बहुत मदद दी । लेकिन उस सब का परिणाम यह निकला कि चीन ने हमारे साथ धोखा किया ।

मैं कहना चाहती हूं कि हम लोग पिछले साठ सत्तर बरस से लड़ते आ रहे है, संघर्ष करते आ रहे है । अगर एक बार भारतवर्ष पर इस तरह धोखे से आक्रमण हो भी गया, तो हम को घबराना नहीं चाहियें और हमें दृढ़ और शान्त रहना चाहिये । आखिर भारतवर्ष वीरों से खाली नहीं है । इस लिये घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है ।

अपने देश में हम को खाली अपने भाइयों को ही लड़ाई के लिये तैयार नहीं करना है, बल्कि महिलाओं का सहयोग भी प्राप्त करना है। हमें अपने देश के विकास की ओर भी ध्यान देना चाहिये, ताकि हम सिपाहियों के लिये साधन जुटा सकें। हम को काश्तकारी का भी काम करना है और गल्ला पैदा करना है तथा अपनी विकास-योजनाओं को भी चलाना है, ताकि देश में खाद्यान्न की कमी न पड़े और उस को बाहर से न मंगाना पड़े।

मैं अभी दमोह सागर, मध्य प्रदेश, से आई हूं। वहां पर हमारी जनता राष्ट्र के लिये काम के लिये तैयार है। काफी चंदा इकट्ठा हुआ है। लोगों ने काफ़ी रुपया पैसा, सोना आदि दिया है। सब जनता तैयार है। बुंदेलखंड का दौरा किया था। सब बुन्देले लोग लड़ने के लिये तैयार हैं।

मैं तो प्रार्थना करती हुं कि इस लड़ाई में भाग लेने के लिये जहां तक हो सके, क्षत्रियों को भरती किया जाय, क्योंकि क्षत्रियों को लड़ाई का तजुर्बा ज्यादा है। हरिजन और आदिवासी तो मदद करेंगे ही, लेकिन खास तौर पर बुंदेले, राजपूत, हाड़ा, भीखावत, खंगार, सोलंगकी और सिसोदिया आदि रण-भूमि में लड़ने वाले है, इसलिये उन को फ़ौज में भरती करके शत्रु से लड़ने का अवसर दिया जाये।

श्री कछवाय (देवास) : सारे भारत की जनता लड़ने के लिये तैयार है।

श्रीमती सहोदराबाई राय : मैं कोई जातिवाद की बात नहीं कह रही हूं। मैं बता रही हूं कि जहां तक हो सके, क्षत्रियों को भरती किया जाये। नये लोगों ने तो डाल्डा खाया है, लेकिन पुराने लोगों ने घी खाया है। वैसे तो बच्चा बच्चा लड़ने के लिये तैयार है। देश के कोने कोने से सरकार का समर्थन किया जा रहा है। लेकिन इन लोगों से बड़ा डर है। वे बार-बार रोड़ा अटकाते है। इन को कुछ काम करना तो आता नहीं है। ये भी दिल खोल कर मैदान में आयें।

श्री कछवाय : अगर सरकार भेजे, तो जाने के लिये तैयार है।

श्रीमती सहोदराबाई राय : देश की महिलायें और लड़कियां पढ़-लिख कर तैयार हैं। वे एजूकेशन में तैयार हैं और लड़ाई के कामों में भी तैयार हैं। वे मोटर चलाना जानती हैं और हवाई जहाज़ का काम भी जानती हैं। हमारे देश की महिलायें सब प्रकार का काम करने के लिये तैयार हैं। जब तक वे देश के विकास का काम नहीं करेंगी, तब तक हमें सफलता नहीं मिल सकती है। जब तक हमारी महिलायें पुरुषों को फूल माला पहना कर और रोली लगा कर युद्ध के लिये नहीं भेजेंगी, तब तक देश की रक्षा नहीं हो सकती है। हमारे देश में जब जब लड़ाई का मौका आया है, हमारी क्षत्राणियों ने पुरुषों को पूजा कर के युद्ध भूमि में भेजा है और वे लोग विजय प्राप्त कर के वापस लौटे है। यह नहीं समझना चाहिये कि महिलायें कुछ नहीं कर सकतीं। महिलाओं के बिना राष्ट्र की रक्षा और विकास नहीं हो सकता। महिलाओं के बिना शिक्षा नहीं मिल सकती। हिन्दुस्तान में २२ करोड़ महिलायें है उन में से ११ करोड़ तो देश के विकास का काम और खेती का काम करेंगी और ११ करोड़ लड़कियां ऐसी हैं, जो मजिस्ट्रेटी और क्लर्क का काम करेंगी, उत्पादन करेंगी। २२ करोड़ भाई लड़ें और हम सामान और रसद वगैरह भेजें, जिस से लड़ाई में किसी चीज़ की कमी न आ सके। जैसाकि मैं ने कहा है, बिना महिलाओं के राष्ट्र की रक्षा नहीं हो सकती है। इसलिये महिलाओं को बोलने का अवसर न देना उचित नहीं है।

हमारे देश में महिलायें अपने भाइयों को और पतिव्रता स्त्रियां अपने पतियों को पूजा कर के युद्ध के लिये भेजती रही हैं और उन की जीत होती रही है। महिलाओं ने हमेशा लड़ाई में पुरुषों की मदद की है। कैकेयी ने दशरथ का साथ दिया था। लक्ष्मीबाई कितनी वीरता से लड़ी थी। मैं

[श्रीमती सहोदराबाई राय]

कुछ ज्यादा नहीं कहना चाहती हूं और न सदन का ज्यादा समय लना चाहती हूं। मैं तो यह कहना चाहती हूं कि सदन में कुछ बोलने से कुछ नहीं होता है। आज लड़ाई की और रक्षा-कार्यों में भाग लेने की आवश्यकता है। हमारे बहुत से भाई बोल चुके हैं। मैं किसी को बोलने से मना नहीं करती, लेकिन अब पार्लियामेंट में ज्यादा वक्त नहीं लगाना चाहिये और इस सैशन को पंद्रह बीस रोज़ में ख़त्म कर देना चाहिये, ताकि हम सब अपने अपने क्षेत्र में जा कर धन-दौलत, हथियार वगैरह इकट्ठा करें और रक्षा-कार्यों में सहायता करें। हथियारों और पैसे के मामल में हम को दूसरे देशों पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिये। हमारे देश में ही हथियार बन सकते है। हमें अपने कारखानों में और खेतों में काम में जुट जाना चाहिये।

चाऊ-एन-लाई ने हमारे साथ जो धोखा किया है, हमें उस का वीरता के साथ मुकाबला करना चाहिए। वह अब पछताने लगा है। यह लड़ाई लम्बी नहीं चलेगी, बल्कि जल्दी समाप्त हो जायेगी और एक समय आयेगा कि वह सीमा छोड़ कर भाग जायगा, क्योंकि हिन्दुस्तान अभी वीरों से ख़ाली नहीं हुआ है। उसने तो हमको धोखा दिया है। हमारे यहां ताल ठोक कर लड़ने की परम्परा रही है। अगर चीनी हमको चैलेंज देते हैं कि हम लड़ाई लड़ने वाले है, तैयार रहो, तो हम उनको उचित जवाब देते, लेकिन अगर सोते हुए शेर पर गीदड़ हमला करे, तो वह कोई वीरता नहीं है। आज हम होशियार हैं। भारत पर कभी कोई विपत्ति नहीं आने वाली है। यहां का बच्चा बच्चा लड़ेगा। पार्टियों में कोई विरोध नहीं है। जिन देशों ने भारतवर्ष से सहानुभूति प्रकट की है, उनको मैं बधाई देती हूं। किसी देश से हमें विद्वेष नहीं है। न ही हम किसी गुटबन्दी में रहेंगे। सब के साथ मित्रता है, दोस्ती है। यहां टीका टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है। कोई देश मदद दे या न दे, हमारा भाई है। लेकिन चाऊ एन लाई ने हमारा भाई बन कर के, हमारा दोस्त बन कर के, हमारे साथ धोखा किया है। वह कभी राजनीति में नहीं रह सकते है, कभी प्रधान मंत्री नहीं रह सकते है। एक दिन आयगा जब चीन किसी देश के साथ भी नहीं लड़ेगा। मेंढक खाने वाले चीनी हमें क्या मार सकेंगे। यह कभी नहीं हो सकता है। भारतवर्ष विजयी होगा। घबराने की कोई बात नहीं है। हम कमजोर नहीं है। जब मर्द ख़त्म हो जायेंगे तो बाईस करोड़ महिलायें लड़ने के लिये मैदान में हम आ जायेंगी। हम पर कोई आपत्ति नहीं आयेगी। हम देश की रक्षा करेंगे और भगवान हमारी सहायता करेगा।

†**श्री वृरुथि रमण** (गोबीचेटिपलयम्) : माननीय प्रधान मंत्री के ऐतिहासिक भाषण के बाद मैं सरकार की नीति का विवेचन नहीं करना चाहता। हमारे प्रधान मंत्री चाहते हैं कि सभी क्षेत्रों में तैयारी की जाये। उसी में हमारी अन्तिम विजय है। कुछ माननीय सदस्यों ने यह कहा है कि इस संकट काल में हम मद्य निषेध नीति का समर्थन न करें। मैं कहता हूं कि यदि हमें तीसरी पंचवर्षीय योजना और दूसरी सारी योजनाओं को कार्यान्वित करना है तो मद्य निषेध नीति है, नहीं की जानी चाहिये और उसे रद्द करने से जनता का सहयोग प्राप्त करने में सफलता नहीं मिलेगी। यह समय न केवल वर्तमान आक्रमण का मुकाबला करने का समय है बल्कि शान्ति बनाये रखने के लिये फिर युद्ध की तैयारी करने का समय है। इस लड़ाई को जीत कर हमें अनाज की वर्तमान कमी, खेती की पैदावार की कमी आदि दूर करनी चाहिये। इसी समय कई दिशाओं में अनुसन्धान और आविष्कार किये जा सकते है।

वर्तमान संकट काल में हमें यह प्रयत्न करना चाहिये कि हम इस प्रकार लड़ाई की तैयारी करे कि प्रत्येक क्षेत्र में हम शक्तिशाली बन जायें। इस परीक्षा के समय हमें अपना कृषि उत्पादन

---

†मूल अंग्रेजी में

न केवल १०–२० प्रतिशत बल्कि १०० प्रतिशत बढ़ाना पड़ेगा । यही समय है जब कि उत्पादन अधिक से अधिक करने के लिए हम जनता में उत्साह उत्पन्न करें।

हमारे सम्माननीय मंत्री श्री उ० न० ढेबर ने कहा कि मूल्य स्थिर करने की बात का अनुचित लाभ नहीं उठाया जाना चाहिये । यह जरूरी है कि मूल्य ऐसे हों कि किसानों को अपनी पैदावार से उचित लाभ मिल सके । गांवों में और गांवों के बाजारों में मूल्य उसी स्तर पर कायम रखें जायें और हम उन्हें बढ़ने न दें । हम व्यापारियों को माल इकट्ठा न करने दें और न ही बहुत अधिक कीमतों पर उन्हें बचने दें ।

आगे, उत्पादन बढ़ाने के लिये छोटी सिंचाई योजनाएं शीघ्र कार्यान्वित की जानी चाहियें। गहरे नलकूप लगाये जाने चाहियें ताकि हमारे किसान उससे लाभ उठा सकें। छोटी सिंचाई परियोजनाओं के अन्तर्गत आने वाली जमीन के हर हिस्से में खेती की जानी चाहिए । अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन संगठित किया जाना चाहिये और गहरी खेती की जानी चाहिये ।

दूसरे विश्व युद्ध के समय अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन आदि के कारण उत्पादन अधिक हुआ और उस संकट के कारण ही उत्पादन में वृद्धि हुई । हम किसानों को उर्वरकों का उपयोग करने की सलाह न दें क्योंकि उर्वरक उत्पादन युद्ध के काम में लाया जा सकता है । दूसरी ओर हम इस ओर ध्यान दें कि कार्बनिक खाद के उपयोग से हम न केवल भूमि का उपजाऊपन कायम रखें बल्कि उसे और अधिक उपजाऊ बनायें और अनाज की मात्रा और किस्म भी अधिक अच्छी बनायें ।

सीमावर्ती युद्ध वास्तव में किसानों के खतों में लड़ना होगा । यद्यपि हमारे जवान और हमारे लोग मोर्चे पर लड़ रहे हैं फिर भी नैतिक बल कायम रखने और सैनिक तथा असैनिक आवश्यकतायें पूरी करने के लिए हमें इस बात की ओर ध्यान देना चाहिये कि कृषि को सब से ऊंची प्राथमिकता दी जाये ।

यद्यपि हमारी इधर उधर कुछ थोड़ी बहुत हार हुई है फिर भी दृढ़ विश्वास और नैतिक साहस के आधार पर हम लड़ेंगे और विजयी होंगे । जनता के उत्साह को उचित रूप से काम में लगाना होगा । हम लड़ाई लड़ेंगे और दुनिया को दिखायेंगे कि लड़ाई जीत कर हम दुनिया में शान्ति कायम करेंगे ।

श्री मौर्य (अलीगढ़) : अध्यक्ष महोदय, आज संकट की घड़ियों में जब कि भारतवर्ष को एक बरबादी के काले बादल ने घेर रखा है, मैं यहां पर किसी टीका टिप्पणी के लिये नहीं खड़ा हुआ हूं । मैं यहां पर आज केवल इस सदन को और राष्ट्र के जिम्मेदार नेताओं को अपने कुछ सुझाव देने के लिये खड़ा हुआ हूं ।

पीकिंग की ओर से आज इस देश को संकट आया, आ रहा है और भविष्य में भी आने की संभावना है, ऐसी घड़ियों में अगर हम इस बात को मान लें कि चीन इस से आगे नहीं बढ़ेगा, तो हमारी नादानी होगी । गंगा और यमुना का दुआबा, नर्मदा और ताप्ती के रास्ते और कावेरी की शांति, भूखे चीनियों को, जो कि आज सीमायें बढ़ाने के लिये पागल हो गये हैं, प्रतिवर्ष, प्रति मास, प्रति दिन और प्रति क्षण भारत की ओर आकर्षित करती रहेंगी । जब इस तरह की व्यवस्था है, जब इस तरह के लोगों से वास्ता है, तब आज हम किसी तरह की आशा रखें कि यहां पर समझौता हो जायेगा, जिस तरह से हमने बहुत सी भूलें की हैं, मैं समझता हूं कि यह भी वैसी ही एक भूल होगी । चाउ एन लाई इस भारत की यात्रा पर आये थे । इस भारत भूमि के पवित्र चरणों में उन्होंने भी आ कर अपना मस्तिष्क झुकाया था, परन्तु जब वह नई दिल्ली में प्यार का शरबत पी रहे थे, तब हमारे आदरणीय, सीधे सादे, मानवता में विश्वास करने वाले और पंचशील के प्रचारक, पंडित जवहारलाल नेहरू वास्तव में प्रेम का प्याला पी रहे थे । परन्तु वहां पर मानवता का दमन करने वाला, शैतानियत का पुजारी,

[श्री मौर्य]

चाउ एन लाई उस समय भी, उस क्षण भी भारत माता की गोद में मानवता का खून पी रहा था। मैं आप को उस क्षण की याद दिलाता हूं जब चाउ एन लाई आगरे में पधारे थे। आगरे की ताजमहल की सुन्दरता को देख कर उन्होंने अपने साथी से पूछा था कि ताजमहल हमारी सरहद से कितनी दूर है? उस वक्त उन के मन में क्या बात थी? उस वक्त हमारे सीधे सादे, विश्वास करने वाले, मित्रता पर ज्यादा विश्वास करने वाले और राजनीति को पीछे रखने वाले आदरणीय पंडित जवाहरलाल नेहरू भूल रहे थे। लेकिन जैसा यहां पर मैंने कहा, मैं यहां टीका टिप्पणी करने के लिये नहीं खड़ा हुआ हूं। यह संकट की घड़ी है और इस तरह की बात यहां पर कुछ शोभा भी नहीं देती। परन्तु आज इस हिमायल में, जो कि शांति का रक्षक रहा, जो मानवता की देन देता रहा, चीनियों ने अशांति की आग लगा रखी है, और वहां पर हमारी भूल से कुछ दिनों के अन्दर पांच हजार भारत माता के सपूतों ने कुर्बानी दे दी है। क्या हम उन बातों को भुला कर वहां पर कोई भी सीधा रास्ता, कोई भी विद्वता का रास्ता, कोई भी चीनियों पर विजय पाने का रास्ता या भारत माता को सुरक्षित करने का रास्ता, निकाल पाये हैं? हम को यह अवश्य देखना होगा कि हम ने कौन सी गलतियां की हैं जिन की वजह से भारतवर्ष के वे सपूत, जो कि संसार के किसी भी सिपाही से, किसी माने में कम नहीं हैं, वहां पर मारे गये। तब फिर उन बातों को सामने रख कर हमें कुछ न कुछ अध्ययन करना पड़ेगा।

यहां पर हम देखते हैं कि हमारे रक्षा मंत्री आदरणीय श्री कृष्ण मेनन थे। उन के सम्बन्ध में हम ने बहुत बड़ी भूल की थी। इस लिये नहीं कि आदरणीय कृष्ण मेनन जी हमारें रक्षा मंत्री थे, बल्कि इस लिये कि जो हमारे रक्षा मंत्री थे उन को ही हम ने पंचशील का पुजारी बनाया। एक आदमी से, एक विशेष व्यक्ति से दो तरह के कार्य लेना, जो एक दूसरे से विपरीत हैं, जो एक दूसरे से भिन्न हैं, जिन का एक दूसरे से कोई लगाव नहीं है, यह कोई राजतीतिज्ञता नहीं है। पंचशील का पुजारी कभी भी रक्षा मंत्री नहीं हो सकता। यदि उन्होंने रक्षा मंत्री के नाते से भूल नहीं की तो पंचशील के पुजारी के नाते से भूल की होगी, और अगर उन्होंने पंचशील के पुजारी के नाते भूल नहीं की, तो रक्षा मंत्री के नाते से भूल की होगी। जब हम यहां इस भूल को देखने के लिये बैठते हैं तब यहां कुछ और भी बातों का अध्ययन करते हैं।

जब रक्षा का प्रश्न सामने आता है देश के, तो हमें देखना पड़ता है कि कौन हमारा सबसे विश्वास-पात्र व्यक्ति है। आज हमारे आदरणीय प्रधान मंत्री यहां नहीं हैं, लेकिन उन में विश्वास रखने वाला कोई भी कांग्रेस का आदमी आज इस बात का दावा नहीं कर सकता कि जितने कांग्रेस के विश्वास-पात्र पंडित जवहारलाल नेहरू हैं; उतने ही वे इस सदन के हर विरोधी दल के विश्वासपात्र नहीं हैं। परन्तु मैं यह अवश्य कहूंगा कि आदरणीय पंडित जवाहरलाल नेहरू की जिम्मेदारी केवल यह कह कर खत्म नहीं हो जाती कि हम पंचवर्षीय योजनाओं को सफल बनाने में लगे हुये थे। देश का निर्माण कार्य हमारे सामने था। मैं तो एक गांव के किसान का बालक हूं। किसान जब मकान बनाता है तो उस वक्त यह देखता है कि चोर किधर से आ सकता है, और उस दरवाजे को मजबूत बनाता है। व्यवसाय करने वाला कोई तिजारती आदमी जब कोठी बनाता है तो बड़ी सी, तो डकैतों का खतरा होता है इस लिये वह दरवाजों में फौलादी सीखचे लगाता है ताकि डकैत वहां हमला न करें। फिर राष्ट्र का निर्माण करने वाले महान विद्वान पंडित यदि आज यह कहें कि हम केवल योजना में लगे थे, यह कोई ज्यादा अच्छी बात नहीं होगी। योजना के साथ हमें अपने डिफेंस, अपनी रक्षा का भी पूरा ध्यान रखना चाहिये था। हम ने हर कदम पर उस को भुलाया है। मैं तेजपुर की कहानी कह कर, मैं दमचौक की कहानी कह कर, या कोई और कहानी कह कर, किसी दोस्त को नाराज नहीं करना चाहता। लेकिन यह बात हमें अवश्य माननी पड़ेगी कि जब हमने अपने फौजी जत्थों को हुक्म दिया उस वक्त आदरणीय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक विशेष जनरल को बुलाया, जिस की प्रशंसा इस

सदन में भी की गई, जो कि मैं व्यवस्था के विरुद्ध समझता हूं। किसी विशेष जनरल की यहां पर नाम ले कर तारीफ करने से, जवानों का मोरल बढ़ता नहीं है बल्कि वहां पर इस से राजनीति घर करती है। जब हमारे आदरणीय प्रधान मंत्री महोदय ने एक विशेष जनरल को भेजा तो उन को मालूम था, और अगर उनको मालूम नहीं था तो मालूम होना चाहिये था क्योंकि वे हमारे राष्ट्र के रक्षक हैं, कि हमारे पास कितनी शक्ति है। उस चीन के पास कितनी शक्ति है, जिस चीन में गांव गांव में कम्युन बने हैं, जिस चीन में बड़ी तैयारियां हो रही हैं। उन चीजों को हमारे प्रधान मंत्री जी अवश्य जानते होंगे। मैं नहीं जानता क्यों कि मैं चीन कभी गया नहीं। प्रधान मंत्री जी को यह भी मालूम होना चाहिये था कि जब जनता तैयार थी कि चीनियों को खदेड़ कर बाहर फेंक दिया जाय उस वक्त उन राइफलों से जो कि सन् १९४६ को थीं यह काम असम्भव था क्योंकि उनके पास ताजिकिस्तान के आटोमेटिक वेपन्स थे। यह बहुत बड़ी भूल हम लोगों से हुई। लेकिन डिफेंस मिनिस्टर श्री कृष्ण मेनन का रेजिग्नेशन ही आया, और वह भी यहां नहीं आया, कांग्रेस की कैमरा मीटिंग हुई थी, उस में आया। इस के पीछे क्या राजनीति थी, यह मैं नहीं कहना चाहता, परन्तु एक बात जरूर कहना चाहता हूं उनका इस्तीफा यहां सदन में न आना असंवैधानिक था। और भी असंवैधानिक बातें यहां होती रहीं हैं। यहां पर श्री टी० टी० कृष्णमाचारी के साथ यह हुआ, शास्त्री जी के साथ यह हुआ और आज यही कृष्ण मेनन साहब के साथ हुआ। यह चीज विधान के विरुद्ध है और अनकांस्टिट्यूशनल है क्योंकि संविधान के अन्दर अनुच्छेद ७५(३) में लिखा हुआ है :

"कि मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से हाउस आफ पीपल के लिये उत्तरदायी होगा।"

अकेले श्री कृष्ण मेनन ही इस के लिये जिम्मेदार नहीं थे। अगर उन्होंने कोई गलती की है तो जब कांग्रेस ने इस सदन में इस बात का पोस्ट मार्टेम किया तो इस बात को भी पोस्ट मार्टेम कर के देखते कि कैबिनेट मिनिस्टर यहां क्या करते रहे। इस में एक बहुत बड़ा राज रहा। यहां के अखबार पूंजीपतियों के हाथ में हैं। मैं केवल यही कहना चाहता हूं कि आप कहीं उनकी राजनीति के शिकार न हो जायें। आज कृष्ण मेनन जी को हटा कर प्रधान मंत्री जी पर भी हमला होने लगा है जिससे हमको सावधान रहना चाहिये। वह एक संकट यहां पर लाना चाहते हैं। स्वयं कांग्रेस के अन्दर जो गुटबन्दी है, इस के शिकार श्री कृष्ण मेनन हुये हैं जैसा कि उनके पत्र से स्पष्ट होता है। उन्होंने अपने पत्र में कहा है :

"Nevertheless, I am painfully aware of the fact that not only the opponents of our policy and party but even perhaps an appreciable number of our party members, *some leaders among them*, have proclaimed or implied their lack of faith in me and in the defence organisation under my stewardship."

"मुझे इस बात का दुःख है कि न केवल हमारी नीति के विरोधियों और दल वालों ने बल्कि कुछ अन्य सदस्यों ने जिनमें नेता भी हैं मुझ में और मेरे अधीन प्रतिरक्षा संगठन में अविश्वास व्यक्त किया है।"

मैं यह बात सदन के सामने इस लिये कह रहा हूं कि इस तरह का पोस्ट मार्टम करने में कांग्रेस के लोगों ने इस सदन को अगुआ बनाया है और उस का आज इस सदन में पोस्ट मार्टम किया जा रहा है। लेकिन अगर पोस्ट मार्टम की ही बात है, तो मैं आदरणीय कृष्ण मेनन जी से प्रार्थना करूंगा और इस सदन से प्रार्थना करूंगा कि अगर गल्ती उन से हुई है तो वह परदा उठाया जाये। अगर यह परदा उठाया जायेगा तो पता चलेगा कि उस के पीछे कुछ और भी गलत लोग बैठे हुये हैं। क्या उस परदे को उठाने के लिये आज हम तैयार हैं? लेकिन मैं कहता हूं कि आज यह घड़ी इस काम के लिये उपयुक्त नहीं है और कांग्रेस के जिम्मेदार नेताओं को आज यहां इस तरह की बात करना शोभा नहीं देता।

अध्यक्ष महोदय : आप सरकार को कहे जायें, कांग्रेस को न कहें।

श्री मौर्य : सरकार में तो मैं भी शामिल हूं।

श्री रघुनाथ सिंह : आप शामिल नहीं हैं।

†**श्री मौर्य**: सरकार में मैं भी सम्मिलित हूं।

†**अध्यक्ष महोदय** : मैं यह नहीं कह सकता।

श्री मौर्य : अगर आपका आदेश ऐसा है तो मैं कांग्रेस पार्टी को छोड़ता हूं। मैं सत्ताधारी वर्ग से यानी आज की सरकार से पूछना चाहता हूं कि क्या फौजी अधिकारियों को चीन की ओर से बढ़ता हुआ खतरा नजर नहीं आया? क्या फौज के जिम्मेवार अधिकारियों ने रक्षा के लिए धन राशि की मांग नहीं की? और इस धन राशि की मांग को किस ने ठुकराया? यह बहुत महत्व-पूर्ण बात है जिसके ऊपर आदरणीय प्रधान मंत्री ने भी प्रकाश डाला है। लेकिन जैसा मैं ने कहा, मैं इस बात पर इस समय ज्यादा बल नहीं देना चाहता। किन्तु मैं एक बात उन लोगों से कहना चाहता हूं, चाहे वे अमरीका के दोस्त हों या दुश्मन, कि अमरीका से जो मदद आयी उसके लिए हम हृदय से धन्यवाद देते हैं, इंगलैंड से जो मदद आयी है उसके लिए भी हम हृदय से धन्यवाद देते हैं, और जिन अन्य देशों से मदद आयी है उनको हम धन्यवाद देते हैं और जिन से भविष्य में मदद आएगी उनको हम धन्यवाद देंगे। लेकिन इस फौजी सहायता को मैं एक तरह की फायर ब्रिगेड की सहायता कहता हूं। हिन्दुस्तान के शीतल हिमालय में आग लगी थी। उस आग को बुझाने के लिए यह फायर ब्रिगेड की सहायता आयी जिस तरह कि म्युनिसिपल बोर्ड या कारपोरेशन की फायर ब्रिगेड की सहायता किसी मुहल्ले या घर में आग लगने पर आती है। पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के लिए अपने हृदय में तमाम श्रद्धा, प्रेम और विश्वास होते हुए भी मैं दावे से कहता हूं कि यद्यपि उनका कहना है कि कि वे कम्युनिस्ट और नान कम्युनिस्ट ग्रुप्स को नहीं मानते, लेकिन अगर वास्तव में इस प्रकार के ग्रुप न होते तो यह सहायता कदापि न आती। यह सहायता केवल कम्यनिज्म की आग को बुझाने के लिए आयी है, जो आग कि आज यूरोप में और एशिया में लगी हुई है। अगर यह स्थिति न होती तो हमको यह फायर ब्रिगेड की सहायता न मिलती।

मैं आज अपने देश की विदेश नीति की टीका टिप्पणियां नहीं करना चाहता लेकिन इतना अवश्य कहना चाहता हूं कि पूरे संसार में केवल एक हिन्दू राज्य है लेकिन दुर्भाग्य है कि वह भी आज हमारे साथ नहीं है। पड़ोसियों से हमारे सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं। काश्मीर की समस्या अभी भी उलझी हुई है। तिब्बत को हम ने चीनियों के हाथ में दे दिया और उस तिब्बत में चीनियों ने अपने २५–३० डिवीजन ला कर डाल रखे हैं। उसने तिब्बत को अपना बेस बना रखा है और वहां से फौज भेज कर उसने हमारी फौज को मारा और हमारी जमीन पर कब्जा कर लिया। हमारे प्रधान मंत्री जी दूरदर्शी हैं। उनको तो यह पहले से जान लेना चाहिए था कि तिब्बत पर चीन का कब्जा होने के बाद ये खूनी चीनी, ये अफीमचियों की औलाद चीनी, ये चंगेज खां की औलाद चीनी हमारे ऊपर भी हमला कर सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय : आर्डर आर्डर। मेम्बर साहब सब कुछ कहें, नुक्ताचीनी करें, मगर गालियों से तो किसी को बाहर नहीं निकाला जा सकता।

श्री मौर्य : मैं ने कोई गालियां तो नहीं दीं।

---

†मूल अंग्रेजी में

अध्यक्ष महोदय : फिर भी हमें इस सदन में अपनी सभ्यता नहीं छोड़नी चाहिए। बेशक हम एतराज करें, उनकी नुक्ताचीनी करें, लेकिन जो शब्द इस्तैमाल किए जायें वे सभ्यता से बाहर न हों।

श्री मौर्य : ये शब्द अनपार्लियामेंटरी नहीं हैं।

अध्यक्ष महोदय : आपने जो शब्द इस्तैमाल किए हैं वे सभ्यता से बाहर हैं।

श्री मौर्य : "बेशर्म" शब्द पार्लियामेंटरी है जो स्वयं प्रधान मंत्री ने रेडियो पर ब्राडकास्ट करत हुए इस्तैमाल किया था ?

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मंत्री ने बाहर किसी को कहा होगा।

†**श्री प्रिय गुप्त** (कटिहार) : प्रधान मंत्री हमेशा प्रधान मंत्री हैं। उनका अपना निजी कोई काम नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : लेकिन हमको पार्लियामेंट में तो एक लेविल रखना चाहिए चाहे बाहर कोई भी किसी को कुछ भी कहें।

श्री मौर्य : चलिए अगर आप चीनियों को अफीमचियों की औलाद नहीं मानते तो मैं छोड़ता हूं। लेकिन मैं इतना कहूंगा कि चीन ने हमारे साथ बहुत बड़ा विश्वासघात किया है और इसका इरादा बहुत दिनों से ऐसा करने का हो रहा था। तिब्बत में इस तरह की बातें होती रहीं। इस पर ध्यान देना चाहिए था। अमरीका में एक कहावत है :

It is better to light a candle than to curse the darkness.

तो मैं यहां पर यह कहना चाहता हूं कि भविष्य में इस तरह की बात न हो।

आज इस सदन का पंडित जवाहरलाल नेहरू में पूरा विश्वास है। इसलिए आज उनका भी यह कर्तव्य हो जाता है कि वह सदन को विश्वास में रखते हुए सदन से कोई बात न छिपाएं। अगर सदन के सामने य बातें आती रहीं तो इस प्रकार की गलती समाप्त हो सकती है।

इन बातों के साथ साथ मैं अपने कुछ सुझाव भी देना चाहता हूं। इन सुझावों को देकर मैं अपना भाषण समाप्त कर दूंगा। ये मेरे सुझाव हैं :

हर प्रकार की फौजी सहायता जहां से मिल सकती है ली जाए। मैं ने "हर प्रकार की फौजी सहायता" इसलिए कहा है कि अमरीकी राजदूत ने हमको हथियार देतें हुए कहा था कि हमने आपको बहुत अच्छे हथियार दिए हैं लेकिन इसके बावजूद भी अगर आपके आदमियों की कमी की वजह से चीनी आगे बढ़ आएं तो हथियारों को दोष न दीजिएगा। इसलिए मैं ने कहा है कि हर प्रकार की फौजी सहायता जहां से मिल सकती है ली जाए। लेकिन साथ ही यह ध्यान रखना चाहिए कि इस की वजह से हमारी विदेश नीति किसी तरह की गुलामी में न पड़ जाए।

हमारे पड़ोसी देश लंका, बर्मा, नेपाल तथा पाकिस्तान से मित्रता के सम्बन्ध स्थापित किए जाएं।

श्री दलायी लामा को जहां भी वे जाना चाहें जाने को कहा जाए।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री मौर्य]

तिब्बत के शरणार्थियों को अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र करने के लिए अपनी मातृभूमि की तरफ जान दिया जाए ।

कम्युनिस्ट चीन से डिपलोमैटिक रिलेशन्स समाप्त कर दिए जाएं ।

चीन के दुश्मनों को दबाया न जाए ।

चीन के रिकागनीशन के लिए यू० एन० ओ० में वकालत न की जाए ।

चीन से तब तक बात न की जाए जब तक चीन की फौजें भारत की भूमि से बाहर नहीं चली जातीं । यह ला आफ दी वार है जिसको हमारे पंडित जी और दूसरे आदरणीय सभी सदस्य जानते हैं । जहां भी सीज फायर या नेगोसियेशन्स हुए या वार्ता हुई वहां वह चीज वहीं रह गयी । लेकिन चीन आज हमारी २० हजार वर्ग मील भूमि पर कब्जा किए हुए हैं । हमारे सामने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की मिसाल मौजूद है, काश्मीर की मिसाल मौजूद है । हमारे सामने कोरिया की मिसाल मौजूद है, ईजिप्ट और इजराइल तथा घाना की मिसाल मौजूद है ।

राष्ट्रीय आधार पर एक रक्षा समिति का निर्माण किया जाए जिसमें सब पार्टियों के रहनुमाओं को शामिल किया जाए और इस समिति को सब का विश्वास लेकर बनाया जाए ।

सोना रखना एक विशेष दिन या तिथि के बाद जर्म करार दे दिया जाए ।

इसके अलावा जो धन गांधी मैमोरियल फंड में तथा मोती मैमोरियल फंड में जमा है वह भारत माता के लिए, उनकी औलाद के लिए—हम भी तो उनके बालक ही हैं—देश की रक्षा के लिए डिफेंस फंड में दान दे दिया जाए ।

जातिवाद के आधार पर फौजों में भरती न की जाए । मैं इस बात पर खास तौर से जोर देना चाहता हूं । अभी मैं अलीगढ़ में कुछ दोस्तों को फौज में भरती करवाने गया तो फौज के एक आदमी ने कहा कि आप ने बोर्ड नहीं पढ़ा । मैं ने पूछा कि बोर्ड में क्या लिखा है तो उसने कहा कि केवल क्षत्रियों और जाटों की भरती हो रही है । यह चीज मैं ने अपनी आंखों से देखी है और मैं ने इस के बारे में पंडित जी को भी कह दिया था । मैं कहता हूं कि आज बहादुरी और बुजदिली की बात किसी वर्ग के लिए नहीं कही जा सकती । बहुत सा क्रास ब्रीडिंग भी हुआ है और जिस तरह एक तरफ बहादुरी या बजदिली हो सकती है उसी तरह दूसरी तरफ भी हो सकती है । तो मेरा निवेदन है कि इस भावना को लेकर किसी वर्ग को कम न किया जाए ।

इसी के साथ मैं एक और बात कहना चाहता हूं । हमारे आदरणीय प्रकाशवीर शास्त्री जी ने कहा कि हमारे देश में एक मुल्क के ६ करोड़ जासूस बैठे हुए हैं । मुल्क के खिलाफ़ गद्दार बैठे हैं । मैं उनकी इस बात का अपनी पूरी ताकत से एक लाख जवानों से विरोध करता हूं । इस देश में ६ करोड़ तो क्या अगर एक करोड़ भी पाकिस्तान के या किसी दूसरे देश के एजेंट बैठे हों तो हम अपनी भारत माता की आजादी की रक्षा नहीं कर सकते ।

श्री रघुनाथ सिंह : श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने "गद्दार" नहीं कहा, उनकी स्पीच को देखा

श्री मौर्य : ६ करोड़ की तादाद बहुत बड़ी तादाद है । तो इस तरह अगर ६ करोड़ को मुसलमान के नाम पर खत्म कर दिया जाए, नौ करोड़ को अछूत के नाम पर खत्म कर दिया

जाए, कुछ सरकारी नौकरियों में और व्यवसायों में लगे हैं, तो फिर चीन का मुकाबला करने के लिए कितने लोग बाकी रहेंगे ? इस तरह की भावना फैलाने वाले इंसानों से मेरी प्रार्थना है कि वे अपनी इन बेजा हरकतों से बाज आयें । सरकार को पूरी सावधानी रखनी चाहिए कि इस तरह की भावना वहां पर न फैलाई जांय । इस के साथ ही मुनाफाखोरों के ऊपर पूरी निगाह रक्खी जाय ताकि वह स्थिति का बेजा फायदा न उठा सकें । यह देश का दुर्भाग्य ही कहा जायगा कि मुनाफाखोर वहां पर युद्ध की तरफ ऐसे ही देखते हैं जैसे कि गिद्ध मृत शरीर की ओर देखता है । इसलिए यह जरूरी है कि इन मुनाफाखोरों और असामाजिक तत्वों पर कड़ी से कड़ी निगाह सरकार रक्खे । कहीं चीन की योजना सफल न हो जाय । चीन की योजना है कि यह युद्ध बहुत दिन तक चलता रहे । युद्ध अगर बहुत दिन तक चलता रहे तो वहां पर हमारी योजना फेल हो जाने का डर है । स्वयं हमारे अपने देश में चीनियों के दलाल पैदा हो जायेंगे और हमारी शक्ति हमारे खिलाफ चली जायगी । इसलिए मुनाफाखोरों को पूरी दृढ़ता के साथ रोकना चाहिए ।

एक बात मैं अन्त में अपने आदरणीय पंडित जी से कहना चाहता हूं और मैं चाहूंगा कि कांग्रेस पार्टी के जिम्मेदार सदस्य जो यहां इस अवसर पर बैठे हैं वह उन तक मेरी यह बात पहुंचा दें कि अगर प्रधान मंत्री महोदय चर्चिल बनना चाहते हैं तो वह केवल "वी" कहें । चर्चिल युद्ध के जमाने में खाली विक्टरी, विक्टरी कहते थे । उस समय वह बड़े बड़े भाषण नहीं करता था । जाहिर है जितना जो कोई ज्यादा बोलेगा उतनी ही वहां पर खामियां भी हो सकती हैं । आज का समय गहुत गम्भीर समय है । आदरणीय पंडित जवाहर लाल को जो कि हम सब के प्रधान मंत्री हैं, जो हम सब के रहनुमा हैं, जो हम सब के रक्षक हैं और जो हम सब के आज चर्चिल बने हुए है उन को रक्षा करने के साथ साथ इन सब बातों पर भी ध्यान रखना चाहिए ।

इस संकट काल के समय में मैं भारतीय रिपब्लिक पार्टी की ओर से पूरी पूरी ताकत और समर्थन देते हुए कहता हूं कि अगर पूंजीपति लोग आप को रुपया देने को तैयार हैं, विद्वानों के पास आपको विद्वत्ता देने को है तो मैं रिपब्लिकन पार्टी की ओर से जो कि भारतवर्ष के गरीबों का प्रतिनिधित्व करती हैं, आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हम आपको सरहदों पर लड़ने के लिए जवान देंगे । हमारी माताओं ने ऐसे लाल जने हैं जो कि वहां नेफा और लद्दाख में जाकर लड़ेंगे । मादरेवतन की हिफाजत के लिए वह कुछ भी कसर न उठा रक्खेंगे ।

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, अब देखना है कितनी ताकत वाजुए कातिल में है ।"

यह हालत आज कल हमारी है । हम चीन से किसी माने में कम नहीं हैं । लेकिन आज वक्त का तकाजा यह है कि हर एक स्त्री और पुरुष को फौजी शिक्षा दी जाय और छुट्टियों को इस तरह से इस्तेमाल किया जाय । यह मिनिस्टरों के जो बड़े बड़े कैम्प बने हुए हैं उन को भी कुछ कम किया जाय । गरीब मजदूर सवा रुपये में से ४ आने सुरक्षा फंड में दे रहे हैं लेकिन वाह रे मिनिस्टरों की टोलियां कि उन में कोई कमी होती नजर नहीं आ रही है । आज से तीन दिन पहले मुझे एक दोस्त ने क्लब में बुलाया था । वहां पर जा कर मैं ने देखा कि एक मंत्री महोदय बैठे हुए नाच देख रहे थे । आज जब कि नेफा में चीनी आक्रमणकारियों से हमारे भारतमाता के सपूत लड़ रहे हैं और अपना खून

[श्री मौर्य]

बहा रहे हैं हमारे मिनिस्टर्स क्लबों में नाच देख रहे हैं । आज भी सिनेमाघर उन सभ्य लोगों से भरे पड़े हैं जो कि दूसरे लोगों को पाकिस्तान का एजेंट बतलाते हैं । मैं केवल यही कहता हूं कि इस तरह की ऐशो आराम की और दूसरों को पाकिस्तान का एजेंट बतला कर बैठे रहने वालों को अपनी यह भावना छोड़ देनी चाहिए । समता के नाते, भाईचारे के नाते और भारतमाता को सदैव सदैव के लिए जीवित रखने के लिए और उस आजादी को जो कि हमें बहुत कुर्बानी देने के बाद हासिल हुई है उस को जीवित रखने के लिए चीनी आक्रमणकारियों को हम ऐसा सबक दें कि आज के ही चीनी नहीं बल्कि १००० और २००० वर्ष बाद आने वाले चीनी बालक भी भारतवर्ष की मार को सदा के लिए याद रखें । इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात को समाप्त करते हुए और आप को धन्यवाद देते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूं ।

†**श्री रा० गि० दुबे** (बीजापुर उत्तर) : श्री बागड़ी जी ने श्रीमती गांधी का जिस तरह उल्लेख किया है वह ठीक नहीं है । हमें व्यक्तिगत उल्लेख न कर के सिद्धान्त की बात करनी चाहिए । हमारे प्रधान मंत्री भी व्यक्तिगत उल्लेख पसन्द नहीं करते परन्तु कई बार हमें किसी के व्यक्ति पर भी निर्भर करना ही होता है । बहुत से देशों में व्यक्तियों ने बहुत से ऐतिहासिक महत्व के महान कार्य किये हैं । महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व के कारनामे तो हमें मालूम ही हैं । स्वयं सरदार पटेल यह कहा करते थे भाई, हमें तो कुछ मालूम नहीं होता । जो गांधी जी कहें । भारत छोड़ो आन्दोलन के समय वह 'हरिजन' में लेख लिख कर देश में एक अग्नि जला रहे थे ।

आज भी देश में नेहरू का व्यक्तित्व कार्य कर रहा है । हमें इस बात को समझना चाहिए और कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जो प्रधान मंत्री की स्थिति को कमजोर करने वाला हो । वह इस समय सारे राष्ट्र की एकता के प्रतीक हैं ।

हमारी तटस्थता की नीति के बारे में विभिन्न प्रकार की बातें कही गयी हैं । मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि हमने अपने सभी पड़ौसी देशों को अपना मित्र बनाना चाहा । परन्तु चीन ने इस का दुरुपयोग किया और हम पर चढ़ आया । ऐसा करने से हमारे राष्ट्र का आत्म भारत जागृत हो उठा है । आज भारत के प्रत्येक नगर और गांव में एक जागृति दिखाई देने लग गयी है । सारी स्थिति पर विचार करते हुए मेरा मत यह है कि यह नहीं कहा जा सकता कि हमारे द्वारा अपनाई गयी तटस्थता की नीति गलत है ।

हमें चीन का मुकाबला करना है, इस उद्देश्य के लिए मेरा विचार यह है कि हमें अपने सशस्त्र बलों में एक दृढ़ प्रकार के नेतृत्व की व्यवस्था करनी चाहिएं । हमारे सैनिक और जनरल वीर तो हैं परन्तु उन्हें वर्त्तमान युद्ध के ढंग सिखाये जाने चाहिए । मेरा मत तो यह है कि हमारी प्रतिरक्षा व्यवस्था को पूर्ण रूप से बदल देने की आवश्यकता है । यदि आवश्यक समझा जाय तो सेवानिवृत्त जरनैलों को भी बुला लिया जाना चाहिए । हमें अपनी सैनिक शक्ति को मजबूत बनाना ही होगा । राष्ट्रीय सेवा दल संगठित किया जाना चाहिए ।

दलाई लामा को पुनः तिब्बत ले जा कर तख्त पर बैठाने की बातें हम नहीं करनी चाहिएं । परन्तु अपने धर्म स्थानों की रक्षा अवश्य करनी चाहिए । हमेशा चीनी सेनावाद

को तोड़ना है, अतः हमें मित्र देशों से शस्त्रों और सामान को प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न करते रहना चाहिए। साथ ही आज ही असामान्य स्थिति और आपात को देखते हुए हमें अपनी अर्थ व्यवस्था को प्रतिरक्षा की आवश्यकताओं के अनुसार ढालना होगा। अभी तो संघर्ष आरम्भ हुआ है, शायद आगे हमें अपने जीवन तक की बाजी लगानी पड़े।

इन शब्दों से, मैं सरकारी संकल्पों का समर्थन करता हूं।

श्री स० मो० बनर्जी (कानपुर): अध्यक्ष महोदय, आज हमारे देश के सामने विकट परिस्थिति है। हमारी लहराती हुई आजादी को चीन ने ललकारा है। उसका मुकाबला करने के लिए मैं समझता हूं आज देश पूरी तरह से तैयार है। जितने भी भाषण मैंने सुने, उन सभी से यही ध्वनि निकलती है कि इस देश का बच्चा बच्चा आज इस चीज के लिए तैयार है कि वह अपने तन मन धन को अपने हर दिल अजीज प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के चरणों में न्यौछावर कर दे, जो भी कुर्बानी वह देश की रक्षा के लिए मांगे, दे।

मैं समझता हूं कि देश के सामने जो संकट है, उसके कारणों को अगर हम ढूंढें या उन का हम पोस्ट मार्टम करें तो उस से कुछ होने वाला नहीं है। आज तो जरूरत इस बात की है कि हम लोग तैयारी करें।

सुरक्षा मंत्री के के बारे में जो इस्तीफा दे चुके हैं, बहुत कुछ यहां कहा गया है। सुरक्षा कारखानों के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। मैं एक बात कहना चाहता हूं। १९५३ में सुरक्षा कारखानों में छंटनी हो रही थी। उस वक्त इसी सदन के सामने मैं ने और मेरे कुछ साथियों ने पर्चा ले कर लोगों की सेवा में पेश किया था जिसका शीर्षक था 'प्रतिरक्षा आवश्कताओं में देश को आत्म-निर्भरता की ओर ले जाओ। मुझे अच्छी तरह से याद है कि पुलिस लालों की लाठियों ने हम लोगों को यहां से हटा दिया था। उस वक्त भी और उसके बाद भी बार बार हम ने कहा था कि अंग्रेजों की यह चाल थी कि इन आर्डिनेंस फैक्ट्रियों में जहां पर साढ़े छः लाख कर्मचारी काम करते थे, लड़ाई के जमाने में, उनकी तादाद लड़ाई के बाद घटा कर २,५३,००० कर दी जाए, और उन्होंने ऐसा किया भी। उस वक्त जब यह सुझाव हम ने रखा कि यहां पर उत्पादन बढ़ाया जाए, छंटनी न की जाए, पूरी तैयारी की जाए, इन मशीनों को जंग न लगने दिया जाए तो लोगों ने हंस कर कहा था कि तुम टैक्नीकल आदमी नहीं हो, तुम्हें क्या मालूम है। इतना ही नहीं बल्कि १९५६ में छंटनी भी कर दी गई। १९५४ में हम लोगों को अच्छी तरह से मालूम था कि चीन अपनी सड़कें बनवा रहा है, हो सकता है कि चीन हम पर हमला करे और अगर हम को यह बात अच्छी तरह मालूम नहीं थी तो हमारे देश के कर्णधारों को बहुत अच्छी तरह से मालूम था। लेकिन यह होते हुए भी २४ सितम्बर १९५६ को सात हजार जीते जागते टैक्नीशियंज की लाशों को निकाल बाहर कर दिया गया। इसके विरोधस्वरूप हड़ताल हुई, बार बार कहा गया, डा० मिसिज मैत्री बोस, साथी एस० एम० जोशी तथा दूसरे मित्रों ने भी कहा और इस सदन में भी बार बार इस चीज को रखवाने की कोशिश की गई कि यह जो रिट्रेंचमेंट हो रही है, इससे हो सकता है देश का नुक्सान हो लेकिन उस वक्त हमारी बात को सुना अनसुना कर दिया गया। आज अचानक गीयर अप करने की बात आती है। हमारे सुरक्षा मंत्री श्री कृष्ण मेनन साहब ने इस्तीफा दिया, ठीक किया। उनको पहले ही दे देना चाहिये था। यह सही है कि दोष उन के ऊपर डाल दिया जाए। मगर मैं यह कह सकता हूं सुरक्षा कारखानों के

[श्री स० मो० बनर्जी]

बारे में जिन के साथ मेरा बड़ा जबर्दस्त ताल्लुक है, सुरक्षा कर्मचारियों की फेड्रेशन के बिहाफ पर तथा उसका सभापति होने के नाते जिसकी मैम्बरशिप १,२०,००० है, कि आपने छंटनी करके बड़ी भूल की । लेकिन छंटनी होने के बावजूद भी सन् १९५७ के बाद से इन फैक्ट्रियों का प्रोडक्शन बढ़ा है । इसमें कोई शंका की बात नहीं है, कोई शक की बात नहीं है और इसे कहने में हमें कोई गुरेज नहीं होना चाहिय । लेकिन साथ ही साथ मैं यह भी कहूंगा कि क्या क्या तैयारी में कमी रही, इसकी जांच होनी चाहिय, चाहे वह आज हो या फिर कभी हो, लेकिन, जब कभी भी हो तो वह १९५२ से हो जब कि रिट्रेंचमेंट हुआ था । यह भी पता लगाया जाए कि १९५६ में फिर रिट्रेंचमेंट क्यों हुआ और क्यों ३३ परसेंट मशीनें चला करती थीं । आटोमेटिक वैपंज, ब्रेन गंज, स्टेन गंज का कारखाना हैदराबाद से हटा कर के कानपुर में ला कर क्यों चालू नहीं हुआ और दूसरे कारखानों में क्यों बनना शुरू नहीं हुआ । जो रिवर्सिस हुए हैं, इसलिए नहीं हुए हैं कि हमारे जवानों की छातियां ३६ इंच से ३४ इंच हों गई थीं । लेकिन ये रिवर्सिस इसलिए हुए कि शायद उनके पास वे हथियार नहीं थे जो होने चाहिए थे । हमारे जवानों ने जिस बहादुरी से दुश्मन का मुकाबला किया है, उसकी मैं तारीफ किए बगैर नहीं रह सकता हूं । भारत का इतिहास यह नहीं रहा है कि दुश्मन के सामने हथियार डाल दिये जायें, बल्कि यह रहा है कि लड़ते लड़ते जान दे दी जाए मगर देश की हर कीमत पर रक्षा की जाए । जिन जवानों ने अपनी जान दी है, उनको मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । चीनियों के पास शायद अच्छे हथियार थे, अच्छे साधन थे । लेकिन फिर भी हम ने उन का मुकाबला किया है । मुझे पूरा विश्वास है कि हम निश्चय ही जीतेंगे । लेकिन आज पोस्ट मार्टम करने का वक्त नहीं, लेकिन एक न एक दिन वह करना ही पड़ेगा और लोगों को जिम्मेदार ठहराना ही पड़ेगा । आज यह स्पष्ट है कि ढाई हजार जवान कुर्बान हो चुके हैं और साथ ही साथ चीन की विस्तारवादी नीति का पहला शिकार, उसकी पहली केजुअल्टी जो हुई है, वह हिन्दुस्तान के डिफेंस मिनिस्टर की हुई है ।

चीन ने जो कुछ कहा, उस पर हमारे प्रधान मंत्री ने विश्वास किया, पंचशील के आधार पर, शान्तिमय ढंग से उन्होंने समस्याओं को सुलझाने की कोशिश की । लेकिन चीन ने हमला किया, हर तरीके से सीमाओं को पार करने की कोशिश की लेकिन इतना होने पर भी हमारे प्रधान मंत्री ने शान्तिमय ढंग से मुकाबला करने की कोशिश की, उन्होंने जनता में, उन्होंने देश में वार साइकोसिस फैलाने की कोशिश नहीं की । चीन ने दगाबाजी की, यह हम सभी जानते हैं । मैं कहना चाहता हूं कि इतना बड़ा डिसइल्यूजनमेंट मुझे कभी भी पहले अपने जीवन में नहीं हुआ जितना इस घटना से हुआ है । जिस देश को समाजवादी देश कहा जाता है, वह ऐसा कर सकता है, इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था । रूस से ज्यादा इज्जत मैं चीन की करता था चीन के किसानों की करता था, चीन के मजदूरों की करता था । चीन के किसानों के और हमारे किसानों के काम करने के तरीके एक से हैं, चीन के मजदूर भी उतने ही मेहनती हैं जितने हमारे मेहनती हैं, चीन के सामने भी गरीबी उतनी ही है जितनी हमारे देश के सामने है । कभी कभी मेरे दिमाग के सामने यह तस्वीर आती थी कि शायद एक रोज चीन के ६५ करोड़ लोग और हिन्दुस्तान के ४० करोड़ लोग एक हो जायें । अगर ऐसा हो सकता तो साम्राज्यवादी एशिया वालों का एशिया वालों के साथ कभी भी लड़ाने में सफल नहीं हो सकते थे । आज चीन मैं समझता हूं कि समाजवादी देशों के माथे के कलंक का टीका बन गया है ।

साम्राज्यवादियों ने नारा दिया था कि एशिया वालों को एशिया वालों से लड़ाया जाए लेकिन वे अपनी नीति में सफल नहीं हुए, उस नारे को वे अमली जामा नहीं पहना सके। लेकिन चीन ने आज उनके इस नारे को अमली जामा पहना दिया है। आज उन लोगों को जुबान दे दी है जिन की जुबान नहीं चलती थी।

१४ अगस्त को इसी सभा भवन में मैं ने एक बात कही थी जो मैं आज फिर दोहराना चाहता हूं। मैं बड़ी बड़ी बातें तो नहीं करता और न मैं पूरे हिन्दुस्तान की तरफ से बोल सकता हूं और न मुझ में इतनी कुव्वत है। लेकिन आज भी मैं आप को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि ११ लाख कानपुर के आदमी गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा डाली गई परम्परा का पालन करते हुए इस देश की खातिर अपने बाल बच्चों तक को न्यौछावर करने के लिए तैयार हैं। ढबर भाई यहां नहीं हैं वर्ना मैं उनकी खिदमत में पेश करता कि पहला दीवाली का त्यौहार हर एक ने मनाया होगा लेकिन कानपुर के सुरक्षा कारखानों के बीस हजार मजदूरों ने नहीं मनाया, उन्होंने कहा कि दीवाली नहीं आज तो मतवाला बनने का वक्त है और देश की खातिर मर मिटने का वक्त है। उन्होंने अपने घरों में चराग तक नहीं जलाये। वे हर कोई कुर्बानी करने के लिए तैयार हैं। पहली तारीख को ३१,००० रुपए इन सुरक्षा कारखानों के मजदूरों ने एक एक दिन की तनख्वाह ईमानदारी के साथ नए पैसे तक दे दी है। मैं आपको यह भी विश्वास दिलाना चाहता हूं कि अगर जरूरत होगी तो ये मजदूर १४-१४ और १५-१५ घन्टे काम करने के बाद भी आठ घंटे के ही पेसे लेंगे।

पे कमीशन की रिपोर्ट है और उसमें महंगाई भत्ते का सवाल है। लेकिन आज वह सवाल भी देश के सामने नहीं है। कोई दूसरा सवाल भी नहीं है। आज तो सवाल यही है कि तिरंगे झंडे को किस तरह से थामे रखा जाए और नारा यह है कि प्रधान मंत्री जी के साथ कदम मिला कर चलो। इसमें सभी राजनीतिक पार्टियां एकमत हैं। कोई मतभेद नहीं है। देश को आज तिरंगे झंडे के सिवा और कुछ नजर नहीं आना चाहिये। आज हमारा यही नारा होना चाहिये कि एक हाथ में तो तिरंगा झंडा हो और दूसरे में राइफल हो और जब ऐसा होगा तभी देश की रक्षा हो सकती है। यही भावना आज हमारे दिल और दिमाग में होनी चाहिये।

आज जब चीन ने हमला किया है तो तिब्बत की बात की जाती है, मानसरोवर की बात की जाती है, कैलाश की बात की जाती है। यह क्यों की जाती है, इसको हमें देखना है। तिब्बत के खत्म हो जाने के बाद लोगों ने सोचा यह था कि चीन हमें धोखा नहीं देगा, हिन्दी चीनी भाई भाई का नारा जो बुलन्द हुआ था और गली गली में गूंजता था, वह इस भाई भाई के रिश्ते को निभायेगा लेकिन इसका सिला उसने हम को हम पर आक्रमण करके दिया। अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि पंचशील के जन्मदाताओं में भी वह थे और उन्होंने पंचशील के टुकड़े टुकड़े कर के समाजवाद के माथे पर कलंक का टीका लगा दिया। मैं समझता हूं कि इस का हाल आज नहीं तो कल, जब आगे का इतिहास लिखा जायेगा, उस वक्त हमारी आने वाली नस्लें पढ़ेंगी। उस में चीन को कोई समाजवादी नहीं कहेगा। कहेगा कि वह खूनी विस्तारवादी है। उस के माथे पर हमेशा के लिये कलंक का टीका लग जायेगा। मेरा निवेदन यह है .....

श्री यशपाल सिंह : कम्यूनिस्टों ने क्या किया ?

श्री स० मो० बनर्जी : मैं श्री यशपाल सिंह से कहूंगा कि कम्यनिस्ट पार्टी के भाइयों में भी त्याग और बलिदान की मूर्तियां हैं। कम्यूनिस्ट पार्टी के अन्दर ही वह करनैल सिंह भी था, २२ साल का नौजवान, जिस ने तिरंगे झंडे की रक्षा के लिये गोआ में गोली खाई थी। उस के हाथ में लाल झंडा नहीं था, तिरंगा झंडा था। इस लिये मैं कहूंगा कि हम लोग पूरी कम्यनिस्ट पार्टी पर शक न करें। अगर यह प्रस्ताव साल भर पहले आता तो किसी को कम्यूनिस्टों पर शक न होता। उस का समर्थन कोई और भी करता। जो लोग त्याग पर शक करते हैं, जो नीति पर शक करते हैं वह गलती करते हैं। आज उन पर शक करना चाहिये जो आलोचना करते हैं। आज भाषण नहीं, काम चाहिये, आलोचना नहीं तैयारी चाहिये। चीन के घर घर में तैयारी हो रही है, हमारे घर घर में सोचा जाता है कि कौन सी न्यूज करेक्ट है। मैं कहना चाहता हूं कि आज तैयारी का जमाना हैं, भाषणों का जमाना नहीं है। इस का एक कारण है कि प्रजातांत्रिक उसूलों के आधार पर आलोचना करना हम ने सीखा है ; ठीक हैं, लेकिन इस वक्त में एक चीज का हिन्दुस्तान के प्रधान मंत्री जी को विश्वास दिलाता हूं, और वह यह है कि उन की तटस्थ नीति का सब समर्थन कर रहे हैं, और मैं समझता हूं कि उन की तटस्थ नीति रहते हुय उन को अमरीका से मदद मिलेगी, इंगलैंड के मदद मिलेगी, फ्रांस से मदद मिलेगी। जिस दिन हम ने अलाइन किया साम्राज्यवादी शक्तियां सोचेंगी कि यह उन के ऊपर है कि किन शर्तों के आधार पर हमें हथियार दें। मैं उन का स्वागत करता हूं, उन को बधाई देता हूं, जिन देशों ने आज हमारी मदद की है। मैं अमरीका की कुछ नीतियों के खिलाफ हूं, मैं साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ हूं, लेकिन मैं कहता हूं कि इस आड़े वक्त में अगर वह हमारा साथ देती हैं तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन आज नानअलाइनमेंट की नीति को खत्म किया जाये, आज पंचशील का मजाक उड़ाया जाय, यह ठीक नहीं हैं। मैं ने इस के इजवस्तिया और प्रावदा के एडिटोरियलों को पढ़ा है। मुझे दुःख हुआ। जिस भिलाई को देख कर मैं खुश होता था, उसी रूस के बयानों को देख कर मुझे दुःख के साथ गुस्सा भी हुआ। लेकिन फिर भी मैं समझता हूं कि मुझे रूस से यह कहना है कि वह इस बात को सोचे और वास्तविकता के आधार पर अगर वह निर्णय देना चाहते हैं तो निर्णय दें। मैं आशा करता हूं कि अगर वह न्याय और वास्तविकता के आधार पर हमारी रिपोर्ट को पढ़ेंगे और उस के बाद निर्णय करेंगे तो उनका हाथ हमारी तरफ बढ़ना चाहिये, चीन की तरफ नहीं। मुझे इस चीज को देख कर दुःख हुआ, किन आज यह कहना कि हमारी तमाम नीति को बदला जाय, प्रधान मंत्री के बारे में कहा जाय कि एक नई कैबिनेट बनाई जाय, यह ठीक नहीं है। मैं पूछना चाहता हूं कि आज प्रधान मंत्री जी से ज्यादा देश की जनता को किस पर विश्वास है ? मैंने किसी में भी जनता का इतना विश्वास नहीं देखा। कल मैं उन के भाषण को उन के करीब बैठ कर सुन रहा था, जहां पर एक लाख से ज्यादा सरकारी कर्मचारी प्लेज ले रहे थे, कस्म खा रहेथे, कि खून की आखिरी बूंद भी दे देंगे। मैं समझता हूं कि सरकारी कर्मचारियों पर विश्वास होना चाहिये, । देश की जनता पर विश्वास हो और एक ही शख्स पर विश्वास हो, और डंके की चोट पर हम को इस बात को कहना चाहिये और इस देश की जनता को भी समझना चाहिय कि हम नेहरू जी के नेतृत्व में ही जीना चाहते हैं और नेहरू जी के नेतृत्व में ही मरना चाहते हैं। आज सब को इतना विश्वास होना चाहिय। आज हम लोग ज्यादा आलोचना न करें।

लेकिन इस के साथ ही साथ हमारे सामने कुछ कर्त्तव्य भी हैं। मैं चाहता हूं कि पार्लियामेंट के मेम्बरान, हर एक सदस्य, एक हजार वालेंटियर इकट्ठा करे। अगर हम गहने देने के लिये अपनी बहनों से कहते हैं तो मैं कहना चाहता हूं कि उन के सारे गहने मंगल सूत्र को छोड़ कर एक दिन में इस सदन में आ जायेंगे। मैं चाहता हूं कि यहां के ५०० मेम्बर एक एक हजार वालेंटियर दें। मेरा दिल चाहता है कि मैं सोचूं कि यहां पर इस तरह के १०, ००० मतवाले हो सकते हैं।

जब यहां जंग चल रही है, जब हमारी सेनायें उन की सेनाओं से लड़ रही है, जब चीनियों को खदेड़ने की योजनायें बन रही हैं, अगर मैं इस मौके पर इस तरह का प्रस्ताव करूं तो यह एक अचम्भे की सी बात होगी, लेकिन फिर भी मैं कहता हूं । श्री हनुमन्तैया ने नानवायोलेंस की पालिसी को हंस कर टालने की कोशिश की, श्री राजेश्वर पटेल जी का भाषण मैंने सुना, उन का नानअलाइनमेंट से विश्वास डगमगाने लगा, इस लिये मैं कहता हूं . . . .

†**श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा** : निवेदन है कि किसी सदस्य का नाम न लिया जाये ।

अध्यक्ष महोदय : जब और तकरीरें हो चुकी हैं तो मैं उन को कैसे रोक सकता हूं ?

श्री स० मो० बनर्जी : लास्ट पार्लियामेंट में माननीय सदस्य नहीं थे, नये आदमी हैं । मुझे ताज्जुब हुआ उन लोगों के भाषणों को सुन कर ।

श्री यशपाल सिंह : आलोचना के लिये आप मना कर रहे हैं और आप खुद ही करते जा रहे हैं ।

श्री स० मो० बनर्जी : आज देश के सामने जो लक्ष्य है वह लक्ष्य क्या है ? अहिंसा की नीति को बदल दें ? भले ही आज हमारी सेनायें लड़ रही हैं लेकिन मेरी बात भी ठीक हो सकती है । मैं दावे से कहता हूं कि जितने भी पार्लियामेंट के मेम्बर हैं, अगर उन में से कुछ भाई इस बात पर तुल जायें कि दस हजार निहत्थे आदमी ८ सितम्बर की पोजीशन पर पहुंचने की कोशिश करेंगे, कह दिया जाय उन चीनी दरिन्दों से, चीनी विस्तारवादियों से कि हमारी आर्मी तो आप से लड़ेगी ही, लेकिन नैतिक आधार पर हम तुम से लड़ना चाहते हैं, आओ । तुम ने समाजवाद के माथे पर कलंक का टीका लगाया है । मैं चाहता हूं कि दस हजार इस तरह के आदमी, जिन के हाथों में झंडा हो, नैतिक बल के आधार पर, गांधी जी के सिद्धान्तों पर जाने की कोशिश करें । अगर ऐसा किया जायेगा तो इस का असर होगा और सारी दुनियां जान जायेगी, अगर इतने लोगों का खून बहेगा ।

दूसरी चीज मैं कहना चाहता हूं कि हमें और कुछ भी नहीं करना है । १४ नवम्बर को जिस दिन बाल दिवस है, पूज्य नेहरू जी के सामने छोटे छोटे बच्चे आते हैं और "चाचा नेहरू" कह कर पुकारते हैं । मैं आप से दरख्वास्त करूंगा और मैं भी तैयार हूं, कि हम बाल दिवस के बदले "पुत्रदान दिवस" मनायेंगे ? हम में से हर एक आदमी एक एक पुत्र दान करने के लिये तैयार है । हम कहें कि यह रहा आप के चरणों में । अगर देश की धरती से चीन को हटाने के लिये इस की जरूरत हुई, तो यह रहा हमारा नौनिहाल, यह रहा आप का बच्चा, अगर आप इस को भी कुर्बान कर सकें तो कीजिये ।

अब रहा रिसोर्सेज का सवाल । उस के बारे में मुझे एक ही चीज कहनी है । गरीब लोग सब कुछ दे रहे हैं और दे डालेंगे । लेकिन आज अमीरों से भी मेरी कुछ मांग है । मैं चाहता हूं इनकम टैक्स के एरियर्स का एक एक पैसा, जो कि १३१ करोड़ रु० के करीब होता है, एक महीने के अन्दर मोरारजी भाई के चरणों में आ जाय । फारेन बैंक्स में जितने अकाउंट्स हैं, वह मालूम हों । हमारे यहां आज विदेशी मुद्रा की कमी है । हमें मालूम है कि लगभग २०० या ३०० करोड़ रुपया विदेशी बैंकों में जम है । अगर वह लोग हिन्दुस्तानी हैं, देश के प्रति उन में प्रेम है, तो मैं चाहूंगा कि वह लोग अपना सारा अकाउंट डिक्लेअर करें । २४ नवम्बर, १९६१ तक उन को डिक्लेअर करने की बात थी, लेकिन वह बात नहीं हुई । मैं चाहता हू कि फारेन बैंक्स को देख कर उन अकाउंट्स

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री स० मो० बनर्जी]

को सीज किया जाय और देश के लिये जंगी हथियार खरीदने के लिये उस से पैसा निकाला जाय। सरमायेदारों से मुझे कहना है कि १९६१-६२ की अपनी वैलेन्स शीट्स को देख कर ५० फी सदी मुनाफा केन्द्रीय सरकार को नेशनल डिफेंन्स फंड के लिये दें। आखिर उन्होंने मुनाफा दिखाया ही होगा और यह काम मुश्किल नहीं होना चाहिये। कोई भी सरकारी कर्मचारी १,००० रु० मासिक से ज्यादा न ले। जब आज ५ फी सदी छोटे छोटे मजदूर भी देने के लिये तैयार हैं, तो जिन लोगों की तन्ख्वाह १०० रु० से ज्यादा हो वह ५ फी सदी और जिन लोगों की तन्ख्वाह १०० रु० से कम हो वह २ फी सदी नैशनल डिफेंस फंड में तब तक के लिये दें जब तक चीनी आक्रमणकारी को इस देश की धरती से हटा नहीं देते। यह रहा हमारे रिसोर्सेज के बारे में।

अब सवाल आता है देश को तैयार करने का। हमारे नौजवानों की एक कतार सेकेन्ड लाइन आफ डिफेन्स के लिये हो। इस के लिये लोगों को कम्पल्सरी मिलिटरी ट्रेनिंग दी जाये और सेकेन्ड लाइन आफ डिफेन्स बनाई जाये। यह लड़ाई हमें लड़नी है और आखिरी दम तक लड़नी है, क्योंकि रेजोल्यूशन कहता है :

"हाऊएवर लांग इट मे बी"

चाहे कितनी लम्बी यह लड़ाई हो, लेकिन हम सांस नहीं लेंगे जब तक देश की धरती से चीनियों को खदेड़ नहीं देंगे।

इसके बाद मैं चाहता हूं कि १७ साल से ५० साल के जो हमारे भाई है उन को अनिवार्य मिलिटरी ट्रेनिंग दी जाय। जो हमारी बहनें है उन के लिये १५ दिन का फर्स्ट एड कोर्स चाहे रेड क्रास आर्गेनाइज करे या जगह जगह हास्पिटल आर्गेनाइज करें। मैं चाहता हूं कि यह १५ दिन का कोर्स फर्स्ट एड का जरूर चलाया जाय ताकि ट्रेन्ड नर्से हमारे यहां हर समय तैयार रहें। और मैं दोबारा सदन के सामने यही निवेदन करना चाहता हूं कि हम लोग एक इन्सान के मानिन्द खड़े हो जाएं। पंडित जी के सामने आज एक ही चीज है। इस देश की जनता तैयार है। मैं कहता हूं कि कानपुर में या दूसरे शहरों में जब जलूस निकाले गए तो लोगों में अजीब जोश था। उनके मुंह में एक ही नारा था :

मातृभूमि की लाज बचाने ओ भारत के वीर चलो।

और उन्होंने जो परचे निकाले उनमें फैज की यह कविता थी :

करते भी चलो मरते भी चलो, बाजू भी बहुत है सर भी बहुत,
बढ़ते ही चलो, पर मंजिल पर ही डेरे डाले जाएंगे।

और मुझे यह देख कर खुशी हुई।

एक बात मैं और कहना चाहता हूं। मुझे श्री प्रकाशवीर शास्त्री की यह बात सुन कर दुःख हुआ कि ६ करोड़ यहां के मुसलमान आज पाकिस्तान का रेडियो सुनते है। उनको इस देश का इतिहास मालूम है.....

श्री रघुनाथ सिंह : उन्होंने मुसलमान का नाम नहीं लिया था।

श्री स० मो० बनर्जी : तो मैं इसे छोड़े देता हूं। उन्होंने यह कहा कि यहां के ६ करोड़ लोग पाकिस्तान का रेडियो सुनते हैं। मैं उन से निवेदन करूंगा कि उनको यह न भूल जाना चाहिये कि अगर हम राणा प्रताप और गुरु गोविन्द सिंह की संताने इस देश में बसती हैं तो सुलतान टीपू और सिराजुद्दौला की संताने भी इसी देश में बसती हैं। और इसी देश में भगत सिंह और अशफाक उल्ला इनकलाबी तराने गाते गाते एक साथ फांसी के तख्ते पर झूले थे।

आज हमको श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की परम्पराओं पर चल कर लड़ना है। हमको हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई रह कर दुश्मन से लड़ना है, हमको चीन से लड़ना है और हम उस से लढ़ेंगे। मैं प्रधान मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि उन्होंने देश को जाग्रत किया है, उनको देश का आहवान करना चाहिए। आज हमारे सामने एक ही झंडा है। उसी तिरंगे झंडे को लेकर हमें उनके नेतृत्व में जीना और मरना है।

अध्यक्ष महोदय : एक चीज और मुझे तकलीफ की नजर आ रही है। अब तक ३४ आदमियों ने अपने नाम दिए हैं। अगर एक एक को दस दस मिनट का टाइम भी दिया जाए तो ६ घंटे का वक्त तो इसी में गुजर जाएगा। इनके अलावा और लोग भी होंगे। मैंने कहा था कि मैं इन ३४ लोगों को प्रिफरेंस दूंगा, लेकिन इस प्रिफरेंस में थोड़ा सा माडिफिकेशन करना चाहता हूं। मैं उनको वक्त दूंगा लेकिन यह जरूरी नहीं कि सब से पहले उनको बोलने का वक्त दिया जाए। लेकिन इन ३४ सदस्यों को मैं वक्त जरूर दूंगा।

दूसरी बात मैं उन से यह दरखास्त करूंगा कि अगर हो सके तो दस मिनट के बजाए वे अपनी बात सात मिनट में पूरी करें। जो सजेशन उनको देने हो दे दें। आज भी कुछ सदस्य चले गए और जो बैठे थे उन्होंने भी कहा कि हम और बैठने के लिए तैयार नहीं है। सोमवार को उन्होंने बैठने को कहा। इसलिए मैं अब हाउस को एडजर्न करता हूं। आपने जो वायदा किया था वह पूरा नहीं किया लेकिन मैंने जो वायदा किया है वह पूरा निभाऊंगा। जो साहब बैठेंगे उनको मैं खाना दूंगा और खाना तैयार करने का नोटिस दे रखूंगा। सोमवार को जो भी मैम्बर बोलना चाहेगा मैं उनको मौका दूंगा। अब हम सोमवार को ११ बजे मिलेंगे।

इसके पश्चात् लोक-सभा सोमवार, १२ नवम्बर, १९६२/कार्तिक २१, १८८४ (शक) को ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई।

दैनिक संक्षेपिका

शनिवार, १० नवम्बर, १९६२
१९ कार्तिक, १८८४ (शक)

	विषय	पृष्ठ
	प्रश्नों के मौखिक उत्तर	२४९—८०
	तारांकित प्रश्न संख्या	
८४	सीमेंट उद्योग	२४९–५०
८५	कावेरी बेसिन में तेल	२५०–५१
८६	सोने की मानक दर	२५१—५३
८७	अखिल भारतीय शिक्षा सेवा	२५३–५४
८८	चोरी छिपे लायी गयी घड़ियों का पकड़ा जाना	२५५–५६
८९	अमरीकी पर्यटकों से सोना बरामद होना	२५६
९१	दक्षिण में तेल शोधक कारखाना	२५७–५८
९२	सड़क से कोयला ले जाना	२५९—६२
९३	विदेशी मुद्रा सम्बन्धी स्थिति	२६२—६४
९४	बानरस हिन्दू विश्वविद्यालय में शोध कार्य करने वाले विद्यार्थी	२६४—६५
९६	विश्वविद्यालयों में गांधी भवन	२६५—६७
९७	केरल में मशीनी औजार कारखाना	२६७—६८
९८	निर्धन योग्य छात्रों को ऋण	२६८—७०
९९	पदाधिकारियों की निवृत्ति आयु	२७०—७२
१००	पुनर्वास वित्त प्रशासन	२७२
१०१	सोलवीन समिति की सिफारिशें	२७३
१०२	हिन्दुस्तान स्टील लि० द्वारा विलम्ब शुल्क का भुगतान	२७४—७५
१०३	हिन्दी में "त्रिपिटक"	२७५
१०४	बुनयादी शिक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय बोर्ड	२७५—७७
१०५	"स्लैग" सीमेंट का उत्पादन	२७८
१०६	अंडमान के समीप जलमग्न घाटी	२७८—७९
१०७	गोआ में बैंक	२७९–८०

	विषय	पृष्ठ
	प्रश्नों के लिखित उत्तर :	२८१—३२७
	तारांकित प्रश्न संख्या	
१०८	राष्ट्रीय खेल कोष .	२८१
११०	क्षेत्रीय भाषाओं और हिन्दी की पाठ्य पुस्तक .	२८२
१११	स्कूलों की श्रृंखला . . .	२८२
११४	जीवन बीमा निगम के दावे के बारे में मद्रास उच्च न्यायालय का निर्णय	२८३
११५	राष्ट्रीय प्रतिरक्षा कोष	२८३–८४
११७	रूस से पैट्रोलियम उत्पाद	२८४
११८	राष्ट्रीय एकता .	२८४
११९	भ्रष्टाचार विरोधी समिति	२८५-८६
१२०	अमरीका से पैट्रोल उत्पादों का आयात	२८६–८७
१२१	जकार्ता में भारतीय हाकी टीम . .	२८७
१२२	यूनेस्को की सहायता से पुस्तकों का प्रकाशन	२८८
१२४	भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा मध्य प्रदेश को रायल्टी	२८८
१२५	मोटर गाड़ियों के पुर्जों की कमी	२८८–८९
१२६	जाकार्ता में चौथे एशियाई खेलकूद	२८९
१२७	उत्तर प्रदेश में विश्वविद्यालय . .	२९०
१२८	विद्यार्थियों तथा अध्यापकों का आन्दोलन	२९०
	अतारांकित प्रश्न संख्या	
१६५	विदेशों को अध्ययन के लिए दिल्ली के विद्यार्थी	२९०
१६६	निर्वाचन विधि में सुधार .	२९०–९१
१६८	इस्पात संयंत्रों के उपोत्पाद .	२९१
१६९	राउरकेला में इस्पात का उत्पादन	२९१
१७०	लद्दाख में खनिज पदार्थों की खोज	२९२
१७१	पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण	२९२
१७२	हिन्दी में उच्च शिक्षा के लिये छात्रवृत्तियां	२९२—९३
१७३	हिन्दी जानने वाले सरकारी कर्मचारी	२९३—९४
१७४	अहिंसा विश्वविद्यालय	२९४
१७५	निर्वाचन क्षेत्रों में वृद्धि . .	२९४

	विषय	पृष्ठ
प्रश्नों के लिखित उत्तर (क्रमशः)		
अतारांकित प्रश्न संख्या		
१७६	न्यूबिया में पाई गई वस्तुयें	२९४–९५
१७७	आन्ध्र में तेल	२९५
१७८	रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, वारंगल .	२९५–९६
१७९	दिल्ली में चिट फण्ड कम्पनियां . . .	२९६
१८०	भारतीय असैनिक सेवा के पदाधिकारियों का वेतन निश्चयन	२९६
१८१	दिल्ली में कुतब मीनार के चारों ओर बाड़ लगाना .	२९७
१८२	रुद्रसागर तेल	२९७
१८३	रुद्रसागर तेल . . .	२९७
१८४	रुद्रसागर कूप संख्या ४ . .	२९७–९८
१८५	उड़ीसा में सांस्कृतिक संस्थाओं को अनुदान . .	२९८
१८६	उड़ीसा में अनुचचित जाति तथा अनुसूचित आदिम जाति के विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां	२९८
१८७	आन्ध्र में स्वर्ण खान	२९९
१८८	त्रिपुरा में नये स्कूल . .	२९९
१८९	त्रिपुरा में आदिम जाति विद्यार्थी .	२९९
१९०	त्रिपुरा में हाई स्कूल	१९९–३००
१९१	सेक्शन अफसरों की तालिका	३००
१९२	कोयला तथा पेट्रोल उद्योग .	३००
१९३	विदेशी समवायों को दो गयी रायल्टी	३००–०१
१९४	आयकर कर्मचारियों के लिए क्वार्टर	३०१
१९५	अल्वाय में फैक्ट का विस्तार प्रोग्राम	३०१
१९६	आसाम के चाय बागानों के लिये कोयला	३०१–०२
१९७	परोक्ष करों से राजस्व	३०२
१९९	शीट कटिंग स्क्रैप	३०२
२००	दिल्ली में सरकारी बस्तियों में कल्याण समितियां	३०३
२०१	सिंगरेनी कोला खानें	३०३
२०३	राष्ट्रीय एकता परिषद् . .	३०४
२०४	भारतीय प्रशासन सेवा की विशेष भर्ती	३०४
२०५	अफीम और कोकीन का वर्जित व्यापार	३०४
२०६	दिल्ली के मजिस्ट्रेट . . .	३०४–०५

	विषय	पृष्ठ
प्रश्नों के लिखित उत्तर (क्रमशः)		
अतारांकित प्रश्न संख्या		
२०७	औद्योगिक ऋण . . .	३०५
२०८	नियमों में विषमता	३०५
२०९	उत्तर सीमा के अधिसूचित क्षेत्र . . .	३०५–०६
२१०	एम० ए० परीक्षा में तीसरी श्रेणी . .	३०६
२११	बोकारो कोयला खान . . .	३०६
२१२	यूरोप को जाने वाला युवक प्रतिनिधि मंडल	३०६
२१३	रूरकेला इस्पात कारखाने के रेलवे इंजन .	३०७–०८
२१४	रूरकेला में परिवहन व्यवस्था	३०८
२१५	ग्रमीलीय सहायक कमिश्नर	३०८–०९
२१६	रूरकेला	३०९
२१७	अन्दमान के विद्यार्थियों को समुद्री यात्रा की रियायत	३०९
२१८	पूर्वी क्षेत्र के मुख्य मंत्रियों का सम्मेलन	३१०
२१९	सबरूम सब-डिवीजन त्रिपुरा में हाई स्कूल	३१०
२२०	झूमिया परिवारों का पुनर्वास	३१०–११
२२१	त्रिपुरा में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी	३११
२२२	निर्यात में माल का कम बीजक बनाना .	३११–१२
२२३	कोयला खानों के लिये विश्व बैंक ऋण . .	३१२
२२६	भारत सर्वेक्षण विभाग के लिये पुनर्विलोकन समिति	३१२–१३
२२७	अखिल भारत खेलकूद कांग्रेस .	३१३
२२८	दिल्ली में विद्यार्थी विधि	३१३
२२९	दिल्ली में राष्ट्रीय संग्रहालय	३१३–१४
२३०	बरौनी तेल शोधक कारखाना . .	३१४
२३२	अखिल भारतीय सेवाओं में विभागीय उम्मीदवारों को सुविधायें	३१४
२३३	दिल्ली विश्वविद्यालय में पुस्तकालय विज्ञान का पाठ्यक्रम	३१४–१५
२३४	दिल्ली प्रशासन में पुस्तकालयाध्यक्ष .	३१५
२३५	आयात के सामान का कम बीजक बनाना . .	३१५
२३६	पाठ्य पुस्तकों के लिये कागज . .	३१६
२३७	साहित्य अकादमी की परिचय पुस्तक . .	३१६
२३८	इस्पात समवायों द्वारा ऋण का पुनर्भुगतान . .	३१६–१७

	विषय	पृष्ठ
प्रश्नों के लिखित उत्तर (क्रमशः)		
अतारांकित प्रश्न संख्या		
२३९	दिल्ली में बाल विवाह	३१७
२४०	अस्पृश्यता	३१७
२४३	पंजाब के लिये कोयला	३१७–१८
२४४	सीमेन्ट का उत्पादन	३१८
२४५	पंजाब के कांगड़ा और होशियारपुर जिलों में स्मारक .	३१८
२४६	वैज्ञानिक अनुसन्धान	३१८–१९
२४७	स्टेनलेस स्टील की चादरों का आवंटन . .	३१९
२४८	दिल्ली में मानसिक रूप से अल्प-विकसित बच्चों के लिये स्कूल	३१९–२०
२४९	नूनमती तेल शोधक कारखाना . .	३२०
२५०	इस्पात की चादरों पर अल्युमिनियम चढ़ाना .	३२०–२१
२५१	लेह में बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिए कालिज . .	३२१
२५२	राष्ट्रीय भौतिक प्रयोग शाला . . .	३२१–२२
२५३	दुर्गापुर में पहिया तथा धुरी बनाने का कारखाना .	३२२
२५४	नंगल उर्वरक कारखाना . . .	३२२–२३
२५५	हिमाचल प्रदेश तथा दिल्ली के लिए नियुक्त पुलिस पदाली	३२३
२५६	मंत्री और उनके भत्ते	३२३–२४
२५८	लोहा तथा इस्पात नियंत्रक कार्यालय . .	३२४–२५
२५९	हंगरी से ऋण	३२५
२६१	जीवन बीमा निगम की वार्षिक रिपोर्ट . .	३२५
२६२	कलाकोट कोयला खान . . .	३२५–२६
२६३	कच्छ में लिगनाइट और वोकसाइट . . .	३२६
२६४	छोटी कोयला खानों का एकीकरण . .	३२६–२७
सभा पटल पर रखे गये पत्र		३२७—२९

(१) जीवन बीमा निगम अधिनियम, १९५६ की धारा २९ के अन्तर्गत दिनांक ३१ दिसम्बर, १९६१ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये भारत के जीवन बीमा निगम के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति तेरहा परीक्षित लेखे सहित।

विषय पृष्ठ

सभा पटल पर रखे गये पत्र (क्रमशः)

(२) प्रशुल्क आयोग अधिनियम, १९५१ की धारा १६ की उप-धारा (२) के अन्तर्गत निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति :—

(एक) दिनांक १ अप्रैल, २९६० से ३१ मार्च, १९६२ की अवधि के लिये कारखाने पर ढलवें लोहे की उचित सन्धारण मूल्य के बारे में प्रशुल्क आयोग का प्रतिवेदन (१९६२)

(दो) दिनांक १ अप्रैल, १९६० से ३१ मार्च, १९६२ की अवधि के लिये कारखाने पर इस्पात के उचित संधारण मूल्य के बारे में प्रशुल्क आयोग की प्रतिवेदन (१९६२) ।

(तीन) दिनांक ७ सितम्बर, १९६२ का सरकारी संकल्प संख्या एस० पी० (सी)-२(२७)/६२ ।

(चार) उन कारणों को बताने वाले वक्तव्य की एक प्रति जिन के कारण उक्त उपधारा के अधीन नियत समय के भीतर उपरोक्त (एक), (दो) और (तीन) में उल्लिखित दस्तावेजों की प्रति पटल पर नहीं रखी जा सकी ।

(३) वर्ष १९६१-६२ के लिये सालारजंग संग्रहालय बोर्ड, हैदराबाद की वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति ।

(४) क्षेत्रीय परिषदें अधिनियम १९५६ की धारा ५४ की उप-धारा (३) के अन्तर्गत दिनांक २१ जुलाई, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० ९८६ में प्रकाशित क्षेत्रीय परिषदें (दूसरा संशोधन) नियम, १९६२ की एक प्रति ।

(५) समुद्र सीमा-शुल्क अधिनियम, १८७८ की धारा ४३ ख की उप-धारा (४) और केन्द्रीय उत्पादन शुल्क तथा नमक अधिनियम, १९४४ की धारा ३८ के अन्तर्गत सीमा-शुल्क तथा केन्द्रीय उत्पादन शुल्क निर्यात प्रत्याहृत (सामान्य) नियम, १९६० में कुछ और संशोधन करने वाली निम्नलिखित सूचनाओं की एक-एक प्रति :—

(क) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११४९ ।

(ख) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११५० ।

(ग) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११५१ ।

(घ) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११५२ ।

(ङ) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११५३ ।

विषय पृष्ठ

सभा पटल पर रखे गये पत्र (क्रमश:)

(च) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९३ ।

(छ) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९४ ।

(ज) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९५ ।

(झ) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९६ ।

(ञ) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९७ ।

(६) केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क तथा नमक अधिनियम, १९४४ की धारा ३८ के अन्तर्गत केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क नियम १९४४ में कुछ और संशोधन करने वाली निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति :—

(क) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९१ ।

(ख) दिनांक २० अक्टूबर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या १३७३ ।

(७) समुद्र सीमा शुल्क अधिनियम, १८७८ की धारा ४३ ख की उप-धारा (४) के अन्तर्गत निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति :—

(क) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११४७ ।

(ख) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११४८ ।

(ग) दिनांक ८ सितम्बर, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या ११९० ।

(८) समुद्र सीमा शुल्क अधिनियम, १८७८ की धारा ४३ख की उप-धारा (४) और केन्द्रीय उत्पादन शुल्क तथा नमक अधिनियम १९४४ की धारा ३८ के अन्तर्गत दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० ११५६ की एक प्रति जिसमें दिनांक ४ अगस्त, १९६२ की जी० एस० आर० संख्या १०४१ का शुद्धिपत्र दिया हुआ है ।

(९) जीवन बीमा निगम अधिनियम, १९५६ की धारा ४३ की उप-धारा (४) के अन्तर्गत दिनांक १० मार्च, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० २८५ की एक प्रति ।

विषय पृष्ठ

सभा पटल पर रखे गये पत्र (क्रमशः)

(१०) औद्योगिक वित्त निगम अधिनियम, १९४८ की धारा ३५ की उप-धारा (३) के अन्तर्गत ३० जून, १९६२ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये भारत के औद्योगिक वित्त निगम के संचालक मंडल के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति निगम की आस्तियों तथा दायित्वों और लाभ-हानि के लेखे के विवरण सहित ।

(११) खान और खनिज (विनियमन तथा विकास) अधिनियम, १९५७ की धारा २८ की उप-धारा (१) के अन्तर्गत निम्नलिखित नियमों की एक एक प्रति :—

(क) दिनांक ४ अगस्त, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १०५१ में प्रकाशित खनिज रियायत (तीसरा संशोधन) नियम, १९६२ ।

(ख) दिनांक ११ अगस्त, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १०७६ में प्रकाशित खनिज रियायत (चौथा संशोधन) नियम, १९६२ ।

(१२) खान और खनिज (विनियमन तथा विकास) अधिनियम, १९५७ की धारा २८ की उप-धारा (१) के अन्तर्गत दिनांक २९ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १२७९ की एक प्रति।

(१३) निम्नलिखित नियमों की एक-एक प्रति :—

(एक) दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या एस० ओ० २७३८ में प्रकाशित आय कर (निर्यात लाभों का निर्धारण) नियम, १९६२ ।

(दो) वेतन में स्वेच्छा से कटौती (कर से छूट) अधिनियम, १९६१ की धारा ४ की उप-धारा (२) के अन्तर्गत ३० अक्तूबर, १९६२ की अधिसूचना संख्या ३३३१ में प्रकाशित वेतन में स्वेच्छा से कटौती (कर से छूट) नियम, १९६२ ।

राज्य सभा से संदेश ३९०

सचिव ने राज्य सभा से प्राप्त निम्नलिखित सन्देशों की सूचना दी :—

(एक) कि राज्य सभा ने अपनी ८ नवम्बर, १९६२ की बैठक में परिसीमन विधेयक, १९६२ सम्बन्धी दोनों सभाओं की संयुक्त समिति का प्रतिवेदन पेश करने का समय शुक्रवार, ३० नवम्बर, १९६२ तक बढ़ाने का एक प्रस्ताव पास कर दिया ।

(दो) कि राज्य सभा ने अपनी ८ नवम्बर, १९६२ की बैठक में भारतीय समुद्र बीमा विधेयक, १९६२ सम्बन्धी दोनों सभाओं की संयुक्त समिति को प्रतिवेदन पेश करने का का समय ११ मार्च १९६३ तक बढ़ाने का एक प्रस्ताव पास कर दिया ।

विषय पृष्ठ

संयुक्त समिति का प्रतिवेदन उपस्थापित ३३०

श्री अशोक कु० सेन ने विशिष्ट सहायता विधेयक १९६२ सम्बन्धी संयुक्त समिति का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

मंत्रियों द्वारा वक्तव्य ३३०-३१

(एक) योजना तथा श्रम और रोजगार मंत्री (श्री नन्दा) ने अत्यावश्यक वस्तुओं के मूल्यों को उचित स्तर पर बनाये रखने के उपायों के बारे में एक वक्तव्य दिया और एक विस्तृत वक्तव्य सभा पटल पर भी रखा।

(दो) रेलवे उपमंत्री (श्री सें० वे० रामास्वामी) ने रेलवे दुर्घटना समिति के सदस्यों को दिये गये भत्तों के बारे में एक वक्तव्य दिया और एक विस्तृत वक्तव्य सभा पटल पर भी रखा।

प्रवर समिति के प्रतिवेदन को उपस्थापित करने का समय बढ़ाया जाना ३३३

महाप्रशासक विधेयक सम्बन्धी प्रवर समिति के प्रतिवेदन को उपस्थापित करने के लिये नियत समय १ मार्च १९६३ तक बढ़ा दिया गया।

संकल्प विचाराधीन ३३३-८९

प्रधान मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) द्वारा प्रस्तुत आपात की उद्घोषणा की स्वीकृति तथा चीनी आक्रमण के बारे में दो संकल्पों तथा उन पर स्थापनापन्न प्रस्तावों तथा संशोधनों पर, जो कि ८ अक्तूबर को प्रस्तुत किये गये थे, चर्चा जारी रही। चर्चा समाप्त नहीं हुई।

सोमवार, १२ नवम्बर, १९६२/२१ कार्तिक, १८८४ (शक) के लिये कार्यावलि

आपात की उद्घोषणा और चीनी आक्रमण के बारे में संकल्पों तथा उन पर स्थानापन्न प्रस्तावों तथा संशोधनों पर अग्रेतर चर्चा।

GMGIPND—LS III—2118 (Ai) LSD—2-1-63—140

	पृष्ठ
श्रीमती गायत्री देवी	३३८–३९
श्री अन्सार हरवानी	३३९–४०
श्री राजेश्वर पटेल	३४०–४१
श्री जो० ना० हजारिका	३४१
श्री रामेश्वरानन्द	३४२–४७
श्री हरिश्चन्द्र माथुर	३४७–४८
डा० पं० शा० देशमुख	३४८
श्री दी० चं० शर्मा	३४८–४९
श्री हेम बरुआ	३४९–५०
श्री खाडिलकर	३५०–५१
श्री बागड़ी	३५१—५५
श्री अ० प्र० शर्मा	३५५—५८
श्री प्रकाशवीर शास्त्री	५५८—६३
श्री महेश दत्त मिश्र	३६४–६५
श्री विभूति मिश्र	३६५—६९
श्री शिवमूर्ति स्वामी	३६९—७२
श्रीमती सहोदरा बाई राय	३७२—७४
श्री कहथिरमण	३७४–७५
श्री मौर्य	३७५—८२
श्री रा० गि० दुबे	३८२—८३
श्री स० मो० बनर्जी	३८३—८९
दैनिक संक्षेपिका	३९०—९८

PLS. 41. IX. 3. 62.
140

© १९६२ प्रतिलिप्याधिकार लोक-सभा सचिवालय को प्राप्त।

लोक-सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन सम्बन्धी नियम (पांचवां संस्करण) के नियम ३७९ और ३८२ के अन्तर्गत प्रकाशि और भारत सरकार मुद्रणालय, नई दिल्ली की संसदीय शाखा में मुद्रित।